महिला-माला—मणि ८

जच्चा

संपादिका—
कृष्णाकुमारी

ज़च्चा

[प्रारम्भिक मासिक धर्म से लेकर प्रसव तक की कर्तव्य-शिक्षा देनेवाली मौलिक पुस्तक]

—

लेखक
भिषड्मणि कविराज श्रीप्रतापसिंह वैद्य-विशारद
सुवर्ण-रजत के पदक पानेवाले, श्रीललितहरि
संस्कृत तथा आयुर्वेदिक कॉलेज,
पीलीभीत के प्रिंसिपल

प्रकाशक
गंगा-पुस्तकमाला कार्यालय
२९-३०, अमीनाबाद पार्क
लखनऊ

—

संवत् १९८२ वि० मूल्य ॥|=)

प्रकाशक
श्रीछोटेलाल भार्गव बी० एस्-सी०, एल्-एल्० बी०
गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय
लखनऊ

प्रथमवार २०००

मुद्रक
श्रीभगवानदास गुप्त
कमर्शल प्रेस, जुही-कलाँ
कानपुर

वक्तव्य

वर्तमान सभ्यता की शिक्षा का जो प्रचार होरहा है, उसमें हमारे देश की स्त्रियाँ भी पूर्ण रूप से अग्रसर होने का प्रयत्न कर रही हैं ; किन्तु दुःख है कि उनका भी पाठ्य-क्रम जातीय तथा राजकीय पाठशालाओं में वही है, जो बालकों की पाठशालाओं में होता है। बालकों के लिये भी कोई ऐसी पाठ्य-विधि नहीं है, जो उनको उनके शरीर का ज्ञान प्राप्त कराकर स्वास्थ्य के सिद्धांतों को समझने की शक्ति उत्पन्न करे।

प्रकृति ने बालकों के जीवन से कन्याओं का जीवन बिलकुल भिन्न बनाया है। उनका रहन-सहन भी एक दम भिन्न है।

प्रथम तो उनके लिये जो पाठ्य विषय है, वही हानि-कारक है। उसमें उनके स्वास्थ्य का ध्यान बिलकुल नहीं रक्खा गया। इसके सिवा उनके शरीर में होनेवाले परमा-वश्यक परिवर्तनों का ज्ञान न कराना और भी अनर्थकारक है।

जो बालिकाएँ आज पाठशाला में पढ़ती हैं, वे ही कल गृहस्थी में प्रवेश करेंगी ; और सन्तान उत्पन्न करके देश की माताएँ बनने का सौभाग्य प्राप्त करेंगी। किन्तु शोक ! गृहस्थी में प्रवेश करने के पूर्व उनको यह भी ज्ञान नहीं होता कि उनका ऋतुस्राव (मासिकधर्म).

कब होगा। ऋतु-स्राव होने के पूर्व उनके शरीर में क्या-क्या परिवर्तन होते हैं, और ऋतु-स्राव के दिनों में किस प्रकार के जीवन व्यतीत कर भविष्य में सन्तानोत्पत्ति के क्षेत्र को सुरक्षित रखना चाहिए ?

इन सब बातों को न जानने के कारण वे प्राकृतिक शारीरिक परिवर्तनों के समय में अपठित और मूर्खा स्त्रियों के आदेश के अनुसार पशु का-सा व्यवहार करके अपने जीवन को दुःखमय बना लेती हैं, जिसका फल यह होता है कि वे ज़िंदगी-भर रजकृच्छ्र, (कष्ट से मासिक-धर्म होना) श्वेत-प्रदर, रक्त-प्रदर और वन्ध्यत्व आदि भयंकर दुःखदायक और लज्जाजनक रोगों के चंगुल में फँसकर अपना जीवन बिताती हैं।

हमको अपने चिकित्सा-व्यवसाय में अब तक एक लाख से अधिक रोगिणी स्त्रियों को देखने का अवसर मिला है। उनके रोगों की शिकायतें बार-बार सुनकर हमने यही निश्चय किया कि यदि हमारे देश की कन्याओं को, युवावस्था प्राप्त होने के पूर्व, उनकी माताएँ युवावस्था में होनेवाले शारीरिक परिवर्तनों के समय पालन करने योग्य नियमों को भलीभाँति समझा दें, तो वे अनेक भयंकर रोगों से अपनी रक्षा कर अपना जीवन सुख-पूर्वक बिता सकती हैं। स्वस्थ एवं दीर्घजीवी सन्तान उत्पन्न करके देश का कल्याण करने में सहायक हो सकती हैं।

हमने लेडी-डॉक्टर एलिज़बेथ बेलवी एम्० डी० की "मेडिकल हिंट्स फ़ार दी इन्डियन लेडीज़्" नाम की पुस्तक की शैली पर अपने अनुभव और वैद्यक के पुराने और नए सिद्धांतों के अनुसार इस पुस्तक का संकलन किया है। आशा है, कन्या-पाठशालाओं के संचालक तथा स्त्री-शिक्षा के प्रेमी लोग इसका प्रचार करके हमारे परिश्रम को सफल करेंगे।

यह पुस्तक लिखने में हमको उक्त लेडी-डॉक्टर साहबा के निबन्ध से बहुत सहायता मिली है। अतएव हम उनको धन्यवाद देते हैं।

साथ ही जिनके उत्साह, कार्य-पटुता और शुद्ध लेखन-प्रणाली की पूर्ण सहायता से इस पुस्तक को समाप्त करने में हम समर्थ हुए हैं, उन रमणी-कुल भूषण, नैष्ठिक ब्रह्मचारिणी, सदाशया श्रीमती हुक्मदेवी छात्रा के प्रति पूर्ण कृतज्ञता प्रकट करना भी हम अपना कर्तव्य समझते हैं।

विनीत—

लेखक

समर्पण

पूज्यपाद महामहोपाध्याय कविराज श्री गणनाथ सेन एम्० ए०, एल्० एम्० एस्०, सरस्वती आदि उपाधियों से विभूषित श्रीगुरुवर के चरणों में सादर साञ्जलि निवेदन है कि आपकी नवीन पाठ्य-प्रणाली के आदर्श का ध्येय यही है कि अर्वाचीन और प्राचीन मतों का संग्रह कर लोकोपकारक पुस्तकों का प्रचार करना चाहिए। इसी उद्देश्य से प्रेरित होकर मैंने हिन्दी में स्वास्थ्य-सम्बन्धी पुस्तक लिखने का यह प्रथम प्रयत्न किया है। आपके कृपा-कटाक्ष का ही एक मात्र अवलंबन इस ध्येय की सफलता में सहायक है। अतएव आपके ही कर-कमलों में यह कृति सादर, सप्रेम समर्पित है।

चरण-चंचरीक

प्रताप

विषय-सूची

जच्चा

मासिक धर्म*

इस विषय पर जितना लिखा जाय, थोड़ा है; क्योंकि यह इतना आवश्यक विषय है, जिसके न जानने से प्रथम बार रजस्वला होनेवाली कन्याएँ जो भूलें करती हैं, उससे उन बेचारियों को अनेक प्रकार के रोग लग जाते हैं, और उनका सारा जीवन दुःखमय बन जाता है। बहुत ही कम स्त्री और पुरुष ऐसे हैं, जो इस विषय को उपयोगिता और दायित्व को समझते हैं; और उनमें भी बहुत थोड़े स्त्री-पुरुष हैं, जो प्रथम बार रजस्वला होने के नियमों का पालन करने की विधि जानते या उन नियमों का पालन कराने का प्रयत्न करते हैं। इस अज्ञान के कारण ही स्त्रियों को अनेक प्रकार के रोग, जो प्रायः असाध्य होते हैं, लग जाते हैं; और उनका अन्तिम परिणाम बाँझपन हो जाता है, जो बेचारियों की सब भविष्य आशाओं पर पानी फेर देता है।

अतः विद्वान् वैद्यों, डाक्टरों और स्त्री-स्वास्थ्य-रक्षा के पक्षपातियों का कर्त्तव्य है कि वे इस विषय की ओर ध्यान दें और साधारण भाषा में लिखकर भारतीय महिलाओं के

---

* जिसको साधारण बोलचाल में कपड़े होना, अलग बैठना, माहवारी होना, मासिक धर्म होना, स्त्री-धर्म होना भी कहते हैं।

सन्मुख उन नियमों को उपस्थित करें, जिनको समझकर प्रथम बार रजस्वला होनेवाली कन्याएँ उस समय की छोटी छोटी भूलों से होनेवाले महान् शारीरिक अस्वास्थ्य से बची रहने का प्रयत्न करें, और भविष्य में स्वस्थ तथा सुन्दर सन्तान उत्पन्न करने में समर्थ हों।

जब बालिका मासिक धर्म होने की अवस्था के निकट पहुँच जाय, तब उसकी माता या अन्य स्त्री-शिक्षिका का कर्त्तव्य है कि वह उसको इस विषय से सम्बन्ध रखनेवाली सब बातें समझाना प्रारम्भ कर दे; यह बतला दे कि अब उसके अपत्य-पथ (योनिमार्ग) से कैसा स्राव होगा, स्राव की समाप्ति के समय उसको क्या करना और क्या न करना चाहिए; और उस समय उसको अपना समय कैसे व्यतीत करना चाहिए। इस प्रकार का उचित उपदेश कन्या की माता द्वारा ही मिलना लाभदायक हो सकता है। परन्तु शोक! हमारे देश में अज्ञान का राज्य इतना अधिक फैला हुआ है कि इस विषय की बातें करने में इतना संकोच किया जाता है कि वे उपयोगी बातें, जिनका माताओं ने स्वयं अनुभव किया है, अपनी प्राणप्यारी कन्याओं को नहीं बतलातीं और झूठी लज्जा में फँसकर बेचारी अबोध, शुद्धहृदय बालिकाओं का पवित्र जीवन कण्टक-मय बना देती हैं।

मैं आशा करता हूँ, इस प्रकाशमय विज्ञानकाल में वर्तमान माताएँ अपनी प्रिय पुत्रियों के लाभार्थ झूठे, हानिकारक, लज्जा-

रूपी बन्धन को तोड़कर उनके अत्यन्त आवश्यक शारीरिक परिवर्त्तन के समय धैर्य और विचार-पूर्वक उनको इस विषय का उपदेश कर माता का कर्त्तव्य पालन करेंगी।

प्रिय पाठिकाओ! आप सब माताएँ यह बात भली भाँति जानती हैं कि मासिक धर्म होना स्त्री की स्वाभाविक शारीरिक और नियमित क्रिया है। इसकी रुकावट होने से कन्या विवाह के अयोग्य समझी जाती है। मन्द भाग्य से यदि ऐसी कन्या का विवाह हो भी गया तो वह कदापि गर्भवती नहीं हो सकती। यद्यपि मासिक धर्म एक प्राकृतिक क्रिया है; परन्तु इसको नियमित और स्वस्थ्य दशा में रखने के लिये भली भाँति नियमपूर्वक जीवन बिताने की अत्यन्त आवश्यकता है। यदि उस समय में अनियमित जीवन व्यतीत किया गया, तो जो क्रिया वेदना-रहित होनी चाहिए थी, वह प्रति मास अत्यन्त कष्ट-मय होने लगती है, जिससे अनेक दुःखदायक रोग लग जाते हैं; और जीवन-भर के लिये शरीर अस्वस्थ होकर स्त्री बाँझ हो जाती है।

देश की वर्तमान माताओं और मासिक धर्म-सम्बन्धी कष्टों से पीड़ित बहनों से मेरा यह साग्रह निवेदन है कि वह इस विषय को अति आवश्यक और गम्भीर* समझकर

---

* दुःख के साथ लिखना पड़ता है कि वर्तमान समय में इस विषय की ओर बिलकुल ध्यान नहीं दिया जाता, जिसका परिणाम यह होता है कि प्रत्येक कन्या को मासिक धर्म-सम्बन्धी रोग लग जाते हैं और उसका

भविष्य में स्त्री-पद को पानेवाली अपनी कन्याओं को भली भाँति समझाकर अपना कर्त्तव्य पालन करेंगी। अस्तु।

यदि नियत समय पर स्वाभाविक रीति से, बिना किसी प्रकार की वेदना के, मासिक धर्म हो तो समझना चाहिए कि रजस्वला होनेवाली सब प्रकार से स्वस्थ है और गर्भ धारण करने योग्य है।

स्वाभाविक मासिक स्राव के स्वरूप

१—यह वेदना-रहित अर्थात् दर्द के बिना होना चाहिए।

२—इसका स्राव (रक्त जो जारी रहता है) १५ तोले अर्थात् तीन छटाँक के लगभग होना चाहिए।

३—स्राव नियमित दिनों तक बराबर जारी रहना चाहिए।

४—नियमित दिनों के पश्चात् फिर दूसरे मास का स्राव होना चाहिए।

५—रक्त का रंग और गन्ध जो स्वाभाविक होता है, वही होना चाहिए।

६—मासिक स्राव बन्द होने और फिर दूसरे मास का स्राव होने के बीच के दिनों में किसी प्रकार का स्राव नहीं होना चाहिए।

७—आयु का विशेष समय बीतने पर क्रमशः मासिक धर्म बन्द हो जाना चाहिए।

मासिक स्राव का रंग

इसका रंग गहरा और लाल होता है। रक्त जमता

स्वास्थ्य सदा के लिये खराब हो जाता है। इसका फल वह आयु-भर भोगती है। इस विषय को अति आवश्यक समझकर मैंने लेखनी उठाई है।

नहीं। अर्थात् जमे हुए रक्त के छिछड़े अन्दर से न निकलने चाहिए और न बाहर आकर जमने चाहिए; क्योंकि शरीर के अन्य अवयवों से निकला हुआ रक्त विशेष ढंग से जम जाता है, इस कारण यह रक्त शरीर के अन्य अवयवों के निकले हुए रक्त से भिन्न-प्रकार का होता है।

यदि मासिक स्राव में रक्त के टुकड़े या गर्भाशय की झिल्ली के टुकड़े निकलते हों, तो दर्द का होना इस बात का साक्षी है कि मासिक धर्म स्वाभाविक नहीं होता। भारतवर्ष की स्त्रियाँ इसको प्रायः लाल पानी जाना भी कहती हैं, और यह नाम इसका बहुत कुछ सार्थक है; क्योंकि यह स्राव न रक्तमय होता है और न पानी ही होता है, वरन् रक्त मिला हुआ पानी-सा होता है। यह अत्यन्त पतला रक्त गर्भाशय से आता है।

मासिक स्राव की गन्ध

मासिक स्राव में स्वाभाविक और विशेष प्रकार की गन्ध आया करती है। किन्तु यह गन्ध न तीक्ष्ण होती है और न अग्राह्य। यदि रजस्वला स्त्री शुद्धाचारवाली हो और नियमित रूप से अपने गुप्त अंगों को शुद्ध रखती हो और जिस कपड़े को योनिमार्ग में रखती हो, उसको नियमित समय पर बदलती रहती हो, तो गन्ध का अनुभव नहीं होता।

मासिक स्राव का स्रोत

मासिक स्राव गर्भाशय के भीतरी भाग से आता है। यह

स्राव रुक-रुककर योनिमार्ग में आता है और इतना धीरे धीरे कि बाज़ समय रजस्वला को इसका बोध भी बड़ी कठिनाई से होता है। अस्वाभाविक अवस्था के अतिरिक्त स्राव तेज़ धार से और अधिक मात्रा में कभी नहीं आता। स्वाभाविक दशा में रजस्वला को स्राव का ज्ञान उसी समय होता है, जब उसका गुप्त स्थान में रक्खा हुआ वस्त्र गीला हो जाता है।

ऋतुस्राव का काल

साधारण रीति से ऋतुस्राव तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है—आदिकाल, मध्यकाल, अवसानकाल। जिस समय मासिक स्राव आरम्भ होता है उस समय का संयम बड़े ही महत्व का होता है। यदि प्रारम्भ से ही बहुत सावधानी के साथ ऋतुस्राव-सम्बन्धी नियम विधिपूर्वक पालन किए जायँ तो इसका मध्य और अन्तकाल भी उत्तम तथा पूर्ण होता है।

भिन्न-भिन्न देशों में मासिक स्राव आरम्भ होने की आयु में न्यूनाधिकता होती है। जल-वायु का प्रभाव ही इसका कारण माना जाता है।

भारतवर्ष में भी दक्षिण, उत्तर और पूर्वीय देशों में मासिक धर्म होने की आयु भिन्न-भिन्न होती है। साधारणतया १२ वर्ष की आयु के बाद कन्याओं का मासिक स्राव प्रारम्भ हो जाता है। कभी-कभी नौ-दश वर्ष की बालिकाएँ भी रजस्वला

होती देखी गई हैं। किन्तु यह एक असाधारण नियम है। यह बात सब देशों में बालिकाओं के माता-पिता की विलासता, चंचलता और कामासक्तता पर निर्भर है। जिस देश में जितनी अधिक विलासता बढ़ती है, उस देश की कन्याएँ उतनी ही छोटी अवस्था में रजस्वला होने लगती हैं।

१—साधारणतया एक बार ऋतुस्राव होने के पश्चात् २८ दिन के बाद फिर दूसरी बार ऋतुस्राव होना चाहिए। किन्तु किसी प्रकार का कष्ट या स्वास्थ्य में परिवर्त्तन हो तो बात दूसरी है। यों तो बीच के दिनों में २४ या ३२ दिन का अन्तर रहता हो तो भी कुछ हानि नहीं। परन्तु बीच के दिनों का समय सदैव नियत रहना चाहिए। चाहे २४ दिन के बाद हो, चाहे २८ दिन के बाद हो अथवा ३२ दिन के बाद हो, परन्तु ऐसा न हो कि किसी मास में २४ दिन के बाद और किसी मास में २८ दिन के बाद अथवा किसी मास में ३२ दिन के बाद होता हो। ऐसा होना अस्वास्थ्य-सूचक और हानिकारक है।

२—सन्तान-उत्पत्ति की योग्यता रहने तक रजस्राव बराबर जारी रहता है। प्राय ४० वर्ष की अवस्था हो जाने के पश्चात् यह बन्द होता है। कुछ स्त्रियों का मासिक धर्म ५० वर्ष की अवस्था तक जारी रहता है। किन्तु यह साधारण नियम नहीं है। प्रायः देखा जाता है कि ऋतुस्राव प्रारम्भ होने की आयु से ३० वर्ष पश्चात् बन्द हो जाता है। कुछ विदेशी लोगों

का विचार है कि भारतीय महिलाएँ ३० वर्ष की अवस्था में वृद्धा हो जाती हैं, किन्तु यह विचार यथार्थ नहीं। यदि ठीक अवस्था, अर्थात् १८ वर्ष की अवस्था, के पश्चात् विवाह किया जायँ और २० वर्ष की उम्र के पश्चात् सन्तानोपत्ति आरम्भ हो तो ५० वर्ष की उम्र तक स्त्री पूर्ण स्वस्थ और शक्तिसम्पन्न रह सकती है।

जब स्त्री गर्भवती होती है, या बालक को दूध पिलाती है, उस समय मासिक धर्म बन्द रहता है। परन्तु बालक को दूध पिलाते समय भी बहुत-सी स्त्रियों को मासिक धर्म होता रहता है।

३—जो स्त्री पूर्ण स्वस्थ होती है, उसका ऋतुस्राव नियमानुसार ४० वर्ष के बाद बन्द होते समय उसके शरीर में कोई विशेष कष्ट नहीं होता। केवल सिर में दर्द, शरीर में भारीपन और क़ब्ज़ आदि साधारण लक्षण होते हैं। प्रायः स्त्रियों का ऋतुस्राव धीरे-धीरे बन्द हुआ करता है। पहले अधिक विलम्ब से होता है और एक-दो दिन जारी रहता है तथा स्राव भी अल्प मात्रा में होता है। इसी प्रकार धीरे-धीरे बन्द हो जाता है। स्त्रियों के लिये यह समय बड़ा ही नाज़ुक होता है। इस कारण इस समय बड़ी सावधानी से स्वास्थ्य-रक्षा के नियमों का पालन करना चाहिए। अन्यथा अनेक प्रकार के रोग, मानसिक विकार, वात, नाड़ियों की व्यथा (Mental disturbances or

nervous disturbances) आदि उपद्रव उत्पन्न हो जाते हैं। इनमें से किसी एक विशेष लक्षण के दृष्टि पड़ते ही अच्छे डाक्टर या वैद्य की चिकित्सा तुरन्त करनी चाहिए। साधारणतया खुली हवा में व्यायाम करना, थकान से बचाव रखना, शीघ्र सोना, शीघ्र उठना, हलका तथा शीघ्र पचनेवाला भोजन करना, नित्य शुद्ध शौच होने का ध्यान रखना, चिन्ता इत्यादि मानसिक व्यथाओं से दूर रहना आदि नियमों के पालन करने से किसी प्रकार की व्यथा होने का भय नहीं रहता।

निकट जवानी के लक्षण

जब बालिका युवावस्था में पदार्पण करने लगती है, तब अस्थायी विशेष लक्षण उत्पन्न होने लगते हैं, जिनको देखकर युवत्वप्राप्ति अधिक समीप जान पड़ती है। स्तन और नितम्ब बढ़ने लगते हैं। स्तन बहुत कठिन और उन्नत हो जाते हैं। किसी-किसी बालिका के स्तनों में शूल का भी अनुभव होता है। नाभि के नीचे और अपत्यपथ के ऊपर बाल जमने लगते हैं। हलका-सा शिर-शूल और मानसिक व्यथा होने लगती है, जिससे नींद आदि ठीक नहीं आती। किन्तु भूख अधिक लगती है। बालिका अधिक लज्जाशील दृष्टि पड़ती और एकान्त-वास अधिक पसन्द करती है। ध्यान-पूर्वक बुद्धिमानी से विचार करनेवाली माताओं को ऐसे लक्षण बालिका में दृष्टि

पड़ते ही सतर्क हो जाना चाहिए और अपनी कन्या को भले प्रकार समझा देना चाहिए कि अब उसके अपत्य-पथ से रजःस्राव जारी होना प्रारम्भ होगा। सबसे प्रथम और पश्चात् के ऋतुस्रावों के अवसर पर बहुत सावधान रहने की आवश्यकता है; क्योंकि उस समय के लगे हुए रोग बहुत भयङ्कर रूप धारण कर लेते और सदा के लिये स्वास्थ्य को बिगाड़ देते हैं। मासिक धर्म के समय में सर्दी ज़ुकाम बहुत शीघ्र हो जाया करता है, और उसके कारण शरीर बहुत ही दुर्बल हो जाता है। उस समय सर्दी और ज़ुकाम होने से गर्भाशय और अपत्य-पथ में वरम हो जाता है, जिसका फल यह होता है कि मासिक धर्म के समय प्रति मास बड़ा कष्ट भोगना पड़ता है और प्रायः बाँझपन भी हो जाता है।

शोक! ऐसी भयंकर दशा होने पर भी हमारे देश की भोली माताएँ ऐसे नाज़ुक समय में अपनी प्यारी बालिकाओं को साधारण स्वास्थ्य-रक्षा के अति आवश्यक नियमों का उपदेश न करके झूठी लज्जा के ढकोसले दिखलाती हैं।

रजस्राव होने पर पहले दिन बालिका को तकिएदार तख़्त पर, पैर फैलाकर, प्रायः सीधी बैठाए रक्खे और दिन में न सोने दे। एक साफ़ धुला हुआ मुलायम कपड़ा लेकर उसकी कई तह बनाकर बाहरी अपत्य-पथ के मुख पर रख-कर इस प्रकार बाँधे, जो न बहुत कसा हुआ रहे और न बहुत ढीला। क्योंकि ज़्यादा कसकर बाँधने से कोमल

गुप्त अंग सूज जाता है और अधिक ढीला बाँधने से रक्त उस पर नहीं गिरता और अन्य वस्त्र ख़राब हो जाते हैं। जाँच करने से पता लगा है कि हमारे यहाँ की बालिकाएँ और स्त्रियाँ कपड़े को अपत्यपथ के बीच में खूब ठूँसकर बाँधती हैं। ऐसा करना बहुत हानिकारक है, कदापि न करना चाहिए। गुप्त अंग के सन्मुख उपरोक्त कपड़े की गद्दी रखकर, दूसरा कपड़ा इतना लम्बा और चौड़ा इस ढंग से लँगोट की भाँति बाँधना चाहिए कि उसका अगला सिरा सामने की ओर जाकिट के बटन में लगा हो और पिछला सिरा भी उसी प्रकार जाकिट के पिछले हिस्से में तनी या बटन के द्वारा बँधा हो।

बहुत-सी बालिकाएँ तथा स्त्रियाँ मोटे कपड़े अपत्य-मार्ग में रखती हैं; और बहुत-सी मोटे कपड़े का केवल लँगोट-सा इस कारण बाँधती हैं कि वह ठीक लगा रहेगा। किन्तु वह ठीक नहीं रह सकता; क्योंकि जब वह गीला हो जाता है, तब उसमें बहुत-सी झुर्रियाँ पड़ जाती हैं। इस कारण वह ख़राब होकर सिकुड़ जाता है और उसको रगड़ लगने से शरीर के कोमल भाग में शोथ हो जाता है। जो बहनें अमीर घराने की हैं, और धन व्यय करने में समर्थ हैं, वे अपनी रुचि के अनुसार कपड़ा पसन्द कर इस कार्य के लिये प्रयोग कर सकती हैं; यदि वे चाहें, तो बाज़ार में बिकने-वाले सैनिटरी टावल्स (Sanitary Towels)-नामक तौलिए

ख़रीदकर उनका उपयोग कर सकती हैं। जब वे तौलिए एक बार रक्त-स्राव से भर जायँ, तब उनको जला देना चाहिए। ग़रीब बहनों को सस्ते मूल्य की पतली मलमल या पुरानी धुली हुई बारीक धोतियों के टुकड़े, जो एक बार धुलने पर ही नरम हो जायँ, काम में लाना चाहिए। क्योंकि इस कार्य में सस्ते कपड़े का ही उपयोग करना उचित है। इस बात का पूरा ध्यान रखना चाहिए कि गुह्य भाग में रक्खा हुआ वस्त्र एक बार रक्त से तर हो जाने के पश्चात् यदि नहीं निकाला जाता है तो कष्ट मालूम होने लगता है। उसके किनारे सूखकर कठिन हो जाते हैं, जिनकी रगड़ लगने से योनिमार्ग का बाहरी भाग रगड़ खाते-खाते सूज जाता है। इससे बहुत कष्ट होता और दुर्गन्ध आने लगती है। इस कारण मासिक धर्म के प्रारम्भ के दो-तीन दिनों में, जब रक्त अधिक जारी रहता है, चौबीस घंटे के अन्दर चार-पाँच बार कपड़ा बदलते रहना चाहिए। यदि किसी को अधिक रक्त जारी रहता हो, तो इससे भी शीघ्र कपड़ा बदलना उचित है। फिर बाद के दिनों में, जब रक्त-स्राव कम हो जाय, दिन में तीन-चार बार वस्त्र बदलना हानिकर नहीं होगा।

मल-शुद्धि

नित्य-प्रति प्रातःकाल मल-शोधन हो जाना बहुत ही आवश्यक है। जिन बालिकाओं को नित्य शुद्ध शौच नहीं होता, मलाशय में अधिक मल संचय होने से उनको ऋतुस्राव

के समय गर्भाशय में अधिक शूल, और भारीपन आदि होता है। इस कारण माताओं का कर्तव्य है कि बालिकाओं को प्रारम्भ से ही यह शिक्षा दें कि नित्य प्रातःकाल शुद्ध शौच होने की आदत डालें। जिन कन्याओं को नित्य प्रातःकाल खुलकर शुद्ध शौच हो जाता है, उनके शरीर में उत्साह, कार्य करने की स्फूर्ति, चैतन्यता इत्यादि रहती है।

किन्तु शोक है कि हमारे देश की वर्तमान माताएँ इस ओर तनिक भी ध्यान नहीं देतीं। इसका कुपरिणाम यह होता है कि उनकी बालिकाएँ आजीवन विबन्ध रोग से पीड़ित रहकर शारीरिक और मानसिक विकारों के भँवर-जाल में पड़कर कष्ट भोगती हैं। यदि बालिका मासिक धर्म प्रारम्भ होने के समय कोष्ठबद्ध (क़ब्ज़) से पीड़ित हो, तो एरण्ड का तेल, मुलहटी का चूर्ण या सनाय के काढ़े का हलका-सा विरेचन (जुलाब) दे देना चाहिए। मुलहटी का चूर्ण और सनाय का काढ़ा बनाने की विधि तथा एरण्ड के तेल का प्रयोग करने की विधि नीचे लिखी जाती है।

मुलहटी का चूर्ण बनाने की विधि

मुलहटी का चूर्ण २ माशे, शुद्ध गन्धक १ माशा, सनाय का चूर्ण २ माशे, शक्कर या खांड़ ३ माशे, इन सबको मिलाकर चूर्ण बनावे और रात्रि में सोते समय गरम जल के साथ खिला दे। यह एक मात्रा या खुराक है।

सनाय का काढ़ा बनाने की विधि

छै माशे सनाय को लेकर छटांक-भर उबलते हुए जल में डाल दे। फिर दस मिनट तक उसको भिगोए रक्खे। इसके बाद उसको छानकर २ तोला मिश्री मिलाकर प्रातःकाल के समय पिला दे। यह भी एक मात्रा है।

एरण्ड के तेल का प्रयोग

एरण्ड का तेल २ से ३ तोले तक लेकर उसको गरम किए हुए दूध में मिलाकर प्रातःकाल पिला दे। यदि जी मिचलावे, तो ऊपर से पान खिला दे।

इन तीनों प्रयोगों में से किसी एक प्रयोग का व्यवहार करना उचित है। परन्तु यह बात स्मरण रखनी चाहिए कि बार-बार विरेचन देने से हानि होती है। विरेचन देने के पश्चात् भी यदि क़ब्ज़ दूर न हो, तो ताज़े फल, मुनक़्क़ा, अंजीर, मोटे आटे की रोटी आदि सेवन करावे और रात्रि को सोते समय एवं प्रातःकाल उठते ही (बिना शौच गए) एक गिलास शीतल जल पिला देना बहुत ही लाभकारक है। यदि इन उपायों के करने पर भी लाभ न हो, तो चार-पाँच छटाँक साधारण गरम जल भोजन करने के पूर्व धीरे-धीरे पान करावे। इससे बड़ा लाभ होता है। कोष्ठबद्ध रहनेवाली बालिकाओं या स्त्रियों को भोजन के साथ अथवा भोजन करते ही अधिक जल पीना लाभकारक है।

पेट के ऊपर मालिश करना भी क़ब्ज़ दूर करने का उत्तम उपाय है। बच्चों का तो भले प्रकार मालिश करने से ही विबन्ध दूर हो जाता है। पेट पर केवल मालिश करे। ओषधि कुछ न खिलावे। मालिश करने की सादी विधि यह है— हाथ को नाभि के नीचे से दाईं ओर पसलियों के नीचे तक ऊपर की ओर लावे और फिर कौड़ी के नीचे हाथ को घुमाकर दाईं ओर नाभि के दूसरी ओर नीचे तक लावे। इसी प्रकार हाथ को बराबर घुमावे। यह क्रिया दश से बीस मिनट तक दिन में दो बार करनी उचित है। बालकों के १० मिनट तक और युवा मनुष्यों के २० मिनट तक मालिश करनी पर्याप्त है।

यदि इस विधि के प्रयोग करने पर भी कोष्ठबद्धता दूर न हो, तो किसी सुचिकित्सक की सम्मति से चिकित्सा करनी चाहिए।

माताओं को यह भली भाँति स्मरण रखना चाहिए कि कोष्ठबद्धता दूर करने के लिये बार-बार विरेचक ओषधियों का प्रयोग न करें। अनेक बार इन ओषधियों का सेवन करने से आँतों की स्वाभाविक मल-शोधन करने की शक्ति जाती रहती है, जिससे सदा के लिये विबन्ध रोग हो जाता है।

नित्य मल की शुद्धि न होने से मन्दाग्नि (भूख बहुत कम लगना), पाण्डु (सारे शरीर का पीला हो जाना), बात-व्याधि (वात रोग ८० प्रकार के होते हैं), गर्भाशय का स्थान भ्रंश होना आदि रोग हो जाते हैं।

कभी कभी किसी बालिका अथवा स्त्री को मासिक धर्म के समय मूत्र त्याग करने में भी कष्ट प्रतीत होने लगता है। इसके लिये विशेष चिन्ता करने की आवश्यता नहीं। इसके लिये सरल उपाय यह है कि गरम जल से दिन में तीन-चार बार गुप्त अङ्ग को भली भाँति धो डाले या एक नाँद में गरम पानी डालकर रजस्वला को उसमें थोड़ी देर बैठा देना चाहिए।

मासिक धर्म में स्नान

ऋतुस्राव प्रारम्भ होने के दिन से तीन-चार दिन तक नित्यस्नान बंद कर देना चाहिए। केवल बाहर के गुह्य अवयवों को दिन में दो बार गुनगुने पानी से धोकर साफ़ करके सूखे हुए वस्त्र से पोछ लेना ही पर्याप्त है। यदि उष्ण काल हो और बिना स्नान किए हुए चित्त में अधिक ग्लानि प्रतीत हो, तो स्राव भले प्रकार प्रारम्भ होने के पश्चात् तीसरे दिन बन्द मकान में खिड़कियाँ आदि बन्द करके शीघ्रता से स्नान कर शरीर को खूब पोंछकर भले प्रकार कपड़े पहनकर बाहर आना चाहिए। बाहर आकर कम-से-कम एक घंटे तक पंखे के नीचे नहीं बैठना चाहिए। यदि कोई बहन ऐसा करने में असमर्थ हों, तो उसके लिये उचित यह है कि उष्णजल से केवल गुप्त अङ्ग के बाहरी भागों को ही धोकर सन्तोष करे। जब तक पूर्ण रूप से मासिक स्राव बन्द न हो, किसी दशा में भी स्नान करना उचित नहीं †।

† शोक के साथ लिखना पड़ता है, हमारी भारतीय बहनें मासिक धर्म-

मासिक धर्म में शूल

पहले लिखा जा चुका है कि स्वाभाविक ऋतुस्राव होने में शूल नहीं होता। किन्तु कभी-कभी हलका-सा शूल प्रतीत हुआ करता है। यह शूल इस प्रकार का होता है जैसा विरे-चक औषधि खाने पर। जब उसका प्रभाव होता है तो थोड़ा-थोड़ा शूल होने लगता है। ठीक उसी शूल के समान इसको भी समझना चाहिए ऐसी दशा में एक गिलास (३ या ४ छटाँक) साधारण गरम चाय या दूध पी लेना, अथवा आधा चम्मच मैदा सोंठ का चूर्ण, इसीके बरा-बर खाँड़, एक छटाँक उबलते हुए पानी में डालकर खूब हिलावे। यदि सोंठ पूरी तौर से न घुले तो इस मिश्रण (घोल) को छान ले। फिर इसमें एक चाय के चम्मच-भर घी मिलाकर साधारण गरम पीने योग्य पीकर कुछ घंटों के लिये सो रहे और बोतल में गरम पानी भरकर पेड़ू पर सेंक करावे, तो लाभदायक है।

सम्बंधी नियमों को बिलकुल नहीं जानतीं। वे बिलकुल उलटा आचरण करती हैं। कहीं-कहीं ऐसी रीति है कि यदि रात्रि के समय मासिक धर्म होता है, तो चाहे शीतऋतु हो, या ग्रीष्म, स्नान किए बिना जलपान नहीं करतीं। नित्य स्नान करना तो साधारण बात है। सर्दी का बिलकुल बचाव नहीं किया जाता। इसी प्रकार भोजन की भी अव्यवस्था होती है। उसका फल यह होता है कि प्रत्येक कन्या का मासिक धर्म प्रारम्भ से ही विकृत हो जाता है।

—लेखक

शूल को दूर करने के लिये किसी दशा में भी अफ़ीम या अन्य नशीली वस्तुओं का प्रयोग करना उचित नहीं। हमारे देश में हिन्दू तथा मुसलमानों में नशे की वस्तुओं का व्यवहार करना अधिकांश लोगों में प्रायः निषिद्ध-सा ही माना जाता है। तथापि यहाँ उनको विशेष रूप से आग्रहपूर्वक निषेध कर देना ही आवश्यक है। देशी ईसाइयों में गौरांग जातियों की देखादेखी शराब पीना प्रतिदिन बढ़ता जाता है। उनकी नक़ल बहुत-सी हमारी बहनें भी करती हैं। यह बात स्मरण रखनी चाहिए कि जो माताएँ चिकित्सक की सम्मति के बिना किसी प्रकार का भी उत्तेजक मद्य आदि द्रव्य बालिकाओं को पिलाती हैं, वे उन प्यारी बालिकाओं के साथ भयंकर शत्रुता करती हैं। क्योंकि मादक द्रव्यों को पिलाकर दर्द को दूर करना भयंकर आपत्ति मोल लेना है।

जब अबोध बालिका को यह प्रतीत होता है कि किसी नशीली वस्तु के सेवन से उसकी व्यथा क्षण-भर के लिये दूर हो जाती है, तो जब जब उसको कोई कष्ट होता है, वह बार-बार उन्हीं द्रव्यों का सेवन करती है। इससे उसको नशीली वस्तुओं के सेवन करने की आदत पड़ जाती है और फिर वह नियमित रूप से उनका सेवन करने लगती है। इसका फल यह होता है कि भविष्य में उसका घर बरबाद और शरीर नष्ट हो जाता है। यदि भाग्यवश पति-

पुत्रादि हुए तो उनके साथ उचित व्यवहार न होने से परस्पर सदैव घृणा और द्वेष रहता है।

स्मरण रखना चाहिए कि उनकी इन सब आपत्तियों का कारण उनकी वे माताएँ ही हैं जिन्होंने अल्प दुःख दूर करने के लिये उन बेचारियों को ये बुरी आदतें सिखा दीं, जिनके कारण उनका सामाजिक और आत्मिक व्यवहार बिलकुल बिगड़ गया और शारीरिक तथा मानसिक विकृतियाँ उत्पन्न हो गईं।

यदि रजःस्राव के समय बालिकाओं को किसी प्रकार की पीड़ा होती हो, तो माताओं का कर्त्तव्य है कि वह अपनी अनुभव की हुई साधारण घरेलू ओषधियों का प्रयोग करें अथवा अच्छे चिकित्सक की चिकित्सा करावें।

जिन बालिकाओं के आचरण प्रारम्भ से विकृत और गृहस्थी के अयोग्य होते हैं, उनकी सन्तान कभी स्वस्थशरीर और पवित्र मानसिक विचारोंवाली नहीं हो सकती। ऐसी कन्याएँ जब माता बनती हैं तो उनकी दैनिक चर्या नियमित नहीं होती। उनमें आत्मिक संयम, सहनशीलता, आदि गुणों का अभाव रहता है और इस न्यूनता के कारण वे अपनी भावी सन्तानों को उत्तम नागरिक, धृति-क्षमा-दयायुक्त और त्याग-शील नहीं बना सकतीं।

भारतीय माताओ, आपसे सादर, सप्रेम विशेष निवेदन है कि यदि आप अपनी सन्तान से सच्चा प्रेम करती हैं तो उनको

अफ़ीम या शराब के नशे से सुलाकर काम करने का लोभ मत करो, और किसी समय में भी उनको नशीली वस्तु खिलाने की आदत न डालो।

साधारण पीड़ा दूर करने के लिये अफ़ीम आदि खिलाना उचित नहीं। थोड़ी देर के लिये दर्द का दब जाना आराम होना नहीं है। रोग का कारण ढूँढ़ने का प्रयत्न करना चाहिए। अच्छे चिकित्सक की सम्मति से उनको दूर करने का प्रयत्न करना उचित है।

साधारण कटिशूल केवल तख़्त * पर कुछ घंटे आराम करने से ही दूर हो जाता है। कटिशूल का एक कारण कोष्ठ-बद्धता भी होता है। यदि यह हो, तो इसको पूर्वोक्त विधि के अनुसार उपाय करके दूर किया जा सकता है।

ऋतुस्राव एक बार आरम्भ होकर फिर बराबर नियत समय पर, अर्थात २८ दिन के बाद, नियमित रूप से हुआ करता है। किन्तु कभी-कभी कुछ ऐसे असाधारण लक्षण भी हो जाते हैं जिनका जानना भी अति आवश्यक है।

स्वाभाविक ऋतुस्राव

स्वाभाविक ऋतुस्राव एक बार आरम्भ होने के पश्चात्

---

* इस कार्य के लिये तख़्त ऐसा होना चाहिए, जिस पर मोटा-सा गद्दा बिछा हुआ हो, और एक ओर झुककर बैठने के लिये तकिया लगा हुआ हो। उसके अभाव में साधारण अँगरेज़ी फ़ैशन के कोच भी व्यवहार में लाए जा सकते हैं।

—लेखक

दूसरी बार ५ या ६ मास के पश्चात् होता है। फिर दूसरी-तीसरी बार होने के पश्चात् दो से चार मास के अन्तर पर होता है। इसी प्रकार पाँच छः बार हो जाने के पश्चात् फिर नियमित रूप से प्रतिमास होने लगता है।

इस अस्वाभाविकता का होना कुछ हानिकारक नहीं है। केवल इतने विलम्ब के पश्चात् स्वाभाविक स्राव प्रारम्भ हो जाय, तो इतना ही करना आवश्यक है कि सब शरीर की शीतादिक से पूर्णतया रक्षा करे, और साधारण स्वास्थ्य के नियमों का भले प्रकार पालन करे। इससे समय पर यह अनियमितता दूर होकर ऋतुस्राव ठीक हो जायगा। प्रत्येक ऋतुस्राव के समय प्रथम ऋतुस्राव के समान ही नियमों का पालन करना उचित है। केवल दो-तीन बार स्राव हो जाने के पश्चात् फिर तख़्त पर लेटाने की आवश्यकता नहीं रहती। यदि स्वास्थ्य अच्छा हो, तो रजस्वला साधारण घर का काम-काज कर सकती है। किन्तु शीतल जल का स्नान, घोड़े या बाइसिकल की सवारी, कठिन परिश्रम, अधिक व्यायाम आदि ऋतुस्राव के समय न करे।

यदि उस समय पैरों में अधिक पसीना आवे तो मोज़ा-जूता बदलते समय ख़याल रखना चाहिए कि पैरों को हवा न लगे, नहीं तो पैर फट जायगा।

ऋतुस्राव के समय शीतल पेय (शर्बतादि), बर्फ़, सिरका, इमली, आम, दही आदि खट्टी वस्तुएँ, अचार, लाल मिरच,

आदि गरम वस्तुएँ खाना अति हानिकारक है। सात्विक तथा शीघ्र पचनेवाला भोजन करना अति हितकारक है ।

अस्वाभाविक ऋतुस्राव

ऋतुस्राव के समय यदि शूल हो, तो उसे अस्वाभाविक समझना चाहिए। कभी-कभी ऋतुस्राव होने से एक या दो दिन प्रथम शूल होने लगता है और भली भांति स्राव होने तक बना रहता है। किसी-किसी कन्या या स्त्री के स्राव होने के दिन से ही शूल प्रारम्भ होता है; और दूसरे दिन मन्द हो जाता है। किन्तु बेचैनी और कष्ट अन्तिम दिवस तक बना रहता है। किसी के यह शूल अत्यन्त भयंकरता से होता है, और स्राव के दिनों में बराबर होता रहता है। किन्तु कितना हो भयंकर शूल क्यों न हो, यह लगातार नहीं होता, वरन रुक-रुक कर होता है।

शूल की भयंकरता भिन्न-भिन्न स्त्रियों में भिन्न-भिन्न प्रकार की होती है। किसी को साधारण पीड़ा होती है और किसी को बच्चा होने के समय के समान तीव्र वेदना होती है।

जब तीव्र वेदना होती है, रक्त के टुकड़े या झिल्ली के टुकड़े स्राव में अवश्य निकलते हैं। जो स्त्रियाँ हिस्टीरिया अर्थात् योषापस्मार रोग से पीड़ित होती हैं अथवा उग्रवातिक (Highly Nervous) प्रकृति की होती हैं, उनको बिना झिल्ली के टुकड़े और छिछड़े निकले ही भयंकर

शूल का अनुभव होता है। ऐसो स्त्रियों का ऋतुस्राव अत्यन्त भयंकर और दुखदायक हो जाता है।

शूल होते ही शरीर में एक विशेष परिवर्त्तन होता है, जिसके कारण विकलता, योषापस्मार, दौर्बल्य (Debility), स्मरण-शक्ति की न्यूनता, प्रति क्षण पेडू के नीचे भारीपन का प्रतीत होना और शरीर में रक्त की न्यूनता हो जाती है। इसका फल यह होता है कि शरीर का स्वास्थ्य सदा के लिये बिगड़ जाता है, वन्ध्यत्व हो जाता है और भाग्यवश यदि गर्भ रह भी गया, तो मास-दो-मास के पश्चात् गर्भस्राव हो जाता है और कभी कभी उन्माद भी हो जाना है।

हमारे यहाँ अधिकांश स्त्रियाँ ऐसी हैं जिनको शूल का कष्ट होता रहता है। परन्तु वे आरम्भ में इसकी चिकित्सा नहीं करतीं। क्योंकि यह शूल भली प्रकार रजःस्राव आरम्भ होने के पश्चात् प्रायः बन्द हो जाया करता है और वे इसका यह अर्थ समझती हैं कि उनके शरीर में कोई विकृति नहीं है। इसका कुपरिणाम यह होता है कि रोग पुराना हो जाता है, जिसकी चिकित्सा करना कठिन ही नहीं, वरन् असम्भव हो जाती है।

अतः माताओं से आग्रहपूर्वक निवेदन है कि वे शूल के प्रारम्भ होते ही हमारी लिखी हुई चिकित्सा का प्रयोग करें। यदि इससे लाभ न हो, तो योग्य तथा अनुभवी चिकित्सक की चिकित्सा करावें। निश्चिन्त होकर कदापि न बैठें।

यदि आगे लिखी बातों पर विशेष ध्यान दिया जायगा, तो गर्भाशय-सम्बन्धी रोग बहुत कम होने की सम्भावना है।

प्रायः देखा जाता है कि बहुत-सी बालिकाओं का मासिक धर्म विवाह के पूर्व, बिना किसी कष्ट के, नियमित रूप से हुआ करता है; परन्तु पति-प्रसंग होने के पश्चात् कष्ट के साथ होने लगता है। इसका कारण केवल अति पुरुष-प्रसंग करना ही होता है। अतः यह रोग नवीन गौना की हुई स्त्रियों में प्रायः फैला हुआ दृष्टि पड़ता है। ऐसी दशावाली नववधुओं के लिये उचित है कि योग्य तथा विश्वासपात्र चिकित्सक को सब सत्य वृतान्त सुनाकर चिकित्सा करावें और उनके उपदेशों के अनुसार आचरण करें।

अस्वाभाविक ऋतुस्राव के लक्षण

१—अस्वाभाविक ऋतुस्राव में नियमित समय में अन्तर पड़ जाता है। इसी प्रकार स्राव के दिन और स्राव की मात्रा में भी न्यूनाधिकता होने लगती है। किसी मास में रक्त अधिक मात्रा में आता है और किसी मास में बिलकुल न्यून।

२—ऋतुस्राव का रंग जब बहुत काला हो, या उसमें छिछड़े या श्लेष्मधरा कला के टुकड़े निकलें, या रंग बिलकुल ही फीकापन लिए हो, तो समझो कि यह अस्वाभाविक स्राव है। यदि बहुत काले रंग का स्राव हो, तो उससे शूल अवश्य होगा और उसके पश्चात् गर्भ रहने पर दो-तीन मास के अन्दर गर्भस्राव होने की भी सम्भावना रहेगी। यदि स्राव

बिलकुल फीके रंग का हो, तो स्त्री प्रायः गर्भ-धारण करने के अयोग्य होती है और यदि भाग्यवश गर्भ रह भी जाता है, तो बालक अति दुर्बल उत्पन्न होता है और प्रायः अल्प अवस्था में ही काल का ग्रास बन जाता है।

३—यदि ऋतुस्राव के पश्चात् या पूर्व श्वेत पानी बहुत जाता हो, अथवा ऋतुस्राव के दिन में रक्त न जाकर उसके स्थान में श्वेत पानी ही जाता हो, तो बहुत भारी अस्वाभाविकता समझनी चाहिए। जिन बालिकाओं को क्षय रोग होनेवाला हो, उनका मासिक धर्म बन्द हो जाना बड़ा ही भयंकर लक्षण है। मासिक धर्म बन्द होने के साथ ही सर्वांग दुर्बल हो जाय, थोड़े से परिश्रम के पश्चात् अधिक थकान मालूम होने लगे, तो चतुर माता का कर्त्तव्य है कि इन लक्षणों के प्रगट होते ही तत्क्षण चिकित्सा करना प्रारम्भ कर दे।

कुछ रोगों के पश्चात् स्त्रियों का मासिक स्राव स्थायी रूप से बिलकुल बन्द हो जाता है। यदि नियमपूर्वक चिकित्सा की जाय, तो फिर स्राव का प्रारम्भ हो जाता है। बहुतसी बालिकाओं की मासिक धर्म होने योग्य अवस्था होने पर अपत्य-पथ की झिल्ली के सम्पूर्ण मार्गावरोध होने के कारण एक विशेष रोग हो जाया करता है, जिसको अङ्गरेज़ी में इम्परफ़ोरेट हाईमेन (Imperforate Hymen) कहते हैं।

इस रोग में युवावस्था आरम्भ होने के समय मासिक

धर्म के सब लक्षण शरीर में होते हुए भी स्राव नहीं होता और प्रति मास बालिका का कष्ट बढ़ता ही जाता है। कुछ मास व्यतीत होने पर उसका पेट फूल जाता है, जिसको देखकर लोग बहुत से भ्रमात्मक सन्देह करने लगते हैं।

ऐसी दशा में माता का तद्विषयक ज्ञान दुःख दूर करने में शीघ्र सहायक हो सकता है।

स्राव का समय उपस्थित होते हुए भी जब स्राव न हो, तो माता को उचित है कि वह स्वयं उसके गुह्य अवयवों की परीक्षा करे, अथवा किसी अन्य योग्य चिकित्सक से परीक्षा करावे।

यदि अपत्य-पथ का बाहरी द्वार बन्द हो, तो तत्क्षण चिकित्सक की सहायता से शस्त्रकर्म (Operation) करा दे। यह शस्त्र-कर्म बहुत ही सीधा है और शीघ्र हो सकता है। किन्तु यह स्मरण रखने योग्य है कि ज्यों-ज्यों समय अधिक होता जायगा, त्यों-त्यों बालिका का कष्ट अधिक बढ़ता जायगा और शस्त्र-कर्म कराने में भी कठिनाई होगी।

कभी-कभी ऐसा भी देखा गया है कि कोई कोई बालिका बहुत बड़ी अवस्था होने पर भी रजस्वला नहीं होती। यदि ऐसी बालिका के स्वास्थ्य में कोई अन्तर न हो, तो कुछ चिन्ता की बात नहीं, किन्तु यदि बालिका दुर्बल और कोमल प्रकृतिवाली हो और उसका शरीर भले प्रकार से गठा हुआ न हो, तो चिकित्सा कराना परम आवश्यक है। पहले

प्रकरण में अस्वाभाविक स्राव के विषय में जो बातें लिखी गई हैं उन सबको ध्यान में रखकर विशेष स्त्री-चिकित्सकों की चिकित्सा कराना चाहिए।

हमारे देश की बहुत-सी देवियों का ऐसा अन्धविश्वास है कि उपर्युक्त अस्वाभाविक स्रावों को रोकने के लिये दाई इत्यादि लोगों के पास ऐसी औषधियाँ हैं जिनके सेवन करने से स्राव, आदि से अन्त तक, बिना किसी कष्ट के, होता रहता है। किन्तु मेरी सम्मति में यह उनका केवल भ्रम-मात्र है। यदि माताएँ अपनी पुत्रियों को प्रथम ऋतुस्राव के समय स्वास्थ्य के साधारण नियमों और प्रथम ऋतुस्राव के विशेष नियमों का पालन करावें तो आजीवन किसी प्रकार का कष्ट होने की सम्भावना नहीं।

किसी माता को यह संकोच करना उचित नहीं कि उसकी पुत्री ऐसे विषय पर लज्जावश विश्वासपूर्वक सब गुप्त भावों को प्रकाशित न करेगी। मेरी सम्मति में इसमें भी माता का ही दोष है; क्योंकि जहाँ माताएँ ऐसी झूठी लज्जा को छोड़ अपनी प्यारी पुत्रियों को ऐसे उपयोगी विषय की प्रारम्भ ही में शिक्षा दे देंगी, वहाँ बालिकाओं में अपनी पूज्य माताओं के प्रति विशेष प्रेम, आदर, विश्वास और आज्ञा-पालकता आ जाएगी।

माताओं को यह उचित है कि वह इस बात का ध्यान रक्खें कि उनकी कन्याओं को प्रति दिन शुद्ध शौच होता है

या नहीं और वह कपड़े आदि भी ठीक प्रकार से पहनती है या नहीं। नित्य शीघ्र सोने और उठने का भी पूर्ण ध्यान रखना उचित है। भोजन की व्यवस्था पर भी ध्यान रखना चाहिए, जिससे भोजन पोषक और सुपाच्य मिले। यह भी देखना चाहिए कि लड़कियाँ उचित मात्रा में उसको खाकर पचा भी लेती हैं या नहीं। इस बात पर भी ध्यान रखना चाहिए कि बालिकाएँ, अपनी आयु और योग्यता के अनुसार, किसी न किसी उपयोगी कार्य में लगी रहें।

प्रिय माताओ, आप अपनी बालिकाओं को बहुत ही छोटी अवस्था में संयमपूर्वक जीवन बिताने के संस्कार उनके शरीर और आत्मा पर डाल सकती हैं। यह संस्कार जितनी छोटी अवस्था में डालेंगी, उतने ही विशेष उपयोगी और प्रभाव उत्पन्न करनेवाले होंगे।

जब बालिका बड़ी अवस्था की हो जाती है, और युवावस्था को प्राप्त होने लगती है, उस समय वह अपने परम उपयोगी आवश्यक विषयों की भी चर्चा अपनी प्रिय माताओं से नहीं करती। इस कारण उसे अनेक हानियाँ होती हैं; और आजीवन वह उन्हें भोगती रहती हैं। ऐसे अनेक उदाहरण हमारे सामने उपस्थित हैं कि इसी प्रकार की अज्ञानताओं में फँसकर वर्तमान समय की नवयुवतियाँ अनेक प्रकार के शारीरिक और मानसिक कष्ट उठा रही हैं।

नीचे लिखे हुए उदाहरण से पाठक-पाठिकाओं को विदित

होगा कि माता और बेटी के बीच में इस प्रकार की झूठी लज्जा रहने और ऐसे आवश्यक विषय पर वार्तालाप न करने से कितनी बड़ी हानि हो रही है।

एक बार एक युवती, जिसके सन्तान नहीं होती थी, मेरे पास आई; और उसने वर्णन किया कि मुझे ऋतुस्राव के समय प्रति मास अत्यन्त कष्ट होता है। मैंने उससे कहा कि तुम अपना सम्पूर्ण कष्ट अपनी माता से क्यों नहीं कहतीं, जिससे वे तुम्हारी चिकित्सा का उचित प्रबन्ध करावें?

उसने उत्तर दिया कि मेरी माता ऐसी बातों को सुनकर बहुत अप्रसन्न होती है। एक बार, जब मैं पाठशाला में पढ़ती थी, और मेरी अवस्था १३-१४ वर्ष की थी: एक सहपाठिका से यह मालूम हुआ कि सन्तान किस प्रकार उत्पन्न होती है और उसमें हमको क्या-क्या कष्ट होते हैं। मैंने इसकी सत्यता जानने के लिये जब अपनी माता से कुछ प्रश्न किए, तो वे बहुत ही क्रोधित हुईं; और मुझे बहुत ही विकृत और भ्रष्ट समझने लगीं। तब से आज पर्यन्त मैंने कभी ऐसे विषय पर उनसे वार्तालाप नहीं किया। विवाह होने पर मैं अनेक कष्ट सह रही हूँ; परन्तु भय के कारण माता से कुछ भी सम्मति नहीं लेती।

इस कथा को पढ़कर पाठिकाएँ समझ गई होंगी कि जब हमारी माताएँ कन्याओं पर विश्वास नहीं रखतीं और कन्याएँ माताओं पर, तब उनका सुधार होना कितना कठिन तथा आवश्यक है।

आशा है, अब मातायें और बहनें अपनी सन्तान के प्रति ऐसा अपराध न करेंगी। इस विषय को समाप्त करने के पूर्व यह उचित प्रतीत होता है कि माताओं को फिर साव॰धान कर दिया जाय कि किसी समय में भी अस्वाभाविक रक्तस्राव हो और विशेषकर उस समय में, जब कि प्राकृतिक रक्तस्राव बन्द हो चुका हो, तो तुरन्त ही अच्छे चिकित्सक की चिकित्सा करावें। स्वाभाविक नियम यह है कि मासिक स्राव धीरे-धीरे, बिना किसी उपद्रव के, ३७ वर्ष की आयु के बाद बन्द हो जाना चाहिए।

बन्द होने पर एक या दो वर्ष के बाद फिर रक्त का आना अस्वाभाविकता और किसी विशेष रोग का सूचक है। चाहे रक्त न्यून आवे या अधिक, किन्तु उसको भयंकर लक्षण समझकर तत्क्षण ही चिकित्सा करने का प्रयत्न करे। हर प्रकार के अस्वाभाविक रक्तस्राव में चतुर और अनुभवी चिकित्सक की सम्मति के अनुसार चिकित्सा करना आवश्यक है। बहुत-सी मातायें अथवा बहनें मूर्ख दाइयों की चिकित्सा करके अपनी दशा और भी बिगाड़ लेती हैं। इस कारण आराम होने के स्थान में रोग असाध्यता की सीमा तक पहुँच जाता है। अतः बहनों से प्रार्थना है कि वे सावधानतापूर्वक स्वास्थ्य रक्षा के नियमों का पालन करें और रोग होने पर योग्य चिकित्सकों से चिकित्सा करावें।

श्वेतप्रदर (Leucorrhea)

इस रोग के लिये स्त्रियों की कोई अवस्था नियत नहीं है। हाँ, यह अवश्य है कि जब स्त्री शक्तिशालिनी और युवावस्था में होती है, तब इसका प्रभाव कम होता है। सब स्त्रियों के श्वेतप्रदर का रंग श्वेत ही नहीं होता बल्कि पीले रंग का होता है। हाँ, रक्त के समान दाग़ उत्पन्न करनेवाला नहीं होता।

साधारणतया देखने से श्वेतप्रदर की बनावट ऐसी प्रतीत होती है, जैसी अण्डे की सफ़ेदी। यदि इसको कपड़े पर लगाकर सुखाया जाय, तो अण्डे की सफ़ेदी की भांति ही गाढ़ा हो जायगा। जिन स्त्रियों को सूज़ाक आदि भयंकर व्याधियों के बाद यह रोग होता है, उनका स्राव पुराने तथा बिगड़े हुए ज़ुकाम के श्लेष्मा के समान होता है। इस स्राव का कपड़े के ऊपर पीला दाग़ पड़ जाता है। यह स्राव जब गर्भवती स्त्री को प्रारम्भ होता है, तब इसकी बनावट दही के समान होती है। उस समय यह बहुत अधिकता से जारी रहता है।

साधारण श्वेतप्रदर में किसी प्रकार की गन्ध नहीं आती। छोटी छोटी कन्याओं से लगाकर १०-१२ वर्ष की बालिकाओं तक को यह रोग उसी दशा में होता है जब उनको जन्म से सूज़ाक हो, या पीछे दुष्ट संसर्ग से उत्पन्न होगया हो। कभी-

कभी मलिन पदार्थों के गुह्य अवयव में प्रवेश होने से अथवा पतले पतले कीड़ों के गुदा मार्ग से आकर प्रवेश होजाने से भी हो जाता है। वे कीड़े प्रायः मलद्वार से निकल कर अपत्य-पथ (योनि-मार्ग) में प्रवेश कर जाया करते हैं, जिससे अपत्य-मार्ग में दाह होती है और धीरे-धीरे शोथ उत्पन्न हो जाने के बाद श्वेतस्राव प्रारम्भ हो जाता है। बहुत-सी बालिकाओं को हाथ आदि से विकृति करने के कारण भी यह स्राव प्रारम्भ हो जाया करता है।

तरुण कन्याओं को यह रोग उत्पन्न होने का कारण अल्प मात्रा में भोजन कर अधिक परिश्रम करना होता है। यह रोग उन कन्याओं को विशेषकर होता है, जिनको दूकानों में खड़े-खड़े कार्य करना पड़ता है, या जिनको क्षय रोग होने को होता है। उन्हें मासिक स्राव के पूर्व या पश्चात् अधिक मात्रा में श्वेत प्रदर का दौरा होता है, और रोग की अधिक भयङ्करता उत्पन्न होने पर मासिक स्राव के रक्त के स्थान में श्वेत प्रदर ही जारी हुआ करता है।

स्त्रियों को भी प्रायः ऊपर लिखे कारणों से ही यह रोग उत्पन्न होता है। किन्तु जिन स्त्रियों के सन्तान उत्पन्न हो चुके हैं, उनको गर्भाशय की विकृति से भी यह रोग उत्पन्न हो सकता है।

गर्भवती स्त्रियों को यह स्राव प्रायः बहुत ही कण्डु-जनक (खाज पैदा करनेवाला) और अधिक मात्रा में होता है।

खुजली इतनी अधिक तीक्ष्ण होती है कि स्त्रियाँ अपने गुह्य-प्रदेश को खुजलाकर ज़ख़्मी बना लेती हैं। ऐसी दशा हो जाने के पश्चात् वे चिकित्सक की सहायता प्राप्त करती हैं। वृद्ध स्त्रियों को भी यह रोग हो जाता है। उनके दही के समान स्राव हुआ करता है। किन्तु उनको इससे कोई विशेष हानि नहीं होती।

चिकित्सा

छोटी-छोटी बालिकाओं के जन्मते ही उनके गुह्य भाग से किसी प्रकार का स्राव होता दृष्टि पड़े तो दाई का यह कर्त्तव्य है कि वह तुरन्त ही उसको अच्छी तरह समझा दे, और योग्य चिकित्सक की सहायता का प्रयत्न करे।

भाग्यवश यदि दाई आदि न हो, तो उस समय माता का कर्त्तव्य है कि बालिका के गुह्य भाग से निकले हुए स्राव को किसी टीन के बर्तन या चौड़े मुखवाली शीशी में एकत्र करके रक्खे, और फिर चिकित्सक से उसकी परीक्षा करावे। जिन बालिकाओं के गुह्य भाग से स्राव होता हो, उनके उस भाग को बारीक नरम मलमल के साफ कपड़े से खूब सावधानी से तथा धीरे धीरे पोछकर उनकी योनि के दोनों भागों को धीरे से अलग अलग करके बीच में पुटासियम परमेंगनेट (एक अँगरेज़ी औषधि) के मिले हुए गरम जल से अथवा नीम, त्रिफला, बबूल, आम, जामन, गूलर, पिलखन, पीपल आदि की छाल के काढ़े से धोवे; और चिकित्सक

की वतलाई हुई औषधि को नियमपूर्वक सेवन करावे। नर्स या माता जो वालिका की शुश्रूषा करती हो, उसको अपने हाथों की सफ़ाई पर विशेष ध्यान रखना चाहिए। यदि उसके हाथों में घाव हो, तो उनको प्रोटेक्टिव टिश्यू (Protective tissue) नामक झिल्ली, जो वाज़ार में विकती है, उससे ढक देना चाहिए। यदि वह झिल्ली प्राप्त न होसके, तो एक धुले हुए साफ़ कपड़े से उस स्थान को वाँध देना चाहिए। कार्य करने के पश्चात् उसको खोलकर जला देना उचित है। यदि बड़ी अवस्था की वालिकाओं को यह कष्ट हो, तो उसके कारण का ठीक ठीक निश्चय करना चाहिए। जव कारण प्रतीत होजाय, तव चिकित्सक की सम्मति के अनुसार चिकित्सा कराना उचित है। जब तक चिकित्सक न मिले, नीचे लिखी हुई विधि के अनुसार उपचार करना चाहिए।

वालिका को खाट पर लिटाकर उसके नीचे वेडपैन* (Bed pan) या कोई अन्य उपयुक्त पात्र कार्य में लावे। यदि ऐसा प्रबन्ध न हो सके तो वालिका को खाट के किनारे पर इस ढंग से लिटावे कि उसके यह अवयव (योनिमार्ग) किनारे पर आ जायँ और निचे एक वालटी रख ली जाय; फिर वालिका के अपत्य-पथ के वाहरी भाग को साफ़ मलमल के धुले हुए कपड़े और उवले हुए गरम जल से भली भाँति धोवे, जिससे वहाँ की मलिनता दूर हो जाय।

---

* एक अंग्रेज़ी ढंग का बना हुआ चीनी का बर्तन होता है; जिसमें लेटे हुए सुबीते के साथ दस्त कराया जा सकता है।

इसके बाद सवा सेर शीतल जल में ढाई तोला पुटासियम-परमेगनेट का घोल बना उसको टोंटीदार लोटे में भर उसे दहने हाथ में पकड़कर अपत्य-पथ से फुटभर ऊँचा रक्खे। फिर बाएँ हाथ से अपत्य-पथ के दोनों ओष्ठ खोलकर धीरे-धीरे इस पानी की धार उसके ऊपर डाले। बाद में साफ़ करके पोछले।

बड़ी अवस्थावाली स्त्रियों और युवतियों के लिये भी आवश्यक है कि उनके इस रोग का कारण जान लिया जाय। उनके शारीरिक स्वास्थ्य, आस-पास के स्थान तथा कुसंगति से बचने का ध्यान विशेषकर रखना चाहिए।

जहाँ तक सम्भव हो, इस रोग से पीड़ित कन्याओं तथा युवतियों को खूब शुद्ध वायु में घूमना और रहना चाहिए। उनके लिये उचित है कि दिन में दो बार अपने प्रसव-पथ को शीतल जल से धो डालें। यह स्मरण रक्खें कि चिकित्सक की सम्मति तथा देख-रेख के बिना पिचकारी कदापि न लगावें। क्योंकि गन्दी और मलीन पिचकारियों के व्यवहार और अनुपयुक्त औषधियों के सेवन से बहुत हानि होती है। इसमें सन्देह नहीं कि श्वेतप्रदर की अनेक दशाओं में पिचकारी करने से लाभ होता है, किन्तु यह सुचिकित्सक की सम्मति और देख-रेख में ही फलप्रद हो सकता है। यह उचित प्रतीत होता है कि नीचे-लिखी हुई दशाओं में भारतीय माताएँ चिकित्सा करने के लिये सावधान रहें —

१ श्वेतप्रदर की अधिकता
२ रंग में पीलापन
३ प्रसव-पथ में गर्मी अधिक प्रतीत होना
४ नीचे के भाग में भारीपन प्रतीत होना
५ मूत्र के वक्त जलन तथा दर्द होना

ऐसी दशाओं में शीघ्र ही चिकित्सा करानी चाहिए, अन्यथा सदा के लिये जननेन्द्रिय-सम्बन्धी कोई असाध्य रोग लग जाता है; क्योंकि इन दशाओं में पिचकारी आदि से कुछ लाभ नहीं होता। इस कारण इसका प्रयोग व्यर्थ है। यदि पतला श्वेत रंग-सहित स्राव अधिकता से होता हो, और प्रसवपथ में सूजन-सी प्रतीत होती हो तो समझना चाहिए कि गर्भाशय में केन्सर नामक दूषित घाव होनेवाला है।

बहुत-सी स्त्रियों का अंध-विश्वास है कि केन्सर-नामक फोड़ा होने के पूर्व गर्भाशय में शूल होता है। किन्तु योग्य चिकित्सकों की सम्मति है कि शूल केवल उसी दशा में होता है, जब यह रोग शस्त्र-कर्म (आपरेशन) करने के योग्य हो जाता है। कभी-कभी रक्त-स्राव होना भी रोग की बढ़ी हुई दशा का सूचक होता है। साधारणतः मनुष्यों का यह अनुमान है कि केन्सर होने पर स्राव में भयंकर दुर्गन्धि आने लगती है। हाँ, प्रारम्भिक दशा में दुर्गन्धि नहीं होती। यदि प्रारम्भिक दशा में यह पता लग जाय कि केन्सर है,

और उसका उचित उपाय या शस्त्र-कर्म हो जाय तो दश में से नौ हाल की रोगिनियाँ नीरोग्य हो सकती हैं।

अन्यथा इस रोग में विलम्ब करना हानिकारक है। अस्तु। अब इस विषय में विचार किया जायगा कि श्वेतप्रदर स्वतन्त्र रोग है, या अन्य रोगों के साथ लक्षण-रूप में प्रगट होता है।

पहले तो यह आवश्यक है कि चिकित्सक से इस बात का निर्णय कर लिया जाय, कि रोग को कौनसी दशा है, और रोग का निर्णय हो जाने के बाद चिकित्सा कराना उचित है। संकोचक औषधियों की पिचकारी देने से निसन्देह कुछ लाभ होता है; किन्तु यह लाभ थोड़े समय के लिये ही होता है। यदि खाने की औषधि सेवन करके सारे शरीर में, और विशेष-कर जननेन्द्रिय में, शक्ति उत्पन्न की जाय तो भी यह रोग दूर हो सकता है।

श्वेतप्रदर जब भयंकर हो जाता है, तब शरीर को बहुत हानि पहुँचाता है। रोगिणी की चलने फिरने की शक्ति नष्ट हो जाती है। सदाके लिये उसका स्वास्थ्य बिगड़ जाता है। साधारण धूल आदि लग जाने से यदि शोथ होजाय, और उसी के कारण प्रदर रोग उत्पन्न हो जाय, तो उसकी चिकित्सा कराने में भी असावधानी करना हानिकारक है।

नित्य श्वेतप्रदर के जारी रहने से पाण्डु रोग (पीलिया), गर्भाशय के अनेक रोग, मानसिक दुर्बलता, योषाअपस्मार

(हिस्टीरिया) आदि अनेक रोग हो जाते हैं। हमारे देश की स्त्रियाँ प्रायः श्वेतप्रदर की चिकित्सा कराने में असावधानी करके अपना सौन्दर्य और शरीर का संगठन खो देती हैं। यदि योनि की शुद्धता रखने पर पूर्ण ध्यान दिया जाय, तो इस दुर्बलता-उत्पादक रोग से वे बची रह सकती हैं। मेरी सम्मति में स्त्रियों को दिन में दो या एक बार अपने गुप्त अंग को साबुन और जल से धोकर अवश्य शुद्ध कर लेना चाहिए।

जननेन्द्रिय की अस्वाभाविक उत्तेजना

(Masturbation, Self-abuse)

अत्यन्त खेद के साथ इस विषय पर लेखनी उठाने का साहस किया जाता है। यह विषय ऐसा है, जिसमें आत्मा के विरुद्ध, अज्ञानतावश, अपने ही हाथ से विकृति करके बालक-बालिकाएँ हानि उठाती हैं। इसलिये यहाँ इस विषय पर भी प्रकाश डालना आवश्यक है।

आशा है, चतुर माताएँ अपने बालकों का शुद्ध स्वास्थ रखने के लिये इस विषय पर पूरा पूरा ध्यान रक्खेंगी; और अपने बालक-बालिकाओं को इस बुरी आदत से बचाने का पूरा पूरा प्रयत्न करेंगी।

हस्त-मैथुन का दुर्व्यसन और उससे उत्पन्न होनेवाले उपद्रव इतने भयङ्कर और शरीर को दुर्बल करनेवाले हैं कि उनकी हानियों को केवल वही चिकित्सक और चिकित्सका समझ सकते हैं जो सदैव ऐसे युवक-युवतियों और बालक-बालिकाओं की चिकित्सा करने में दत्त चित्त रहते हैं।

भारतवर्ष में कम उम्र में विवाह होने के कारण पहले यह दुर्व्यसन कम दृष्टि पड़ता था। किन्तु अब नवीन शिक्षा-प्रणाली का प्रचार होने के साथ ही साथ कन्याओं और बालकों में यह दुर्व्यसन अधिकता से बढ़ता

जाता है। इसके कारण तथा वचने के उपाय नीचे लिखे जाते हैं —

१—माता और पिता का कर्त्तव्य है कि घर में, वालकों के सन्मुख, काम-विषयक वार्तालाप विलकुल न करें। किन्तु शोक है कि हमारे यहाँ की माताएँ अपने वालक-वालिकाओं को छुटपन में उनके विवाह की बातें बतलाकर ही अपना मनोविनोद करने में सौभाग्य समझती हैं; इस प्रकार की बातें गायन और गुड़ियों के विवाह आदि खेल, उनके मस्तिष्क को बचपन से ही गन्दा बना देते हैं, जिससे उनके अन्दर की वास्तविक पवित्रता और ब्रह्मचर्य का संस्कार जड़मूल से नष्ट हो जाता है। फिर जब वही वालक उन बातों पर विचार करने लगते हैं, तब हस्त-मैथुनी रूपी दुर्व्यसन में फँस जाते हैं। इस बुरी आदत के सीखने का दोष उनके अज्ञान, विषयी, अविचारशील माताओं के ही शिर पर है। क्योंकि यह दुर्व्यसन गन्दी बातें देखने, सुनने, उनपर विचार करने तथा हृदय में अपवित्रता उत्पन्न होने के ही कारण उत्पन्न होता है।

२—इसका दूसरा कारण यह है कि माता-पिता अपने वालकों को प्राकृतिक, शारीरिक, क्रिया-विज्ञान के नियमों को भली प्रकार नहीं समझाते।

इस कारण माता का सबसे प्रथम कर्त्तव्य है कि छोटी अवस्था में जब बच्चा मदरसे में पढ़ने लगे, और वहाँ की

पढ़ाई भी समझने लगे, उसी समय उसको अत्यन्त उपयोगी और आवश्यक गर्भोत्पत्ति सम्बन्धी बातें सरल, मधुर और हृदयग्राही भावों में भली भांति समझाने का प्रयत्न करें, जिससे वह मनुष्य की प्रारम्भिक उत्पत्ति को भली प्रकार समझ जावे*। इस बात को समझाने के लिये यह सरल उपाय है कि मुर्ग़ी जब अण्डे पर बैठी हुई हो तब उसको

* हमारी राय में छोटी अवस्था में बालकों को ऐसी बातों के समझाने इत्यादि की कोई आवश्यकता नहीं है; क्योंकि इससे लाभ के बदले हानि होने की अधिक सम्भावना है। बालक और बालिकाओं में हस्त-मैथुन की आदत पड़ जानेका मुख्य कारण बुरे लड़के लड़कियों का साथ ही है। इसलिये माता-पिता का कर्त्तव्य है कि अपने बालक-बालिकाओं की पूरी पूरी दिनचर्या पर निगहबानी रक्खें। इस बात की जांच करते रहें कि, इस समय हमारा बालक कहां पर किन लड़कों के साथ खेलता-कूदता है। इसके सिवाय मदरसों के अध्यापकों का भी कर्त्तव्य है कि, वे विद्यार्थियों पर पूरा पूरा निरीक्षण रखें। दुष्ट बालकों की संगति से बचाने का पूरा पूरा प्रयत्न होना चाहिए। इसके अतिरिक्त माता-पिता तथा अध्यापकों का स्वयं सदाचारी होना अत्यन्त आवश्यक है। ब्रह्मचर्य के नियमों का पालन स्वयं करना चाहिए; और दूषित वार्तालाप तथा दुष्ट संगति से स्वयं बचकर बालकों को बचाना चाहिए। यदि आवश्यकता हो, तो ब्रह्मचर्य और वीर्य-रक्षा के अनुपम लाभ का उपदेश कर सकते हैं। पर इस बात की कोई आवश्यकता नहीं है कि बालकों को मैथुन इत्यादि की क्रिया समझावें और उस पर व्याख्यान दें।

—सम्पादिका।

दिखाकर परमात्मा की विचित्र लीलाओं का इस ढँग से वर्णन करके समझावें कि गर्भाशय के अन्दर के बच्चे की, उसके पैदा होने तक की, सारी दशा भली भांति समझ में आ जाय। बालक के उत्पन्न होने और उसके लालन-पालन करने में माता को जो कष्ट होता है, उससे भी बालकों को उचित शिक्षा दी जा सकती है। इसके अतिरिक्त गुह्य इन्द्रियों को शुद्ध रखने तथा उसको असमय पर व्यर्थ स्पर्श करने की हानियाँ भी बालकों को समझा देना चाहिए।

उनको यह भी बतला देना चाहिए कि ये बहुत लज्जा के स्थान हैं। इस कारण उनको किसी के सन्मुख न खोलें। इस प्रकार के उपदेश सदैव एकान्त स्थान में दें और बालक के मस्तिष्क में यह बात भले प्रकार भर दें कि यह बात अत्यन्त गुप्त रखने-योग्य तथा रहस्यमय है। यह विषय इतनी सरलता से समझाना चाहिए जिससे मन में शंका न रहे, और बालक को अनुमान करने की आवश्यकता न पड़े। माता को उचित है कि उपदेश करते समय वह अपनी वृत्ति ऐसी स्थिर और गम्भीर रक्खे, जिससे बालक-बालिकाएँ ऐसी बातों को मज़ाक़, हास्य-विषय, या अयोग्य कथा समझकर अवहेलना न करने लगें। उनको यह भी समझा दिया जाय कि ऐसी बातें अपनी सखियों और मित्रों से प्रकट न करें, यदि कोई साथी ऐसे विषय पर चर्चा

करे, तो आकर अपनी माता से स्पष्ट कह दें, और उसकी आज्ञा का पालन करें। उनको यह पूर्ण विश्वास रहना चाहिए कि हमारी माता इस विषय में सब बातें जानती है; और पूछने पर वह सब ठीक ठीक बतला देगी।

एक बार भली भाँति उपदेश करने के बाद बार बार इसी विषय का ध्यान दिलाने की आवश्यकता नहीं।

सम्भवतः हमारी लज्जावती पाठिकाएँ और पाठक गण इस बात पर आक्षेप करें कि ऐसी लज्जाजनक बातें कोमल स्वभाव के अज्ञान बालक-बालिकाओं के सन्मुख प्रकट करने से उनके सुन्दर स्वच्छ पवित्र विचारों में परिवर्त्तन हो जायगा और लाभ के स्थान पर वे इससे हानि ही अधिक उठावेंगे; किन्तु हमारा विचार इसके विपरीत है। बालक-बालिकाएँ आगे चलकर उत्पत्ति संबन्धी ज्ञान अवश्य ही किसी-न-किसी प्रकार प्राप्त कर लेती हैं।* इस प्रकार ऊटपटाँग रास्ते † से ज्ञान प्राप्त करने की अपेक्षा यह उत्तम है कि माता के द्वारा सीधी-सादी भाषा में सच्चा और उचित उपदेश प्राप्त करलें।

---

* उत्पत्ति ज्ञान युवावस्था प्राप्त होने पर आप ही आप हो जाता है। लड़कपन में इसके लिये किसी विशेष शिक्षा की आवश्यकता नहीं।

—सम्पादिका

† ऊटपटांग रास्तों से बालक-बालिकाएँ न जाने पावें—इस बात का निरीक्षण रखना ही पर्याप्त है।

—सम्पादिका

जब बालकों को अन्य मार्गों से ऐसी बातें सीखने को मिलती हैं तब वे हँसी-मज़ाक़, गन्दे इशारे, गन्दे गीत आदि के द्वारा, अनुचित रीति से, मिलती हैं। इस कारण वे अनेक प्रकार की मिथ्या कल्पनाएँ अपने मस्तिष्क में कर लेते हैं। उसका फल यह होता है कि वे एकान्त में या दूसरे बुरे लड़के-लड़कियों के साथ बैठकर अपने उत्पत्ति-कारक अवयवों को अप्राकृतिक रीति से (हस्त-मैथुन-द्वारा) उत्तेजित करने लगते हैं।

प्रिय पाठिकाओ, इस बात का पूर्ण विश्वास रक्खो, यदि आप अपनी प्यारी पुत्रियों को मधुर, सरस, भाव-पूर्ण भाषा में उत्पत्ति-संबन्धी बातें पहले से ही समझा दोगी (जो उनको आपके ऋतुस्राव, गर्भस्थिति, प्रसव आदि के रूप में प्रायः समय-समय पर देख पड़ती हैं। और अपने भविष्य जीवन में अनुभव में आवेंगी) तो वे इस प्रकार के ख़याली घोड़े दौड़ाकर अपने अमूल्य जीवन को कदापि नष्ट न करेंगी।

आपके सच्चे, शुद्ध और निष्कपट ज्ञान भरे उपदेशों को जान लेने पर जब उनके भाव पवित्र और सुदृढ़ हो जायँगे, तब यदि कोई हानिकारक विचार उनके हृदय में उत्पन्न होगा या किसी के द्वारा उपस्थित किया जायगा, तो वे अपने आचार-विचार और आप के अमृत-रूपी उपदेश-ज्ञान से उसकी हानियों को समझकर अपनी रक्षा करने में समर्थ होंगे। जब तुमको गर्भवती या रजस्वला देखकर

बालिकाएँ इस संबन्ध के विशेष प्रश्नों को पूछें, तो प्रेम और नम्रता-पूर्वक उनको सब सच्ची बातें, सभ्य भाषा में, यथार्थ रूप से, समझा दो। इस प्रकार समझा देने से जब वे तुम्हारे प्रसव के कष्ट या बालकों की सेवा-सुश्रूषा की कठिनाइयों पर विचार करेंगी, तब उनके भाव तुम्हारे प्रति उच्च, सन्मानयुक्त और प्रेम-युक्त हो जायँगे। वे यह विचार करने लगेंगी कि हमारी माताओं ने भी हमारे लिये प्रसव-संबन्धी अनेक प्रकार के कष्ट सहकर हमारा लालन-पालन किया है। इस प्रकार के उपदेशों से उनका अपनी माताओं के ऊपर अविरत विश्वास भी बना रहेगा। विलायत में बहुत से मनुष्यों ने इस प्रकार के उपदेश देकर अनुभव किया है कि उनके बालक-बालिकाओं में हस्त-मैथुन का दुर्व्यसन बिलकुल अज्ञात रहा। यह दुर्व्यसन उस समय उत्पन्न होता है, जब बालिकाओं के गुप्त अँग में कृमि या धूल चले जाने से खुजली होती है, या श्वेतप्रदर के कारण खुजली और जलन होती है। उस समय वे उस स्थान को बार-बार खुजलाने की चेष्टा करती हैं, जिससे उनको हस्त-मैथुन करने की आदत पड़ जाती है। कभी-कभी मासिक धर्म के समय जो वस्त्र गुप्त अंग में रक्खा जाता है, उसके तंग या कठिन होने से भी खुजली और जलन उत्पन्न होती है। इससे भी यह व्यसन उत्पन्न हो जाता है।

इसके लिये सबसे आवश्यक बात यह है कि जिस

कारण से उस स्थान को स्पर्श करने या खुजलाने की आवश्यकता हो, उसको सबसे प्रथम दूर करे। इसके सिवा बेकार बैठना, गंदी पुस्तकों को पढ़ना, बिस्तरे पर बिना नींद के पड़े रहना, विशेषकर मासिक धर्म के दिनों में, अधिक हानिकारक है।

मन और शरीर का हर घड़ी किसी न किसी कार्य में लगा रहना अति आवश्यक है। काम करते रहने से ही मनुष्य सर्वोत्तम गुणों का विकास कर सकता है। शोक है, हमारे देश में, विशेषकर मध्यम और उच्च श्रेणी के लोगों में, शारीरिक परिश्रम करना हीनता का द्योतक समझा जाता है। इस कारण बालक-बालिकाएँ गन्दे उपन्यासादि पढ़ने में समय व्यतीत करती हैं। इसका जो बुरा फल होता है, वह किसी से छिपा नहीं है।

धनिक तथा मध्यम श्रेणी के माता-पिताओं से हमारा सप्रेम तथा साग्रह निवेदन है कि वे अपने बालक-बालिकाओं से इतना शारीरिक और मानसिक परिश्रम करावें जिससे उनका शरीर और मन दिनभर कार्य में लगा रहे, तथा वे घर के सब कार्य सुन्दर, नियमित रूप से और विज्ञान-सम्मत रीति से करने में समर्थ हों, और गहरी सुख-निद्रा लेने के आदी हो जायँ। ऐसा करने से वे दुर्व्यसनों से बचे रहेंगे, और उत्तम माता-पिता तथा पति-पत्नी बनने के भी अधिकारी होंगे। परन्तु दुःख के साथ लिखना

पड़ता है कि हमारी गृहणियाँ, माताएँ और भगनियाँ तो इन महत्व-पूर्ण बातों को समझती ही नहीं, घर का सब कार्य नौकरों पर विश्वास रखकर ही चलाना चाहती हैं, एवं भोजन बनाना, घर साफ़ करना आदि कामों को घृणा की दृष्टि से देखती हैं। यदि हमारी महिलाएँ सीने-पिरोने के अतिरिक्त उन कामों को भी करना शुरू कर दें, जिन्हें नौकरों के ही करने का कार्य समझती हैं, तो नौकरों का दबाव कम हो जायगा, घर का काम सुचारु रूप से होने लगेगा, और शारीरिक व्यायाम होने से उनके स्वास्थ्य में भी सुधार होगा। इससे उनके मन और शरीर को इतना काम मिलेगा कि वे मनोविनोद-पूर्वक अपना समय बिताकर गृहस्थी का सच्चा आनन्द प्राप्त कर सकेंगी, और अपनी सन्तान को छोटे-छोटे कामों की शिक्षा देने में सहज ही समर्थ होंगी।

जो गृहस्थ बहनें उक्त सम्मति को व्यवहार में न ला सकें, उनको उचित है कि वे अपने बालक-बालिकाओं को लानटेनिस, बेडमिन्टन, पिंगपांग आदि नवीन पद्धति के खेलों-द्वारा व्यायाम करावें। स्मरण रखना चाहिए कि बालक-बालिकाएँ, बूढ़े मनुष्यों की भाँति, अपने गत कर्मों को सोचकर दिन नहीं बिता सकते। उनके लिये शारीरिक और मानसिक कार्यों की आवश्यकता होती है। यदि उनको कुछ कार्य न होगा, तो अवश्य बुरी आदतें सीख जायँगे।

गन्दी पुस्तकें पढ़ने से भी उनके मन पर बड़ा बुरा प्रभाव पड़ता है। इस कारण उचित है कि उत्तम-उत्तम पुस्तकें जो धार्मिक, नैतिक, व्यावहारिक और सामाजिक विचारों को प्रगट करनेवाली हैं, अथवा इतिहास, भ्रमण-वृत्तान्त, महापुरुषों के जीवन-चरित्र, गल्प और उपन्यास भी पढ़ने के लिये दें, जिसमें मनुष्यों के उत्तम आचार-विचार और कार्यों का वर्णन हो, जिनके सुप्रभाव से उत्तम गुणों को समझने तथा व्यवहार में लाने की शक्ति उनमें उत्पन्न हो।

विना नींद आए बिस्तर पर लेटे रहने के विषय में प्रथम भी लिखा जा चुका है; और आवश्यक समझकर अब फिर उस पर लिखा जाता है।

प्रथम बार रजस्राव होने के समय तख़्त पर लेटें और दिन के समय में हाथ से कुछ हलकासा काम करती रहें, जिससे नींद न आवे। अन्यथा दिन में नींद आजाने से रात-भर स्वप्न आते रहते हैं, जिससे गुह्य अवयव के अन्दर विशेष परिवर्तन होने से उस स्थान को हाथ से मसलने की आदत पड़ जाती है, और यही दुर्व्यसन आगे जाकर हस्त-मैथुन के प्रारम्भ की जड़ बन जाती है। इस कारण माता-पिता को उचित है कि वे यह नियम बना लें कि जब तक बालकों को नींद अच्छी तरह न मालूम हो, तब तक उनको बिस्तर पर कभी न लेटने दें।

विना नींद के ख़ाली समय में बिस्तर पर लेटना उन्हीं

के लिये लाभदायक हो सकता है, जो वृद्ध दुर्बल अथवा रोगी हैं।

बालक-बालिकाओं के लिये यह भी उचित है कि जब वे नींद-भर सो चुकें, तो उन्हें तुरंत पलँग से उठा देना चाहिए। हमारे देश में, छोटी अवस्था में बालक-बालिकाओं का वाक्दान (सगाई) और विवाह आदि करने की रीति है। बस, यही प्रथा बुराई सिखाने की सबसे पहली सीढ़ी है। इससे बालिकाएँ छोटी अवस्था ही में पति-पत्नी-संबंधी बातों का विशेष विचार करती रहती और उन्हीं क्रियाओं का अनुमान करती हुई इस दुर्व्यसन में फँस जाती हैं। जब वह दुर्व्यसन लगता है, तो कुछ मालूम नहीं देता। प्रारम्भ में तो बालक अन्य दूसरे बालकों की भाँति रहता है; किंतु ज्यों-ज्यों यह आदत बढ़ती जाती है, त्यों-त्यों उसमें चांचल्य, एकांतवास, अन्य संगिनियों से बचने की चेष्टा, संकुचित रहना, मेहनत के काम से घबराना, निद्रा की कमी, मलावरोध होना, भूख कम लगना, हाथ-पैरों का शीतल रहना और पसीना आना, प्रातः समय हाथ-पैर और कमर में दर्द होना इत्यादि लक्षण दिखाने लगते हैं।

बुद्धिमती और विचारशील माता का कर्त्तव्य है कि वह इन लक्षणों को देखते ही बहुत ध्यानपूर्वक बालिका के सब आचरणों का निरीक्षण करे। इस प्रकार देखते रहने से श्वेतप्रदर, मानसिक विचारों की चंचलता और शरीर में

अग्राह्य दुर्गंधि के लक्षण उसको दिखाई देंगे। ऐसी दशा उत्पन्न होने पर यदि इस दुर्व्यसन को छुड़ाने का पूर्ण प्रयत्न नहीं किया जाता, तो योषाअपस्मार (Hysteria) या अपस्मार (Epilepsy) आदि रोग उत्पन्न हो जाते हैं। इनके अतिरिक्त शरीर के अंगों में दुर्बलता, मानसिक विकृति, कार्य करने की शक्ति का अभाव, वंध्यत्व, जड़ता और उन्माद इत्यादि रोग भी हो जाते हैं।

एक रोगिणी का वृतांत हमें मालूम है। उसका विवाह नियत समय पर हुआ; परंतु बहुत समय तक गर्भ-स्थिति न हुई। अनेक चिकित्सकों ने परीक्षा की, पर वंध्या होने का कोई प्रत्यक्ष कारण समझ में न आया। अधिक पूछ-ताछ करने पर उसने स्वयं यह स्वीकार किया कि विवाह होने के पूर्व मैंने हस्तमैथुन किया था। यह सुनकर मुझे यह दृढ़ विश्वास हो गया कि संतान न होने का एक कारण यह भी है। जब उसको यह विदित हुआ तब उसको इतना पश्चाताप हुआ कि उसका मस्तिष्क ख़राब होकर उन्माद रोग होगया।

मैं आशा करता हूँ कि बुद्धिमती पाठिकाएँ इस विषय पर विचार कर इस दुर्व्यसन को रोकने में कृतकार्य होंगी। उनके स्मरणार्थ फिर यह लिख देना उचित प्रतीत होता है कि जब उन्हें अपने बालक या बालिका में इस दुर्व्यसन की संभावना मालूम हो, तो अन्य बालक-बालिकाओं को उनसे

अलग रखने का पूर्ण प्रयत्न करें, और अपने विश्वासपात्र गृह-चिकित्सक की सम्मति के अनुसार चिकित्सा कराने का प्रबंध करें।

माता को उचित है कि बालक को इस दुर्व्यसन की हानियाँ प्रेमपूर्वक समझावें और इसके छोड़ाने के उपाय भी बतलावें। बालक को डाँट-डपटकर ताड़ना करना ठीक नहीं। उसको प्रेम-पूर्वक यह समझाने का प्रयत्न करें कि इस दुर्व्यसन से बड़ा पाप होता है, क्योंकि परमात्मा मनुष्य की गुप्त से गुप्त क्रियाओं को देखता है। उससे छिपाकर हम कोई भी कार्य नहीं कर सकते। चोरी करना कितना बुरा काम है। यह भी एक प्रकार की चोरी है। इस कारण इससे घृणा करनी चाहिए। यदि हम अपने किए हुए कर्मों पर पछतावा करते हुए उससे क्षमा मागेंगे, तो वह अवश्य क्षमा कर देगा, क्योंकि वह सदैव दुर्गुणों से बचने की शक्ति देता है।

प्रिय पाठिकाओ, इस दुर्व्यसन की हानियों को इस प्रकार समझाओ, जिससे बालक-बालिकाओं के हृदय पर पूर्ण प्रभाव हो, और वे इससे घृणा करके मुक्ति प्राप्त करें। इससे आप की प्यारी संतान का भविष्य निर्मल और सुख-दायी होगा, तथा देश का भला होगा।

वंध्यत्व

वंध्यत्व विवाहित स्त्री-पुरुषों को होने वाला रोग है। इस रोग में स्त्री अथवा पुरुष के अंदर संतान-जनन-शक्ति का अभाव होजाता है।

इस कारण उन्हें विवाह-रूपी पवित्र यज्ञ का फल प्राप्त नहीं होता। पति अथवा पत्नी इन दोनों में से एक के अंदर यह दोष हो जाय, तो दोनों ही के कार्य और उद्देश्य अपूर्ण रहते हैं।

अतः इस विषय का ज्ञान प्राप्त करना देश के प्रत्येक व्यक्ति (स्त्री हो या पुरुष) के लिये अत्यंत आवश्यक और महत्व-पूर्ण है।

आज-कल के धनिक-समाज में प्रायः यह देखा जाता है कि उनके यहाँ संतान का अभावही रहता है। इसका एक-मात्र कारण रति-शास्त्र (काम-शास्त्र) विषयक अज्ञान और बाल-अवस्था का विवाह है। जिस समय तक बालक-बालिकाएं संसार के ज्ञान की प्रथम श्रेणी में प्रवेश करने की योग्यता प्राप्त नहीं कर सकतीं, उससे पूर्व ही उनके मस्तिष्क पर अपने आपको अपनी संतान बनाने का भार डाल दिया जाता है।

खेद की बात है कि उस समय तक वे बेचारे यह नहीं जानते कि हमारा शरीर और स्वास्थ्य क्या है, हमें किस प्रकार से गृहस्थ-धर्म का पालन करना चाहिए, हमारे लिये कौनसा कार्य हानिकर और कौनसा लाभदायक है। उनमें यह शक्ति ही नहीं होती कि अपनी उत्पन्न की हुई संतान के पालन-पोषण और शिक्षा का भार उठासकें। उनके भोले माता पिता भी इसी भांति अज्ञान में पड़े हुए, पौत्र-पौत्री के मुख देखने की अभिलाषा से, नव-विवाहित युगल को बकरे बकरी की भाँति एक मकान में एकत्रित कर देते हैं। वे बेचारे पशुओं का ग्राम्य धर्म देखकर उत्पन्न हुए संस्कारों के अनुसार, अथवा नौकरानी इत्यादि कुचरित्र स्त्रियों, अथवा पाठशालाओं के विवाहित साथियों के उपहासादिक में किए हुए संकेतों के अनुसार परस्पर जननेंद्रियों का संघर्षण प्रारंभ करते हैं। इसका फल यह होता है कि अयोग्य रीति से ग्राम्य धर्म करने के कारण वे सारी शक्ति को असमय में ही नष्ट कर संतानोत्पत्ति के सर्वथा अयोग्य होजाते हैं। यदि दुर्व्यसन अधिक बढ़ा, तो कुवैद्यों की ओषधियाँ खाकर, अप्राकृतिक शक्ति को एकत्रित कर, और भी भयंकर दशा के शिकार बनते हैं।

जो पाठक-पाठिकाएँ अपनी संतान का भला चाहें, उनको उचित है कि अपने जीवन की दुर्दशाओं का चित्र प्रति-क्षण संमुख रखकर योग्य आयु होने पर रति-शास्त्र-संबंधी

शिक्षा देने के पश्चात् शारीरिक क्षमता को देखकर अपने पुत्र-पुत्रियों को विवाह-संस्कार से गृहस्थी में प्रवेश कराने का उद्योग करें, अन्यथा वे अप्राकृतिक, न्याय-विरुद्ध, विवाह कर, उन अबोध बालक-बालिकाओं को रति-कार्य में प्रवृत्त कर स्वयम् भी पाप के भागी होंगे। कामशास्त्र जाननेवाले पंडितों की सम्मति है कि अति आवश्यक रतिशास्त्र-संबन्धी ज्ञान प्राप्त किए बिना जो मैथुन कृत्य किया जाता है, (जैसा कि वर्तमान समय के लोग प्रायः करते हैं) वह अस्वाभाविक ही होता है; और यह बात बिलकुल सत्य है कि यह कार्य अस्वाभाविक तथा नियम-विरुद्ध करने से कदापि संतान उत्पन्न नहीं हो सकती। धनिक संप्रदाय के लोग केवल क्षणिक सुख के लिये तन-मन-धन न्योछावर कर अपनी भावी संतान को नष्ट करने का अप्राकृतिक प्रयत्न करते हैं। इसी श्रेणी के बहुत से मनुष्य कभी कभी अधिक संतान उत्पन्न होने के भय से रबर आदि के बने हुए कठिन जननेंद्रिय-रक्षक (प्रोटेक्टर पैसरी फ्रेंच लेदर) आदि यंत्रों को इस कार्य में उपयोग करके अपनी विषयवासना पूर्ण करते हैं। अनेक भाई कोनीन, पुटासियम परमेगनेट, परक्लोराइड ऑफ़ मरकरी (रसकपूर) आदि उग्र कृमिनाशक औषधियों के घोल स्त्रियों की जननेंद्रिय में लगाकर ग्राम्य धर्म करते हैं। इसका फल यह होता है कि जननेंद्रिय जैसे कोमल अवयव को

महान क्षति पहुँचती है । इससे वंध्यत्व हो जाता है, और फिर संतान-उत्पत्ति की इच्छा होने पर अनेक उपाय करने तथा हज़ारों रुपए व्यय करने पर भी वह दूर नहीं होता।

इसलिये यदि आप वस्तुतः अपना और अपनी संतान का भला चाहते हैं, तो इच्छानुसार संतान उत्पन्न करने के अनंतर नियमपूर्वक ब्रह्मचर्य से जीवन बिताना ही संतान निग्रह का सर्वोत्तम उपाय है। ऐसे अनेक मनुष्यों के उदाहरण हमारे संमुख उपस्थित हैं, जिन्होंने अपने और अपनी स्त्री तथा संतान के कल्याण के लिये नियम-पूर्वक, ब्रह्मचर्य-जीवन व्यतीत किया और वर्तमान समय में भी व्यतीत कर रहे हैं।

पाठिकाओं की जानकारी के लिये संक्षेप में वंध्यत्व के कारण नीचे लिखे जाते हैं —

१—पति-पत्नी का पारस्परिक विरोध।

२—स्त्री अथवा पुरुष की शारीरिक दुर्बलता, जिससे मानसिक चिंता, हिस्टीरिया, मंदाग्नि और अनेक प्रकार के शूलादिक से स्त्री में गर्भ धारण करने की शक्ति का न रहजाना।

३—मनुष्य पहले तो संतानोत्पत्ति-निरोधक उपाय करते रहते हैं, और फिर चिरकाल के बाद जब उनको संतानोत्पत्ति की अभिलाषा होती है, तब वे उन उपायों को त्यागकर संतान उत्पत्ति के लिये प्रयत्न करते हैं। इस दुर्व्यसन से जननेंद्रिय दुर्बल और संतान-उत्पत्ति के अयोग्य हो जाती है।

ऐसी दशा में चिकित्सा करना भी बड़ा कठिन हो जाता है।

इस कारण पाठक-पाठिकाओं से निवेदन है कि ऊपर लिखे हुए वध्यत्व के कारणों को भलीभाँति विचार में रक्खें; और जहाँतक हो सके, उनसे बचने का प्रयत्न करें। यदि उन्होंने इस प्रकार का कोई उपाय जिससे संतान नहीं होती, व्यवहार किया हो, तो उसे तत्क्षण बंद कर दें। साथ ही इस बातका विचार करें कि संसार में जितने महान पुरुष हुए हैं, वे सब मध्यम श्रेणी के धनिक लोगों में ही उत्पन्न हुए हैं। परंतु दुःख के साथ लिखना पड़ता है कि वर्तमान समय में इस श्रेणी के लोगों में संतान का अभाव है। यदि कहीं होती भी हैं, तो एक दो संतान होने के बाद ही वंध्यत्व आ जाता है। इसका फल यह होता है कि नीच जाति के मनुष्य इस श्रेणीवाले लोगों पर अपना अधिकार जमाते जाते हैं।

इक कारण उनके आधिपत्य में इस श्रेणी की उत्पत्ति का दिनो-दिन अवरोध होता जाता है।

आयुर्वेद के अनुसार इस विषय पर विचार करने से मालूम होता है कि दो प्रकार की वंध्याएं, अर्थात् बाँझ स्त्रियाँ, संसार में होती हैं:—

१—सदोंग-वंध्यत्व,—अर्थात् उत्पत्तिकारक अवयवों में ऐसे विकार हो जाते हैं, जिनके कारण संतान उत्पन्न ही नहीं हो सकती।

२—एकांग-वंध्यत्व—अर्थात् किसी एक कारण से वंध्यत्व उत्पन्न हुआ हो, और उसका कारण दूर कर देने से गर्भ-स्थिति हो सकती हो।

३—काक वंध्यत्व—इसमें एक वार संतान उत्पन्न होने के बाद उत्पत्ति-कारक अवयव कुछ ऐसा विकृत हो जाता है कि फिर दुबारा संतान नहीं होती। इस प्रकार का वंध्यत्व भारतवर्ष के उन गृहस्थों में प्रायः होता है, जिनके यहाँ विवाह के पश्चात ही छोटी आयु में गर्भ रह जाता है, और प्रसव कठिनता से होता है। प्रसव होने के बाद भी पेडू के नीचे, अर्थात् गर्भाशय में, शूल होता रहता है, दुर्गंधयुक्त स्राव होता है और ज्वर आदि के कारण प्रसूता स्त्री इतनी दुर्बल हो जाती है कि वह सप्ताह या महीनों में जाकर अपनी पूर्व-दशा को प्राप्त होती है। इस प्रकार का वंध्यत्व हमारे भारतवर्ष में अधिक पाया जाता है।

किसी विशेष-रोग के कारण, अथवा आंतरिक अवयवों की अपूर्ण बनावट के कारण भी वंध्यत्व होता है। जब गर्भाशय आदि अवयव भली भाँति पूर्णता को प्राप्त नहीं होते, तब प्रथम तो मासिक धर्म ही नहीं होता, और यदि होता भी है, तो अल्प और अनियमित समय में, तथा शूल के साथ।

ऐसी कन्याओं का विवाह करना सर्वथा अनुचित है, क्योंकि ऐसी दशा में वंध्यत्व अवश्यंभावी है।

रोग-जन्य वंध्यत्व—जब कभी किसी रोग-विशेष के

कारण पुरुष या स्त्री में ऐसा दोष उत्पन्न हो जाय कि जिस से गर्भ न रह सके, तब उसकी ठीक-ठीक चिकित्सा कराने से दोष दूर होने पर गर्भ-स्थिति हो सकती है। प्रायः पुरुष ही ऐसे अनेक रोगों से पीड़ित रहा करते हैं, जो स्त्रियों की जननेंद्रिय को विकृत कर देते हैं। इस कारण उनको उचित है कि वे प्रथम चिकित्सा कराकर अपने दोषों को दूर करलें। यदि स्त्रियों को कोई रोग हो, तो बाद में उनकी चिकित्सा करावें।

बाल-विवाह भी वंध्यत्व का एक मुख्य कारण है। यह कुप्रथा भारतवर्ष के जातीय जीवन के अंदर इतनी दृढ़ता से पैठ गई है कि इस का दूर होना बहुत कठिन मालूम हो रहा है।

तथापि, इस विश्वास के आधार पर कि अब नवशिक्षित जनता में उच्च विचार और व्यावहारिक उपयोगिता का ज्ञान बढ़ रहा है यह आशा की जाती है कि नीचे लिखा हुआ परामर्श सम्भवतः फलप्रद होगा। विवाह के समय कन्याओं की अवस्था १६ से १८ वर्ष तक की होनी चाहिए। उनका विवाह उस समय होना चाहिए, जब उनको संपूर्ण रीति से शुद्धता के साथ मासिक धर्म होने लगे। इससे पूर्व विवाह करने से यदि गर्भ रह जाता है, तो * प्रथम तो बालक

---

* अनपोडषवर्षायाम् प्राप्तो पंचविंशतिम्।
यद्याधत्ते पुमान् गर्भं कुक्षिस्थः स विपद्यते॥
जातो वा न चिरंजीवेज्जीवेद्वा दुर्बलेन्द्रियः।
तस्मादत्यन्त बालायां गर्भाधानं न कारयेत्॥

गर्भ में ही नष्ट हो जाता है; और यदि उत्पन्न भी होता है, तो अत्यंत दुर्बल ।

देश-हितैषी पाठक और पाठिकाओ, यदि बालकों को उत्पन्न कर उनको अपक्व दशा में ही यमपुर पहुँचाने की हृदय-व्यथा को सहन करना नहीं चाहते, तो उपर्युक्त परामर्श को ध्यान में रखकर लड़के-लड़कियों की पूर्ण युवा अवस्था होने पर संयोग कराने का प्रयत्न करो । हमारे बहुत से देश-हितैषी शिक्षित सज्जन इस कुप्रथा को निवारण करने का प्रयत्न करने लगे हैं, किंतु शोक ! शिक्षा के अभाव के कारण मूर्ख माताएँ उनका विरोध कर उनके कार्य में बाधाएँ उपस्थित करती हैं। अतः उन भोली माताओं से निवेदन है कि क्या आप बाल-अवस्था में अपनी कन्याओं का विवाह करके असमय में ही उनका ब्रह्मचर्य नष्ट कराकर उनको वंध्या बनाना चाहती हैं ? आप जानती हैं कि संतान-रहित पुत्रवधू के साथ किस प्रकार का दुर्व्यवहार किया जाता है। उस दुर्व्यवहार का कारण केवल आपकी ही अज्ञानता है।

धर्म और व्यावहारिक नीति के नाते मैं आपसे सविनय और साग्रह निवेदन करता हूँ कि बाल-विवाह ही इस सारे उपद्रव की जड़ है। यदि उसे रोकने का पूर्ण प्रयत्न किया जायगा, तो यह शिकायत ही दूर हो जायगी। यदि भाग्य-वश किसी बालक-बालिका का छुटपन में विवाह होगया हो,

तो उनके लिये इस बात का पूरा ध्यान रखना चाहिए कि जब तक उनकी अवस्था योग्य न हो जाय, उनको सहवास करने का अवसर न दिया जाय। जब दो वर्ष तक कन्या रजस्वला होती रहती है, तब वह पति-प्रसंग के योग्य समझी जाती है। इसका कारण यह है कि इस समय उसको गर्भ रहने से उत्तम, बलवान और दीर्घजीवी संतान उत्पन्न होती है।

आज कल लोगों में सूज़ाक (Gonorrhoea) का रोग इतनी अधिकता से फैला हुआ है कि कोई भाग्यवान् संयमी मनुष्य ही इससे बचा होगा। इसके कारण भी अनेक स्त्रियाँ बंध्या हो जाती हैं। अतः माता-पिता का कर्त्तव्य है कि अपनी प्राणप्रिय पुत्रियों का विवाह करने के पूर्व वर के विषय में यह भली भाँति निर्णय कर लें कि वह किसी ऐसे दुष्ट रोग से तो पीड़ित नहीं है।

वर्तमान समय में ये विचार भी उत्पन्न होने लगे हैं कि पूर्व-काल को भाँति कन्या स्वयं अपने गुण कर्मों के अनुसार पति खोज कर उसको अपने जीवन का साथी बनावे। यह विचार उत्तम है। किंतु जो कन्याएँ बड़ी अवस्था की हैं, और जिन्होंने उच्च शिक्षा प्राप्त की है, सब प्रकार से निपुण हैं, वेही इस कार्य में स्वतंत्रता प्रदान करने-योग्य हैं। स्वयं वर खोजनेवाली कन्या को सब से प्रथम यह देखने की आवश्यकता है कि जिसको वह अपना पति या प्रणयी बनाना चाहती है, वह पूर्ण आरोग्य, सदाचारी, संयमी, और स्त्री-

जाति का संमान करनेवाला है, या नहीं। साथ ही, यह भी देख लेना अति आवश्यक है कि उसकी आर्थिक दशा कैसी है, संतान-उत्पत्ति कर वह उसका भरण-पोषण भी कर सकेगा, या नहीं। उस मनुष्य के साथ केवल काम-प्रवृत्ति के निमित्त सहवास का विचार चित्त में न हो। विवाह का मुख्य उद्देश्य यह है कि उत्तम स्वस्थ संतान उत्पन्न की जाय तथा पति-पत्नी एक दूसरे के आजीवन, संगी, सहायक, और परस्पर सुख-दायक हों।

यदि उपर्युक्त विषय पर विचार न करके केवल कामाभिलाषा की पूर्ति के लिये ही विवाह किया जायगा, तो उसका फल यह होगा कि अनेक प्रकार के अस्वाभाविक भयंकर रोग लग जायँगे, जिनसे वंध्यत्व आ जायगा, और इस प्रकार के विवाह से जीवन-भर दुःख भोगना पड़ेगा।

उत्तम पति खोजकर, अथक परिश्रम के साथ उसे प्राप्त करना कन्याओं का जन्मसिद्ध अधिकार है। इस अधिकार को कार्य में परिणत करने के लिये यह सर्वथा उचित है कि वह प्राण-प्रिय पति ऐसा हो, जो केवल इहलोक का ही सुख-साधन-रूप न हो, किंतु परलोक के साधन का भी अवलंबन तथा भावी संतान का पूर्ण पालक हो। विवाह के संबंध में हमारे देश के प्राचीन पंडितों का विचार बड़ा उच्च और महत्वपूर्ण था—

श्लोकः—ययोरेव समं वित्तं ययोरेवसमं कुलम्।
तयोर्विवाहः सख्यं च न तु पुष्टविपुष्टयोः।

कुलं च शीलं च सनाथता च
विद्या च वित्तं च वपुर्वयश्च
एतान्गुणान्सप्त विचिन्त्य देयाः
कन्या बुधैः शेषयचिन्तनीयम् ॥

अर्थ—जिन लोगों का कुल और संपत्ति समान है, उन्हीं में विवाह और मित्रता चिरकाल तक स्थिर रह सकती है।

विवाह के लिये वर पक्ष में इन सात गुणों को खोजकर निर्णय करने पर कन्या देना बुद्धिमानी का काम है, जैसे—उत्तम कुल, उत्तम शील, सामर्थ्य, उत्तम विद्या, धन, उत्तम स्वास्थ्य तथा अनुकूल अवस्था।

अब हम उस वंध्यत्व पर कुछ विचार करेंगे, जो दो प्रकार का होता है। पहला जिसमें अपत्य-पथ और गर्भाशय का दोष दूर हो सके। दूसरा, जिसमें गर्भाशय के अंदर और डिंब ग्रंथियों आदि में शोथ होता है।

१— यदि योनिच्छद (Hymen) योनि के बाहरी मुख की तरफ़ चारों ओर फैला हुआ हो, और मध्य में एक ऐसा छिद्र हो, जिसके द्वारा मासिक स्राव नियमित रूप से प्रवाहित होता रहता हो, किंतु पूर्ण-रूप से प्रसंग करने में बाधा होती हो, तो यह दोष सामान्य शस्त्र-कर्म से दूर किया जा सकता है। इसके बाद गर्भाशय की स्वाभाविक आकृति में अंतर आजावे, तो अग्रहीत-गर्भा (जिस स्त्री के बालक न हुआ हो) का गर्भाशय प्रायः सामने की ओर मुड़ जाता

है। ऐसी दशा होने पर मासिक धर्म प्रायः अत्यंत शूल-युक्त और अल्प मात्रामें होता है। जब चिरकाल तक गर्भाशय की यह दशा रहती है, तब गर्भाशय का द्वार इतना संकुचित हो जाता है कि पुरुष के † संतानोत्पादक वीर्य-कण उसके अंदर नहीं पहुंच सकते। इस कारण गर्भस्थिति नहीं होसकती। ऐसे रोग में भी मासिक धर्म, शूल-युक्त और अल्प मात्रा में हुआ करता है। जिन स्त्रियों के वालक उत्पन्न हो जाते हैं, उनका गर्भाशय पीछे या पार्श्व की ओर मुड़ जाता है। ऐसी दशा में भी बहुत-सी स्त्रियों के संतान होजाया करती है। किंतु जिन स्त्रियों के वालक न हुआ हो, यदि उनकी यह दशा होजाय, तो उनको गर्भ नहीं रह सकता। यह रोग अत्यंत प्रयत्न से, निपुण चिकित्सक की विचार-पूर्वक चिकित्सा कराने से ही दूर होसकता है।

२—अंतरंग जननेंद्रिय का शोथ।

मासिक धर्म के वाद, स्त्रियों को शीत लग जाने, अथवा प्रसव होने के पश्चात् शीत लगने और ज्वर होनेसे, या प्रसव के पूर्व, मध्य और अंत में योनि-मार्ग में अपवित्रता रहने के कारण, अथवा प्रसव होने में अधिक समय लगने

---

† पुरुष के वीर्य में एक प्रकार के छोटे छोटे कृमि होते हैं, जो दूरवीन के द्वारा ही दृष्टि पड़ते हैं। इसी प्रकार स्त्री के आर्तव में भी छोटे छोटे कृमि होते हैं। जब गर्भाशय में इन दोनों का संयोग होता है, तभी गर्भ-स्थिति होती है, अन्यथा नहीं।

के कारण, यह शोथ (सोजा.) होजाता है। इससे अनेक उपद्रव होते और वंध्यत्व होजाता है।

बुद्धिमती, विचारशील एवं चतुर स्त्रियाँ, जो स्वास्थ्य-रक्षा के नियमों को जानती हैं, इस रोग से बच सकती हैं। वे कन्याएँ भी, जो विवाह होने के पूर्व मासिक धर्म के नियमों को भली प्रकार समझकर पालन करती रहीं और स्वाथ्य-रक्षा के नियमों को भी जानती हैं, इस दशा से बच सकती हैं।

इस भाव को व्यक्त करने के लिये नीचे लिखा हुआ उदाहरण उपस्थित किया जाता है—

एक वार एक २५ वर्ष की विवाहिता स्त्री ने एक चिकित्सक से संतान-उत्पत्ति के अर्थ चिकित्सा करने की प्रार्थना की, और साथ ही अपने जीवन-वृतांत में यह कथा सुनाई कि मेरा विवाह हो जाने पर जो मासिक धर्म नियमित रूप से होता था, उस में रुकावट हुई, अर्थात् महीना पूरा होने के बाद १५-२० दिन और ज़्यादा होगए। मैंने यह न समझा कि मैं गर्भवती हूँ, बल्कि यह समझा कि रोग के कारण मासिक धर्म बंद हो गया है। इसलिये मासिक स्राव होने का प्रयत्न किया। उस प्रयत्न का फल यह हुआ कि बहुत ही तेज़ी के साथ स्राव प्रारंभ हुआ; और अधिक समय तक छिछड़े-दार रक्त बहता रहा। फिर उस रक्त को रोकने की इच्छा से मैंने शीतल जल में बैठकर उसी जल से स्नान किया। इससे

रक्त बहना तो बंद हो गया; किन्तु मुझे बुखार आने लगा, और सारे शरीर में दर्द पैदा होगया, जिस के कारण बहुत दिनों तक कष्ट भोगना पड़ा। किन्तु लज्जा के मारे कोई ठीक चिकित्सा नहीं कराई। कुछ अच्छी होने पर मुझे फिर सन्तान-उत्पत्ति की अभिलाषा हुई, और मैंने इसके लिये चिकित्सा कराई; किन्तु शोक! लाख यत्न करने पर भी अब तक गर्भ नहीं रहा।

पाठिकाओ, यह स्मरण रखने के योग्य बात है। हमारे विचार में उस स्त्री का मासिक स्राव गर्भस्थिति के कारण बंद हुआ था। उसने जो बिना सोचे-समझे मासिक स्राव होने का प्रयत्न किया, यह बड़ी भारी मूर्खता की; और इसीसे गर्भ गिर गया। स्राव होने पर वह उसको रोकने के लिये शीतल जल में बैठी और स्नान किया, उससे उसके भीतरी अंगों में वरम आ गया। इतना सब कुछ होने पर भी उपयुक्त चिकित्सा न कराने के कारण गर्भाशय की ऐसी स्थिति होगई कि गर्भ रहना असम्भव होगया।

इस उदाहरण को पढ़कर युवती और प्रौढ़ा स्त्रियाँ यह भली भाँति समझ सकती हैं कि मासिक धर्म के समय छोटी-सी भूल होजाने से भी कितना भयंकर अनर्थ हो जाता है। इस कारण उचित यह है कि यदि किसी समय ऋतुस्राव बंद हो जाय, और यह निर्णय न हो कि क्यों बंद

हुआ, तो जब तक यह भ्रम दूर न हो जाय कि गर्भ है या रोग के कारण स्राव बंद हुआ है, तब तक कोई दवा न खानी चाहिए, और ऐसा कोई अन्य उपाय भी न करना चाहिए, जो गर्भ को हानि पहुँचाता हो।

बहुत मैथुन करना भी बाँझ हो जाने का एक बड़ा भारी कारण है (इससे गर्भस्राव या गर्भपात भी हो जाता है)। किन्तु शोक है कि अक्सर स्त्रियाँ और पुरुष यह जानते ही नहीं कि अतिभोग से बाँझपन हो जाता है, और इसी कारण वे इस पर कभी विश्वास नहीं करते।

बहुत मैथुन करने से बाँझपन कैसे होता है, यह नीचे लिखा जाता है—

पुरुष प्रसंग होने के समय गर्भाशय और प्रसव-मार्ग में रक्त का जमाव अधिक होता है। यदि दूसरी बार मैथुन करने के बीच में अधिक समय छोड़ दिया जाय, तो वह जमा हुआ रक्त सारे अंग के ख़ून के दौरान में मिलकर शुद्ध हो जाता है। परन्तु इसके विरुद्ध यदि थोड़े-थोड़े समय के बाद प्रसंग होता रहता है, तो उपर्युक्त दशा स्थिर हो जाती है; अर्थात् वह संचित रक्त वहीं पर जमा होने लगता है, जिससे गर्भाशय आदि की गर्भ-धारण करने की शक्ति जाती रहती है, और बाद को इसी से श्वेत प्रदर उत्पन्न हो जाता है। इससे हर समय स्त्री की योनि से स्राव होता रहता है; और प्रसंग के समय जो पुरुष

के सन्तान पैदा करने वाले वीर्यकण गर्भाशय में जाते हैं, वे वहाँ जाकर नष्ट हो जाते हैं। इसी से बाँझपन हो जाता है।

गृहस्थों को उचित है कि वे अतिसंभोग के दोषों को समझकर संयम से गृहस्थ-धर्म का पालन करें। प्रसंग करने के लिये कम से-कम चार-चार दिनका अंतर अवश्य होना चाहिए। यदि एक सप्ताह का अंतर रहे, तो और भी अच्छा। आयुर्वेद के सिद्धान्त के अनुसार वाग्भट का मत है कि वसंत और शरद् ऋतु में तीन-तीन दिन के पश्चात् और ग्रीष्म तथा वर्षा ऋतु में पंद्रह-पंद्रह दिनके पश्चात् प्रसंग होना उचित है।

यह नियम उन्हीं मनुष्यों के लिये है, जो बड़े कामी हैं और संयम नहीं कर सकते। अन्यथा हमारे विचार में मनु आदि ऋषियों के लेखानुसार एक मास में एक वार, जब स्त्री रजस्वला होने के पश्चात् शुद्ध स्नान कर चुके, सहवास करना ही उचित है।

शरीर में मेदा (चर्वी) का अधिक बढ़ जाना भी बाँझ-पन का एक कारण है। भारतीय स्त्रियों में इस का दूर होना कठिन है; क्योंकि उन बेचारियों को शुद्ध वायु में घूमने और व्यायाम करने का मौक़ा नहीं मिलता। किन्तु चतुर स्त्रियाँ, जो इस बात को जानती हैं, यदि चर्वी बढ़ानेवाले पदार्थों को छोड़कर सादा भोजन किया करें, तो इस कष्ट से बच सकती हैं। शरीर में चर्वी बढ़ जाने

गर्भ-धारण

सन्तान उत्पन्न करने की अभिलाषा स्वाभाविक है। विवाहित स्त्री-पुरुष में यदि इस अभिलाषा की कमी हो, तो दोनों में से किसी एक के अन्दर विशेष विकार की सम्भावना की जाती है।

सन्तान-उत्पत्ति की अभिलाषा की पूर्त्ति का भली प्रकार प्रयत्न करना गृहस्थ-मात्र का परम कर्त्तव्य है; क्योंकि बिना सन्तान के गृहस्थ-जीवन पूर्ण नहीं होता। पति-पत्नी के बीच सन्तान ही उन के स्वाभाविक बन्धन को दृढ़ रखती है।

बहुत-सी कमसमझ स्त्रियोंके धर्मकी रक्षा भी प्रायः उनकी सन्तान ही के द्वारा हो जाया करती है। सन्तान ही उनके पति के गुण, स्वभाव और गौरव की रक्षा करने में समर्थ होती है।

कभी-कभी पतित स्त्रियों का उद्धार केवल सन्तान के मोह में फँसकर हो जाया करता है।

सन्तान के प्रेम के आकर्षण और सेवा में लगी हुई स्त्री पति के वियोग को सहने में भी समर्थ होती है। बहुत-सी स्त्रियाँ अपना जीवन संकटमय बनाकर भी सन्तान की रक्षा करती हैं: और अपने कष्ट को एकदम भूलकर जीवन को स्थिर, गंभीर और उच्च बनाने में समर्थ होती हैं।

पाठकगण, अब हम अपने विषय की ओर आते हैं। गर्भवती स्त्री का पूर्ण स्वस्थ होना अति आवश्यक है। इसमें

संदेह नहीं, उसको गर्भ सम्बन्धी अनेक वेदनाएँ भोगनी पड़ती हैं; किन्तु वे वेदनाएँ विकृत मासिक धर्म की भाँति अधिक कष्टदायक नहीं होनी चाहिए। यदि उस समय कोई विशेष कष्ट हो, तो समझना चाहिए कि गर्भिणी स्वास्थ्य-रक्षा-संबन्धी नियमों से अनभिज्ञ है, अथवा उन नियमों के पालन करने की ओर उसका ध्यान नहीं है; क्योंकि गर्भस्थिति होना एक प्राकृतिक क्रिया है, और प्राकृतिक क्रिया में किसी प्रकार का कष्ट न होना चाहिए।

बहुत-सी धनिक घरानों की स्त्रियों को, जिनको शारीरिक परिश्रम करने का सौभाग्य प्राप्त नहीं होता, मासिक धर्म के समय उत्पन्न हुए अनेक प्रकार के रोग (जैसे हिस्टोरिया [योषाअपस्मार] शिरःशूल, कब्ज़ आदि) गर्भ धारण करने के पश्चात् अधिक बढ़ जाया करते हैं। इस कारण उचित है कि उत्तम चिकित्सक की सहायता से उनको दूर करने का प्रयत्न किया जाय। यदि इतना धैर्य हो कि गर्भ की सामयिक व्यथा को वे सह सकें, तो यह विचार करके कि इस कष्ट के अन्त में सुंदर-स्वरूप बालक गोद की शोभा बढ़ाकर प्रतिक्षण आनंद देगा, इसको सहना चाहिए। इस त्याग का फल यह होगा कि गर्भिणी अपने गर्भ के बालक को परम सुख पहुँचावेगी, और दूसरों की दृष्टि में बड़े आदर और सम्मान की पात्री बनेगी। प्राकृतिक नियमों का पालन करने में पुरुष या स्त्री

जितना कष्ट उठाते हैं, उतना ही पुत्र या पुत्री के रूप में उसका मधुर फल पाकर वे अधिक आनन्द प्राप्त करते हैं।

प्रत्येक चिकित्सक का यह कर्त्तव्य है कि वह साधारण या विशेष रोग से पीड़ित गर्भिणी की रोग-निवृत्ति के लिये संसार के सम्पूर्ण चिकित्सा-शास्त्र का ज्ञान गर्भिणी को सुख पहुँचाने में लगावे। किन्तु बहुत-सी मानसिक विकारवाली स्त्रियाँ साधारण कष्ट को भी इतनी भयंकरता से वर्णन करती हैं कि चिकित्सक को अनेक दवाएँ शीघ्र शीघ्र बदलनी पड़ती हैं। परन्तु अन्त में उसका नतीजा बहुत ही हानिकारक होता है। इस प्रकार की रोगिणियोंके रोगका ध्यान-पूर्वक खूब निर्णय कर उनकी चिकित्सा करनी चाहिए। संतान का होना परमात्मा का परम प्रसाद है। गर्भ रहने से स्त्रियाँ सुन्दर स्वस्थ और लावण्ययुक्त हो जाती हैं। हाँ, कुछ स्त्रियाँ अवश्य गर्भवती होने से बालक को दूध पिलाने के समय तक, स्वास्थ्य-रक्षा के नियमों को तोड़ने के कारण, जब-तब प्रायः साधारण रोगों से पीड़ित हो जाया करती हैं। उनके लिये स्वास्थ्य-रक्षा के नियमों का पूर्ण पालन करना और प्रकृति के उपदेशों से लाभ उठाना परम आवश्यक है।

गर्भवती के लक्षण

यहाँ पर केवल वे लक्षण लिखे जायँगे, जिनका स्त्रियाँ, गर्भ रहने के पश्चात्, स्वयं अनुभव करने लगती हैं।

गर्भ रहने का सबसे पहला लक्षण मासिक धर्म का बंद

हो जाता है। मासिक धर्म बंद होने की अंतिम तिथि से गर्भ की पूर्णता के लिये दस मास गिने जाते हैं। जिन स्त्रियों का नियमित रूप से मासिक धर्म होता रहता है, उनका मासिक स्राव बंद होजाने से ही गर्भ रह जाने का विश्वास किया जाता है। किंतु कभी-कभी साधारण रोगों से भी मासिक धर्म बंद हो जाया करता है।

इस कारण केवल इस लक्षण को देखकर ही स्त्री के गर्भवती होने का विश्वास न कर लेना चाहिए। गर्भ रहने का दूसरा लक्षण प्रातःकाल क़य होना है। यह लक्षण गर्भ रहने से दस-पन्द्रह दिन बाद ही शुरू हो जाता है और साधारणतः तीन-चार मास तक बराबर रहता है। यह लक्षण किसी-किसी स्त्री के अत्यधिक मात्रा में पूरा प्रसव होने तक भी रहता है; और किसी-किसी के बिलकुल ही नहीं होता। यह क़य केवल प्रातःकाल ही होती है; किंतु कभी-कभी दिन के अन्य समय भी जी मिचलाया करता है। प्रातःकाल क़य होने पर कुछ अधिक वस्तु क़य से नहीं निकलती। सिर्फ़ कुछ झाग और पानी-सा निकलकर जी मिचलाता रहता है।

तीसरा लक्षण स्तनों में दूध का उत्पन्न होना है। इस लक्षण को पहले प्रसव के समय में बहुत ही विशिष्ट लक्षण समझना चाहिए। दूसरे और तीसरे प्रसवों में इस लक्षण का विशेष महत्त्व नहीं रहता; क्योंकि जो स्त्रियाँ बालकों को

दूध पिलाती हैं, उनके स्तनों में कुछ दूध बहुत समय तक रहता है, और दबाने से प्रायः वह बाहर निकल आता है। केवल प्रथम प्रसव में तीसरे या चौथे मास में स्तनों को दबाने से कुछ दूध निकल आवे, तो इस लक्षण को महत्त्वपूर्ण समझना चाहिए। चौथा लक्षण यह होता है कि स्तनों में अन्य परिवर्तन होने लगते हैं। जैसे स्तनों का बढ़ना, कठिन होना और गोल होना इत्यादि। स्तनों के ऊपर की नसें नीली-नीली सामने की ओर देख पड़ने लगती हैं। अतएव स्तन नसों के जाल से ढके दिखाई देते हैं। चूचुक (स्तन के ऊपर का वह भाग, जिसको मुख में लेकर बालक दूध पीते हैं) कुछ बड़े हो जाते हैं; और उनपर कुछ गोलापन देख पड़ने लगता है। उनके आसपास का चमड़ा गहरे रंग का हो जाता है। यह रंग बदलने की क्रिया तीसरे मास के लगभग होती है। यह लक्षण प्रथम प्रसव के लिये योग्य है। प्रसव के पश्चात् यह रंग फीका पड़ जाता है। किंतु पूर्व दशा को कभी प्राप्त नहीं होता। कभी-कभी गर्भिणी के हृदय में धड़कन और शूल होने लगता है, जो सामने से कोख की ओर जाता है। यह शूल होने का लक्षण विशेष महत्त्वपूर्ण नहीं होता; किंतु अन्य महत्त्व-पूर्ण लक्षणों के साथ मिलाकर गर्भ का निर्णय करने में सहायक अवश्य होता है।

पाँचवाँ उदर का परिवर्तन विचारणीय होता है।

तीसरे महीने के अंत में गर्भाशय भगास्थि (बालोंवाली हड्डी) से ऊपर नहीं देख पड़ सकता। परंतु चौथे महीने के बाद वह इस अस्थि से तीन-चार अंगुल ऊपर निकल आता है।

पाँचवें महीने के अंत में वह नाभि और भगास्थि के बीच में आ जाता है।

छठे महीने के अंत में नाभि की सम रेखा में आ जाता है।

सातवें महीने के अंत में नाभि से तीन अंगुल ऊपर आ जाता है।

आठवें महीने के अंत में गर्भाशय, नाभि और सीने की कौड़ी की हड्डी के बीच तक पहुँच जाता है।

नवें महीने के अन्त में इस रेखा से भी तीन इंच के लगभग ऊपर पहुँच जाता है।

दसवें मास में जब गर्भाशय फिर नीचे की ओर उतर आता है, उस समय वह आठवें मास के स्थान पर आ जाता है; और इस कारण गर्भिणी को साँस वग़ैरह लेने में बड़ा सुख मालूम होता है।

यह गर्भाशय की वृद्धि प्रति सप्ताह से लगाकर महीने-महीने क्रमशः धीरे-धीरे होती जाती है।

किसी रोग के कारण जो पेट की वृद्धि होती है. और गर्भ के कारण जो वृद्धि होती है, दोनों को नियम-पूर्वक

देखने से उनका अन्तर मालूम हो जाता है। दूसरी बात यह है कि रोगों के कारण जब उदर की वृद्धि होने लगती है, तब उस का मांस, कोमल, चर्बी की अधिकता होने पर भी, हाथ में आजाने लायक़ रहता है। किंतु गर्भवती के उदर का मांस कठिन और स्थिर होता है। यह संभव नहीं कि वह हाथ से पकड़ा जा सके।

छठा लक्षण बच्चे का गर्भाशय में फिरना होता है। गर्भवती इसका भली भाँति अनुभव करती है। बच्चे के गर्भाशय में फिरने पर यह न समझना चाहिए कि उस-में जीव आया है; क्योंकि गर्भ रहने के दिन से ही गर्भ में जीव का प्रवेश हो जाता है। साढ़े चार महीने के बाद बालक गर्भाशय में फिरने लगता है।

कभी-कभी किसी स्त्री को तीसरे महीने के बाद भी बालक का गर्भ में फिरना मालूम होने लगा है। बालक का गर्भ में फिरना स्त्री के गर्भवती होने का महत्वपूर्ण और विश्वासयोग्य लक्षण है; किंतु इसमें गर्भ के दिनों की गणना का ठीक-ठीक अनुमान नहीं हो सकता।

अधिकतर स्त्रियाँ बालक के फिरने का चिड़िया के बच्चे की फुदकन के समान अनुभव करती हैं। ज्यों-ज्यों गर्भ अधिक दिन का होता जाता है, त्यों-त्यों यह फिरना अधिक साफ़ मालूम होने लगता है। यहाँ तक कि पेटपर हाथ रखकर भी इसका अनुभव कर सकते हैं। स्त्रियों

को चाहे जिस प्रकार के गर्भ-स्पन्दन का अनुभव हो; किन्तु यह स्पन्दन बच्चे के जलवाली थैली में करवट बदलने तथा घूमने से होता है। बालक का गर्भाशय के अंदर घूमना उसके जीवित रहने का प्रमाण है।

किसी-किसी स्थान पर केवल पेट के अफरने या फूलने को ही गर्भस्थिति मानकर स्त्रियों ने चिकित्सकों को भ्रम में डालने का प्रयत्न किया है। यह भ्रम केवल उन्हीं स्त्रियों को हुआ करता है; जो गर्भवती होने के लिये अति उत्सुक रहती हैं। इसका भेद नीचे लिखे लक्षणों से भली भाँति विदित हो सकता है।

आध्मान (अफारा)-रोग में उदर कभी कठिन और कभी कोमल देख पड़ता है। इसी प्रकार वह कभी पिचका और कभी फूला दिखाई पड़ता है। एवं दबाने पर आँतों में होनेवाला वायु का शब्द भी सुनाई पड़ता है। किंतु गर्भवती में इनमें से एक भी लक्षण नहीं होता। गर्भ अपनी माता के गर्भाशय में नौ मास और सात दिन तक रहता है। अथवा ४२ सप्ताह या २८० दिन तक रहता है। पहले लिखा जा चुका है कि गर्भ के दिन मासिक धर्म की अंतिम तिथि से गिने जाते हैं। जैसे यदि किसी स्त्री का मासिक धर्म २३वीं अक्टूबर को बंद हुआ हो, तो उसका प्रसव ३० जुलाई को होगा। यदि प्रसव होने में इससे अधिक समय लग जाय, तो चिकित्सक की सम्मति लेना परमआवश्यक

है। गर्भिणी की स्वास्थ्यरक्षा के लिये यह अति आवश्यक है कि वह शुद्ध वायु में अधिक रहे ; क्योंकि उसके शरीर से कारबोनिक एसिड गैस (ज़हरीली अशुद्ध वायु) के रूप में अशुद्ध वायु अधिक मात्रा में निकलती है। इस कारण उसको आक्सीजन-नामक शुद्ध वायु की अधिक आवश्यकता रहती है। छोटे गरम मकान के अंदर अथवा अधिक भीड़-भाड़वाले स्थानों में, जहाँ तक हो सके, न जाय। सोने का मकान अधिक लंबा और साफ़ हो। उसमें अधिक सामान न भरा हुआ हो। दरवाज़ों पर मोटे परदे न लगे हुए हों। भूमि पर मोटी चटाइयाँ भी बिछी हुई न हों। मकान का कम-से-कम एक दरवाज़ा रात भर खुला रहना चाहिए, जिसके द्वारा शुद्ध वायु प्रति क्षण आती रहे। इससे शीत लग जाने का डर कभी नहीं होता। शीतल और शुद्ध वायु के सेवन से मनुष्य को कभी सर्दी-ज़ुक़ाम नहीं होता। सर्दी-ज़ुक़ाम तब होता है, जब शरीर गरम होता है, और एक दम तेज़ तथा ठंडी वायु का सेवन किया जाता है। गर्भ-वती को उचित है कि जहाँतक सम्भव हो, खूब खुली हवा में रहने का यत्न करे ; क्योंकि शुद्ध वायु में रहने से शरीर का स्वास्थ्य सुधरता और मन का उत्साह बढ़ता है।

स्वास्थ्य-रक्षा के लिये कसरत करना भी बहुत ज़रूरी है मगर इतनी कसरत करना उचित नहीं, जिससे थक जाय। बैठे रहने से साधारण घर का काम-काज करना और खुली

हवा में टहलना लाभदायक है। सारे शरीर के हिस्सों को हरकत देनेवाला काम या कसरत करना भूख, नींद और पाचनशक्ति को बढ़ाने के लिये बड़ा उत्तम साधन है।

गर्भावस्था में कठिन परिश्रम करते रहने पर भी कुछ हानि नहीं होती। अनेक गर्भिणी स्त्रियाँ प्रसव होने तक बराबर परिश्रम करती रहती हैं। किंतु उनको कोई हानि नहीं होती। घरमें चुपचाप बैठी रहनेवाली स्त्रियों की अपेक्षा उनकी संतान अधिक बलवान् और स्वस्थ होती है। गर्भ को हानि पहुँचानेवाले कामों को छोड़कर साधारण काम करते रहने से गर्भ में कोई विकार नहीं होता। पर यह स्मरण रखना चाहिए कि चाहे जिस तरह की कसरत या काम किया जाय, वह इतनी देर तक किया जाय कि थकन न होने पावे। घोड़े या बाइसिकिल पर चढ़ना अथवा लान-टेनिस खेलना हानिकारक है। जिस स्त्री के गर्भ न रहा हो, और ऋतुस्नान के दिन हों, उसे भी बहुत सावधानी के साथ रहना चाहिए। रेल या सड़क पर यात्रा करने से भी अक्सर गर्भ गिर जाया करता है। गर्भ गिरने का मासिक धर्म होने के दिनों में ही डर अक्सर रहा करता है।

निद्रा—गर्भवती को शीघ्र सोना और बड़े तड़के उठना लाभकारक है। रातको लगातार सात घंटे तक सोना अत्यन्त आवश्यक है। दिनमें भी एक आध घंटे,

शरीर में जो कपड़े बँधे हुए हों उनको उतारकर, आराम कर लेना उत्तम है। गर्भावस्था में जितना अधिक सो जाय, उतना ही अच्छा। एक बँधे समय पर विश्राम करने से शरीर स्वस्थ रहता और कर्त्तव्य-पालन की ख़ास ताक़त पैदा होती है।

स्नान—गर्भवती को कुनकुने या औसत के गरम पानी से नित्य स्नान करना चाहिए। पहले सारा शरीर साबुन और गरम जल से अच्छी तरह धोकर, यदि चिकित्सक ने मना न किया हो, तो फिर उसको शीतल-जल से धो डाले। उसके बाद सारे शरीर को मोटे तौलिए से पोंछकर साफ़ वस्त्र ले।

गर्भिणी के बाहरी योनि-मार्ग में एक प्रकार का चिकना-सा पतला पदार्थ अधिक उत्पन्न हुआ करता है। इस कारण दिनमें एक-दो बार योनि को धोकर शुद्ध कर लेना चाहिए।

भोजन—गर्भ रहने से दो-तीन महीने तक गर्भिणी की रुचि में अवश्य फ़र्क़ आजाता है। अन्यथा बाक़ी समय में अच्छी भूख लगा करती है। किन्तु जिन दिनों भूख में अन्तर पड़ जाता है, उन दिनों में भी अनेक बुरी-भली वस्तुओं के खाने की रुचि हुआ करती है।

ऐसी दशा में जो वस्तुएँ हानिकारक हों, उनको अवश्य त्याग देना चाहिए। साधारण और विशेष रुचिके अनुसार,

स्वास्थ्य को ध्यान में रखकर ऐसे भोजन बनाए जायँ, जिनसे अधिक रुचिपूर्वक भोजन करने की अभिलाषा हो।

तीसरे महीने के बाद भूख बढ़ने के साथ साथ शरीर में भी उन्नति होती, और गर्भाशय में बालक अच्छा और पुष्ट हो जाता है।

शौच (पाख़ाना)—गर्भवती को रोज़ साफ़ पाख़ाना होजाने के लिये पूरा यत्न करना चाहिए। प्रातःकाल के समय यथा-शक्ति फल खाना और रात को सोते समय तथा सवेरे उठते ही, बिना शौच गए, गरम या एक गिलास शीतल जल पीना अति लाभदायक है।

क़ब्ज़ की शिकायत होने पर भी, जहाँ तक संभव हो, तेज़ दस्त लानेवाली ओषधियों का सेवन करना उचित नहीं, किंतु कभी-कभी रेंड़ी का तेल या हलकी विरेचक दस्ता-वर दवाएँ खाने से हानि नहीं होती।

वस्त्र (पोशाक)—गर्भिणी को सदा ऐसे वस्त्र पहनने चाहिए, जो ढीले और ठीक नाप के हों। हमारे देश की स्त्रियों में भी दिन-दिन फ़ैशन का रवाज बढ़ता जाता है। वे कमर-पेटी बाँधने की तरफ़ भी विशेष झुकती जारही हैं। जिस प्रकार विलायत की स्त्रियाँ कोरसेट्स * (Corsets) पहनकर अपनी

---

* कोरसेट्स एक ऐसी जाकट को कहते हैं, जो कमानीदार तारों से बनी हुई होती है। उसके पहनने से कमर का मांस दबकर सिकुड़ जाता है। इस कारण छाती उभरी हुई देख पड़ती है।

कमर को पतली और सीने को उभरा हुआ बनाती और नाटक में नाचनेवाली औरतों की तरह तरह-तरह के रूप रखती हैं। संभव है, भारत की स्त्रियाँ भी उसी प्रकार उनकी नक़ल कर अपने प्राकृतिक सौन्दर्य को नष्ट करने लगें, क्योंकि इस प्रकार का पहनावा असली पैदायशी सौन्दर्य की रक्षा के लिये लाभकारक नहीं है।

स्त्रियों के वस्त्र अपनी हालत, काम और सौन्दर्य के लिये उपयुक्त होने चाहिए। कपड़े पहनने में इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वे इतने ढीले हों, जिससे सब अंग अच्छी तरह हरकत कर सकें। पाँचवें महीने से गर्भवती को कुरते आदि के नीचे गरम कपड़ा पहनना चाहिए। गर्भिणी जहाँ तक मुमकिन हो, ऐसा कपड़ा पहने, जिसमें बटन आदि अधिक लगाने की आवश्यकता न हो। कपड़ा इतना ढीला हो कि आसानी से निकाला और पहना जा सके।

मैथुन—इस विषय के ख़ास जानकार कुछ डॉक्टरों की राय यह है कि गर्भिणी के साथ यथासंभव बहुत ही कम मैथुन करना चाहिए।

किंतु दूसरे डॉक्टरों की राय यह है कि गर्भ रहने के दिन से लगातार जब तक स्त्री बालक को दूध पिलाती है, उसके साथ मैथुन बिलकुल न करना चाहिए; क्योंकि गर्भ रहने से लेकर दूध पिलाते रहने तक स्त्रियों के दिमाग़ पर विशेष प्रभाव पड़ता है। जिस काम से स्त्रियों का दिमाग़

कमज़ोर होता है, वह करने से केवल स्त्री की ही नहीं, गर्भ के बालक को भी हानि होती है। कुछ स्त्रियाँ कहा करती हैं कि हमारे पति अपनी इच्छा पूरी करने से बाज़ नहीं आते। किन्तु हमारी राय में जो भले आदमी अपनी औरत और बच्चे का भला चाहें, उनको यह अस्वाभाविक काम तब तक त्याग ही देना चाहिए; क्योंकि सब माता-पिता यह चाहते हैं कि हमारी संतान दृढ़ बुद्धिमान् और चतुर हो, इस कारण उनकी रक्षा के लिये उनको सब प्रकार का त्याग करना भी उचित है।

मैथुन से गर्भिणी का सारा शरीर दुबला होता ही है; किंतु उसके दिमाग़ पर सबसे अधिक भार पड़ता है। उसके मानसिक विचारों के अनुसार ही गर्भाशय में संतान के स्वरूप और शरीर का संगठन होता है। इस कारण उसको किसी प्रकार का मानसिक कष्ट न देना चाहिए।

यदि गर्भिणी की प्रबल इच्छा हो, तो युक्तिपूर्वक सावधानी से प्रसंग कर उसकी अभिलाषा पूर्ण कर देनी चाहिए। जहाँतक होसके, इस प्रवृत्ति से निवृत्ति ही उत्तम है; क्योंकि विषय से इस दशा में जितना संयम किया जायगा, उतना ही अच्छा। गर्भिणी की इच्छा के विरुद्ध कोई काम करना सर्वथा अनुचित है। कुछ स्त्रियों में भोग की प्रबल इच्छा होती है। उनको उचित है कि योग्य चिकित्सक की सम्मति के अनुसार इस दोष को दूर करने का प्रयत्न करें। जब

बालक दूध पीता हो, उस समय पति-पत्नी, दोनों को, जहाँ तक हो सके, संयम से रहना चाहिए; क्योंकि उस समय स्त्री का गर्भाशय इतना कमज़ोर होता है कि वह तुरन्त ही गर्भ धारण कर लेता है, और गर्भ के रहजाने से दूध में दोष पैदा हो जाता है। इससे गोद का बालक अच्छी तरह पुष्ट नहीं हो सकता; और गर्भ का बालक भी दुर्बल ही उत्पन्न होता है।

एक स्त्री पाँच बच्चे पैदा कर उनका लालन-पालन भली भाँति करने के बाद भो स्वस्थ रह सकती है। पाँच बच्चों से अधिक पैदा होने की रोक बनावटी उपायों से या गर्भ गिराकर नहीं, किन्तु संयम के द्वारा करनी चाहिए। यह बात कुछ कठिन अवश्य है; किन्तु इसमें केवल मानसिक बल को आवश्यकता है। मनुष्य को विषय-भोग की इच्छा का दास नहीं बनना चाहिए, बल्कि अपने आत्मिक बल से उसको रोकना चाहिए।

यदि स्त्री-पुरुष, दोनों ही संयम करें, तो असमय अधिक बच्चों का होना रुकना कोई कठिन बात नहीं है। अधिक सन्तान होने से स्त्रियाँ अत्यन्त दुर्बल हो जाती हैं; और अधिक सन्तान का पालन-पोषण करना भी कठिन होता है। दुर्बल स्त्री तथा सन्तान का यदि भरण-पोषण न हो सके, तो सन्तान की उत्पत्ति करते रहना बड़े पाप का काम है।

बहुत से स्त्री-पुरुष अधिक सन्तान की उत्पत्ति को रोकने के लिए तीन महीने के पूर्व ही गर्भ गिरा दिया करते हैं। उनका यह विश्वास है कि उस समय तक बालक में जीव नहीं पड़ता, इसलिये ऐसा करने में कोई पाप नहीं। किन्तु उनका यह विचार भ्रमपूर्ण है। बालक जिस दिन से गर्भ में आता है, उसी दिन से उसमें ज्ञान होती है, और उसी ज्ञान के द्वारा वह धीरे-धीरे बढ़ता रहता है। इसलिये गर्भ गिराना एक प्राणी की हत्या करना है। संयम यदि न हो सके, तो बालक उत्पन्न करते रहना ही अच्छा पर भ्रूण-हत्या करना महा पाप है। ऐसा करने से स्त्रियों की तन्दुरुस्ती भी नष्ट हो जाती है; और उनका जीवन दुःखमय बन जाता है। गर्भवती स्त्री का कर्तव्य है कि वह अपने गर्भ के बच्चे की उन्नति के लिये सदा अपने दिमाग़ में अच्छे-अच्छे विचारों को ही स्थान दे, उत्तम पुस्तकें पढ़े, योग्य सज्जनों तथा विद्वानों के उपदेश सुने, और उत्तम-उत्तम मन-भावने चित्रों को देखती रहे। यदि गर्भवती स्त्री पढ़ी-लिखी न हो, तो उसके पति का यह कर्तव्य है कि वह उसको उत्तम उत्तम पुस्तकें पढ़कर सुनावे, चित्र आदि दिखावे, तथा गर्भ के बालक की रक्षा और उसको उत्तम बनाने के लिये पूर्ण यत्न करे।

गर्भिणी के रोग

मूत्रसाद (Irritability of the bladder)—यह रोग गर्भिणी को शुरू से ही बड़ा कष्ट देता है। रात में उसको कई बार उठना पड़ता है, और मूत्र-त्याग के समय बड़े कष्ट के साथ तीन-चार बूँद पेशाब आता है। जब गर्भाशय भगास्थि से ऊपर निकल आता है, तब यह कष्ट दूर हो जाता है। प्रसव के समय निकट होने पर भी यह कष्ट दूर हो ज़ाता है; और केवल दो-तीन सप्ताह के बाद, प्रसव होने पर, दूर हो जाता है। उस समय भी पेशाब की हाजत कई बार होती है। किन्तु उसमें किसी प्रकार का कष्ट नहीं होता। इस रोग को दूर करने के लिये विलायती जव (Barley)का पानी बहुत उपयोगी है। इससे मूत्राशय का विकार तो नष्ट होजाता है, साथ ही स्त्री के अंगों की पुष्टि भी होती है। इसमें अगर ताज़े नींबू का रस और खाँड़ मिलाकर पिया जाय, तो लाभकारक है। या बार्लीका पानी दस छटाँक,बबूल का गोंद सवा तोले मिलाकर धीमी आँचपर पकावे और उसे बराबर हिलाता रहे। जब बबूल का गोंद घुल जाय, तब उतारकर यथारुचि नींबू का रस और शक्कर मिला कर पिलावे। जाड़े के दिनों में २४ घंटे में एक बार बना हुआ और गर्मी के दिनों में २४ घंटे में दो बार बना हुआ यह जल पिलाना चाहिए। गर्भिणी के पेट के ऊपर एक गरम फ़लालेन का टुकड़ा लपेटे रखना अच्छा है। इस रोग में

कभी-कभी सोते समय शोरकादि-प्रयोग* गरम जल के साथ पिलाना भी अच्छा है।

क़य—हम पहले लिख चुके हैं कि गर्भ रहने का सबसे पहला लक्षण प्रातःकाल क़य का होना है। यह क़य दुःखदायक होती है; किंतु भयंकर नहीं होती। हाँ, कभी-कभी यह अत्यंत भयंकर और रोगके रूपमें भी बदलजाती है। ऐसी हालतमें योग्य चिकित्सक की चिकित्सा कराना बहुत आवश्यक है। यदि इस उपद्रव में कोई और कष्ट न हो, तो विशेष चिकित्सा करने की आवश्यकता नहीं है; क्योंकि धैर्य के साथ सहन करने से एक दो दिन कष्ट होकर फिर सदैव के लिये क़य बंद हो जाती है। क़य का तीव्र वेग हमेशा ख़ाली पेट, प्रातः काल उठते ही, हुआ करता है। इस कारण उठने के पूर्व सूखा विस्कुट कम † गरम काफ़ी पीना उत्तम है। कभी-कभी भोजन के पूर्व भी क़य का दौरा हो जाया करता है। ऐसी दशा में नियमित भोजन करने के १५ मिनट पूर्व, दूध और कोको का गरम-गरम प्याला मांस रस (अख़नी)‡

---

* शोरकादि प्रयोग—यह शोरेका चूर्ण १ माशे से ३ माशे तक आधी छटाँक गरम जल के साथ सेवन करावे। अथवा स्वीट स्पिरिट ऑफ़ नाईट्रिक (Sweet spirits of nitre), एक चाय का चम्मच २॥ तोले गरम जल में मिला कर रात को सोते समय पिलावे।

† गरम पेय गर्भिणी के लिये सदैव मना है।

‡ मांस का जहाँ कहीं विधान है, वहाँ केवल मांसभोजी बहनों के लिये है। पर मांस का सेवन यदि न किया जाय, तो अच्छा है। —संपादक

पीना लाभदायक है। फिर नियमित भोजन करे। भोजन के साथ देर में पचनेवाली वस्तुओं का सेवन नहीं करना चाहिए।

भोजन में अधिकतर फुलका, दाल, दूध, खिचड़ी, खीर, दलिया आदि ताक़त देनेवाली और शीघ्र पचनेवाली वस्तुएँ खाय। इन्हीं थोड़ी-सी चीज़ों से अनेक प्रकार की रुचिवर्द्धक वस्तुएँ बना लेना अच्छा है। भोजन ठीक बँधे समय पर करे; और उसको खूब चबा कर खाय। भोजन के साथ गरम जल पीना अच्छा है। पेट के ऊपर २० मिनट तक राई का पलस्तर लगाए रक्खे। इस प्रकार का उपचार करने से क़य का होना बंद हो जाता है। पर यह ख़याल रखना चाहिए कि क़ब्ज़ न रहने पावे; क्यों-कि क़ब्ज़ रहने से ही क़य का उपद्रव विशेष बढ़ता है। ऐसी दशा में पुरुष से प्रसंग कदापि नहीं करना चाहिए; क्यों-कि उससे भी यह कष्ट बढ़ता है। किसी प्रकार का उत्तेजक पदार्थ खाना-पीना लाभकारक नहीं है। क़य थोड़ी देर का और अस्थायी रोग है, जो खुद ही समय पर मिट जाता है; किन्तु उसको रोकने के लिये जो मद्य आदि का सेवन किया जाता है, उससे और स्थायी रोग पैदा हो जाते हैं।

निद्रा का नाश—यह रोग अक्सर गर्भिणी को प्रसव के दिन निकट होने पर ही हुआ करता है। इसके दूर करने का सबसे अच्छा उपाय यही है कि खुली हवा में ऐसी

कसरत की जाय, जिसमें अधिक थकन न होने पावे। इसके सिवा शुद्ध वायुवाले स्थान में ही रात के समय सोना चाहिए। यदि यह उपाय करने पर भी नींद न आवे, तो रात के समय धीरे-धीरे टहले और शीतल जल से मुख धोकर जिधर से हवा आती हो, उधर को ही तकिया लगाकर सोवे।

किसी-किसी गर्भिणी को अतिनिद्रा रोग हो जाया करता है। वह हर समय नींद की मारी ही बनी रहती है। इस दशा में इसको दूर करने के लिये कोई दवा खाने-पीने की आवश्यकता नहीं। केवल मलाशय को शुद्ध रखने का प्रयत्न करना चाहिए। दिन के समय अधिक निद्रा आवे, तो शीतल जल से स्नान करना चाहिए।

योनिकंडु (Pruritus)—इस रोग में प्रसव मार्ग के बाहरी हिस्से में खुजली होती है; और वह कभी-कभी सारे पेडू में फैल जाया करती है। इतनी अधिक खुजली होती है कि गर्भिणी को उससे बड़ा कष्ट होता है। कष्ट के कारण वह अपना अंग इतना अधिक खुजाडालती है, जिस से अंग पर रेखाएँ-सी पड़ जाती हैं, और कष्ट अधिक बढ़ जाता है। इस अधिक खुजली के होने का कारण श्वेत-प्रदर भी होता है। परंतु जब स्राव न होता हो, तब इसे वात-नाड़ियों का रोग समझना चाहिए। उस दशा में चिकित्सक की सम्मति लेना आवश्यक है। यदि

गरम पानी के टब में आध सेर सोडा डालकर उस जल के अन्दर बैठकर गर्भिणी धीरे-धीरे उस अंग को आध घंटे तक रगड़ती रहे, तो उससे भी खुजली मिट जाती है। धोने के बाद धीरे-धीरे तौलिए से पोंछकर ऊपर से वेसलीन या सौ बार धुला हुआ घी लगा देना उत्तम है।

यदि श्वेत-प्रदर हो, तो दस छटाँक गरम जल में एक चम्मच लाइसोल मिलाकर प्रसव-मार्ग को धो देना चाहिए। धोने के समय यह ध्यान रखना चाहिए कि डूश (पिचकारी) का पानी बहुत ऊँचाई से अंदर न जाय, और डूश का नोज़ल-नामक अगला भाग सब प्रसव-मार्ग के अंदर न डालना चाहिए, क्योंकि उससे गर्भ गिर जाने का अंदेशा रहता है *। जहाँ तक हो सके, पानी बहुत धीरे-धीरे योनि में डाला जाय, जिससे गर्भाशय पर ज़ोर न पड़े।

क़ब्ज़—प्रायः गर्भिणी को क़ब्ज़ हो जाने से बड़ा कष्ट हुआ करता है। इसके लिए पहले जो उपाय लिखा जा चुका है, उसका करना बहुत लाभदायक है। यदि जुलाब की आवश्यकता हो, तो बहुत ही हलकी दवाओं का प्रयोग करना चाहिए। किसी दवा के साथ पारे को मिलाना उचित नहीं। स्मरण रहे, केलोमल या ब्लूपिल-नामक अँगरेज़ी

---

* जो डूश करना न चाहें, वे यह प्रयोग काम में लावें—मैनफल १ तोला, कपूर १ तोला, दोनों का बारीक चूर्ण कर आध पाव शहद में मिला कर लगावें।

दवा जो प्रायः डॉक्टर लोग जुलाब के लिये देते हैं, पारे का ही प्रयोग है। इसी प्रकार वैद्य लोग भी, जो इच्छा-भेदी आदि प्रयोग इस काम के लिये उपयोग में लाते हैं, वह भी इन्हीं के समान है। जिस दिन क़ब्ज़ हो जाय, उस दिन दिन में एक ही बार भोजन करना चाहिए। भोजन जो किया जाय, वह बहुत पतला होना चाहिए। यदि हो सके, तो एक दिन उपवास कर डाले; क्योंकि एक दिन बिलकुल उपवास कर लेने से स्वस्थ गर्भिणी को कुछ हानि नहीं होती। मीठे फल, सूखे अंजीर, मुनक्के आदि का सेवन करने से क़ब्ज़ दूर हो जाता है। यदि जुलाब देना ही आवश्यक हो, तो रेंड़ी का तेल उसके लिये सब-से उत्तम है। जिस गर्भिणी को रोज़ क़ब्ज़ रहता हो, उसके लिये उचित है कि वह सप्ताह में एक बार रेंड़ी के तेल का जुलाब ले लिया करे। इसकी मात्रा उतनी ही लेनी चाहिए, जिससे साधारण दस्त हो जाय। मात्रा एक तोले से लगाकर तीन तोले तक सेवन की जा सकती है। सारांश यह कि अपनी शक्ति के अनुसार इसका सेवन करना उचित है। साधारण स्वस्थ अवस्था में जितनी मात्रा सेवन करने का अभ्यास हो, गर्भावस्था में उससे कम ही सेवन करनी चाहिए। रेंड़ी के तेल को सदा प्रातः काल पीकर उसके आध घंटे बाद गरम दूध या चाय पी लेनी चाहिए। बहुत-सी स्त्रियाँ, बुरा स्वाद होने के

कारण इसको पीने में अरुचि प्रकट करती हैं। किंतु नीचे लिखी विधि के अनुसार यदि इसका सेवन किया जाय, तो कोई विशेष कष्ट नहीं होता—

एक कटोरी गरम करके उसमें ढाई तोले के लगभग तेज़ गरम दूध भर दे। फिर उसके बीच में रेंड़ी का तेल डालकर, मुख को खूब चौड़ा खोलकर, गले में डालकर पी जाय, और ऊपर से पान इलायची या सुपारी खा ले।

कुछ डॉक्टरों की राय है कि ब्रांडी के साथ रेंड़ी का तेल मिलाकर पीने से भी कष्ट नहीं होता। किन्तु ब्रांडी पीना गर्भिणी के लिये उचित नहीं। इस कारण, जहाँ तक हो सके, इसका प्रयोग न करे। इस कार्य के लिए दूध अथवा काफ़ी का ही उपयोग करना अच्छा है। बहुत-से चिकित्सक इसके स्थान पर जैतून के तेल का भी प्रयोग करते हैं। किंतु वह रेंड़ी के तेल के समान उत्तम जुलाब नहीं है। जो स्त्रियाँ रेंड़ी का तेल बिलकुल नहीं पी सकतीं, उनको उचित है कि वे मुलहटी और सनाय दूध में उबाल कर पिएँ, या मृदु विरेचन नाम का प्रयोग (जिसमें सौंफ, सनाय, मुलेठी, शुद्ध गन्धक और शक्कर मिली रहती है) का सेवन करें। अथवा त्रिकुटा, त्रिफला, मुलेहठी, सौंफ और सनाय समान भाग लेकर चूर्ण बनाकर फाँकें। जिनको अँगरेज़ी दवा हितकर जान पड़े, वे सिटलिस पाउडर या सलफ़ेट ऑफ़ सोडा उचित

मात्रा में सेवन करें। उससे भी अच्छा जुलाब हो जाता है। यदि कोई दवा न खाना चाहें, तो वे भोजन के साथ बथुआ, मूली, लसोड़े, सलजम आदि शाकों का अधिक सेवन करें।

गर्भिणी और अन्य स्त्रियों को उचित है कि शौच जाते समय काँखें नहीं, अर्थात् ज़ोर न लगावें। इस ढँग से बैठें, जिससे शौच होने में सुबीता रहे। अँगरेज़ों की भाँति कमोड पर बैठना और शौच-स्थान पर बैठकर बहुत-सी बातें सोचना उचित नहीं। क़ब्ज़ पर पहले बहुत कुछ लिखा जा चुका है। इसलिये यहाँ पर विशेष लिखने की आवश्यकता नहीं। फिर भी पाठिकाओं को मैं यह स्मरण कराना चाहती हूँ कि गर्भावस्था में क़ब्ज़ की ओर से लापरवाही करने से प्रसव बड़े कष्ट के साथ होता है। इस कारण उचित है कि विचारपूर्वक ऐसा भोजन किया जाय, जिससे क़ब्ज़ होने ही न पावे। फल और साग वग़ैरह का सेवन करना अति आवश्यक है। रात में अधिक देर तक जागना भी क़ब्ज़ में हानिकारक है। घर में या बाहर खुली हवामें घूमकर खूब कसरत करना अच्छा है। नियत समय पर शौच जाना उचित है। इस कार्य के लिये प्रातःकाल का समय सबसे उत्तम है।

अतिसार—गर्भिणीको कभी-कभी यह रोग अत्यन्त कष्ट-दायक होजाता है। भोजन में परिवर्त्तन करने से यदि

कुछ लाभ न हो, तो चिकित्सा कराना उचित है। यह रोग शीघ्र दूर नहीं होता। अधिक दस्त होने से इसमें विशेष कमज़ोरी तो नहीं होती; किन्तु गर्भपात का भय रहता है। इसमें पेटके ऊपर गरम फ़लालेन का टुकड़ा बाँधे रखना, पैरों को भी गरम रखना तथा खान-पान का उचित प्रबंध रखना चाहिए। यदि चिकित्सक दवा आदि की व्यवस्था करे, तो उसके अनुसार चलना अति आवश्यक है।

वात-नाड़ी-दौर्बल्य (Neuralgia)—इस रोग के होने पर अच्छा भोजन करना आवश्यक है। शरीर में जहाँ दर्द मालूम हो. वहाँ कपूर मिला हुआ वात-नाशक तैल मलकर उसके ऊपर फ़लालेन का कपड़ा बाँध दे। यह रोग कभी-कभी दाँतों के विकार से भी हो जाया करता है। इस कारण यह देख लेना भी आवश्यक है कि दाँतों में कीड़ा तो नहीं लग गया। यदि दाँतों के कारण रोग न हो, और इस रोग का प्रभाव बना ही रहे, तो चिकित्सक की सम्मति लेना आवश्यक है।

संभव है वह वात-नाड़ी शक्तिप्रद (Nervinetonic) का प्रयोग कर लाभ पहुँचावे।

शिरःशूल—यह रोग गर्भिणी को प्रायः क़ब्ज़ होने के कारण हुआ करता है। साधारण जुलाब लेने पर यदि यह रोग न जाय, या प्रातःकाल चेहरा और हाथ सूज जायँ;

तथा सायंकाल पैर सूज जाया करें, तो चिकित्सा कराना आवश्यक है।

साधारण शिरःशूल केवल २ रत्ती नौसादर, २ घूँट ठंडे पानी के साथ दिन में दो-तीन वार फाँक लेने से दूर हो जाता है। या सालवोलेटाइल (Salvolatile) एक चम्मच आधी छटाँक पानी में मिलाकर सेवन करने से भी लाभ होता है।

अर्श (Piles या ववासीर)—इस रोग के होने से गर्भिणी को बड़ा कष्ट होता है। यदि मस्से सूज जायँ, तो उन में वेसलीन या कोई अन्य चिकनी वस्तु लगाते रहना चाहिए। इस वात का पूर्ण ध्यान रखना चाहिए कि क़ब्ज़ न होने पावे; क्योंकि क़ब्ज़ रहने से ही प्रायः बवासीर का रोग उत्पन्न होता है।

पादशोथ (Varicose veins)—इस रोग में पैर वहुत सूज जाते हैं। इससे गर्भिणी उचित कसरत भी नहीं कर सकती। इसकी साधारण चिकित्सा यह है कि उसको एलास्टिक स्टाकिंग पहनाए जायँ। ये ऐसे होने चाहिए जो ठीक तरह से पैरों पर वैठ जायँ। इनको केवल दिन के समय ही पहनना उचित है। रात को खोल देना चाहिए। यह इस रोग का सबसे उत्तम इलाज है। किन्तु भारत में गरमी अधिक होने के कारण, और इनके अधिक क़ीमती होने से भी, हमारे देश की स्त्रियों के लिये यह उपाय

असाध्य है। इस कारण गरम पट्टियाँ ही बाँध देना चाहिए। किसी-किसी गर्भिणी के पैरों की नसें इतनी तन जाती हैं कि उनके फट जाने से रक्त बहने लगता है। जहाँ से रक्त बहे, उसको ऊपर से खूब दबाकर बाँध दे; और तुरंत ही चिकित्सक को बुलाकर इलाज करे। गर्भ के बढ़ने से जब पेट का मांस और चमड़ा बढ़ता है, तब बहुत खुजली उत्पन्न होती है; और पहले प्रसव के समय तो बड़ा ही कष्ट होता है। इसलिये सुबह-शाम पेट पर तिल्ली का तेल मलकर दिन-रात उसपर गरम फ़लालेन की पट्टी बाँधे रखना आवश्यक है। यदि कहीं-कहीं से चमड़ा फट जाय, तो उसपर बोरिक आयन्टमेन्ट या कोई सादा मरहम लगाकर पट्टी बाँधे रक्खे। जिन स्त्रियों के कई बच्चे हो चुकते हैं, उनके पेट का मांस इतना ढीला होजाता है कि ज्यों-ज्यों गर्भाशय ऊपर की ओर बढ़ता है, त्यों-त्यों पेट का मांस सामने की ओर लटकने लगता है। इस कारण गर्भिणी को उठने बैठने में बड़ा कष्ट होता है। इसके लिये एक चौड़े और मज़बूत कपड़े की ऐसी पेटी बाँधनी चाहिए, जिससे अन्दर के अंगों पर दबाव न पड़े, और मांस भी न लटके।

आध्मान (अफरा)—जिन गर्भिणियों का स्वभाव कसरत करने का नहीं होता, अथवा जिनको नित्य कब्ज़ बना रहता है, या गरिष्ठ भोजन करने की आदत होती है,

उनका पेट प्रायः फूल जाया करता है। जो रात के समय देर में भोजन करती हैं, उनको भी यह कष्ट प्रायः हो जाया करता है। यह रोग जिन कारणों से उत्पन्न हुआ हो, उनको दूर करने से ही रोग नष्ट हो जाता है।

हृदय की धड़कन की अधिकता और साँस लेने में कठिनाई मालूम होना, ये लक्षण नवें मास में उत्पन्न होते हैं। इसका कारण यह है कि जब गर्भाशय इतना ऊपर पहुँच जाता है कि उसका दबाव छाती और पेट के बीच की पेशी (Diaphrgm) के ऊपर पड़ता है, तो उसके कारण साँस लेने में कठिनाई होती और हृदय की धड़कन अधिक बढ़ जाती है। दसवें महीने जब गर्भाशय नीचे की ओर उतर आता है, तब यह कष्ट मिट जाता है। यदि विशेष कष्ट मालूम हो, तो एक मात्रा सालवोलेटाइल नाम की दवा दे देने से लाभ होता है।

हृदय-दाह (Heart burn)—यह रोग प्रसव का समय निकट होने पर होता है; और प्रायः प्रसव होने के बाद ही मिटता है। यह अजीर्ण के कारण होता है। इसलिए पाचन चूर्ण या लवण भास्कर*, ३ से ६ माशे की मात्रा तक खिलाने अथवा सेंधा नमक एक

* स्थान स्थान पर जो देशी प्रयोगों के नाम आए हैं, उनके नुसख़े अन्त में लिखे हुए हैं।

भाग, काली मिर्च आधा भाग, नींबू के रस में दस-ग्यारह बार घोटकर सुखा ले। इसको दाल या भाजी में मिलाकर खाय। इसको जल के साथ खाने से भी लाभ होता है। यदि इससे लाभ न हो, तो आधे चम्मच सिर्फ़ मगनेशिया साल्ट या आधे चम्मच सालवोलेटाइल के साथ मिलाकर पीने से लाभ होता है।

मूर्छा—बहुत-सी स्त्रियों को गर्भ रहने के बाद हलकी-सी मूर्छा का दौरा होने लगता है। इसमें उनको कुछ होश अवश्य रहता है, किन्तु बुद्धि का प्रबोध नष्ट हो जाता है। कुछ देर सोते रहना ही इस रोग की यथेष्ट चिकित्सा है; क्योंकि पेट में बच्चे के फिरने लगने पर यह रोग स्वयं ही बंद हो जाता है।

मुखस्राव (Salivation)—इस रोग में गर्भिणी के मुख में बहुत लार पैदा होती है। किन्तु यह रोग बहुत कम गर्भिणियों को होते देखा जाता है। जिनको होता है, उनको बड़ा कष्टदायक होता है। इसको कोई विशेष चिकित्सा नहीं है। आप ही बंद होजाता है। सम्भवतः हलका-सा जुलाब देना भी लाभकारक होता है।

श्वेत प्रदर (Leucorrhea)—इस विषय पर पहले भी लिख चुके हैं। यदि अधिक स्राव होता हो, तो डॉक्टर की राय लेनी चाहिए। किन्तु साधारणतः दिनमें कई बार गुप्त अंग को ठंडे पानी से धोकर शुद्ध रखना

ही काफ़ी है । जब तक बच्चा उत्पन्न नहीं होता, गर्भिणी का यह रोग मिट नहीं सकता। गर्भ की दशा में इस भाग (अर्थात् योनि) को अधिक छूना भी ठीक नहीं। सादा जीवन बिताना और सादा भोजन करना उचित है। ऐसे समय में जल-वायु का परिवर्तन करने से भी लाभ होता है। इससे गर्भिणी के शरीर में बल का संचार होता है; और वह अधिक स्राव की दुर्बलता को सहने में समर्थ होती है। इस रोग में लोहभस्म, या लोहे के अन्य प्रयोग, सेवन करने से बड़ा लाभ होता है; किन्तु इस दवा का सेवन सदा चिकित्सक की सहायता से उसी के बताने के माफ़िक़ करना चाहिए। अन्यथा हानि हो सकती है।

चूचुक के व्रण (Sore-nipples)—यह रोग गर्भिणी के लिये बहुत ही कष्टदायक होता है। यदि चतुर स्त्री प्रसव होने से दो महीने पहले नीचे लिखी हुई किसी एक वस्तु के साथ पाँच मिनट तक स्तन धोया करे, तो कभी स्तनों में घाव पकने आदि का कष्ट न हो।

यूडीकलोन एक भाग, पानी एक भाग, या लवेन्डर एक भाग, पानी एक भाग, अथवा ब्रांडी (Brandy) एक भाग, पानी एक भाग।

इनमें से किसी एक के प्रयोग से स्तनों को धोवे। हमारी सम्मति में सबसे उत्तम प्रयोग यह है कि रेक्टीफ़ाइड

स्पिरिट एक भाग और पानी एक भाग, दोनों को मिलाकर ५ मिनट तक स्तनों की बुड्डी को खूब धोवे। फिर बहुत नरम कपड़े से पोंछकर उत्तम नरम कपड़े की एक गद्दी बनाकर, उसके ऊपर रखकर, ढीली-सी चोली पहन ले। गर्भिणी को उचित है कि वह उक्त दवाओं का घोल बनाकर बोतल में भरकर रख ले; और नियम से नित्य उसका उपयोग किया करे। इस विधि का पूर्ण रूप से पालन करने पर प्रथम बार की गर्भिणी को विशेष कर स्तन-सम्बन्धी कष्ट में लाभ होगा।

सौर में प्रवेश

यह आश्चर्य है कि स्त्रियों को यद्यपि सौर के प्रबन्ध के लिये नौ महीने मिलते हैं, परन्तु वे प्रसव का समय आ जाने तक कुछ भी प्रबन्ध नहीं कर सकतीं। इस बात को ध्यान में रखकर यदि इस विषय पर कुछ अधिक लिखा जाय, तो कृपया पाठक और पाठिकाएँ क्षमा करें।

जो मनुष्य धनी हैं, सब प्रकार से समर्थ हैं, और धन-बल से जब चाहें, सब सामग्री दम-भर में ही एकत्र कर सकते हैं, उनके लिये हम को यहाँ पर कुछ लिखने की आवश्यकता नहीं है। हम साधारण स्थिति के लोगों के लिये ही कुछ लिखना चाहते हैं; क्योंकि उन्हें व्यय करने के लिये पहले से ही धन का प्रबन्ध करना पड़ता है।

नीचे लिखी हुई सामग्री प्रसव के लिये आवश्यक होती है —

१—पलंग पर बिछाने को ४ चादरें।

२—ओढ़ने को २ चादरें।

३—तौलिए ४।

४—पुराने कपड़े के शुद्ध रूमाल, जो रक्त आदि की शुद्धि के लिये आवश्यक होते हैं, जिनको अँगरेज़ी में नेप-कोन्स (Napkins) कहते हैं २४।

५—मोमजामे की चादर, बहुत नरम और मज़बूत २।

६—कंवल २ ।

७—धोती, कमीज़ आदि, जो बदलने के लिये आवश्यक हों, जिनको रात में पहन कर सो सकें, ऐसे २ जोड़े ।

८—पेट पर बाँधने को पट्टियाँ ऋतु के अनुसार गरम अथवा ठंडी २ ।

९—शौच कराने के लिये चीनी का बर्तन, अर्थात् वेडपेन १ ।

१०—बड़े और छोटे नाप के सेफ़्टी पिन के बक्स २।

११—थोड़े-से साधारण पिन ।

१२—रेंडी के तेल की शीशी १ ।

१३ तिल्ली के तेल की शीशी १ ।

१४—बोरिक एसिड की पुड़िया १ ।

१५—उम्दा साफ़ बे कंकड़ की मिट्टी दस सेर, ख़ून तथा पानी को सुखाने के लिये ।

१६—नाल काटने को साधारण लंबाई की तेज़ कैंची १।

१७—नाल बाँधने के लिये रेशमी या मज़बूत तागे दो गज़।

१८—चीनी के बड़े तसले २ ।

१९—बड़े लोटे पानी भरने के लिये २ ।

२०—साबुन-सहित साबुन की डिबिया तामचीनी की १ । साबुन सनलाइट या उत्तम कारबोलिक हो तो अच्छा ।

२१—गंदा पानी उठाने के लिये तसला १ ।

२२—ख़ून से सने कपड़ों को रखने का तसला १ ।

इस काम के लिये कटा हुआ कनस्तर अथवा बालटी भी उपयोगी हो सकती है।

२३—बालक को स्नान कराने का बर्तन १।

२४ - शुद्ध कोमल फटे और धुले कपड़े यथावश्यक।

२५—छोटा-सा नरम कंबल, जिसमें बालक को उसकी माता से अलग करके लिटाया जाय १।

ऊपर लिखे सामान के विषय में कुछ बातें और जानने लायक़ हैं। जो बिछाने की चादरें हों, उनको चार तह कर के बिस्तर पर कमर से नीचे बिछाने में प्रयोग करे। मोम-जामे की चादर सारे पलँग पर आ जाने लायक़ लंबी और तीन फ़ीट चौड़ी होनी चाहिए। मासिक धर्म वाले प्रकरण में यह लिख चुके हैं कि किस कपड़े के नेपकीन्स बनाना ठीक है। २७ इंच लंबा और २७ इंच चौड़ा टुकड़ा इसके लिये काटना चाहिए; क्योंकि इसको तह करके जब गद्दी बनाई जायगी, तो वह काफ़ी मोटी होजायगी।

फटे हुए कपड़ों में से पुरानी धोतियाँ लेकर साफ़-सुथरे छोटे-बड़े टुकड़े बना ले। इन टुकड़ों को नेपकीन के साथ लेकर गरम पानी में डालकर एक घंटे तक उबाले, और उसमें थोड़ासा कपड़े धोने का सोडा भी डाल दे। फिर उनको निकलकर इस तरकीब से धोवे कि कपड़े ज़मीन पर न गिरा पावें। उनके ऊपर धार बाँधकर लोटे या नल से पानी डाला जाय। फिर उनको निचोड़कर तेज़

लाइसोल के घोल में तीन घंटे तक भिगोए रक्खे। बाद को निकालकर ठंडे जल से धोकर सुखाकर अलग-अलग तह बनाकर पीले काग़ज़ में लपेटकर उनके ऊपर नेपकीन लिखकर उनको एकत्र करके रख दे। इसी प्रकार कपड़े के उन टुकड़ों को भी पीले काग़ज़ में लपेटकर टीन के बक्स में रखकर उसका ढकना भली प्रकार बंद कर दे। फिर छः बोतलें सफ़ेद रंग की लेकर उनमें धीमी आँच पर उबला हुआ शुद्ध जल भरकर अच्छी तरह डाट लगाकर उनके ऊपर काग़ज़ रखकर मज़बूती से बाँध दे, और एक बक्स में रखदे। पेट पर बाँधने के लिये ख़ाकी रंग के कपड़े की एक गज़ लंबी, नौ गिरह चौड़ी ६ पट्टियाँ बना कर रख ले। शौच आदि के लिये एक बड़ा लोहे का बेड पेन मँगाकर रख ले।

नवजात शिशु के वस्त्र

उत्पन्न होने पर स्नान कराने के पश्चात् बालक को वस्त्र पहनाने की आवश्यकता होती है। ६ तनज़ेब की पट्टियाँ ६ फ़लालेन की पट्टिआँ, ६ मलमल के और ६ फ़लालेन के कुर्तें बनवाकर रक्खे। कुर्तें इतने नीचे होने चाहिए कि आधी टाँगों तक आ जायँ। दो बड़े आँरखे हों, जिनके बटन पीठ की तरफ लगते हों। आस्तीनें खूब ढीली हों। कमर में एक तस्मा अर्थात् फ़ीता लगा हुआ हो, जो आसानी से बाँधा जा सके। पुरानी धोती के बारह पोतड़े

बना ले; और ६ गुदड़ी अर्थात् बिछौनी २० इंच लंबी और २० इंच चौड़ी हों। इनको बहुत-से तागे डालकर ठीक तौर से बनाना चाहिए। ऊन या किसी महीन कपड़े की सुंदर टोपी बनाकर बालक को पहनावे, जो उसके सिर पर सुंदर मालूम होती हो, और उसके शिर की रक्षा भी कर सकती हो। ऋतु के अनुसार यदि मोज़ा पहनाना भी उचित और आवश्यक हो, तो घुटनों तक के लंबे मोज़े पहनावे।

सौर

हमारे देश में प्रसव के लिये प्रायः घर का सबसे निकृष्ट, अंधकारमय, बिना झरोखों का, कूड़े-करकटवाला घर चुना जाता है; और वहाँ पर ऐसा अन्य सामान भी जमा कर दिया जाता है, जो ज़च्चा के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव डालता है।

हमारी सम्मति में इस पवित्र कार्य के लिये ऐसी गंदी जगह ठीक समझना बड़ी भारी भूल है।

सोचने की बात है कि जिस नवजात शिशु के जन्म के लिये इतनी उत्सुकता होती है, जिसके जन्म पर इतना उत्सव मनाया जाता है, जिसके जन्मोत्सव की प्रसन्नता में बहुत-सा धन खर्च किया जाता है, जिस पर संरक्षकों की सारी भविष्य आशाएँ होती हैं, और जिसको वे अपनी वंश-वृद्धि का सर्वोपरि साधन समझते हैं; शोक!

उसी नवजात शिशु के स्वागत के लिये, ऐसा मलिन अस्वास्थ्यकर और गंदा स्थान चुना जाय, यह कितने दुःख की बात है! पाठक-पाठिकाएँ स्वयं ही इसका विचार कर सकती हैं। हमारी सम्मति में घर का सर्वोत्तम हवा-दार और प्रकाशवाला कमरा, जो सर्वथा इसी कार्य के लिये उपयोगी हो, चुनना उचित है; और वहाँ से सब अनावश्यक सामान हटा लिया जाय। कमरे की लंबाई चौड़ाई इतनी होनी चाहिए कि सेवा करनेवाली परिचारिकाएँ उसमें सरलता और शीघ्रता से घूम फिर सकें। खाट बहुत ज़्यादा नीची न हो। साधारण चारपाई, जिसका लोग व्यवहार करते हैं, वह बहुत नीची होती है। लोहे का स्प्रिंगदार पलँग भी इस काम के लिये ठीक नहीं है। खाट ऐसी तनी हुई होनी चाहिए कि उसकी अर्दवान ढीली न हो; और बैठने से उसमें गढ़ा न पड़ जाय; क्योंकि खाट जितनी अधिक तनी हुई होगी, प्रसव कराने में उतनी ही सरलता होगी। खाट के सिवा दो कुर्सियाँ, एक मेज़ और दूसरी खाट भी वहाँ रहनी चाहिए। प्रसव के लिये ज़रूरी सब सामान और बच्चे के सब कपड़े आदि लाकर दूसरी चारपाई पर रख देना चाहिए। प्रसव-पीड़ा शुरू होते ही सब सामान भली-भाँति सँभालकर ठीक जगह पर रख देना चाहिए।

हम अपनी पाठिकाओं का ध्यान फिर एक बार इस

बात की ओर आकर्षित कराना चाहती हैं कि प्रसव-गृह बहुत हवादार, शुद्ध, प्रकाशमय तथा सर्वोत्तम होना चाहिए। प्रसव के पूर्व ही उसमें स.फ़ेदी भी करा देनी चाहिए।

प्रसव

पहले प्रकरण में, जहाँ गर्भिणी के लक्षण लिखे गए हैं, लिखा जा चुका है कि उन्तालीसवें या चालीसवें सप्ताह में (अर्थात् लगभग पौने दस महीने के बाद) गर्भाशय नीचे के भाग में सामने की ओर खिसक आता है। इस परिवर्तन से गर्भिणी को श्वास लेने में तो सुभीता होता है; परन्तु चलने में कठिनाई प्रतीत होती है। ऐसे समय में प्रायः अर्शरोग (बवासीर) हो जाया करता है। इसके सिवा बार-बार पेशाब करने की हाजत भी होती है, पैर सूज जाते हैं। ये लक्षण प्रायः प्रथम प्रसव में ही विशेष देखे जाते हैं। बाद के प्रसवों में ये प्रायः कुछ दिन पूर्व ही होते हैं, और किसी-किसी गर्भिणी को नहीं भी होते। प्रसव होने से १५ दिन पूर्व प्रसव-मार्ग से एक प्रकार का चिकना लुआबदार बहुत-सा पानी जारी हो जाया करता है, जिससे योनि का बाहरी भाग सूज जाता; और बाहरी मुख चौड़ा हो जाता है। प्रसव के दिन अति समीप होने पर बिना किसी कष्ट के गर्भाशय में शूल-रहित संकोच होने लगता है। सायंकाल के पश्चात्, रात के समय, अर्थात् पूर्व रात्रि में इसका अनुभव अधिकतर होता है। गर्भाशय एक बार सिकुड़ कर इकट्ठा होता हुआ-सा दिखाई देता और फिर ढीला हो जाता है। गर्भवती स्त्रियाँ यह

कहा करती हैं कि गर्भाशय के संकोच के समय बच्चा इधर उधर बहुत ज़्यादा फिरता है। इस कारण इन संकोचों के होने पर यह जानना चाहिए कि प्रसव के दिन समीप हैं। प्रसव होने के पूर्व गर्भिणी के गर्भाशय में दो प्रकार की पीड़ा होती है। एक नियमित और दूसरी अनियमित। इन दोनों का भेद अच्छी तरह समझ लेने की आवश्यकता है। नियमित शूल नियमित समय पर लगातार होता रहता है। यह धीरे-धीरे शुरू होकर खूब बढ़ जाता है। फिर बढ़ते-बढ़ते इतने ज़ोर से होने लगता है कि गर्भिणी को व्याकुल कर देता है। बन्द होने पर बीच के समय में गर्भिणी स्वस्थता का अनुभव करती है। ज्यों-ज्यों धीरे-धीरे शूल तेज़ होता जाता है, त्यों-त्यों उसके बीच का फ़ासला घटता जाता है। किन्तु पीड़ा अधिक समय तक रहती है। नियमित शूल कमर से शुरू होकर धीरे-धीरे सामने की ओर आता है। इस शूल के शुरू होते ही गर्भाशय से रक्त तथा श्लेष्मा का बहाव भी होने लगता है। श्लेष्मा और रक्त का बहना शुरू होने को 'दर्शन' कहते हैं। उस समय यदि एक मात्रा रेंडी के तेल की पिला दी जाय, तो शूल अधिक बढ़ जाता है; और यदि क़ब्ज़ हो, तो उस के दूर होजाने से शूल तेज़ी के साथ शीघ्र-शीघ्र होने लगता है।

अनियमित शूल—यह शुरू से ही अनियमित होता

है। इसके बीच का समय कभी कम और कभी अधिक होता है। इसकी पीड़ा की उग्रता कभी नियमित शूल के समान अत्यन्त भयंकर होती है; और कभी ऐसी धीमी होती है कि गर्भिणी को उसका अनुभव भी नहीं होता। यह शूल सामने की ओर से उत्पन्न होकर वहीं ग़ायब हो जाता है। इस शूल में कभी रक्त या श्लेष्मा का बहाव नहीं होता। इस शूल के होने का कारण क़ब्ज़ होना या भोजन में नियमका न होना ही है। साधारण दस्तावर दवा से इसका कष्ट दूर हो जाता है।

प्रसव-दशा - साधारण सुबीते के लिये प्रसव की दशा तीन विभागों में बाँटी जा सकती है—

१—इस दशा में गर्भाशय का मुख चौड़ा होने लगता है। यह दशा उस समय शुरू होती है जब नियमित शूल होने लगता है, और इसका अन्त गर्भाशय तथा प्रसव-मार्ग के पूर्ण रूप से खुलने पर होता है।

२—यह दशा प्रथम दशा के अन्त में होती है; और बच्चा होने पर इसका अन्त हो जाता है।

३—इसको आलनोल आने की दशा भी कहते हैं। यह द्वितीय अवस्था के समाप्त होने पर शुरू होती है, और आलनोल के गिर जाने पर इसकी समाप्ति हो जाती है।

प्रथम अवस्था में जो शूल उठता है, वह कटाव के समान होता है। प्रारम्भ में कुछ नियम नहीं होता, फिर कभी एक-एक और कभी दो-दो घंटे के अंतर से दर्द उठता है। हर एक दर्द के दौरे के साथ श्लेष्मा निकलने लगता है। फिर दर्द शीघ्रता से होने लगता है; और होते-होते ३० से ४० मिनट की देरी से, नियमित रूप से, होने लगता है। जो दाई सेवा के लिये रक्खी गई हो वह यदि घर में मौजूद न हो, तो उस समय उसे तुरंत बुला लेना चाहिए। यदि इस काम के लिये चिकित्सक की आवश्यकता हो; तो उसको भी तुरंत सूचना दे देनी चाहिए। नियमित शूल के शुरू होने पर डॉक्टर का देख लेना बहुत आवश्यक है। जब शूल तेज़ी से उठे, तो किसी मज़बूत चीज़ को पकड़कर सामने की ओर झुकना चाहिए। किंतु नीचे की ओर झुककर काँखना हानिकारक है; क्योंकि काँखने से कुछ लाभ न होगा; बल्कि ज़च्चा की सारी शक्ति मिट जायगी। प्रसव की प्रथम दशा में, जहाँ तक सम्भव हो, गर्भिणी को टहलते रहना चाहिए। शूल शुरू होने के समय में तो साधारणतः घर का काम-काज करते रहना चाहिए। जब शूल शीघ्र-शीघ्र और तेज़ी के साथ उठने लगे, तब सौर के अंदर पहुँच जाना चाहिए। उस घर में जाकर केवल लेट जाना उचित नहीं। बीच के समय में जब-जब पीड़ा बंद हो जाय,

तब-तब प्रसव के सब सामान को ठीक कराती रहे; और बालक के वस्त्र आदि को सँभाल कर रखवा दे। जब पीड़ा हो, उस समय ज़च्चा या तो खड़ी रहे, या बैठ जाय, अथवा लेट जाय। घूमने से दो लाभ होते हैं। एक तो प्रसव होने में सुभीता रहता है, दूसरे समय जल्द कट जाता है। किंतु इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि प्रसव का समय जिसका समीप आ गया हो, उस गर्भिणी के लिये इतना टहलना उचित नहीं, जिससे वह थक जाय। यदि गर्भिणी पड़ना चाहे, तो उसको केवल लेटने देने में कुछ आपत्ति न करना चाहिए।

प्रायः देखा गया है कि एक बार शूल होने से दूसरी बार शूल होने के बीच के समय में गर्भिणी सो जाया करती है। यह शुभ लक्षण है। ऐसा उपदेश देना चाहिए कि गर्भिणी ऐसे समय में सो रहे। विशेषकर इस अवस्था के आख़िरी वक्त में नींद का आना बहुत फ़ायदेमंद है।

भोजन—इस दशा में हलका, पोषक तथा पतला पथ्य देना चाहिए। इस काम के लिये कुनकुना दूध, चाय, काफ़ी, और मांसाहारियों के लिये मांस का रस (अख़नी) उपयोगी है। एक बार में ३ छटाँक से अधिक पीने का कोई पदार्थ नहीं देना चाहिए।

किसी-किसी गर्भिणी को प्रसव की प्रथम दशा में क़य होती है। उस समय क़य का होना अच्छा है; क्योंकि

क़य हो जाने से गर्भाशय का मुख और प्रसव-मार्ग अधिक खुल जाता है।

यदि क़य अधिक कष्टदायक जान पड़ती हो, तो दो छटाँक के लग-भग गरम जल, जितना गरम पिया जाय, पिए। इससे लाभ होता है। प्रसव की प्रथम दशा शुरू होने से छः घंटे पहले यदि शौच न हुआ हो, तो एक मात्रा रेंड़ी के तेल की पिला दे; और यदि दो घंटे तक इसका कुछ भी असर न हो, तो दस छटाँक पानी में आधा चम्मच नमक मिलाकर पिचकारी (अर्थात् एनीमा) दे। यदि यह उपाय करने पर भी पेट साफ़ न हो, तो सवा सेर गरम जल में सवा तोला खाने का नमक मिलाकर फिर पिचकारी दे। शौच के बारे में विशेष ध्यान रखना उचित है; क्योंकि यदि मलाशय मल से भरा रहता है, तो प्रसव होने में व्यर्थ ही अधिक देर होती है। इससे गर्भिणी को बड़ा कष्ट होता है। जब बालक का सिर नीचे की ओर आता है, तब मलाशय से मल निकल पड़ता है। इससे सेवा करनेवालों को केवल घृणा ही नहीं उत्पन्न होती; किंतु उसकी सफ़ाई करना भी कठिन हो जाता है। इससे गर्भिणी को अन्य भयंकर रोग भी हो जाते हैं।

प्रसव की प्रथम अवस्था में गर्भिणी को अक्सर बार-बार पेशाब करने की हाजत होती है। इसलिये पढ़ी-लिखी दाई का कर्तव्य है कि वह अच्छी तरह यह देख ले कि

मूत्राशय मूत्र से भरा हुआ तो नहीं है ; क्योंकि मूत्राशय के भरे रहने से भी प्रसव होने में देर होती और अनेक प्रकार के रोग हो जाने की सम्भावना बनी रहती है। इसलिये उसको ख़ाली कर देना ज़रूरी है।

ऐसी दशा में स्त्री बैठकर पेशाब नहीं कर सकती। इसलिये उसकी दोनों जाँघों के बीच में छोटा-सा बर्तन रखकर पेशाब करा देना चाहिए।

प्रसव की प्रथम दशा में गर्भिणी को नीचे लिखे कपड़े पहने रहना चाहिए। धोती, बनियायन, लम्बी बाहों की जाकट और अगर मोज़े पहनने की आदत हो, तो ऋतु के अनुसार मोज़े भी पहना दे। जाकट गर्मी की ऋतु में साटन आदि की, और सर्दी की ऋतु में फ़लालैन की होनी चाहिए। इस प्रकार के भारतीय वस्त्र पहनने में प्रसव की दशा में बड़ा सुभीता होता है। अतएव जो बहनें सदा अँगरेज़ी वस्त्र पहनती हैं, उनको भी यही उचित है कि वे प्रसव के समय भारतीय वस्त्र ही पहना करें।

प्रथम अवस्था में स्नान—जब एक बार का शूल उठने से दूसरी बार शूल उठने में एक-डेढ़ घंटे का अन्तर रहे, तो गरम जल से एक बार स्नान करा देना उचित है। इससे गर्भिणी को शांति मिलती है, और गर्भाशय एवं प्रसव का मार्ग अधिक चौड़ा हो जाता है।

निम्न-लिखित प्रकार से स्नान कराना चाहिए। एक

टब गरम जल का सौर में ही रखकर वहाँ के दरवाज़े आदि सब बंद कर दिए जायँ। यदि जाड़े का मौसम हो, तो सुलगी हुई आग की अँगीठी भी रख लेनी चाहिए।

पानी इतना गरम हो, जिसको गर्भिणी आसानी से सह सके। उसको टब के अन्दर इस तरह से बिठलाना उचित है कि उस की टाँगें वग़ैरह सब पानी से भीग जायँ। शरीर के ऊपर का भाग किसी साधारण कपड़े से—यदि शीतकाल हो, तो कंबल से—ढक देना चाहिए। उसको टब के अन्दर १० से २० मिनट तक बिठलाना चाहिए। यदि पानी ठंडा होने लगे, तो और गरम जल मिलाकर उसको ठीक कर लेना चाहिए।

कंप—कभी-कभी गर्भिणी को गर्भावस्था में बड़ा भयंकर कंप (कँपकँपी) होने लगता है। यह कंप बहुत देर तक रहता है। किंतु यह कोई बुरा लक्षण नहीं है। इस कंप से जान पड़ता है कि प्रसव की क्रिया अच्छी तरह उन्नति कर रही है।

बहुत अधिक कंप होने पर भी ज्वर होने की कोई सम्भावना नहीं होती। जब सारे शरीर में पसीना आ जाय, तो सारा शरीर कंबल से ढककर पैरों के नीचे गरम जल की बोतल रख देनी चाहिए। उस समय एक गिलास गरम दूध अथवा चाय पिला देना भी लाभदायक है। इस दशा में गर्भिणी को यह तसल्ली देना उचित है कि

तुमको कुछ हानि न होगी, दशा बहुत अच्छी है, कुछ चिंता की बात नहीं है।

प्रसव की प्रथम अवस्था में दाई का कर्त्तव्य—

१—दाई का प्रथम कर्तव्य यह है कि वह देखे, प्रसवोपयोगी सब सामान तैयार है या नहीं। गरम और ठंडे जल का प्रबंध, गर्भिणी के बदलने के तथा बच्चे के पहनने के कपड़ों को भली भाँति देख-भाल करा लेना ज़रूरी है। सब कपड़े ठीक-ठीक मौजूद रहने चाहिए। प्रथम दशा के प्रारंभ से लेकर अन्त तक काफ़ी समय मिलता है। किंतु दुःख की बात है कि बहुत कम दाइयाँ इस बात पर ध्यान देती हैं कि, सब आवश्यक सामान मौजूद है अथवा नहीं।

२—दाई का फ़र्ज़ है कि नीचे लिखे तरीक़े से गर्भिणी का बिस्तर बनावे।

खाट पर सबसे पहले नरम चटाई बिछावे। यदि चटाई न हो, तो एक कंबल या रज़ाई बिछा दे। फिर उसके ऊपर एक चादर डाले। उसके ठीक बीच में मोमजामा बिछावे। मोमजामे के ऊपर एक चादर की चार तहें कर के उसे नीचे की ओर बिछा दे। उसके ऊपर एक लंबी चादर फिर बिछा दे। फिर पाँयताने की ओर एक कंबल रख दे। आवश्यकता होने पर यह कंबल उढ़ाने आदि के काम भी आ सकता है।

इसी प्रकार मोमजामा फैलाकर उसके ऊपर चार
चादरवाला दूसरा विस्तर लपेट कर रक्खे; क्योंकि
पन्न होने पर बदलने के लिये इसकी आव-
होती है।

उसके बाद नेपकीन और धज्जियाँ, जो अलग-
लते काग़ज़ों में लपेटकर रक्खी गई थीं, निकालकर
ँचवाली अँगीठी पर एक टीन का टुकड़ा रख
-रक करके उनको इस प्रकार गरम करे कि
काग़ज़ तो जल जाय, पर कपड़े तक आग
।

एक डेगची में जो ठंडे पानी से आधी भरी हुई
ते के उबले हुए शुद्ध पानी से भरी हुई बोतलों
नी उसमें आवें, रख दे; और उसके नीचे इस
आग जलावे कि पानी उबलने लगे। जब दस
पानी उबल चुके, तो बोतलों की डाट निकाल-
रुई लगा दे, और इस प्रकार फिर दस मिनट
उबलने दे। फिर बोतलों को निकालकर,
कड़ी डाट लगाकर, उनको ऐसी जगह रख दे,
पानी से वे मिल सकें। इसी तरह कुछ बोतलें
गरम जल में रक्खी रहने दे, जिससे वे
रहें।

रम किए कपड़े के टुकड़ों ने चार इंच लंबा

और चौड़ा एक टुकड़ा काटकर, उसके बीच में छेद कर के, पूर्वोक्त विधि के अनुसार गरम कर, बच्चे के कपड़ों के साथ रख देना चाहिए। उसके बाद दाई या नर्स का कर्तव्य है कि वह देख ले, सब सामग्री तैयार है या नहीं। सौर में गर्भिणी की एक सम्बधिनी, एक दाई और एक स्त्री-चिकित्सिका रहनी चाहिए। ज़ोर से बोलना, घुसपुस करना, किसीको धमकाना आदि काम उस कमरे में न करने चाहिए। वहाँ पर शांति और प्रसन्नता होनी उचित है। कमरे के अन्दर शुद्ध वायु अच्छी तरह काफ़ी जानी चाहिए। यदि सर्दी के दिन हों, और अन्दर आग रखने की आवश्यकता हो, तो कोयलों को भली भाँति सुलगा-कर, जब धुआँ निकलना बंद हो जाय, तो थोड़ी-सी आग रखने का भी प्रबंध कर देना उचित है।

प्रथम दशा में, यदि आवश्यकता हो, चिकित्सक को बुलाकर पास के दूसरे कमरे में बिठा दे। पहलौठी का प्रसव हो, तो डॉक्टर का वहाँ पर रहना बहुत आवश्यक है। अन्यथा यदि कोई विशेष कष्ट न हो, तो डॉक्टर की आवश्यकता नहीं। जहाँ तक हो सके, चिकित्सक को योनि के अन्दर हाथ इत्यादि डालकर परीक्षा न करने देनी चाहिए; क्योंकि इस से बहुत हानि होती है। अनु-भवी चिकित्सक को बाहरी परीक्षा करने से ही भीतरी अंगों की दशा का विशेष ज्ञान हो जाता है। अतएव जो

चतुर चिकित्सक होते हैं, वे भीतरी अंगों की परीक्षा करने का यत्न ही नहीं करते। जब अत्यन्त आवश्यकता होती है; और उसके किए बिना काम ही नहीं चलता, तभी वे यह काम करते हैं।

हम फिर भी कहते हैं कि भीतरी परीक्षा करने से, सिवा हानि के, कुछ लाभ नहीं होता; क्योंकि इससे अंग गरम हो जाते और पीछे से सूज भी जाते हैं। भीतरी परीक्षा करने से हाथ के साथ रोग पैदा करनेवाले कीड़े अन्दर चले जाते हैं, जिसका नतीजा बड़ा भयंकर होता है। यहाँ तक कि कभी-कभी मृत्यु भी हो जाती है।

भारतवर्ष में प्रायः यह रीति है कि जब स्त्री को प्रसव में अत्यंत पीड़ा होती है, और कई दिन तक बच्चा पैदा नहीं होता, तभी चिकित्सक को बुलाकर उसका इलाज कराते हैं। मूर्ख दाइयों के बार-बार अन्दर हाथ डालने से जो उपद्रव होते हैं, वे यहाँ पर अधिकता के साथ नज़र आते हैं। यदि कष्टमय प्रसव हो, तो उस में गर्भिणी को विशेष हानि पहुँचने की सम्भावना रहती है।

यदि प्रथम दशा के अन्त में पानी की थैली न टूटी हो, रक्त आना शुरू न हुआ हो, गर्भिणी अपना भोजन ठीक-ठीक करती हो, तथा शूल नियमित अन्तर से बराबर जारी रहे, शूल के अन्तर के बीच के समय में गर्भिणी

और चौड़ा एक टुकड़ा काटकर, उसके बीच में छेद कर के, पूर्वोक्त विधि के अनुसार गरम कर, बच्चे के कपड़ों के साथ रख देना चाहिए। उसके बाद दाई या नर्स का कर्तव्य है कि वह देख ले, सब सामग्री तैयार है या नहीं। सौर में गर्भिणी की एक सम्बधिनी, एक दाई और एक स्त्री-चिकित्सिका रहनी चाहिए। ज़ोर से बोलना, घुसपुस करना, किसीको धमकाना आदि काम उस कमरे में न करने चाहिए। वहाँ पर शांति और प्रसन्नता होनी उचित है। कमरे के अन्दर शुद्ध वायु अच्छी तरह काफ़ी जानी चाहिए। यदि सर्दी के दिन हों, और अन्दर आग रखने की आवश्यकता हो, तो कोयलों को भली भाँति सुलगा-कर, जब धुआँ निकलना बंद हो जाय, तो थोड़ी-सी आग रखने का भी प्रबंध कर देना उचित है।

प्रथम दशा में, यदि आवश्यकता हो, चिकित्सक को बुलाकर पास के दूसरे कमरे में बिठा दे। पहलौठी का प्रसव हो, तो डॉक्टर का वहाँ पर रहना बहुत आवश्यक है। अन्यथा यदि कोई विशेष कष्ट न हो, तो डॉक्टर की आवश्यकता नहीं। जहाँ तक हो सके, चिकित्सक को योनि के अन्दर हाथ इत्यादि डालकर परीक्षा न करने देनी चाहिए; क्योंकि इस से बहुत हानि होती है। अनु-भवी चिकित्सक को बाहरी परीक्षा करने से ही भीतरी अंगों की दशा का विशेष ज्ञान हो जाता है। अतएव जो

चतुर चिकित्सक होते हैं, वे भीतरी अंगों की परीक्षा करने का यत्न ही नहीं करते। जब अत्यन्त आवश्यकता होती है; और उसके किए बिना काम ही नहीं चलता, तभी वे यह काम करते हैं।

हम फिर भी कहते हैं कि भीतरी परीक्षा करने से, सिवा हानि के, कुछ लाभ नहीं होता; क्योंकि इससे अंग गरम हो जाते और पीछे से सूज भी जाते हैं। भीतरी परीक्षा करने से हाथ के साथ रोग पैदा करनेवाले कीड़े अन्दर चले जाते हैं, जिसका नतीजा बड़ा भयंकर होता है। यहाँ तक कि कभी-कभी मृत्यु भी हो जाती है।

भारतवर्ष में प्रायः यह रीति है कि जब स्त्री को प्रसव में अत्यंत पीड़ा होती है, और कई दिन तक बच्चा पैदा नहीं होता, तभी चिकित्सक को बुलाकर उसका इलाज कराते हैं। मूर्ख दाइयों के बार-बार अन्दर हाथ डालने से जो उपद्रव होते हैं, वे यहाँ पर अधिकता के साथ नज़र आते हैं। यदि कष्टमय प्रसव हो, तो उस में गर्भिणी को विशेष हानि पहुँचने की सम्भावना रहती है।

यदि प्रथम दशा के अन्त में पानी की थैली न टूटी हो, रक्त आना शुरू न हुआ हो, गर्भिणी अपना भोजन ठीक-ठीक करती हो, तथा शूल नियमित अन्तर से बराबर जारी रहे, शूल के अन्तर के बीच के समय में गर्भिणी

को आराम मिलने से वह सो जाया करे, शरीर में किसी प्रकार का ताप न बढ़े, चिकित्सक सब प्रकार की परीक्षा कर के यह बतला दे कि कोई अस्वाभाविक लक्षण नहीं है, तो प्रथम अवस्था में अधिक समय लगने पर भी कुछ हानि होने की सम्भावना नहीं है।

दूसरी अवस्था में थैली फटकर पानी निकलने लगता है। शूल पहले की दशा की अपेक्षा जुदी तरह का होता है। इस शूल में पहले की भाँति कटाव-सा नहीं होता। केवल पेट में चमक-सी उठती है। उसका कष्ट इतना साधारण होता है कि गर्भिणी को चिल्लाने की आवश्यकता नहीं होती। उस समय उसको यह आज्ञा देनी चाहिए कि वह मुँह बंद करके नीचे की ओर काँखने की कोशिश करे, अर्थात् ज़ोर लगाने की कोशिश करे।

यदि डॉक्टर को बुलाने की आवश्यकता हो, और पहले से वह न आया हो, तो इस समय उसको बुलवा लेना चाहिए।

इस दशा में पहनने के कपड़ों में केवल इतना परिवर्त्तन कर देना चाहिए कि पेटी-कोट या अन्य कोई कपड़ा, जो अन्दर पहने हुए हो, वह निकाल दे। गर्भिणी को लिटा देना चाहिए; परंतु करवट बदलते रहना आवश्यक है। कभी पीठके बल, कभी बाईं करवट से और कभी दाहनी करवट से लेटे। ऐसा करने से बच्चे के नीचे की ओर आने में सुबीता

होता है, और उसको कोई कष्ट नहीं होता। यदि गर्भिणी को पेशाब या पाखाने की हाजत हो, तो चिकित्सक की सम्मति के अनुसार वहीं पर बर्तन रखकर उसका प्रबंध कर दे; क्योंकि इस समय केवल हाजत ही हुआ करती है। असल में पेशाब या पाखाना होने की संभावना नहीं रहती। यदि उस समय चिकित्सक पास न हो, तो बेडपेन (मल-मूत्र त्यागने का बर्तन) आदि लगाने का साहस न करे; क्यों-कि उस समय बच्चे का सिर इतना नीचे की ओर आया रहता है कि उसके कारण सारे अंग फैले रहते हैं। ऐसी दशा में यदि मलाशय से मल निकल जाय, तो दाई को उचित है कि वह शुद्ध फटे हुए कपड़े से पोंछ कर फिना-इलवाले बर्तन में डालकर साफ़ कर दे।

जब पानी निकल जाय, तो गर्भिणी के नीचे से भीगे हुए सब कपड़े उठाकर दूसरे बदल देने चाहिए। फिर गर्भिणी को पीठ के बल लिटाकर, उसके नीचे बेडपेन लगाकर, एक अलग बर्तन में बोतल का गरम पानी रख कर, साबुन, तेल, ब्रुश और उम्दा कैंची लेकर, प्रसव-मार्ग के आस-पास के सब बाल काटकर साफ़ कर दे, और फिर साबुन और पानी लगाकर जाँघें तथा आस-पास के सब स्थान धोकर १२ छटाँक पानी में एक चम्मच लाइसोल मिलाकर ऊपर से उससे धो डाले। फिर पुराने नरम कपड़े से धीरे-धीरे पोंछ कर वहाँ पर

नेपकीन लगा दे। समय-समय पर गर्भाशय से और भी पानी निकलेगा। अतः दाई को उचित है कि उस समय भी इसी प्रकार नेपकीन बदलती रहे।

अब प्रश्न यह है कि जब बालक उत्पन्न होने को होता है, उस समय गर्भिणी को किस प्रकार लेटना चाहिए। वास्तव में यदि स्वाभाविक प्रसव हो, तो इस विषय में कोई विशेष मत-भेद नहीं। किंतु यदि कुछ भी अस्वाभाविकता उपस्थित हो, और चिकित्सक भी मौजूद हो, तो उसकी आज्ञा का पालन करे। अन्यथा जिस प्रकार योरप की स्त्रियाँ बाईं करवट लेटकर सन्तान पैदा करती हैं, वही शैली अच्छी है; क्योंकि उस शैली से योनि और गुदा के बीच में जो मांस का भाग है, उसके फटने का भय नहीं रहता। अन्यथा उसके फटने का भय रहता है।

भारतीय स्त्रियाँ साधारणतः पीठ के बल लेटकर ही सन्तान उत्पन्न करती हैं। इसमें भी कोई विशेष हर्ज नहीं। किन्तु यहाँ की स्त्रियों का जो यह विश्वास है कि पीठ के बल लेटे बिना बालक उत्पन्न ही नहीं होता, सो केवल भ्रम है। उनका कर्तव्य है कि वे चिकित्सक की सम्मति के अनुसार, जैसे वह लिटावे, लेट जायँ; क्योंकि वह उनसे अधिक ज्ञान रखता है; और उनके हित के लिये ही सब आवश्यक बातों का विचार करता

है। गर्भिणी को बच्चा उत्पन्न होते समय स्वभाव से ही काँखने की इच्छा होती है। किन्तु यदि वह ऐसा करने में असमर्थ हो, या यह कहे कि मुझमें शक्ति नहीं है, तो उस पर इसके लिये दबाव डालना हानि-कारक है। यदि समर्थ होने पर वह काँखने के लिये प्रयत्न करे, तो उसके पैरों के नीचे एक तकिया रख दे, और बिस्तर के एक किनारे पर कोई कपड़ा या तौलिया बाँध दे। इसके सिवा उसको यह भी बतला दे कि जब वह काँखे तब या तो इस तौलिए को पकड़ ले, या पैरों से तकिए के ऊपर ज़ोर लगाकर काँखे। यदि शूल उठने के समय गर्भिणी चिल्लाना चाहे, तो उसको खूब चिल्लाने दे। इसमें रुकावट डालने की कुछ आवश्यकता नहीं। प्रसव-वेदना को कम करने के लिये कभी-कभी डॉक्टर लोग क्लोरोफ़ार्म (बेहोशी) सुँघाने की राय भी देते हैं; किन्तु स्मरण रहे, क्लोरोफ़ार्म बहुत तेज़ चीज़ है। इस कारण कमज़ोर हृदय की गर्भिणी को यह हर्गिज़ न देना चाहिए। यदि विशेष आवश्यकता हो, और गर्भिणी का हृदय कमज़ोर न हो, तो जब दूसरी अवस्था का आधा समय व्यतीत हो जाय, तब इसका प्रयोग करना उचित है।

जब चिकित्सक यह बतलावे कि अब बच्चा पैदा होनेवाला है, तब दाई का कर्तव्य है कि यह नीचे

लिखी चीज़ें डॉक्टर या प्रसव करानेवाली डॉक्टरनी के दाहने हाथ की तरफ़ एक मेज़ पर रख दे। यदि मेज़ न हो, तो कुर्सी या और किसी स्थान पर रख दे।

एक चीनी के तसले में साफ़ बोतल में पानी और उसमें थोड़ा-सा लाइसोल मिला दे।

एक अच्छी और साफ़ की हुई क़ैंची।

नाल को बाँधने के लिये तागा।

साफ़ किया हुआ छेदवाला पूर्वोक्त कपड़ा।

चिकित्सक के हाथ धोने से यदि तसले का जल ख़राब हो जाय, तो दाई को मुनासिब है कि तुरन्त दूसरा पानी बदलकर रख दे।

किसी-किसी गर्भिणी के पीठ की ओर से शूल अधिक उठता है; और किसी-किसी के पेट की ओर से। यदि शूल पीठ की ओर से हो, तो दाई एक सख़्त तकिया पीठ की ओर रखकर शूल के समय दोनों हाथों से दबा दिया करे। यदि पेट की ओर शूल अधिक हो, तो पेट के ऊपर एक मज़बूत पट्टी बाँध दे, या शूल के समय पेट को दबा दे, तो इससे भी लाभ होता है। यदि पीठ में दर्द अधिक हो, तो मलदेने से भी कभी-कभी लाभ हो जाता है।

उन ज़च्चाओं के, जिनको अधिक समय तक यह कष्ट सहने का दुर्भाग्य प्राप्त होता है, कभी-कभी पैरों और जाँघों में ऐंठन (Cramps) होने लगती है। इससे

उनको अत्यन्त कष्ट होता है। दाई को उचित है कि हाथ-पैरों को खूब दबावे, और गर्भिणी को उत्साहित करे कि यह शीघ्र बच्चा पैदा होने का लक्षण है। घबराओ मत, तुम अभी बच्चे को देखकर प्रसन्न हो जाओगी।

यदि इस प्रकार धीरज दिलाने और दबाने से आराम न मिले, तो उसे करवँटिया सुलादे, या डॉक्टर की आज्ञा लेकर दोनों ओर से पकड़कर खड़ी कर दे। जब बालक उत्पन्न होने को हो, तो डॉक्टर की आज्ञा के अनुसार दाई गर्भिणी के पेट पर हाथ रक्खे, और जब तक वह दबाने के लिये न कहे, न दबावे।

तृतीय अवस्था—ज्यों ही बालक उत्पन्न हो, त्यों ही ज़च्चा के सिर के नीचे से तकिया उठा लेना चाहिए, और उसको उठने तथा किसी प्रकार का परिश्रम करने देना भी उचित नहीं; क्योंकि उस समय उसके उठने और परिश्रम करने से बड़ा अनर्थ हो सकता है। जिस समय बच्चा उत्पन्न हो चुकता है, तो प्रायः ज़च्चा शीत लगने की शिकायत किया करती है। इसके निवारण का उपाय यह है कि गरम कपड़े तथा कंबल से उसको खूब ढक दे। जब चिकित्सक बच्चे को मा से जुदा कर दे, तब दाई को उचित है कि वह बच्चे को नरम और गरम कपड़े में लपेटकर उसके लिये बनाए हुए बिस्तर पर अच्छी तरह सुरक्षित लिटा दे। उसको लिटाने के बाद स्वयं ज़च्चा के पास

जाकर उसके पेट पर हाथ रखकर देखे कि उस समय नाभि और भगास्थि के बीच में बच्चे के सिर के समान एक कठिन गोला-सा देख पड़ेगा, और उसके हाथ के नीचे यह भी मालूम होगा कि गर्भाशय बार-बार खुलता और बंद होता है।

जब गर्भाशय बंद होता है, तब ज़च्चा शूल की शिकायत करती है। ऐसी दशा बनी रहे, तो स्वाभाविक समझनी चाहिए। यदि गर्भाशय अधिक देर तक खुला रहे, और फिर बंद हो, तो दाई का कर्तव्य है कि वह डॉक्टर का ध्यान इस बात की ओर खींचे।

जब आलनोल अच्छी तरह निकल जाय, तो एक घंटे तक ज़च्चा को आराम करने दे, और आलनोल आदि को धीरे-धीरे हटा ले। भीगे हुए कपड़े दूर करके उनके स्थान पर सूखे हुए कपड़े बिछादे, और ज़च्चा को यथाशक्ति दूध पीने के लिये दे। उसके बाद बच्चे की ओर ध्यान दे। चिकित्सक का कर्तव्य है कि वह ज़च्चा की समय-समय पर अच्छी तरह से जाँच करता रहे।

दाई को उचित है कि जो कपड़े बच्चे को पहनाने के लिये आवश्यक हों, उनको पहले से ही ठीक करके रख दे, और उसके नहलाने की तैयारी करे। जब सब चीज़ें तैयार होजायँ, तब बच्चे को अपनी गोद में लेकर उसका कपड़ा उतार दे, और नाल को देखे कि कहीं

ख़ून तो नहीं आ रहा है। यदि आता हो, तो चिकित्सक को बुलाकर दूसरा धागा अच्छी तरह बँधवा दे, और सारे शरीर को भली भाँति देखकर यह मालूम करे कि किसी स्थान पर कोई अस्वाभाविकता तो नहीं है।

यदि किसी स्थान पर अस्वाभाविकता देख पड़े, तो डॉक्टर का ध्यान उस ओर खींचे। उसके बाद बच्चे के सारे शरीर के ऊपर तिल्ली का तेल मलकर कपड़े से पोंछ डाले। फिर साफ़ और नरम कपड़े की धज्जी से उसके सारे बदन पर साबुन लगावे। उसके मल-मार्ग और मूत्र-मार्ग को भी साबुन से धोकर अच्छी तरह साफ़ कर ले। बाद को उसे साफ़ जल के टब में इस प्रकार रक्खे कि उसका सारा शरीर धुल जाय। परन्तु मुँह और सिर तक पानी न पहुँचे। फिर उसको तुरंत ही निकालकर जल्दी से शरीर को अच्छी तरह पोंछकर कपड़े पहना दे।

नाभि-नाली को खूब पोंछकर पहले बनाए छेदवाले कपड़े के ऊपर बोरिक एसिड छिड़ककर उसके ऊपर लगाकर ऊपर से पट्टी बाँध दे। फिर बच्चे को किसी शाल या नरम कंबल में लपेटकर उसी माता को दिखा-कर बिस्तरे पर लिटा दे, और बच्चे का सब सामान ठीक जगह रखकर ज़च्चा को सँभाले। ज़च्चा के लिये दो चादरें, मोमजामा, तौलिया, साबुन, गरम और ठंडा पानी

और थोड़ा-सा लाइसोल ठीक तरह से जमा कर ले। फिर उसकी छाती और हाथ नाभि तक एक कंबल से ढक दे; और इसी प्रकार नीचे का भाग—जाँघें, घुटने, पैर इत्यादि—दूसरे कंबल से ढक दे; जननेंद्रिय के ऊपर जो कपड़े आदि खून अथवा पानी के भरे हुए हों, उनको अलग कर दे। किंतु मोमजामे की चादर रहने दे। फिर ज़च्चा के नीचे वेडपेन रखकर नाभि से नीचे और जाँघों के ऊपर सारे अंगों के खून के धब्बे और छीछड़े आदि अच्छी तरह से धोकर साफ़ कर दे।

एक टोंटीदार लोटे में लाइसोल मिला हुआ पानी भरकर उसको दाहने हाथ में पकड़े और बाएँ हाथ से योनि को खोलकर, धीरे-धीरे जल डालकर, धो डाले। फिर साफ़ नरम कपड़े से भली भाँति पोंछकर सुखा दे। फिर उसके नीचे से वेडपेन निकालकर मोमजामा, चादर अथवा अन्य कपड़े, जो भीगे हों, निकाल दे। नीचे के कपड़े निकालते समय ज़च्चा को इधर-उधर की करवँट बदलाकर लिटाए ही रखना चाहिए; उठने देना उचित नहीं। यह काम हो जाने के बाद एक चौड़ी पट्टी, जो पहले ही से तैयार हो, पेट पर बाँधे। पट्टी ऐसी हो कि नीचे पेड़ू तक अच्छी तरह आती हो। पट्टी के ऊपर चौड़ा सेफ़्टी पिन लगा दे; जिसके द्वारा उसके दोनों किनारे जुड़ जायँ। फिर उसकी धोती आदि सब ठीक कर दे। हमारे देश की कुछ स्त्रियाँ

अंदर पाजामा पहना करती हैं। इसलिये उसको भी पहना दे। फिर थरमामेटर लगाकर ताप देखकर लिखले, और ज़च्चा को दूध पिलाकर सुलादे। ऐसे समय में प्रायः ज़च्चा तकिया माँगा करती है, यदि शरीर स्वस्थ हो और डॉक्टर की आज्ञा हो, तो तकिया देने में कुछ हानि नहीं।

ज़च्चा को सुलाने के बाद सब सामान वहाँ से धीरे-धीरे हटाकर मकान को साफ़ करदे। दाई को यह स्मरण रखना चाहिए कि स्वाभाविक प्रसव होने के बाद डूश (पिचकारी) देना सर्वथा हानिकारक है।

प्रसव के बाद ज़च्चा और बच्चे की हिफ़ाज़त

बच्चा पैदा हो जाने के बाद ज़च्चा को कई दिन तक बिलकुल चुप-चाप लेटे रहना चाहिए। उससे मिलने तथा बातचीत करने के लिये बहुत कम आदमियों को आने देना चाहिए। एक बार में एक ही आदमी को कुछ देर के लिये बातचीत करने की आज्ञा देनी चाहिए।

पश्चात् शूल—प्रायः प्रथम प्रसव में यह व्याधि नहीं होती। किंतु बाद के प्रसवों में यह भयंकर रूप से होती है। यदि इस शूल के कारण ज़च्चा की नींद में कोई बाधा न पड़े, तो इसका इलाज करने की कोई आवश्यकता नहीं। पर अगर कष्ट अधिक हो, तो इलाज करना उचित है।

ज़च्चा को बहुत ही साफ़ रखना चाहिए। भीगे हुए ख़राब दाग़वाले सब कपड़े हटा देने चाहिए। उसकी गुप्त इंद्रियाँ छः दिनों तक पहले कही गई प्रसव के बाद की विधि के अनुसार धो देना आवश्यक है। फिर चार दिन तक दिनमें एक बार धोना चाहिए। यदि नेपकीन में कोई ख़ास तरह की गंध आवे, तो उसे डॉक्टर को दिखला देना चाहिए।

भोजन * प्रसव हो जाने पर तीन दिन तक घी डाल

---

* बालक होने के बाद पहले तीन दिनों में गुड़ १ छटाँक और घी १ छटाँक लेकर, घी को गरम करके, उसमें गुड़ का छना हुआ पानी

कर पुराने गुड़ का हरीरा, साफ़ की हुई अजवायन की कली और बादाम मिलाकर पँजीरी बनाकर खिलावे। इसके सिवा प्राचीन रीति के अनुसार जो स्त्रियाँ प्रायः अनेक प्रकार के हरीरे, सोंठ के लड्डू (सौभाग्य शुंठी) जीरे की

डाल दे। जब पक जाय, तब उतारकर थोड़ा-थोड़ा गरम रहने पर ज़च्चा को पिलावे। फिर अजवायन को खूब कूटकर उसका छिलका निकाल डाले। ऐसी साफ अजवायन १ छटाँक और गुड़ २ छटाँक ले। पहले घी को गरम करे। फिर उसमें गुड़ डाल दे। फिर नीचे उतार-कर अजवायन मिलाकर ठंडा करके सात दिन तक ज़च्चा को खिलावे।

दस दिन के बाद बत्तीसे के लड्डू और साधारण दाल-रोटी, अर्थात् मूँग की दाल, मेथी का साग और गेहूँ की रोटी खिलावे।

बत्तीसे के लड्डू बनाने की विधि—बत्तीसे का चूर्ण पाव भर, गुड़ ऽ१। सेर, घी ऽ१। लेकर पहले गुड़ की चाशनी बनाकर घी मिलाकर पीछे चूर्ण डालकर लड्डू बना ले। फिर वे लड्डू ज़च्चा को खिलावें। अगर कड़वाहट के कारण खाने में कष्ट हो, तो बनाते समय थोड़ा-सा आटा मिला दे। ये बत्तीसे के लड्डू सात दिन तक खिलावे। यदि गरमी की ऋतु हो, तो ये लड्डू न खिलाकर साधारण पथ्य खिलावे।

इसके बाद एक महीने तक नीचे लिखा हुआ शुंठी-पाक बनाकर खिलावे।

शुंठी पाक—सोंठ पाव-भर। चीनी १ सेर। गोंद पाव भर। धनिएँ की गिरी आध सेर। बादाम की गिरी आध सेर। पहले चीनी की चाशनी बनाकर घी डाले। फिर उक्त सब सामान डाले। बाद को भूनकर गोंद मिलाकर पँजीरी या लड्डू बना ले। पाचन-शक्ति के अनुसार ४० दिन खिलावे और पथ्य से रक्खे।

पँजीरी (पंचज़ीरक-पाक) या किसी वृद्ध वैद्य की सम्मति के अनुसार कोई अन्य पौष्टिक पाग आदि खाया करती हैं, वे खायँ। वर्तमान समय में जो लोग विलायती रवाज के माफ़िक दूध, चाय, काफ़ी, कार्नफ़्लेक और टोस्ट आदि चीज़ें भारतीय बहनों को खिलाते हैं, वे अच्छा नहीं करते। ये चीज़ें उनके लिये हानिकारक हैं। इनसे उनके शरीर की पुष्टि नहीं होती ; और सब अंग शिथिल हो जाते हैं। इन चीज़ों के खाने से जवानी में ही बुढ़ापा देख पड़ने लगता है।

यदि नोट में लिखी हुई चीजें माफ़िक न हों, तो तीन दिन तक सिवा दूध के और कुछ न दे। उसके बाद जब मल शुद्ध हो जाय, तो दलिया, मूँग की दाल, रोटी, मेथी का साग आदि दे। मांसाहारी बहनों के लिये उबाली मछली, मुर्ग का चूज़ा वग़ैरह आहार उत्तम है। फिर धीरे-धीरे मामूली स्वाभाविक भोजन देना शुरू कर दे। पर यह स्मरण रहे कि जिस चीज़ से उसके दूध पर बुरा असर पड़े, वह हरगिज़ न खिलावे। उसके लिये खट्टे फल, गरम खाने-पीने की चीज़ें, सर्वथा वर्जित हैं। फलों में मीठे अँगूर, अनार, नाशपाती, और सेब उत्तम हैं। ये फल बहुत कच्चे या बहुत पके हुए न होने चाहिए। किशमिश आदि मेवे खिलाना भी लाभदायक है। जौ का पानी (Barley water) और दूध बराबर-बराबर मिलाकर पिलावे। कभी-कभी खारी सोडावाटर

भी पीने को दिया जा सकता है। पानी उबला हुआ पिलाया जाय।

बाज़ारों में जो लेमोनेड, जिंजर आदि बिकते हैं, ये ज़च्चा के लिये बड़े हानिकारक होते हैं।

मूत्र-कृच्छ्र—कभी-कभी पहले प्रसव के बाद ज़च्चा को पेशाब करने में बड़ा कष्ट होता है। इस कष्ट के निवारण के लिये जननेंद्रिय को गरम जल से धोवे, या गरम जल को बेडपेन में डालकर योनि में उसकी भाप दिलावे, या ज़च्चा से पेट के बल उकडूँ लेट जाने को कहे।

यदि इन सब उपायों से भी पेशाब न उतरे, तो इलाज कराना उचित है।

मल-त्याग—बच्चा पैदा होने के बाद यदि तीसरे दिन तक क़ब्ज़ रहे, तो एक मात्रा रेंड़ी के तेल की पिला देना चाहिए। यदि इसका प्रभाव न हो, तो १० छटाँक गरम जल का डूश दे। जब तक स्त्री सौर में रहती है, उसको प्रायः क़ब्ज़ रहा करता है। पर इस कारण इसको दूर करने के लिये बार-बार रेंड़ी का तेल पिलाना उचित नहीं। केवल पिचकारी से ही मलाशय को साफ़ कर देना काफ़ी है।

सौर से निकलना—सौर छोड़ने की शिक्षा देना बहुत कठिन है; क्योंकि यह काम आचार व्यवहार, खान-पान और रहन-सहन पर निर्भर है।

बहुत-सी स्त्रियाँ ग़रीबी के कारण बच्चा पैदा होने के

गुदा को खूब धो देना चाहिए। पाख़ाने-पेशाब का स्थान खूब साफ़ रखने की ज़रूरत है। नाल गिर जाने पर रोज़ स्नान कराया जा सकता है।

बच्चे की नाल की हिफ़ाज़त—नाल के ऊपर जो बारीक छेदवाला कपड़ा, बोरिक एसिड लगाकर, बाँधा जाता है, उसको रोज़ बदलते रहना आवश्यक है। जब नाल गिर जाय, तब नाभि के ऊपर बोरिक एसिड छिड़ककर छोटे-से कपड़े की गद्दी बनाकर उसके ऊपर पट्टी से बाँध देनी चाहिए।

कपड़े बदलना—शाम के वक्त बच्चे के दिन के पहने हुए कपड़े निकालकर धो डाले; और दूसरे साफ़ कपड़े पहना दे। इसी प्रकार प्रातःकाल भी रात के पहने हुए कपड़े बदल देना उचित है। रात और दिन में पहनने के कपड़े यदि जुदे-जुदे न हों, तो कुछ हानि नहीं। दोनों समय कपड़े बदला देना बहुत ही आवश्यक है।

इस प्रकार कपड़ों का बदलना जवान स्त्री-पुरुषों और छोटे बच्चों के लिये एक-सा आवश्यक है। जो कपड़े बदले जायँ, उनमें से नीचे पतले कपड़े धो डालने चाहिए, और ऊपर के गरम या क़ीमती कपड़ों को हवादार जगह में कुछ देर तक धूप खिलाना आवश्यक है।

स्तनपान—प्रत्येक ज़च्चा का यह कर्त्तव्य है कि वह अपने बच्चे को आप ही दूध पिलावे। जो स्त्रियाँ इस

काम के लिये तैयार न हों, उनको ब्याह करके बच्चे पैदा करने और उनकी माता बनने का कोई अधिकार नहीं। माता का बालक को दूध न पिलाना उसके साथ बड़ा भारी अन्याय करना है।

अक्सर माताएँ दूध पिलाने में अपनी असमर्थता प्रकट करने के लिये जो कारण दिखलाया करती हैं, वे सब बिलकुल तुच्छ होते हैं।

प्रकृति का यह नियम है कि जो सन्तान पैदा करे, वह दूध भी अवश्य ही पिलावे। कितनी ही चतुरता और सावधानी के साथ पकाया हुआ दूध, या अन्य खाने की चीज़ें मा के दूध की बराबरी नहीं कर सकतीं। यदि माता किसी ख़ास कारण से दूध न पिला सकती हो, तो इसके लिये एक उत्तम और तंदुरुस्त शरीर की बच्चे-वाली योग्य धाय रखना उचित है।

जो माताएँ अपने बच्चों को ख़ुद दूध पिलाती हैं, उनको तरह-तरह के रोग नहीं होते ; और न उनका गर्भाशय ही शीघ्र संकुचित हो जाता है। दूध पिलाने से उनको एक प्रकार की प्रसन्नता भी होती है। इससे उनकी तंदु-रुस्ती में तरक़्क़ी होती है। नौ महीने तक बच्चे को दूध पिलाना चाहिए। आठ महीने के बाद बच्चे का अन्न-प्राशन करके दूध के साथ धीरे-धीरे थोड़ा-थोड़ा हलका आहार देना भी आवश्यक है।

प्रसव होने के बाद जब ज़च्चा को नींद आ जाय, तो उसके स्तनों की ओर ध्यान देना चाहिए। प्रथम प्रसव में प्रायः स्तनों में दूध बहुत ही थोड़ी मात्रा में उत्पन्न होता है। स्तनों में कितना ही कम दूध क्यों न हो, लेकिन चार-चार घंटे के बाद बच्चे को स्तन पर लगाना चाहिए। यदि मा का दूध बच्चे के लिये काफ़ी न हो, तो पहले कहे गए तरीक़े से बनाया हुआ दूध भी बीच-बीच में पिलाया जा सकता है। शुरू से ही बच्चे को स्तन पर लगाने से सबसे बड़ा लाभ यह होता है कि उसको दूध पीने की आदत हो जाती है; और जब स्तनों में दूध अधिक होता है, तो बच्चे और मा को कोई कष्ट नहीं होता।

बच्चे को दूध पिलाने के पहले स्तनों को पहले बोरिक लोशन से और फिर गरम जल से धोना चाहिए। इसके बाद सूखे साफ़ कपड़े से पोंछकर दूध पिलाना चाहिए। जब बच्चा दूध पी चुके, तो फिर बोरिक लोशन (सुहागे के पानी) से स्तनों को धोकर पोंछ दे। यदि नियम के साथ यह किया जायगा, तो चूचुक (स्तनों के मुख) में घाव आदि होने का कष्ट, जो प्रायः हो जाया करता है, न होगा।

यदि स्तनों में किसी तरह की सख़्ती या दर्द हो, तो साधारण तेल ज़रा गरम करके मलना चाहिए। तेल

की मालिश की विधि यह है कि ज़च्चा के पास दाई या नर्स सहूलियत से बैठ जाय ; और हाथ में तेल लेकर गले की हड्डी के नीचे से छाती की हड्डी के सामने की ओर चूचुक तक मालिश करे। इसी तरह बाँह की ओर से भी हाथ को चूचुक की ओर लावे, और इस ढंग से मले कि उसके ऊपर चारों ओर से मालिश हो जाय। इस प्रकार मालिश करने से पहले तो ज़च्चा को कुछ कष्ट मालूम होता है, मगर थोड़ी देर मालिश करने के बाद आराम मालूम होने लगता है। जब ज़च्चा को मालिश कराने का अभ्यास हो जाय, तब अधिक ज़ोर से मालिश करना भी फ़ायदा करता है।

यदि प्रसव के पहले और बाद को दूध पिलाने के समय तक अच्छी तरह सावधानी रक्खी जायगी, तो स्तन-विद्रधि या छाती का फोड़ा (Abcess of Breast) आदि रोग न होंगे। यदि स्तनों में दूध अधिक उत्पन्न हो, और उसके कारण कड़ापन या दर्द आदि हो, तो खाने-पीने को पतले पदार्थ बहुत कम देने चाहिए। इससे अगर कुछ फ़ायदा न मालूम पड़े, तो एक हलका-सा जुलाब दे देना चाहिए। पर हर हालत में जुलाब देना मुनासिब नहीं ; क्योंकि इस से कभी-कभी स्त्रियों का दूध सूख जाया करता है। स्मरण रहे कि दूध की कमी से ही अधिक कष्ट होता है, अधिकता से नहीं। माता को उचित है कि बच्चे को अदल-बदल-

कर स्तन पिलाती रहे। प्रायः देखा गया है कि पहले ही प्रसव में स्तनों को पीड़ा आदि का कष्ट हुआ करता है, फिर आगे के प्रसवों में सफ़ाई के बारे में अगर सावधानी रक्खी जाय, तो कोई कष्ट नहीं होता।

स्तन्य ज्वर (Milk fever)—यदि ज़च्चा की सेवा-शुश्रूषा का पूरा ध्यान रक्खा जाय, और भोजन भी ठीक दिया जाय, तो इस तरह का ज्वर कभी नहीं सताता। यदि ज्वर आ भी जाय तो, मलाशय साफ़ करने और स्तनों को कड़ा न होने देने पर ९९ डिगरी के आगे ज्वर नहीं बढ़ता। इस ज्वर में शुरू में कँपनी सताती है, फिर पसीना आता है, उसके बाद ज़च्चा सो जाती है। जब वह उठती है, तो ज्वर उतर जाता है, और उसका चित्त निर्मल हो जाता है। हाँ, यदि ज्वर के साथ-साथ सिर-दर्द भी होता है, तो वह ज्वर अधिक समय तक रहता है।

बच्चे को दूध पिलाने के नियम—नवजात बच्चे को शुरू से ही बँधे समय पर दूध पिलाने की आदत डालनी चाहिए।

यदि बच्चा दूध पीने के समय के अलावा अन्य किसी समय में रोवे, तो उसके रोने का कारण सोचना चाहिए। यदि पोतड़े को बदलने की आवश्यकता हो, तो बदल दे; क्योंकि उसके गीले होने से भी अक्सर बच्चा रोया करता है। अँगरेज़ी फ़ैशन के कपड़े अक्सर तंग और

कई जगह पर बँधे हुए होते हैं। यदि उन्हें पहना रक्खा हो, और कपड़ों की तंगी से बच्चा रोता हो, तो उनका बंधन ढीला कर देना चाहिए। यदि बच्चे के पेट में दर्द होता हो, तो एक चम्मच सौंफ़ का अर्क़, उसीके बराबर गरम जल और चार रत्ती चीनी मिलाकर पिलाने से वह दूर हो जायगा। यदि ये सब उपाय करने पर भी बच्चा रोता ही रहे, और रोने का कारण मालूम न हो सके, तो उसको खेल-कूद में लगाने और बहलाने का यत्न करना चाहिए। यदि उससे भी बच्चे को आराम न पहुँचे, तो उसे बिस्तरे पर लिटा दे, और खूब रोने दे। पर बीच-बीच में उसको संतुष्ट करने का यत्न अवश्य करे। बच्चों को शुरू से ही इस ढंग से रक्खे, जिससे उनको ठीक समय पर भोजन करने (अर्थात् दूध पीने) और खुद खेलने की आदत पड़ जाय।

पैदा होने के बाद दस दिन तक बच्चे को दो-दो घंटे पर दूध पिलाना चाहिए, लेकिन यह ख़्याल रखना चाहिए कि रात के दस बजे दूध पिलाने के बाद पाँच-छः घंटे तक उसे सोने दिया जाय, जिससे ज़च्चा और बच्चा दोनों को आराम करने का अवसर मिले। फिर रात को जितनी ही देर से दूध पिलाया जायगा, उतना ही अच्छा; क्योंकि उसके बार-बार रोने पर दूध पिलाने से उसकी पाचन-शक्ति नष्ट होजाती है। इससे दोनों के

स्वास्थ्य को हानि पहुँचती है। मा के दूध की कमी हो जाने से बच्चे की सारी ज़िंदगी ही बरबाद होजाती है। ज़च्चा जब बच्चे को दूध पिलावे, तो स्तनों को हवा न लगने दे। इसके लिये एक पतले कपड़े से स्तनों को ढक लेना चाहिए।

जब मा का शरीर गरम हो; उसे कोई चिंता घेरे हो, भारी शोक छाया हो, अथवा क्रोध चढ़ रहा हो, तो उस समय वह बच्चे को कभी दूध न पिलावे। बच्चे को दूध पिलाते समय मा या तो लेटे, या सुस्थ होकर आराम से बैठ जाय। सारांश यह कि प्रसन्न मन से बच्चे को दूध पिलाना चाहिए।

बिना चिकित्सक के प्रसव का प्रबंध

कभी-कभी ऐसा होता है कि चिकित्सक के आने के पहले ही बच्चा पैदा हो जाता है। इसलिये यहाँ यह बतला देना आवश्यक है कि दाई या चिकित्सक की ग़ैरहाज़िरी में घरवालों को किस तरह का प्रबंध करना चाहिए।

सबसे पहली बात यह है कि तीन से अधिक नर्सें या दाइयाँ सौर में जमा न हों। उन तीनों में एक मुख्य कार्य करनेवाली हो, और दो उसकी मातहत। उनको बिना किसी एतराज़ के प्रधान नर्स की आज्ञा का पालन करना चाहिए। उस जगह पर आपस में ज़ोर-ज़ोर से बातें करना या घुस-पुस करना बंद रखना चाहिए।

पहले गर्भिणी को बिस्तरे पर लिटा दें; फिर एक दाई आकर धीरे से अपना बायाँ हाथ उसके गर्भाशय के ऊपर रक्खे; किंतु दबाने की कोशिश न करे। दूसरी दाई का काम यह है कि वह सब ज़रूरी सामान जमा करके ठीक जगह पर रख दे। फिर जब बच्चे का सिर प्रसव-मार्ग के सामने आवे, तब एक दाई अपना हाथ उसके सामने रक्खे, और उसे सँभालने का यत्न करे। साथ ही दूसरी दाई से कहे कि वह अपने हाथ से गर्भाशय को ऊपर से नीचे की ओर दबाने की कोशिश करे। जब बच्चा पैदा हो जाय, तब उसको फ़ौरन् ही बिस्तरे पर लिटा दे।

उसके साथ, या उसके बाद जो खून, पानी आदि गंदगी गर्भाशय से बाहर निकले, उससे उसे अलग रक्खे। प्रायः सभी बच्चे उत्पन्न होते ही रोने लगते हैं। यदि बच्चा न रोवे, तो उसको हाथों से हलकी-हलकी थपकी लगावे, और उसको छाती, हाथ और पीठ को गरम हाथों से मले। हाथों को गरम पानी की भाप से गरम कर ले। इस उपाय से यदि बच्चा न रोवे, तो एक उँगली में साफ़, नरम कपड़े की पट्टी बाँधकर उससे उसके गले में लगा हुआ कफ़ वगैरह साफ़ करदे। अगर नाक में भी किसी तरह का मल हो, तो नाक धीरे से दबाकर वह भी निकाल दे। इतना करने पर भी यदि न रोवे, तो उसके मुख और छाती पर शीतल जल छिड़के, और ज़रा ज़ोर से मले। फिर यह देखे कि नाल में कंपन हो रहा है, या नहीं। जब तक बच्चा न रोवे, तब तक उसे मा से अलग न करे। यदि बहुत देर तक वह किसी तरह न रोवे, तो नीचे लिखे उपाय करे—

१—बच्चे की छाती पर हाथ रखकर बीस तक गिनती गिनने के समय तक उसे अच्छी तरह दबाए रहे। फिर बीस गिनने तक हाथ हटाए रहे। इसी भाँति इतनी देर तक फिर दबावे। इस प्रकार एक मिनट में १५ बार यह क्रिया करे। यदि इससे फ़ायदा न हो, तो नीचे की दूसरी क्रिया करे।

२—अँगूठे और उँगली से बच्चे की नाक इस तरह दबावे कि साँस न निकलने पावे, और अपना मुँह बच्चे के मुँह पर रखकर उसके फेफड़ों में खूब हवा भरे— यहाँ तक भरे कि उसकी छाती फूलने लगे। फिर धीरे-धीरे हाथों से दबाकर वायु निकालने का यत्न करे। यह क्रिया एक मिनट में १५ बार करनी चाहिए। इस क्रिया से अक्सर फ़ायदा होता है। यदि इससे भी लाभ न हो, तो बच्चे को हाथों में उलटा लिटा कर इधर से उधर हिलावे और ऊपर से नीचे झुलावे। यह क्रिया भी एक मिनट में १५-१६ दफ़े करनी चाहिए। इससे अक्सर फ़ायदा पहुँचता है। इसके सिवा नक़ली साँस चलाने की तरकीबें जो आजकल विशेष महत्त्व की मानी जाती हैं, और ठंडे-गरम जल से नहलाने की क्रिया की जाती है, सो सब उपाय अच्छे और अनुभवी चिकित्सक की राय लेकर उसीके अनुसार करे।

जब नाल का कंपन बंद हो जाय, तब विधिपूर्वक नाल काटकर बच्चे को मा से अलग हटा देना चाहिए।

इतनी देर के बाद भी यदि बच्चा न रोवे, तो ऊपर कहे गए उपायों को फिर दुबारा करे, और ठंडे गरम स्नान करावे। इसका खूब ख़याल रहना चाहिए कि पानी ऐसा गरम न हो, जिससे बच्चे का चमड़ा ही झुलस जाय इसलिये पहले पानी में अपनी उँगली डालकर देख लेना

चाहिए। जब बच्चे को गरम जल में डाले, तब दूसरा दाई से कहे कि वह उसके सिर पर शीतल जल डाले। इस प्रकार पाँच मिनट तक गरम जल में रखना चाहिए। डॉक्टर के आने तक यह क्रिया कई बार करनी चाहिए। जब बालक रोने लगे, तो उसे पोंछकर तुरंत ही उसके शरीर में गरम कपड़े लपेट देना चाहिए।

नाल बाँधने की विधि—अच्छा मोटा मज़बूत रेशमी धागा या और कोई बाँधनेलायक धज्जी लेकर उसका बारह इंच लंबा टुकड़ा बना ले। फिर नाभि से चार अँगुल के फ़ासले पर बहुत मज़बूत बाँधकर दो गाँठें लगा दे। दो इंच धज्जी छोड़कर कैंची से काट दे। फिर उस जगह नाल को छोड़कर मा की ओर योनि के पास उसी प्रकार बाँधकर दो गाँठें लगा दे। जब दोनों स्थान ठीक तरह से बँध जायँ, तब बीच में तेज़ कैंची से नाल को इस तरह काटे कि बालक और मा को कुछ हानि न पहुँचे। फिर नाल के सिरे को अच्छी तरह देखे कि उसमें से रक्त तो नहीं निकलता। यदि न निकलता हो, तो उसको धो डाले। यदि रक्त निकलता हो, तो बच्चे की नाभि के पास एक दूसरा बंधन कसकर बाँध दे, और बच्चे को अलग करके गरम कपड़े में लपेट कर दूसरे बिस्तर पर लिटा दे।

आलनोल का गिरना—बच्चा पैदा होने पर १५—२०

मिनट के बाद ही आलनोल गिर जाती है। परंतु कभी-कभी दो-दो घंटे तक रुकी रहती है। ऐसी दशा में यदि रक्त-स्राव न हो, तो विशेष चिंता की बात नहीं। गर्भाशय के ऊपर हाथ का दबाव रखना और समय-समय पर उसको मल देना लाभदायक है। गर्भाशय को ज़ोर से दबाना या थपकी देना उचित नहीं। आलनोल को खींचना या जननेंद्रिय में हाथ डालना सर्वथा हानिकारक है। यदि उचित समय के अन्दर आलनोल न गिरे, तो नज़दीक के चिकित्सक को बुलाकर उससे सहायता लेना आवश्यक है। जब आलनोल गर्भाशय के बाहर के मुँह में आ जाय, तब उसको हाथों-हाथों में एक प्रकार का बट दे देना चाहिए। ऐसा करने से झिल्ली इस तरह से मुड़ जायगी कि उसके टूटने का या गर्भाशय के अन्दर उसके टुकड़े के रह जाने का डर नहीं रहेगा।

रक्त-स्राव—यदि ज़च्चा के रक्त-स्राव जारी रहे, तो चिकित्सक को बुलाकर उसकी सलाह ले। उसके आने तक ज़च्चा के शिर के नीचे से सब तकिए हटा ले। साथ ही पैरों की ओर चारपाई के नीचे ईंटें लगाकर उसे ऊँचा भी कर दे। पेड़ू के ऊपर अच्छी तरह मालिश करे, और गर्भाशय को हाथ में पकड़ने का यत्न करे। यदि गर्भाशय हाथ में आ जाय, तो उसको दोनों हाथों से पकड़ कर, ऊपर की ओर उठाकर, उस पर खूब दबाव डाले। किंतु

ऐसे समय में गर्भाशय का हाथ में आना बड़ा कठिन होता है; क्योंकि गर्भाशय के ठीक संकुचित न रहने से ही रक्त-स्राव जारी रहता है। बहुत गरम या बहुत ठंडा जल में कपड़ा भिगोकर योनि में रक्खे। दूध में बरफ़ डालकर पीने के लिये दे। यह क्रिया डॉक्टर के आने तक बराबर जारी रक्खे।

गर्भ-स्राव और गर्भपात

यह लिखने की आवश्यकता नहीं कि गर्भ-स्राव स्त्री के लिये अत्यंत दुर्भाग्य और आपत्ति की बात है। यदि स्त्री ठीक तौर से स्वास्थ्य के नियमों का पालन और इस पुस्तक में लिखे हुए उपदेशों पर अमल करे, तो वह इस उपद्रव के अनर्थ से बच सकती है। जब एक बार गर्भ-स्राव हो जाता है, तो फिर दुबारा और तिबारा भी वैसा ही होने की संभावना रहती है। दुःख के साथ लिखना पड़ता है कि जब स्त्री को गर्भ-स्राव होने का रोग लग जाता है, तब वह संतान का आनंद नहीं प्राप्त कर सकती।

गर्भ-स्राव के कारण—अस्वास्थ्यकर कारख़ानों में काम करना (अर्थात् ताँबे, शीशे आदि के कारख़ानों में काम करना), घोड़े या साइकिल की सवारी करना, ऊँची-नीची भूमि पर चढ़ना-उतरना, लंबा सफ़र करना, सुख-दुःख के

कारण चित्त में भयंकर परिवर्तन का होना, बराबर क़ब्ज़ बना रहना, तेज़ जुलाब लेना, अधिक मैथुन करना।

जब स्त्री प्रथम वार गर्भवती हो, तो उसको अधिक परिश्रम करके थकना न चाहिए। जब मासिक धर्म होने की तिथियाँ आवें, तब विशेष विश्राम करना चाहिए। यदि गर्भाशय में किसी प्रकार की पीड़ा या रक्त-स्राव प्रकट हो, तो तुरंत ही चिकित्सक की सहायता लेने का यत्न करे। यदि चिकित्सक की सम्मति शीघ्र न मिल सके, तो स्वयं लंबी होकर पलँग पर सीधी लेट जाय; और जब तक वह आ न जाय, चलना-फिरना बिलकुल बंद कर दे। भोजन में ठंडी वस्तुओं का इस्तेमाल करे। गरम वस्तुओं को बिलकुल त्याग दे। जब गर्भ-स्राव हो, तब तुरंत ही बिस्तरे पर लेट जाय; और चिकित्सक को बुला भेजे। उसके आने के पहले जितनी वस्तुएँ (छिछड़े, झिल्ली आदि) उसमें से निकलें, वे सब जमा करके रख ले। हमारे देश के मनुष्यों का साधारणतः यह विश्वास है कि गर्भ-स्राव होना कोई विशेष चिंता की बात नहीं है। इसी कारण वे इसका इलाज करने के लिये डॉक्टर की सम्मति लेना भी उचित नहीं समझते। इसके सिवा वे उस स्त्री को विश्राम देने की भी आवश्यकता नहीं समझते। यदि कोई स्त्री विश्राम भी करती है, तो केवल एक ही दो दिन।

परंतु यह स्त्रियों की भारी भूल है। इस दशा में कम-से-कम दस दिन तक आराम करना चाहिए। यदि वे अपने शरीर और स्वास्थ्य की रक्षा चाहती हैं, तो बड़ी सावधानी से चिकित्सा करानी चाहिए। चिकित्सक से परीक्षा करा लेनी चाहिए कि अन्दर कुछ रह तो नहीं गया; क्योंकि गर्भ-स्राव के समय या प्रसव के अन्त में गर्भ का कोई अंश गर्भाशय में रह जाना समान ही हानिकारक है। इस विषय में भी चिकित्सक की सम्मति लेनी आवश्यक है, जिससे आगे फिर गर्भ-स्राव न होने पावे। सारांश यह कि इसका उपाय अवश्य करना चाहिए।

गर्भपात—गर्भपात-शब्द का प्रयोग उस दशा में किया जाता है, जब गर्भ सात से साढ़े नौ मास के अन्दर, अर्थात् २८ सप्ताह से ४८ सप्ताह के अंदर, उत्पन्न हो जाता है। इस दशा में सब उपचार पूर्ण प्रसव के अनुसार ही करने चाहिए। केवल बच्चे के लिये यह बात विशेष है कि उसको स्नान न कराकर केवल हाथ मुँह धोकर और पोंछकर साफ़ रुई में लपेट दे। ऊपर से फ़लालेन का एक कपड़ा भी लपेट देना चाहिए। उसको अच्छी तरह गरम रखने का प्रबंध करना चाहिए। इसका सहल तरीक़ा यह है कि गरम पानी की बोतलों में भरकर उसके आस-पास इतनी दूर रख दे कि उसके शरीर को स्पर्श न करे; परंतु उसका शरीर

गरम रहे । हर घंटे में निश्चित समय के अन्तर से थोड़ा-थोड़ा दूध बच्चे को पिलाना अच्छा है; क्योंकि वालक स्व माता का स्तन नहीं चूस सकता । इस कारण छोटे-से चम्मच-से उसको दूध पिलाना चाहिए । उसे बहुत दिनों तक स्नान कराना आवश्यक नहीं । हाँ, बहुत साफ़-सुथरा अवश्य रखना चाहिए ।

स्नान कराने के विषय में चिकित्सक की सम्मति ले लेना अति आवश्यक है । उसकी सम्मति के अनुसार वाल-रक्षा का भी प्रयत्न करना चाहिए ।

ओषधियों के प्रयोग

१—प्रदर पर पुष्यानुग चूर्ण

पाढल	१ तोला	सोंठ	६ माशे
रसौंत	६ माशे	कायफल	६ ,,
मोथा	६ ,,	काली मिरच	६ ,,
आम की गिरी	६ ,,	लाल चंदन	६ ,,
जामन की गिरी	६ ,,	दारुहल्दी	६ ,,
शिला-रस	६ ,,	आँवला	६ ,,
लजालू	६ ,,	मुनक्का	६ ,,
कमल की केसर	६ ,,	अनंतमूल	६ ,,
बेल	६ ,,	मुलहठी	६ ,,
मोचरस	६ ,,	अर्जुन की छाल	६ ,,
लोध	६ ,,	कूड़ा की छाल	६ ,,
केसर	६ ,,	अतीस	६ ,,
गेरू	६ ,,		

इन सब ओषधियों का चूर्ण करके ६ माशे की मात्रा शहद में मिलाकर चावल के धोवन के साथ खिलावे। यदि यह चूर्ण पथ्य-सेवन के साथ कम-से-कम ४० दिन तक सेवन कराया जाय, तो सब प्रकार के प्रदर में लाभ होता है।

२—जीरकावलेह

एक सेर ज़ीरा लेकर उसको कूटकर गिरी निकाल ले। फिर ४ सेर दूध, पाव भर लोध्र का चूर्ण, और पाव भर घी डालकर उसे धीमी आँच से पकावे। पकते-पकते जब गाढ़ा होकर ठंडा हो जाय, तब उसमें एक सेर खाँड़ मिला दे। फिर नीचे लिखी हुई दवाओं का चूर्ण मिलावे—

दालचीनी	२ तोला	नेत्रवाला	२ तोला
तेजपात	२ ,,	अनार के छिलके	२ ,,
इलायची छोटी	२ ,,	रसौत	२ ,,
नागकेसर	२ ,,	धनिया	२ ,,
पीपल	२ ,,	हल्दी	२ ,,
सोंठ	२ ,,	सेंधा नमक	२ ,,
ज़ीरा	२ ,,	बाँसा	२ ,,
मोथा	२ ,,	वंशलोचन	२ ,,

इस चूर्ण को दो तोले से लेकर चार तोले तक की मात्रा में, प्रातःकाल के समय, दूध या शीतल जल के साथ खिलावे। यह अवलेह उस दशा में विशेष उपयोगी होगा, जब स्त्री को हलका-सा ज्वर रहता हो; और उसके साथ कास-श्वास, अरुचि और मन्दाग्नि आदि उपद्रव भी हों।

३—बाँझपन पर फलघृत

मजीठ	१ तोला	असगंध	१ तोला
मुलहठी	१ ,,	अजमोद	१ ,,

कूठ	१ तोला	हल्दी	१ ,,
त्रिफला	१ ,,	दारु-हल्दी	१ ,,
खाँड	१ ,,	काँगनी	१ ,,
खरैटी	१ ,,	कुटकी	१ ,,
मेदा	१ ,,	नीलोफर	१ ,,
महामेदा	१ ,,	कमल	१ ,,
काकोली	२ ,,	लाख	१ ,,
क्षीरकाकोली	२ ,,	सफ़ेद चंदन	१ ,,
		लाल ,,	१ ,,

इन सबका कल्क बनावे। एक सेर गऊ का घी ले। उसमें ४ सेर सतावर का रस और ४ सेर दूध डालकर धीमी आँच में पकावे। जब घी का पाक भली भाँति हो जाय, तब निकाल कर रख ले। यदि मिल जाय, तो घी में पकते समय श्वेत कटहरी की जड़ भी डाल देनी चाहिए।

इस घी को ४ तोले की मात्रा तक दूध में मिलाकर पति-पत्नी, दोनों पथ्य-सेवन-पूर्वक ब्रह्मचर्य के साथ ४० दिन तक सेवन करके गर्भाधान करें, तो अवश्य गर्भ रहता है।

यदि इसमें जीवित बछड़ेवाली गऊ का घी डाला जाय, और अरने उपलों की आग पर पकाया जाय, तो विशेष गुण होता है।

४—क़ब्ज़ पर पंचसकार चूर्ण

सोंठ	१ तोला	सेंधा नमक	१ तोला
सौंफ	१ ,,	छोटी हड़	१ ,,
सनाय	१ ,,		

इन सबको पीसकर बारीक चूर्ण कर ले।

यह चूर्ण ४ से ६ माशे तक की मात्रा में रात को सोते समय गरम जल के साथ अथवा प्रातःकाल शौच जाने के पहले खिलावे।

५—अरुचि और मन्दाग्नि पर लवणभास्कर चूर्ण

पीपल	८ तोला	पीपलामूल	८ तो०
धनिया	८ ,,	काला ज़ीरा	८ ,,
सेंधा नमक	८ ,,	काला नमक	८ ,,
तालीसपत्र	८ ,,	नागकेसर	८ ,,
संचर नमक	२० ,,	काली मिरच	४ ,,
सफ़ेद ज़ीरा	४ ,,	सोंठ	४ ,,
दालचीनी	२ ,,	इलायची	२ ,,
समुद्री नमक	आध सेर	अनार-दाना	२० ,,
अमलबेत	८ तोला		

इन सबको कूटकर कपड़-छानकर यह चूर्ण ३ माशे से ६ माशे की मात्रा तक गरम जल के साथ फँकावे।

६—पाचन चूर्ण

काली मिर्च	२० तोला	नौसादर	२० तो०
काला नमक	२० तोला	भुनी हुई हींग	६ माशे

सबको मिलाकर कूट-छानकर कपड़छान-चूर्ण बना ले। एक माशे से तीन माशे तक की मात्रा में शीतल जल के साथ सेवन करावे।

७—प्रसव होने के बाद सौभाग्य-शुंठी

घी पाव भर, दूध दो सेर, खाँड ढाई सेर, मैदा-सोंठ का चूर्ण आध सेर। इन सबको मिलाकर अवलेह की भाँति पकाकर उसमें नीचे लिखी हुई ओषधियों का चूर्ण डाले—

धनिया	१२ तोला	त्रिकुटा	८ माशे
सौंफ	२० ,,	मोथा	८ ,,
बाय विड़ंग	४ ,,	नागकेसर	८ ,,
सफ़ेद ज़ीरा	४ ,,	तेजपात	८ ,,
काला ज़ीरा	४ ,,	जावित्री	८ ,,

सफ़ेद इलायची ८ माशे

सबको मिलाकर अच्छी तरह रख ले। ४ तोले तक की मात्रा में इसका सेवन कराने से प्रसव के बाद होने वाले सब उपद्रव दूर होते हैं।

८—पंचजीरक पाक

सफ़ेद ज़ीरा	४	तोला	सोंठ	४	तोला
सोया	४	"	पीपल	४	"
सौंफ	४	"	पीपलामूल	४	"
काला ज़ीरा	४	"	चित्रक	४	"
अजवायन	४	"	हाउवेर	४	"
अजमोद	४	"	विदारीकंद	४	"
धनिया	४	"	कूट	४	"
मेथी	४	"	कबीला	४	"

इन सबका चूर्ण बना ले। फिर पहले ५ सेर गुड़ की चाशनी करके उसमें दो सेर दूध और पाव भर घृत डाले। जब भली भाँति पाक हो जाय, तब निकालकर रखले, और २ से ४ तोले तक की मात्रा में सेवन करावे।

सूचना—ऊपर जो योग लिखे गए हैं, वे केवल स्त्रियों की जानकारी के लिये ही। किन्तु जहाँ तक सम्भव हो, किसी योग्य वैद्य ही के द्वारा इनको बनवाकर उसकी सम्मति से बल, काल, ऋतु, देश और अग्नि का विचार करके उसके अनुसार सेवन करना उचित है।

महिला-माला की मनोहर मणियाँ

[संपादिका, श्रीमती कृष्णाकुमारी]

कमला-कुसुम

प्रस्तुत पुस्तक स्त्रियों के लिये एक अमूल्य उपहार है। इसमें एक कहानी द्वारा लड़कियों और युवती स्त्रियों को बड़े ही लाभदायक उपदेश दिए गए हैं। लेखन-शैली बड़ी ही मनोमोहक और छपाई-सफाई नेत्ररंजक है। एक बार देखते ही छोड़ने को जी न चाहेगा। चार चारु चित्र। मूल्य १)

गुप्त संदेश

लेखक, डा० युद्धवीरसिंह। यह पुस्तक भारतीय ललनाओं के लिये लिखी गई है। झूठी लज्जा के वश होकर न वे जननेंद्रिय-संबंधी रोगों का पूरा हाल ही जान सकती हैं, और न उनका कुछ उपाय ही कर सकती हैं, जिसके कारण संसार के अलौकिक आनन्द का अनुभव करना तो दूर रहा, वे अकाल ही मृत्यु का शिकार बन जाती हैं। इस अनोखी पुस्तक में डाक्टर साहब ने बड़ी सरल भाषा में जननेंद्रिय-सम्बन्धी सभी ज्ञातव्य विषय लिखे हैं। युवतियों, भारत की भावी माताओं, को इसे पढ़कर अवश्य लाभ उठाना चाहिए। मूल्य लगभग ॥=)

देवी द्रौपदी

लेखक, कविवर पं० रामचरित उपाध्याय। यह पुस्तक देवी द्रौपदी का जीवन-चरित है। इसके पाठ से उपन्यास, प्राचीन इतिहास और जीवन-चरित तीनों के पढ़ने का आनन्द आता है। स्त्रियों के लिये यह पुस्तक अमूल्य रत्न है। इस नवीन संस्करण में कई रंगीन चित्र भी दिए गए हैं। मूल्य ॥=

नारी-उपदेश

लेखक, श्रीयुत गिरिजाकुमार घोष। इस सचित्र पुस्तक में प्रामाणिक ग्रन्थों और शास्त्र-पुराणों में से स्त्रियों के योग्य शिक्षाएँ संगृहीत की गई हैं। स्त्रियों के लिये जितनी बातें आवश्यक हैं, सब इसमें आ गई हैं। द्वितीयावृत्ति। मूल्य ॥)

पत्रांजलि

स्त्री-पाठ्य-पुस्तकों के प्रसिद्ध लेखक श्रीसतीशचन्द्र चक्रवर्ती के बँगला 'स्वामी स्त्री-पत्र' का हिन्दी-रूपांतर। इसकी रचना पंडित कात्यायनीदत्त त्रिवेदी ने की है। हमारी राय है कि प्रत्येक पढ़ी-लिखी नव-विवाहिता स्त्री इस पुस्तक को अवश्य पढ़े। तृतीयावृत्ति। मूल्य ॥)

भारत की विदुषी नारियाँ

इसमें कोई ५० विदुषी नारियों के जीवन-चरित लिखे गए हैं, जिनका परिचय पाकर स्त्रियाँ गौरव प्राप्त कर सकती हैं। छपाई साफ़। काग़ज़ ऐंटिक। द्वितीयावृत्ति। मूल्य ॥)

महिला-मोद

लेखक, महामना पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी। इस पुस्तक में द्विवेदीजी के उन सारगर्भित लेखों का संग्रह है, जो समय-समय पर आपने स्त्री-जाति के हितार्थ लिखे हैं। लेख सभी पढ़ने योग्य, उपयोगी और मार्के के हैं। स्त्रियों को तो यह पुस्तक अवश्य ही पढ़नी चाहिए। मूल्य लगभग ॥।)

लक्ष्मी

लेखक, श्रीगिरिजाकुमार घोष। इस पुस्तक में लक्ष्मी के वृत्तांत द्वारा स्त्रियों को बहुत ही उपयोगी और आवश्यक शिक्षाएं दी गई हैं। कहानी इतनी रोचक और मनोरंजक है कि पढ़ने से जी प्रसन्न हो जाता है। कई रंगीन चित्रों से सुसज्जित पुस्तक का मूल्य केवल ॥=)

वनिता-विलास

लेखक, साहित्य-महारथी पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी। इसमें देशी और विदेशी स्त्रियों को शिक्षाप्रद और मनोरंजक जीवनियों का संग्रह है। प्रत्येक गृहिणी को इसे पढ़कर इससे शिक्षा लेनी चाहिए। मूल्य ।~)

ख़ून के आँसू

हिन्दुओं के पतन का

रोमाञ्चकारी दृश्य

ले०—श्री पं० शिव शर्म्मा जी महोपदेशक

पहिला आँसू

औपन्यासिक गल्प-माला

(१)

"हाय अम्मा क्या तूने मुझे आज ही के दिन के लिये नौ महीने गर्भ रक्खा था ?"

घोर शीतकाल है। रात के दस बजे हैं। गोरखपुर ज़िले के श्यामपुर क़स्बे में एक मकान में कुछ दरज़ी अपनी मशीन से कपड़े सी रहे हैं।

एक दरज़ी—यार ! तुम बड़े खुशनसीब हो, बड़े बड़े बढ़िया माल देखने को मिलते हैं; कहो यार ! कभी कुछ माल चखते भी हो या नहीं ?

दूसरा दरज़ी—बस खामोश रहो ! काम करे जाओ। सिर्फ़ ७ दिन गौने के बाकी हैं। कपड़े जल्दी तैयार करने हैं। बेकार बातें मत करो, काम करे जाओ।

तीसरा दरज़ी—आखिर काम तो हाथों से कर ही रहे हैं, ज़ुबान से कहता है, इसकी भी ज़रा सी बात सुन लो। ज़ुबान और कान तो ख़ाली हैं।

पहिला—अच्छा कहो क्या कहते हो? कोई मज़ेदार बात सुनाना।

दूसरा—बात तो यार बड़े मज़े की है। यार हमतो थोड़े दिनों से ही आये हैं; तुम तो बहुत दिनों से काम कर रहे हो। आज सुबह हमने एक चटपटा मसाला सामने के घर में से निकलते देखा। ऐसे माल तुम्हारे सामने आते हैं और तुम यार बदनसीब हो कि न खाते हो न खिलाते हो।

तीसरा—कहो मियां जुम्मा! है नहीं मज़ेदार बात? यार अबतो मुँह में पानी भर आया होगा?

जुम्मा—(गहरी सांस लेकर) खुदा ने ऐसी क़िस्मत कहां बनाई है जो ऐसे माल के मालिक बनें? देखते हैं और बैठे बैठे कुढ़ते हैं। मियां खैराती! क़िस्मत भी कोई चीज़ है।

खैराती—(मशीन को रोककर और जुम्मा के कान के धोरे मुँह ले जाकर) यार तरकीब तो हम बता दें मगर उस पर अमल करो ... ... तो।

जुम्मा—(निराशा का मुँह बनाकर) भाई यह लड़की उस सेठ की है जिसके हम कपड़े सी रहे हैं। सेठ लाखों रुपयों का आदमी है। इसके यहां खाने पीने और कपड़े ज़ेवर की क्या कमी? फिर हमारे पास कौनसा ऐसा लालच है जिसको दिखाकर हम अपना मतलब गांठ सकें, फिर गौना भी नज़दीक आ गया है।

खैराती—यार हो बड़े कम हिम्मत। हिम्मते मरदाँ मददे खुदा। (चुपके से कान में) अच्छा कल देखना यारों के हथकंडे, खुदा ने चाहा तो काम बना बनाया रक्खा है। लो यार १२ बज गये, काम बन्द करो। अभी तो कुछ खाया भी नहीं है। भूख के मारे आँतें सिकुड़ रही हैं।

(२)

सुबह का वक़्त है। बूढ़े मुनीमजी लाठी टेकते हुए सेठजी के घर की ओर आ रहे हैं। रास्ते ही में ख़ैराती ने सलाम किया।

मुनीमजी —सलाम भाई सलाम। कहो क्या कुछ ख़र्च की ज़रूरत है ?

ख़ैराती—नहीं मुनीमजी! ख़र्च तो परसों ही आपसे ले गये हैं। मुझे एक ज़रूरी बात अर्ज़ करनी है। वह यह कि सेठजी की लड़की कल दोपहर के वक़्त हमारे पास आई जब हम अपना खाना पका रहे थे। इत्तफ़ाक़ से उस वक़्त हंडिया में गोश्त भूना जा रहा था कि लड़की ने इशारे से उसमें से मांगा। हमने तो उस वक़्त दे दिया कि क्या ज़रासी चीज़ के लिये मना करें। यह आँख बचाकर मंदिर में दर्शनों के बहाने से शाम को फिर आई और कहा कि तुम्हारा दोपहर का गोश्त बड़ा स्वाद लगा, लो—इस पत्ते पर ज़रासा और रख दो। हमने रख तो दिया लेकिन जी में घबड़ाये, कहीं सेठजी नाराज़ न हों। अब आप से यही अर्ज़ है कि उसका इस तरह हम मरदों में अकेले आना अच्छा नहीं। खुदा जाने कल को क्या तोहमत लगे ? इतना सुनते ही मुनीमजी को पसीना आ गया। लड़खड़ा कर पृथ्वी पर गिरने ही को थे कि ख़ैराती ने सँभाल लिया। मुनीमजी सँभल कर सेठजी के मकान की ओर चल दिये। आँसू टपकाते हुए दफ़्तर में गद्दी पर बैठ गये। इतने में सेठजी अन्दर से आये और मुनीमजी की यह अवस्था देखकर चौंककर कहने लगे।

सेठजी—क्यों मुनीमजी यह क्या ? आज आप इतने दुखी क्यों हैं, खैर तो है ?

मुनीमजी—(सिसकी लेते हुए) हाय ! ग़ज़ब हो गया। लाड़ो * के भाग्य फूट गये।

सेठजी—हैं-हैं यह क्या? क्या बांसगांव से कोई बुरे समाचार आये हैं?

मुनीमजी—(आँसू पोंछकर) नहीं वहां से कोई बुरे समाचार नहीं आये हैं। इस लाड़ो ने सबकी पगड़ी में धूल डाल दी।

सेठजी—फिर क्या हुआ, कहिये तो सही? लाड़ो तो घर से बाहर कहीं नहीं जाती। न कोई अनगैरी आदमी घर में आता है।

मुनीमजी—(कुछ सँभल कर) यह तो मैं भी जानता हूं। डायन ने तो अपना धर्म भ्रष्ट कर दिया। अनहोनी बात कर डाली। राक्षसनी बन गई।

सेठजी—क्या धर्म भ्रष्ट कर लिया? यह कैसे? वह तो अब मिशन की पाठशाला में भी नहीं जाती। न मेम साहब ३ महीने से पढ़ाने आती हैं।

मुनीमजी—भाई नानकचन्द! यह तो सब कुछ मैं भी जानता और देखता हूं। पर कल लाड़ो ने ख़ैराती दरजी के घर जाकर दो दफे मांस खा लिया।

सेठजी—(चौंककर) हैं! मांस खा लिया मांस? तुमसे किसने कहा? क्या तुमने स्वयं देख लिया कि वह मट्टी खा रही है?

मुनीमजी—हाय रे, मैं देखता क्या, मुझसे तो उसने कहा जिसने अपने हाथ से उसे ऐसा भ्रष्ट पदार्थ खिलाया।

---

* 'लाड़ो' सेठ नानकचन्द की लड़की का नाम है।

सेठजी—चुप हो गये, सिर पकड़ कर बैठ गये। लम्बी लम्बी सांसें लेने लगे। (मन ही मन में) हाय लाड़ो! तूने यह खोटा कर्म कर डाला? तेरे गौने के ६। ७ दिन रह गये। यह अशुभ समाचार छुपने के हैं नहीं। तेरे सुसराल वाले इस समाचार को सुनकर कैसे तुझे अपने घर ले जायँगे? अभागन! पैदा होते ही क्यों नहीं मर गई? हाय! विरादरी वाले क्या क्या ऊधम नहीं मचायेंगे। कच्ची गृहस्थी है, बाल बच्चों का संग है, लड़की लड़के ब्याहने हैं।(प्रकट) मुनीमजी! अब क्या उपाय किया जाय? लाड़ो तो हाथ से गई। हमारे किस काम की रही? हायरे बाप!

मुनीमजी—भैया नानकचन्द! मैं भी यही सोच रहा हूं कि क्या उपाय करूं? तुमतो अभी जवान हो, मेरी उमर ७५ साल की हुई, तुम्हारे दादा के समय से तुम्हारा घर देख रहा हूं। तुम सब मेरी गोद के खिलाये हो। पर ऐसा कुकर्म घर में किसी ने आजें तक नहीं किया। ये सब पढ़ाने लिखाने के कुफल हैं। न लाड़ो पढ़ती, न कुल को कलङ्क लगाती। भैया तुम्हारे घर में तो कोई पढ़ी लिखी नहीं जो ऐसा खोटा काम करती।

(२)

सेठानीजी—चिकरू चिकरू! जा सेठजी से कहदे कि दूध पी जायें। रक्खा रक्खा ठंडा हो रहा है। और ले ये ताली, अलमारी में से आम का मुरब्बा और गाजर का हलुआ निकाल तो लाना सेठानी यह कह ही रही थी कि सेठजी स्वयं ही आ, चौखट पर बैठ कर आँसू टपकाने लगे।

सेठानीजी—क्या रात लालटेन के आगे बैठ कर बहुत देर तक अखबार पढ़ते रहे जो आँखों से पानी निकल रहा है? मिट्टी का तेल मिटा नुकसान तो करै ही है। कड़ुआ तेल

जला लिया करो। चिकरू! आज रात को बैठक में कड़ुवे तेल का दीवा बाल अइयो। उस लालटेन को उठा लइयो।

सेठजी—(हाँपते हाँपते) इसे यही सूझता है। हाय इसे क्या ख़बर कि लाड़ो क्या से क्या हो गई। हाय लाड़ो! तू होते ही क्यों न मरी! रामजी! तूने ये क्या कर दिया?

सेठानी—(दूध ठंडा करते हुए हाथ राक कर) मोती-चन्द के चाचा! तुम्हें आज क्या हो गया? सुबह ही सुबह क्या कहने लगे? रात मंदिरजी में बिना पूंछे चली गई तो क्या हो गया। गई तो भगवानजी के दर्शन ही करने। सामने मंदिरजी हैं, कहीं दूर भी तो नहीं हैं। रात भी कुछ नहीं गई थी। धूरी शाम ही थी। सो चिकरू मंदिरजी तक पहुँचाइ आया था। मिटा ऐसा भी क्या गुस्सा जो रात से गुफर रहे हैं; किसी से सीधे बोलते ही नहीं। लो दूध ठंडा हो गया पी लो। ज़रा गुनगुना है, आँखों को सेक लगेगा। चिकरू! मुरब्बा और हलुआ ले आया?

सेठजी—(ऊपर को मुंह उठाकर) अरी! ये डायन लाड़ो मंदिर वंदिर कहीं नहीं गई थी, ये तो......हाय! पगड़ी में धूल डलवाने गई थी।

सेठानी—(दूध छोड़ कर सेठजी के पास आकर) भला वह बेटियों को ऐसी बातें कहा करते हैं? मेरी लाड़ो को आज तक कोई तू तो कह दे। मिटे की आँखें निकाल लूं। जो मेरी लाड़ो को आँख भर के देखे। वाह खूब कही! कहां का गुस्सा कहां उतारने लगे।

सेठजी—अरी कमबख़त! तूने सारी बात तो सुनी ही नहीं, पहले से ही बात काट कर बकने लगी। अरी! ये धर्म भ्रष्ट हो गई धर्म भ्रष्ट।

सेठानी—(कुछ घबड़ा कर) क्या धर्म भ्रष्ट हो गई? वह तो किसी से हँसती बोलती भी नहीं। घर से बाहर भी नहीं निकलती। हां दोनों वखत मंदिरजी के दर्शन करने जरूर चली जाय है, सो भी कभी चिकरू कभी सितबिया साथ जाय है। मैं तो जब देखूं हूं उसके हाथ में किताब ही देखूं हूं। जब से गौने की चिट्ठी आई है तब से तो और भी कहीं नहीं जाती। तुम देखो ही हो कि बैठक तक में नहीं जाती। अच्छा लो मैं अभी बुला के पूछूं हूं।

सेठजी—अरी उसे तो पीछे बुलैये, पहले मेरी तो सुन ले। क्या रात को चिकरू उसके साथ मंदिरजी तक गया था? क्योंरे चिकरू तू रात को लाड़ो के साथ मंदिरजी तक गया था? चिकरू ने कहा हां जी मैं तो तब तक मंदिर के दरवाजे पर ही खड़ा रहा था जब तक लाड़ो दर्शन करके निकल नहीं आई।

सेठानी—आते जाते कहीं रुकी तो नहीं, सीधी चिकरू तेरे साथ घर को चली आई?

चिकरू—हां जी कहीं नहीं रुकी न कहीं दूसरी जगह गई। कल क्या वो तो रोज़ ही ऐसाही करे है।

सेठानी—(सेठजी की ओर को मुंह बिचकाकर) वाह जब देखो ऐसी ही बे सिर पाओं की बातें। इन्हें कुछ कहते हक धक ही नहीं लगती। भला बांसगांव ख़बर पड़ी तो क्या हाल होगा? मेरी लाड़ो का भला कोई पोरुआ तो देख ले। मरे को कच्चा खा जाऊं। (सेठानी के आँसू बहने लगे)

सेठजी—मेरे धोरे बैठजा और बात सुन! चिकरू! जा डांक आ गई होगी ले आ। सितात्रिया! जा ऊपर के कमरे में बुहारी दे आ। आज सुबह ही सुबह मुनीमजी ने आकर दुख

की बात सुनाई कि लाड़ो खैराती दरजी के घर जाकर मिट्टी (मांस) खाया करती है। भला क्या मिट्टी खाकर भी धर्म भ्रष्ट नहीं होता? हमें भगवानजी को मुँह दिखाना है। बिरादरी में रहना है। अब तू ही समझ लाड़ो हमारे किस काम की रही? मैं बांसगांव वालों को क्या जबाव दूंगा?

सेठानी—तुम्हें यक़ीन है कि लाड़ो ने ऐसा करा होगा? उसे कमी किस बात की है? रसोई में क्या कुछ नहीं बनता? एक दफ़े कउआ कहीं से हड्डी छत पै डाल गया था वह लाड़ो के पाओं से लग गई थी, तो उसी वखत कपड़ों समेत न्हाई थी, सिर धोया था, मंदिरजी में भगवानजी के दर्शन करने गई थी। भला फिर वो पृथ्वी में थूक कर मिट्टी कैसे खा लेती?

सेठजी—ये तो सब कुछ सुना, पर यह तो बता कि खैराती को झूंठ बोलने की क्या ज़रूरत थी? उसको झूंठ बोलने में क्या लाभ था? भला कोई किसी की बहू बेटी को झूंठी तुहमत कैसे लगा देगा? फिर तिस पर हमारा नौकर होकर! ऐसी बातें कोई झूंठ नहीं कहा करता है।

सेठानी—अच्छा जो हुआ सो हुआ इसका जिकर किसी से न करो। गिरस्ती के चारों पल्ले गू में सने रहते हैं। आज उसे मंदिरजी में ले जाकर भगवानजी की पूजा करा लाऊंगी। भगवानजी के दर्शन और पूजा से सारे पाप दूर हो जायँगे। परसों को अनन्त भगवानजी के दर्शन बड़े मंदिरजी में करा लाऊंगी। बस गिरस्ती में यही होता है और क्या करा जाय।

सेठजी—भला तूने कह दिया कि यह करा लाऊंगी और वह करा लाऊंगी सारे शास्त्र तूने ही पढ़ डाले। पण्डितजी से बुलाकर भी पूँछा कि क्या होना चाहिये? सितविया!

ऊपर बुहारी दे आई ? जरा मुनीमजी को भीतर बुला ला।

मुनीमजी—(हांपते हांपते उदास मुख लठिया दीवाल से लगाकर) कहो भैया नानकचन्द ! क्या तदबीर सोची ? बांसगांव से नाई एक चिट्ठी लेकर अभी आया है, उसमें लिखा है कि हम सप्तमी के दिन ज़रूर गौने की विदा कराने आवेंगे। इधर यह अनर्थ हो गया। भैया मेरी तो बुद्धि काम नहीं करती क्या करूं। बात छिपी रह नहीं सकती। भाई बात छुप भी जावे पर सर्वज्ञ भगवानजी तो जानते ही हैं। किसी का धर्म बिगाड़ना ठीक नहीं। लाड़ो तो भ्रष्ट हो ही गई, दूसरों का धर्म भी क्यों बिगाड़ा जाय ?

(४)

सेठजी— प्रणाम पंडितजी ?

पण्डितजी—जय जय।

सेठजी—मैंने आपको इसलिये कष्ट दिया है कि एक बात का आपसे निर्णय करूं। वह यह कि यदि कोई व्यक्ति किसी प्रकार का मांस खा ले तो क्या देवदर्शन आदि से उसका प्रायश्चित्त हो जाता है पाप दूर हो जाता है। धर्म-पुस्तक इस विषय में क्या आज्ञा देती है ?

पण्डितजी—सेठजी ! ऐसे घोर कर्म को कोई दूर नहीं कर सकता। न देवदर्शन न कोई तीर्थयात्रा। प्राचीनकाल में हमारे महात्माओं ने ऐसे ऐसे पाप किये थे परंतु उन सबको उन पापों का फल भोगना पड़ा।

सेठजी—तो ऐसे मनुष्य से कैसे व्यवहार करें ?

पण्डितजी—उसके हाथ का जल ग्रहण न करे, उसको पात्र न छुआवे, उसको देवताओं के समीप न जाने दे। कहिये

क्या कुछ शुद्धि उद्धि का विषय उपस्थित हो गया? आज कल शुद्धि का बड़ा जोर हो रहा है।

सेठजी—नहीं। एक बात जाननी थी, सो आपसे पूँछ ली। भला यह तो बतलाइये हमने आपके ही मुख से सुना है कि देवदर्शन और तीर्थयात्रा से तो बड़े बड़े पाप दूर हो जाते हैं; आपही लोग कथाओं में सुनाते हैं कि अमुक मनुष्य इतने वर्षों तक पशुहत्या, नरहत्या और देवहत्या करता रहा परन्तु मंदिरजी में भगवानजी के दर्शन करते ही उसके सारे पाप कट गये और वह स्वर्ग को चला गया। क्या ये सब कथायें व्यर्थ ही हैं?

पण्डितजी—ज्ञात होता है कि आपको भी कुछ इन शुद्धि वालों की हवा लग गई है जो ऐसी ऐसी बातें कर रहे हो। ये सारी बातें सतयुग की हैं, कलियुग में ऐसी बातें नहीं हुआ करतीं। कहीं शुद्धि वालों के फंदे में मत फंस जाना। अच्छा कुछ और कार्य है? मुझे मंदिरजी को जाना है।

सेठजी—तो फिर ये कथायें आजकल क्यों सुनाई जाती हैं। जब ये सतयुग की बातें हैं तो इस समय तो व्यर्थ ही रहीं न?

पण्डितजी—इनको सुनने से पुण्य होता है, पाप दूर होते हैं और धर्म में रुचि होती है। मनुष्य पाप से बचता है।

मुनीमजी—पहिले तो आपने कहा था कि पाप दूर नहीं होते अब कहते हो कि पाप दूर होते हैं। फिर इससे तो सिद्ध हुआ कि कलियुग में भी पाप दूर होते हैं।

पण्डितजी—आजकल देवताओं में सतयुग की सी शक्ति नहीं रही है, छोटे मोटे पाप दूर कर देते हैं, बड़े बड़े नहीं। मुनीमजी आप पर भी कुछ आर्यों का रंग चढ़ गया दीखता

है। गोरखपुर के आर्यों के जलसे में कुछ सुन आये दीखते हो। तभी तो आज बहकी बहकी बातें कर रहे हो।

सेठानी—पण्डितजी आर्यों उर्यों की कुछ बात नहीं सुन आये हैं। करम फूटे की बात है (इतना कहकर सेठानी रोने लगी।)

(५)

एक कोठरी में शीतल पाटी बिछी है। एक घड़ा पानी का भरा हुआ कोठरी के कोने में रक्खा है। एक धोती का जोड़ा खूंटी पर टँग रहा है। एक पीतल की थाली और एक पीतल का गिलास शीतल पाटी के धोरे रक्खा है। दो तीन छोटी छोटी पीतल की कटोरियां भी ऊपर तले वहीं रक्खी हैं। रुई का गद्दा और दो कम्बल तह करे रक्खे हैं। उसी कोठरी में नीचा मुँह किये हुए आँसू बहाती हुई लाड़ो जा रही है। लाड़ो शीतल पाटी पर जाकर पड़ रही। दिन के दस बज गये हैं। न न्हाई है और न कलेवा ही किया है। सितबिया कहारी भी धोरे आकर उदास होकर बैठ गई। चिकरू कहार भी इधर उधर काम काज करता हुआ कोठरी की ओर आश्चर्य से देख लेता है। चारों ओर उदासी छा रही है जुम्मा और खैराती भी बड़ी उत्सुकता के साथ परिणाम की प्रतीक्षा कर रहे हैं। कभी कानों ही कानों में आपस में बात कर लेते हैं। इतने ही में सितबिया कहारी बोल उठी कि—लाड़ो जो होना था हो गया, चल नहा तो ले। ऊपर से तेरे ऊपर पानी डाल दूंगी। इतना सुनकर लाड़ो फूट फूट कर रोने लगी। सितबिया के भी आँसू भर आये।

लाड़ो—(रोते रोते) मैं नहाकर अब क्या करूंगी? पिताजी को चाहिये था कि मुझ से भी पूंछते कि तूने ये कुकर्म किये या नहीं। खैराती को देवता समझकर, आकाशवाणी

समझ कर उसका विश्वास कर लिया। खैराती ! तू मेरा कौन से जन्म का वैरी निकल आया ? अम्मा तू ऐसी निर्दई हो गई कि पिताजी को कुछ नहीं समझाया और मुझे दूध की मक्खी की तरह निकालकर फेंक दिया ! सितबिया मैं कलङ्किनी न नहाऊंगी, न खाऊंगी, अब तो मेरी मरी लोथ ही इस कोठरी से निकलेगी। वस तू अब जा और मुझे चार पैसे की संखिया ला दे मैं भली और संखिया भली। जा देर न कर।

सितबिया—बेटी ! घबड़ाने की कौनसी बात है, आज नहीं तो कल सेठजी को समझ आ जायगी। सेठानीजी इस समय रंज में हैं, नहीं तो अभी जाके मैं ही समझाती (बाहर देखकर) कौन कौन ? अरी दुलारी ! क्यों कैसे आई ? आ भीतर चली आ। कहो कैसे आई ?

दुलारी—इस महीने का "चाँद" का परचा लेने आई हूं। कहां है ? लाड़ो क्या इस ही कोठरी में है ? हां क्या कर रही है ?

लाड़ो—कर क्या रही हूं—मौत के दिन पूरे कर रही हूं। बहन लो आओ एक बार मिल लो, फिर तुम्हारी लाड़ो देखने को नहीं मिलेगी !

दुलारी—लाड़ो ! कैसी बातें कर रही हो ? अभी तो थोड़ी देर हुई हम तुम दोनों मंदिरजी से आई ही हैं। तुमने तो अभी कहा था कि मैं आज बिना न्हाये चली आई हूं। सरदी बहुत है, जुखाम हो रहा है, गरम पानी से न्हाऊंगी। फिर इतने में क्या हो गया जो ऐसी बातें करने लगीं ? क्यों री सितबिया ! इन्हें बुखार तो नहीं आ गया है जो बर्रा रही हैं ?

लाड़ो—नहीं दुलारी ! मैं बर्रा नहीं रही हूं। मुझ अभागन को अब बुखार काहे को आयेगा ? दुलारी ! तुम्हें तो याद

होगा कि जब हम और तुम दोनों जनी लखनऊ के गर्ल स्कूल में पढ़ती थीं। एक दिन मेम साहब ने हिसाब का इम्तहान लेते हुए एक सवाल सिलेट पर लिखवाया था कि 'एक पैसे का पाव भर गोश्त तो सेर भर गोश्त कितने का होगा'? तब मैंने क्या कहा था कि आप गोश्त क्यों कहती हैं आलू या और कुछ क्यों नहीं कहतीं? फिर बात ये कितनी बढ़ गई थी कि अखबारों तक में आई। हाय आज मेरे माता पिता ही बैरी हो गये जो कहते हैं कि लाड़ो ने खैराती दरजी के घर जाकर मांस खा लिया। (इतना कहकर लाड़ो पुनः फूट फूट कर रोने लगी।)

दुलारी—हाय दैया! क्या तुमसे भी नहीं पूछा कि मांस खाया है या नहीं? (अपने आँचल से लाड़ो के आँसू पोंछते हुए) बहन चुप हो जाओ। मैं अभी जाती हूं और चाचीजी को कैसी झाड़ बताती हूं। चाचाजी तो बैठक में ही होंगे न सितबिया?

सितबिया—नहीं दुलारी! चाचीजी और चाचाजी दोनों ऊपर ही कमरे में बैठे हैं (बाहर को झाँक कर) मुनीमजी भी ऊपर को जा रहे हैं।

दुलारी—अच्छा बहन जरा धीरज रक्खो, मैं जाती हूं और सबको समझाती हूं।

सितबिया—अरी उठ न्हाले! पानी गरम हो गया। फिर ठंडा हो जायगा। ऐसे पड़े पड़े कैसे काम चलेगा? (हाथ पकड़कर) चल उठ न्हाले कुछ खा ले।

लाड़ो—मैं एक बार कह चुकी। बस तू मुझे संखिया ला दे। मैं खा के सो रहूंगी। सबके कलेजे में ठंडक पड़ जायगी (यह कहकर पुनः रोने लगी)।

(६)

दुलारी—क्यों जी मुनीमजी ! तुमभी बूढ़े होकर, क्षमा करो, ऐसे सठ गये कि विना पूंछे गछे वहन लाड़ो को कलङ्क लगा दिया ! मैं तो अभी लाड़ो के पास से आई हूं वह तो सारी बातें झूठ बतलाती है। एक कामी स्वार्थी के कहने से तुमने लाड़ो की भंगन की सी दुर्गत कर रक्खी है ? सब पै ही धूल पड़ गई ?

मुनीमजी—अरी तू अभी बालक है। ये धर्म का मामला है। मानुष का चोला बड़े बड़े पुन्य से मिलता है। भला ये तो बता खैराती को क्या ग़रज़ पड़ी थी जो वह झूठ बोलता ? किसी और को नहीं कह दिया ? मुहल्ले में और भी रहते हैं। फिर वह नौकर भी तो हमारा ही है। उसकी बात झूंठी कैसे मान लें कुछ लाड़ो से उसका बैर तो था ही नहीं ?

सेठानीजी—दुलारी ! तूने पूंछा भी लाड़ो से कि क्या बात है ?

सेठजी—तू भी पागल हुई है। कोई अपना दोष माना करता है ? अरी मैं तो पहले ही कहता था कि क्या पढ़ाकर मुनीमी, तहसीलदारी कराना है।

दुलारी—चाचाजी ! चाची तो वे पढ़ी हैं। तुमतो हिंदी के समाचार पत्र पढ़ते हो, क्या आपने नहीं पढ़ा कि इसही वर्त्तमान के अङ्क में निकला है कि एक मारवाड़न लड़की को, जो गङ्गा न्हाकर आ रही थी, एक भिश्ती ने दोष लगा दिया कि इसने मेरी मशक का पानी पी लिया है ? भला गङ्गा न्हाकर आरही गङ्गा जलका लोटा भरा हुआ हाथ में, फिर किसी ने नहीं सोचा कि ये पानी क्यों पीती ? बस झट उसको भिश्ती के हवाले कर दिया ! धूल पड़ी ऐसी समझ पर ! ऊंह !

ये बिरादरी हैं, ये मा बाप हैं, ये कुटम्बी हैं ? भला करें भगवान्‌जी आर्यों का जिन्होंने उस कन्या को पापी झूठे के पंजे से बचाया। चलो चाचाजी ! लाडो को तसल्ली देकर कोठरी में से बाहर ले आओ। नहलाओ, धुलाओ और खाने को खवाओ। चाचीजी! तुम भी चलो। मुनीमजी तो सठ गये हैं।

मुनीमजी—(मन ही मन में) हां मैं तो सठही गया हूं। तू है बड़ी चतुर; चार अच्छर पढ़ आई लगी बातें गढ़ने !

(प्रत्यक्ष में) अच्छा भाई जो चाहो सो करो। मैं सठ गया हूं, पण्डित तो नहीं सठ गया ? शास्त्र तो नहीं भूल गये ? जो दिल में आये सो करो, कलजुग है, कलजुग। इसमें तो ऐसे ही पाप होते हैं।

(सब का प्रस्थान)

(७)

सन्ध्या हो गई। सेठ रतनचन्द मंदिरजी से लौटे आ रहे हैं। डाकिये ने एक रजिस्ट्री चिट्ठी हाथ में देकर कहा—सेठजी! दूकानपर कोई नहीं मिला, मालूम हुआ कि आप दर्शनों को गये हैं, रजिस्ट्री चिट्ठी है दस्तखत कराने जरूरी हैं इसलिये मैं भी मंदिर को जा रहा था। अच्छा हुआ रस्ते में आते मिल गये। इस चिट पर दस्तखत कर दीजिये। लीजिये क़लम। इसमें स्याही लगी हुई है। सेठजी ने चिट पर दस्तखत कर दिये। ऐनक पास न थी इसलिये चिट्ठी जेब में रख कर घर को रवाना हुए। घर आकर लालटैन के सामने लिफ़ाफ़े को चाक किया और ऐनक लगाकर चिट्ठी को पढ़ने लगे—

जय जिनेन्द्र की। चिट्ठी लिखी शुभस्थाने श्यामपुर से

अनोखेलाल ने वांसगांव को लाला रतनचन्द के नाम, आशीर्वाद वांचना। यहां के समाचार जैसे कुछ हैं वैसे चिट्ठी वांच कर जानोगे वहां के समाचार शुभ लिखना। समाचार ये हैं कि भाईजी! दो तीन दिन हुए लाड़ो ने जो तुम्हारे चिरंजीव-लाल को ब्याही है एक दरजी के हाथ का रान्धा हुआ मास खालिया सो जैसा तुम जानो वैसा करो। समाचार भेजते रहना।

द० अनोखेलाल मुनीम।

सेठ रतनचन्द चिट्ठी को आवाज से पढ़ रहे थे। मुंडी अक्षरों में लिखी होने के कारण अटक अटक कर पढ़ते थे। घेरे खड़ी सेठानी और नौकर भी सुन रहे थे।

रतनचन्दजी की स्त्री—क्या यह चिट्ठी श्यामपुर से आई है? क्या अमोलक की बहू ने मांस खा लिया?

रतनचन्द—क्या चिट्ठी आई है, ऐसी बड़ी का ब्याह हुआ, क्या कहूं? अरी तूने ही हठ करी थी कि पढ़ी लिखी लड़की है, घर अच्छा है ले देखले पढ़ी लिखी लड़कियों के हाल। अरे बुधौ! तू तो कलही श्यामपुर से आया है तूने कुछ वहां पर सुना?

बुधौ—सरकार! और तो कहीं सुना नहीं। हां मैं जरा देर को घर के सामने दरजी की दूकान पर चिलम भरी हुई देखकर चला गया था। वह दरजी आपस में चुपके चुपके कुछ कह रहे थे। इतना तो मैंने सुना कि—"कहो यार कैसा दाँव खेला देखे हमारे हथकंडे? बस अब आई चुंगल में" मैंने समझा कि न जाने अपने क्या बात चीत कर रहे हैं मैं चिलम पीकर उठ आया और वे सब हँस हँस कर बातें करते रहे।

रतनचन्द—ठीक है जरूर उसने खा लिया होगा। पढ़ी

लिखी थी ना। खैर और तो कुछ हरज नहीं ब्याह का दूसरा सामान करना पड़ेगा।

स्त्री—भाड़ में जावे ऐसा पढ़ना लिखना—क्या पढ़ लिख-कर धर्म बिगाड़ बैठे हैं। मैं अपने अमोलक का और ब्याह कर लूंगी। अमोलक के चाचा! कल ही बारीगांव को चिट्ठी लिख दो। सबसे पहले से वही पीछे पड़ रहे थे। लड़की भी जोगम जोग है और पढ़ी लिखी भी नहीं है।

रतनचंद—एक बात समझ में नहीं आती कि भला मांस कैसे खा लिया? उसके हलक में कैसे चला? कुछ भूखे नंगे घर की भी तो नहीं। जो फाके करै थी! सच तो यह है कि पढ़ी लिखी लड़कियों का कुछ एतबार नहीं; हमने तो जो कुछ करा था अच्छा ही जान कर करा था। बुधौ बुधौ! लातो कलम दवात अभी गौने के इन्कार की चिट्ठी श्यामपुर को लिख दूं। एक कारड और भी लेते आना, लगे हाथ बारी-गांव को भी लिख दूं कि तुरंत सगाई भेज दें। अरी तुझे याद नहीं सगाई के ही दिन छींक हुई थी। मैंने तो कुछ ध्यान नहीं दिया। वह छींक अब याद आई है। (ज्यों ही रतनचन्द बारीगांव को चिट्ठी लिखने बैठे आवाज आई 'छीं') अच्छा अब कल को चिट्ठी लिखेंगे। ले रे कलम दवात रख आ। ये दोनों कारड मेरी कमीज की जेब में रख देना।

(८)

मुनीमजी चिट्ठी लिये बैठे हैं, सेठ और सेठानी दुख से सुन रहे हैं। चिट्ठी का विषय इस प्रकार है—

"हर के हाथ निर्वाह। सिद्धि श्री सर्वोपमायोग्य लाला मानकचंदजी को रतनचंद की बांसगांव से जयरामजी बंचना। यहां के समाचार भले हैं। आपके यहां के समाचार मुनीमजी

की चिट्ठी से जाने। आप भाईजी अब गौने की फिकर न करें। हमने वारीगांव को, लाला कुंदनलाल को चिट्ठी लिख दी है कि टीका भेज दें विवाह वैशाख में हो जायगा। लाड़ो के रामजी मालिक हैं। चिट्ठी पत्री भेजते रहना द० रतनचंद। मिती पौस सुदी ८ सं० १६८२ वि०"।

सेठजी—क्या (अपने मुनीमजी से) बांसगांवों को चिट्ठी डाल दी थी?

मुनीमजी—चिट्ठी न डालता तो क्या करता? क्या किसी का धर्म भ्रष्ट करना है।

सेठानी—अच्छा अब ये तो कहो इस लाड़ो का अब क्या करें? न खाती है, न पीती है, कोठरी से बाहर नहीं निकलती। मुझसे बच्ची का यह दुख देखा नहीं जाता।

मुनीमजी—हां कुछ तदबीर तो सोचनी ही पड़ेगी, ऐसे दुःख का भुगतना भी नहीं देखा जाता। और ये भी ठीक नहीं कि सब घर के बरतन छुए छेड़े। अपना धर्म अपने हाथ है।

सेठजी—कोई हिंदू या बिरादरी का तो लाड़ो को कबूलेगा नहीं। आर्यों को दे देंगे तो सारी दुनियाँ में बदनामी करते फिरेंगे। कल को ही व्याह रच के बरात निकाल कर सारी बस्ती में ढिंढोरा पीटते फिरेंगे। अब तक तो थोड़े ही कानों में ये बात पड़ी है। आर्य घर घर फूंक देंगे। विधवाश्रम आर्यों का ही है। सभी तरह मुश्किल ही है।

मुनीमजी—उससे पूंछो तो सही कि खैराती दरजी से तू राजी है? मैं तो जानूं राजी जरूर होगी नहीं तो छिप छिप के उसके पास क्यों जाती?

सेठजी—हां फिर और क्या किया जाय? पहले राजी

नहीं तो अब हो जायगी। मुझे तो देखते ही रो देगी, मुनीमजी तुम वृद्ध हो तुम से दिल का हाल कह देगी।

मुनीमजी—पूंछना पुछवाना क्या, किसी तरह खैराती के सुपुर्द कर दो। आज नहीं कल कभी न कभी राजी हो ही जायगी। छाती का अंगारा तो हटै।

सेठानी—(रोकर) हाय क्या मेरी लाड़ो मुसलमान के घर जायगी ? लाड़ो तेरा नसीब जाने कहां ले जायगा ? मेरी इकलौती लाड़ो ! मेरी चिड़िया (धाड़ मार कर रोना)

सेठजी—अरी भलीमानस ! रोना तो उमर भर का है। जब लाड़ो (दिल भर आया) याद आयगी (आँसू टपकने लगे) रोयेंगे।

सितविया—(रोकर) मैंने लाड़ो को जब से पैदा हुई गोद में खिला कर इतना बड़ा किया, मेरी लाड़ो को कहां ढकेल रहे हो ? लाड़ो को मैं अपने घर रूखी सूखी रोटी खिलाऊंगी।

मुनीमजी—पागल हुई है ! एक दिन में तेरी विरादरी वाले निकाल बाहर करेंगे। सबसे पहले तो हम ही घड़े पंढैले छुआना बन्द कर देंगे। तूभी तो बाल बच्चों वाली है। (सेठ और सेठानी की ओर देखकर) बकने दो इसे इससे अच्छी बात और कोई नहीं जो मैंने बता दी है। इसमें सारे गू दब जायँगे। दो चार महीने याद आयेगी फिर सबर आ ही जायगा। तुम जानियो लाड़ो मर ही गई। जवान जवान बेटे मर जाते हैं फिर भी तो सबर करना ही पड़ता है। चिकरू देख तो लाड़ो सो रही है या जाग रही है ?

(६)

लाड़ो अपनी कोठरी में पड़ी पड़ी सिसकी ले रही है। भोजन न करने के कारण सूखकर काँटा हो गई है। न चेहरे पर

सुरखी है, न बदन में फुरती है। धोती के पल्ले से मुँह उघाड़कर देखा तो सितबिया कहारी सामने खड़ी है।

सितबिया—लाड़ो लाड़ो !

लाड़ो—(सुस्त आवाज़ से) हां क्या कहे है ?

सितबिया—सेठजी तीरथ जातरा को जा रहे हैं। तुझे भी साथ ले जायँगे। पण्डितजी कह गये हैं। ले नहाले उठ। पड़ी पड़ी सड़ रही है! पानी द्वारे रक्खा है। धोती दूसरी लाऊं हूं।

लाड़ो—मुझे क्या करेंगे साथ ले जाके ? जाना है जायें। मुझ से क्या मतलब ?

सितबिया—अरी सिरैन ! पाप दोख दूर करायेंगे। यही तो पण्डित कह गया है। चल उठ देर मतकर ले देखले सईस गाड़ी भी ले आया।

लाड़ो की जान में जान आई। कुछ तसल्ली सी हुई। कराहती हुई उठी और बाहर जाकर आंगन में बैठ गई। सितबिया कहारी ने दूर से पानी शरीर पर डाल दिया। नहा धोकर नई धोती बदली और इष्टदेव को याद किया। परंतु मां कलेजा थामे बैठी है। कभी कभी लाड़ो से चार आँखें हो जाती हैं। तत्काल आँसू निकल पड़ते हैं।

सेठानी—(मन में रो रो कर) हाय जब से मोती की सगाई हुई तब से लाड़ो को ही छाती से लगाकर सुलाया करै ही। लाड़ो ! तू तो बिछुड़ रही है, मैं किसे छाती से लगाऊंगी।

लाड़ो ! बिना तेरे गस्सा नहीं तोड़ेही, मुझ डायन के मुँह में रोटी कैसे चलेगी ? तेरा भैया मोती तो तेरी सूरत भी नहीं देखने पाया रांड हो जाती तो पास तो रहती। मैय्या तेरे बिना

कैसे जियेगी ? हाय मेरी राधेश्याम की सी जोड़ी बिछुड़ी जा रही है। मोती आके पूछेगा कि भैनी कहां गई, तो मैं दुखिया क्या उत्तर दूंगी ? हाय संसार तेरे लिये मारा गया-बच्ची अब तू ......।

सेठजी—खैराती ! ये बड़ा ट्रङ्क पायदान पर रख दो, दोनों बिस्तरों के बंडल गाड़ी की छत पर रस्सी से बांध दो। चिकरू को तो कल से बुखार आ गया है, तुम जरा कानपुर तक चलो। तुमसे असबाब के उठाने धरने में आराम रहेगा। कपड़े अपड़े रहने दो। गौने के दिन टल गये हैं, जल्दी नहीं है सिलते रहेंगे। (घड़ी देख कर) जल्दी करो।

सेठजी—(सेठानी से) सुसराल की तो कोई चीज़ ट्रङ्क में नहीं रक्खी ना ? वह तो वापिस करनी होगी। (सेठानी से कुछ न कहकर सिर हिला दिया)।

लाड़ो ने धीरे से कहा कि क्या अम्मा नहीं चलेगी ? सितबिया कहारी ने कहा उनको छूना नहीं है वे घर ही रहेंगी।

लाड़ो—(अम्मा के पास आई और कहने लगी) अम्मा, अम्मा ! ले मैं जाऊं हूं, भैयाजी आ जायें तो मेरी अंगूठी में हीरा जड़वा रक्खें-ये अंगूठी...अम्मा (कुछ उत्तर न देकर) हाय करके रोने लगी।

लाड़ो—मैय्या इतनी फिकर क्यों करै है ? पांच सात दिन में पिताजी और मैं लौटी आऊं हूं। अच्छा है पंडितजी का भी कहना हो जाय अच्छा ले मैं जाऊं हूं।

माता टकटकी लगाये लाड़ो को इस प्रकार देखती रही कि मानों मृगी का छौना शिकारी पकड़े लिये जा रहा है, और मृगी विवश होकर ताक रही है। जब तक निगाह के

सामने लाड़ो रही, कलेजा थामे अम्मा खड़ी रही। ज्योंही निगाह से ओझल हुई तत्काल "हाय लाड़ो! अम्मा की गोद ख़ाली करे जा रही है" कह कर बेहोश हो गई।

(१०)

कुली कुली! ये ट्रंक और बिस्तरा इंटर के दरजे में रख दो। ख़ैराती! छत पर चढ़ कर रस्सी खोल दे। लल्ली को लेकर इंटर में बैठना। तेरा भी इंटर का ही टिकट लाता हूं। ख़ैराती का नाम सुनते ही लाड़ो का कलेजा धड़कने लगा। मन में कहने लगी—ये दुष्ट साथ जायगा? इसही के कारण इतना दुःख भुगत रही हूं। लालाजी न जाने क्यों इस पापी को दण्ड न देकर इसको साथ रक्खे हुए हैं? इतने घोर अपराध की लापरवाही! यदि और कोई होता तो इसको ज़मीन में गड़वाकर कुत्तों से नुचवा देता वैश्य इसही लिये...

ख़ैराती—अच्छा आप टिकट लेकर आइये मैं लल्ली को लेकर चलता हूं। जल्दी आइये डाक गाड़ी है, बहुत कम देर ठहरती है। (लाड़ो से) जल्दी जल्दी चलो, जगह घिर जायगी। (लाड़ो को इसके वचन और सूरत सुन और देखकर बार बार क्रोध उत्पन्न होता था, परन्तु लज्जा वश चुप थी) लाड़ो इंटर क्लास में जा बैठी। ख़ैराती नीचे प्लेट-फ़ारम पर खड़ा है। कुलियों ने ट्रङ्क और बिस्तरा ऊपर तख़्ते पर लगा दिये।

कुली—सरकार पैसे कौन देगा?

लाड़ो—लालाजी आते हैं, पैसे दे देंगे।

कुली—जाने कितनी देर में आयेंगे, हमको तो और मजूरी करना है मालिक! लाड़ो—देख वह सामने पगड़ी बाँधे खड़े

हैं, गांधी टोपी वाले से बातें कर रहे हैं, जा उनसे दो आने ले आ।

कुली वहाँ पर गया और कहने लगा "सेठजी हमारी मजूरी मिल जाय।"

सेठजी—ले ये दो आने पैसे, देख ले दुअन्नी अच्छी है?

गाड़ी सीटी देने लगी, गार्ड भी सीटी बजाने लगा, हरी झंडी दिखाने लगा। सेठजी बातों में लगे हैं, गाड़ी चलने लगी। लाड़ो ने ज़ोर से चिल्लाकर कहा "लालाजी! लाला जी!! आइये, गाड़ी चल दी!!!" सेठजी लपके परन्तु इंटर क्लास आगे निकल गया था कहने लगे—"गार्ड साहब! गार्ड साहब!! ये दो टिकट हैं इंटर के। सवारी इंटर में बैठी हैं।" गार्ड साहब ने हाथ बढ़ाकर टिकट लेकर जेब में रख लिये। खैराती कूदकर इंटर के दर्जे में लाड़ो के सामने तख्ते पर बैठ गया। गाड़ी से बाहर मुँह निकाल कर लाड़ो आँखें फाड़ फाड़ कर लालाजी को देख रही है। बिना पानी के मछली के समान तड़प रही है। उसको किसी जाल का पता नहीं है, केवल अपने को मछुए के फन्दे में पाती है। खैराती मीठी मीठी नज़र से कभी कभी लाड़ो की ओर देख लेता है। कुछ कुछ मुराद बर आने की झलक देख रहा है। अब लाड़ो के दुख का कोई वारापार नहीं। अम्मा छूटी, लालाजी छूटे, न खितबिया कहारी है, न चिकरू कहार है—है तो पापी गुण्डा सामने बैठा हुआ है। सोचने लगी—हाय विधाता! क्या कोई और दुःख का पहाड़ सिर पर टूटने वाला है? पिताजी! क्या तुम इस पापी के फन्दे में फांस कर लौट जाने के लिए ही स्टेशन तक आये थे? अम्मा चलते समय तो तू मुझ पापन से बोली भी नहीं। भैया मोती! तुम्हें मेरी और मुझे तुम्हारी

सूरत देखने को कहां मिलेगी ? जाने पिताजी कौन सी गाड़ी से आयेंगे। इसके बाद जाने कौन सी गाड़ी चौराचौरी स्टेशन से चलेगी। किससे पूंछूं, गाड़ी में तो सब अनजान ही अनजान हैं। इतने में गोरखपुर का स्टेशन आया। खैराती ने पूछा—"कुछ पानी ऊनी पियोगी ?" ये वचन क्या थे मानों शोकाग्नि में घृत की धारा थी। लाड़ो तो आँसुओं से ही अपना कलेजा जला रही थी। किसी ने कहा है— "आँखों से बरसे नीर जिगर जलता है, दुखियाओं का घर बरसात में भी बलता है।" मन में कहने लगी कि—पापी तेरे हाथ का पानी पीऊँगी ? नहीं, तेरे सीने का खून चंडी बन कर पीऊँगी। तब मेरी प्यास बुझेगी। गाड़ी स्टेशनों को उलांघती हुई चली जा रही है। बहुत से सज्जन इंटर में बैठे और उतर गये। परन्तु इस दुखिया की विपत्ति की किसको खबर ? लाड़ो ने सारी रात बिना खाये पीये तख्ते पर बैठे ही बैठे हाय पिताजी, हाय लालाजी, हाय अम्मा, हाय मोती भैया कहते हुये और आहें भरते हुए काटीं। खैराती कभी कभी कुछ कुछ तसल्ली की बातें कहता था। परन्तु उसकी बात कटार सम लगती थी। लाड़ो के दिल में कभी कभी आता था कि गाड़ी से कूदकर यह जीवन लीला समाप्त करदूं परन्तु पिताजी पिछली गाड़ी से आते होंगे, तीर्थयात्रा के उपरांत घर जाकर अम्मा से मिलूंगी, भैया मोती मिलेगा आदि आदि विचार उसको ऐसा करने से रोकते रहे। इस विचार सागर में डूब रही थी कि कानपुर की गंगा का पुल आ गया। गाड़ी ने स्टेशन आने की सूचना अपनी सीटी द्वारा दी। गाड़ी स्टेशन पर जा ठहरी। एक बाबू साहब हाथ में तार का फार्म लिये प्लैटफार्म पर गाड़ी से

उतरते हुए मुसाफिरों से कहते सुनाई पड़े कि—कोई ख़ैराती दर्ज़ी है उसके नाम यह तार है। ख़ैराती ने कहा—अजी बाबू साहब ख़ैराती तो मेरा नाम है। बाबू ने कहा—लो यह चौराचौरी से मानकचंद ने तार दिया है। लाड़ो एक ओर खड़ी सुन रही थी। पापी ख़ैराती से तो बोलना क्या उसकी ओर देखना पाप समझती थी। इस तार का नाम सुनकर कुछ तसल्ली हुई कि—पिताजी ने लिखा होगा कि मैं पिछली गाड़ी से आ रहा हूं। तुम कानपुर स्टेशन पर ठहरो। ख़ैराती ने कहा—बाबू साहब ज़रा आपही पढ़कर सुना दें, क्या लिखा है? बाबू साहब ने पढ़कर सुनाया कि—"सराय में ठहरो मैं भी आता हूं" सराय का नाम सुनते ही लाड़ो का कलेजा कांप उठा, हाय सराय में इस पापी के साथ जाना पड़ेगा, सराय में तो अधिकतर विधर्मी ही विधर्मी ठहरते हैं। वहां तो मैं जल भी ग्रहण नहीं कर सकूंगी, जाने विधाता ने मेरी प्रारब्ध में क्या कुछ और मुसीबत लिखी है। लाड़ो यह सोचही रही थी कि गाड़ी वाले ने कहा—"अरे मियां सवारी को बैठालो गाड़ी आ गई।"

सराय का फाटक खुला है। भटियारे कह रहे हैं—यहां मेरे साथ आइये, आपके साथ जनानी सवारी है, अलहदा कोठरी में आराम से ठहरना।

जिस प्रकार कसाई खाने को देखकर गाय भयभीत हो जाती है, कांपती हुई भीतर घुसती है उसी प्रकार लाड़ो ने इष्ट देव को याद करते हुए सराय के फाटक में प्रवेश किया। चारों ओर मुरगियाँ फिर रही हैं। टूटी खाटों पर मियां लोग हुक्का पी रहे हैं। गन्दी ग़ज़लों की आवाज़ चारों ओर से आ रही है। ऐसी आबहवा में होकर लाड़ो एक कोठरी के

दरवाज़े पर आ खड़ी हुई। ख़ैराती ट्रङ्क और बिस्तरा सरपर रखकर कोठरी में घुसा और किसी ने यह गुमान नहीं किया कि एक मुसलमान के साथ हिंदू लड़की कैसे ? लाड़ो कभी टूटी खाट को देखती। कभी पान की पीक से सनी हुई दिवारों पर दृष्टि डालती। कभी उड़ते हुए और बिखरे हुए मुरगी के परों पर गौर करती। कभी ठौर ठौर बकरी की मेंगनी और मुर्गी मुर्गों की बिखरी बीट देखती। उसके सामने एक विचित्र दृश्य था। अपना सजातीय कोई नहीं चारों ओर विरुद्ध समा नज़र आ रहा है।

भठियारी—बहू चादर उतारदे खाट खड़ी है बैठ जा ये तेरा नौकर दीखे है ?

लाड़ो—(दबी ज़बान से) हां, दूसरी गाड़ी से पिताजी आते होंगे, वह स्टेशन पर रह गये।

भठियारी—कहां से आ रही हो ?

लाड़ो—चौराचौरी के स्टेशन से बैठे हैं। चौराचौरी गोरखपुर के ज़िले में है। हमारा गांव स्टेशन से चार पांच मील है।

भठियारी—तुम बनेनी हो या बामनी ?

लाड़ो—हम बनिये हैं। क्या कोई कहारी मिल जायगी ?

भठियारी—हां, पैसा सब कुछ मिला देता है। कहारी तो फाटक के बाहर ही रहती है, बड़ी भली मानस है। बहू बैठ, मैं अभी बुलाकर लाती हूं।

लाड़ो ने कोठरी के किवाड़ भेड़लिये, चादर उतार कर खूंटी पर डाल दी, बिस्तर का तकिया लगाकर खाट पर बैठ गई। सोचने लगी जानेलाला जी कौनसी गाड़ी से आयेंगे। ऐसी भी क्या बातें। बातें करने का भी भला समय मिला था,

फिर ही बातें कर लेते। कुछ भी ध्यान नहीं दिया कि गाड़ी छूटेगी या रहेगी।

भठियारी—लो बहू! यह कहारी आ गई। पक्के पाखाने बने हैं, जनाना अलग है और मरदाना अलग। पुन्नों! जा जनाना पाखाना बता दे।

लाड़ो ने कुरती की जेब में से ताली निकाली। ट्रंक खोला और लोटा डोर निकाल कर कहारी के साथ कुएँ की ओर चलदी। सबने ताड़ा कि ओ हो ये तो कोई हिंदू की लड़की है। लाड़ो शौचादि से निवृत्त होकर, कहारी के बताने से फाटक के बाहर मंदिर के कुएँ पर नहाई और कहारी से कुछ मिठाई मंगाकर खाकर पानी पीकर कोठरी में लौट आई और चारपाई पर बैठकर लालाजी के आने की प्रतीक्षा करने लगी। कहारी भी पांयत को बैठ कर बातें करने लगी।

क्यों बहू! तुम्हारे घर क्या काम होवे है? लाड़ो ने कहा—ज़िमींदारी है, साहूकारा भी होता है, लाख का काम भी है।

कहारी—तुम अकेली फिर कैसे फिर रही हो, तुम्हारे मर्द कहां हैं।

लाड़ो—हमारे लालाजी साथ थे, स्टेशन पर बातें करते करते गाड़ी छूट गई अब किसी गाड़ी से आते होंगे।

कहारी—तो क्या आज आजायँगे?

लाड़ो—स्यात् रात तक आजायँ। दिन में तो कोई गाड़ी आती नहीं लोग कहरहे थे।

कहारी—ये मरा कौन है जो बार बार कोठरी की ओर आवे है और झांककर चला जाय है।

लाड़ो—कोई होगा! लालाजी नहीं आये तो तू रात को

मेरे धोरे कोठरी में सोये रहना। भठियारी से एक खाट मंगा-दूंगी। और तुम्हें भी पैसे दूंगी।

कहारी—रामजी तुम्हें बनाये रक्खें, हमतो खिदमत गार हैं। तुम जैसी कोई भागवान् आती रहै हैं हमारे बालबच्चे भी पलते रहै हैं। बहू बे फिकर रह मैं सो रहूंगी। मैं बुढ़िया ठुढ़िया कहीं पड़ी रही।

खैराती को लाड़ो का यह अपना प्रबन्ध अच्छा न लगा। वह समझता था कि अब तो सराय में एकान्त स्थान में आ-गई, अब बिना मेरे से बातचीत करे इसकी नहीं गुजरेगी। इस ही लिये बार बार कोठरी के सामने आकर झांक झांक जाता था। परंतु कहारी को बात करते देखकर लौटकर भठियारियों में पुनः जाकर हुक्का पीने लगा था। कहारी के बाल बच्चे भी कोठरी के बाहर भीतर आने जाने लगे। लाड़ो ने एक एक पैसा उनके हाथ में रख दिया। कुछ बची हुई मिठाई भी उनको दे दी फिर क्या था बार बार पूछने लगे कि बहूजी पानी लाऊं? कुछ बाजार से मंगाओ हो? इन कहारी और बच्चों के कारण लाड़ो का दिन भर तो जी कुछ बहला रहा। परंतु बैरन रात आ गई और माता पिता की याद दिलाने लगी। कहारी और बच्चे एक चारपाई पर खुर्राटे भरने लगे। कोठरी की किवाड़ें बन्द कर ली थीं। खैराती कोठरी के सामने नीम के नीचे पेट में घुटुए दिये पड़ा है। सोच रहा है कि आज दोनों वक्त भठियारी से रोटी कराकर खा ली। हुक्का भी खूब पिया पर……लेकिन खुदा हाफ़िज है………कब-तक………

लाड़ो जब किसी के पैरों की आहट सुनती चौंककर ख़्याल करती कि पिताजी आ गये। पर साथ ही मन मार-

कर रह जाती। मन में कहती न जाने क्यों नहीं आये। प्रतीक्षा करते करते प्रातःकाल हो गया। कहारी उठी और बोली—"तुम्हारे लालाजी तो नहीं आये?" लाड़ो ने इसका उत्तर आँसू बहा कर दिया। ठण्डी सांस खैंची और चुप हो रही। शौच स्नान और भोजन करेन में दुपहर हो गई। लाड़ो की विचित्र दशा होने लगी। कान बाहर को लगे रहने लगे। खैराती भी इधर उधर गप्पें हांकता फिरता था।

(११)

लाड़ो का भाई मोतीचन्द आज बाहर से आ गया। आते ही बोला कि 'सब कुशल हैं?' पिताजी ने कहा 'हां हां सब कुशल हैं' "मोतीचन्द ने कहा—लो ये साड़ी कलकत्ते से १००) में लाया हूं। लाड़ो के गौने में देना" नानकचन्द ने धीरे से कहा "ये अपनी अम्मा को दे आओ" मोतीचन्द घर में गया और अम्मा के चरण छूकर आशीर्वाद ग्रहण किया।

मोतीचन्द—अम्मा लाड़ो को बुलाओ यह साड़ी दिखाऊं, उसकी पसंद यह साड़ी है या नहीं? अपनी जाने तो अच्छी ही देखकर लाया हूँ। बाकी उसकी पसंद की बात है। क्या ऊपर है? जाऊं ऊपर ही जाकर दिखालाऊं हूं।

अम्मा—(आंसू भर के) बेटा मोती! तुम्हारी बहन अब तुम्हें देखने को कहां मिलेगी। उसे तो जन्म भर का बनवास हो गया। (फूट फूट कर रोने लगी)।

मोतीचन्द —हैं! क्या कह रही हो? सात दिन के अन्दर अन्दर क्या गजब हो गया? क्या कुछ बीमारी हुई थी? अम्मा तार भी नहीं दे दिया। सूरत तो देख लेता।

अम्मा—अरे! बीमारी से मरती तो सबर कर लेती, डूब जाती, जहर खा लेती, सांप काट लेता, छत पर से

गिर जाती—सब तरह से सबर कर लेती। अब कैसे सबर करूं।

मोतीचन्द—आखिर क्या हुआ? जमीन में समा गई? आसमान को उड़ गई? (साड़ी हाथ में से रखकर) मुझे तो घर में आते ही सितबिया का रोना देखकर खटका हो गया था। (मुनीम जी को आते देखकर) दादा जी सलाम!

मुनीमजी—जीते रहो बेटा बड़ी उमर हो। (अहां अहं कहकर बैठगये)

मोतीचन्द—दादाजी अम्मा रोती है और लाड़ो लाड़ो कहती है। पर ये नहीं बताती कि लाड़ो मर गई? खप गई? क्या हुई।

मुनीमजी—स्त्री जाति का दिल कच्चा होता है। मुझ से सुन ले लाड़ो का हाल। वह भ्रष्ट हो गई। उससे पल्ला छुटा लिया। उसे खैराती के········।

मोतीचन्द—कैसे भ्रष्ट और कौन खैराती?

मुनीमजी—खैराती दरजी था, जो कपड़े सीता था, लाड़ो उसके हाथों········।

मोतीचन्द—(बात काटकर) कभी नहीं, हरगिज नहीं, मेरी बहन निहायत सीधी है। हमने आज तक उसे पर पुरुष से बातचीत करते भी नहीं सुना। आप पुराने आदमी गुण्डों की बात को क्या जानें? मैं रात दिन समाचार-पत्रों को पढ़ता हूं, यही लीला आजकल देखता हूं। किसी बदमाश गुण्डे की किसी के बालक बालिका स्त्री पर तबियत आ गई, झट उसने कह दिया कि—"इसने मेरे हाथ की रोटी खाली है, मेरे हाथ का पानी पी लिया है और मेरे हाथ का पान खा लिया है।" हम हिन्दू ऐसे बुद्धू हैं कि उसके स्वार्थ, छल, कपट, कामातुरता और बेहूदी

शिक्षा पर ध्यान न देकर, झट उसको देवता समझ कर उसका विश्वास कर लेते हैं ! बालक बहू बेटी को उसके हवाले कर देते हैं !! उस गुण्डे की इच्छा पूरी हो जाती है। उसने तो दोष इस ही लिये लगाया था कि—हिन्दुओं का कच्चा मज़हब है, ज़रा सा दोष लगा दो, बस वे अपने प्यारे से प्यारे को बिरादरी से निकाल देंगे। फिर सिवाय हमारे पास आने के और जायगा ही कहां। हिन्दुओं ने ऐसा करके गुण्डे बदमाशों को ऐसा करने का और हौसला दिला दिया है। चाहिये तो यह था कि ऐसे बदमाश को ऐसी कड़ी सज़ा देते कि फिर कभी किसी के बालक को दोष न लगाता। उल्टी और उसही की इच्छा पूरी कर दी कि—लेजा तेरे हाथ का पानी पी लिया है तो तू ही ले जा। धिक्कार ! हज़ार बार धिक्कार !! (मोतीचन्द लाड़ो को याद करके आखों में आँसू भर लाया)।

मुनीमजी—ले नानकचन्द ! और पढ़ा आर्यों के मदरसे में ? मैंने तो पहले ही कहा था कि बालकों को पढ़ाकर क्या करना है। घर का काम क्या थोड़ा है। जो पढ़ाना था तो सनातनधर्म के मदरसे में पढ़ाता। ऐसे ही लाड़ो को पढ़ा कर बिगाड़ा, इसकी भी रेड़ लगादी। डूबा घर ! हमें तो "सठगया" कै ही देते हैं।

मोतीचन्द—(आँसू पोंछ कर) दादाजी ! आप बड़े हैं, आप से छोटा होकर क्या कहूं ? क्षमा करिये, यदि आप जैसे सारे ही हो जायँ तो जाति विधर्मी बनी रक्खी है। अच्छा जो हुआ सो हुआ। अब बताओ कि मेरी प्यारी लाड़ो कहां है ? (खड़े होकर) जिस प्रकार माता सीता को हनूमानजी ने ढूंढ़ा था, वैसे ही बहन लाड़ो को ढूंढूंगा। सारा जीवन लगा-

दूंगा, उमर खपादूंगा, परन्तु बहन लाड़ो का अवश्य उद्धार करूंगा। अम्मा तू भी.........(रोने लगा)।

पुत्र के वचन सुनकर अम्मा की छाती भर आई। नानकचन्द के भी आँसू आंखों में भर आये। मुनीमजी होंठ विचका कर रह गये। सितविया और चिकरू दोनों उदास खड़े हैं।

(१२)

सराय में डाकिया घूम रहा है। भठियारे से बूझता है कि—यहां पर कोई खैराती दरजी आकर ठहरा है? उसके नाम की चिट्ठी है। भठियारे ने, जो कुछ मुसलमान हुक्का पी रहे थे, उनकी तरफ मुँह करके कहा—"क्यों भाई! तुम में से कोई खैराती दरजी है?" खैराती बोल उठा—"हां क्या बात है? एक तो मेरा ही नाम खैराती है। भठियारे ने कहा—"ये रजिष्ट्री का खत है डांकिया दे रहा है।" खैराती ने हाथ बढ़ा कर खत ले लिया और चिट पर अंगूठे का निशान लगाकर खत को खोलने लगा। खत उर्दू भाषा में इस प्रकार दूसरे से पढ़वाकर सुना—

अज़ मुक़ाम श्यामपुर (गोरखपुर)।
२—६—२८ ई०।

खैराती दरजी!

तुमको वाज़ै हो कि जिस लाड़ो को तुम सराय में ठहराये हुये हो वह लाड़ो तुम्हारे ही सुपुर्द की जाती है। हमारा उससे कोई वास्ता नहीं। लेकिन इतनी ज़रूर हिदायत है कि इसको किसी क़िस्म की तकलीफ़ न हो। दीगर यह कि इसका ज़िकर किसी से न करना, और श्यामपुर से दूर मुक़ाम पर बूदोबाश इख्त्यार करना। लाड़ो के वास्ते खर्च की ज़रूरत

हो तो बन्द लिफ़ाफ़े में ख़बर देना, खुला कार्ड नहीं। चन्द अल्फ़ाज लाड़ो के लिये—

"बेटी! तेरा भाग कि तुझे ऐसी कुमति सूझी, हमने कलेजे पर पत्थर रख तुझे बिछोया है। तेरी प्रारब्ध में ऐसा ही लिखा था कि तू मारी मारी फिरे। ख़र्च की तंगी मत भुगतना। ख़ैराती के पते से पैसा मंगा लेना। हमतो तुझसे हाथ धो चुके, तुझे छुट्टी है जो चाहे सो कर।" द० नानकचन्द।

ख़ैराती ख़त सुनकर खुशी के मारे उछल पड़ा। अल्लाह का शुक्र किया। समय न होने पर भी नमाज़ पढ़ने लगा। नमाज़ से निपट कर खुशी खुशी लाड़ो की कोठरी की ओर लपक कर गया। कोठरी की किवाड़ें बन्द थीं। किवाड़ें खोलने के लिये कुंडी हिलाई। लाड़ो शोक-सागर में ग़ोते खा रही थी। पिता के न आने के कारण तरह तरह की विचार-तरंगों के थपेड़े से बेचैनी थी। कुंडी की खड़खड़ाहट सुनकर यह समझी कि कहारी आ गई। ज्यों ही किवाड़ खोली त्यों ही ख़ैराती हाथ में चिट्ठी लिये सामने खड़ा है। देखते ही समझ गई, क्रोध छा गया, परन्तु विवश होकर लज्जा से मुँह ढक कर चुपचाप पुनः किवाड़ें भेड़कर अन्दर से कुंडी लगा ली। इतने में ख़ैराती ने बाहर खड़े खड़े कहना आरम्भ किया—"अब इस तरह रूठे रहने से काम नहीं चलेगा। लो देख लो तुम्हारे बाप का ख़त आया है। इसमें लिखा है कि 'हमने ख़ैराती के सुपुर्द लाड़ो को कर दिया है' तुम्हारे लिये भी कुछ हिन्दी में लिख दिया है। लो पढ़ लो, तुम अब मेरी हो गईं! ख़ुदा चाहेगा तो आराम से रहोगी। मैं दो रुपया रोज़ का कारीगर हूं, कमाऊंगा और खिलाऊंगा।" इतना कहते हुये किवाड़ के दरार में को तैकर के चिट्ठी डाल दी। लाड़ो ने

इन बातों को बड़े दुःख से सुना। पिछली दिवार में एक रोशनदान था उसके उजाले में जाकर चिट्ठी पढ़ी; पढ़ते ही बेहोश हो गई।

(१२)

मुसलमानों का मुहल्ला है। उस मुहल्ले में एक कच्चे मकान के दरवाजे पर घोड़ागाड़ी खड़ी है। गाड़ी वाले ने खिड़की खोली और कहा "लो अब तो होश में आ गई होगी? उतरो।" लाड़ो ने आँख पसारकर देखा तो एक मुसलमान गाड़ीवाला है और साथ ही खैराती भी खुश होता हुआ उतारने के लिये हाथ बढ़ा रहा है। लाड़ो के शरीर में कँपकँपी आ गई। और पुनः अचेत सी हो गई। थोड़ी देर में होश हुआ तो अपने को एक ऊँचे अट्टे पर एक बिछे हुए बिस्तर पर पड़ा पाया। लाड़ो बिस्तर पर पड़ी पड़ी सोचती है कि क्या मैं स्वप्न देख रही हूं? नहीं नहीं ये स्वप्न कैसा? घबड़ा कर उठ बैठी और सावधान होकर मुसीबत का सामना करने को तैयार हो गई। सोचने लगी—माता पिता ने त्याग दिया, मुझे एक पापी के वश में डाल दिया, क्या मेरे शरीर को कोई जीते जी हाथ लगा सकता है? कदापि नहीं। हाय मैं कैसे यहां तक लाई गई। मुझे होश होता तो मैं चीख पड़ती, गाड़ी से कूद पड़ती, सहायता के लिये पुलिस को बुलाती। परन्तु हाय यहां तो कोई ऐसा भी नहा जो संखिया या अफीम लाकर दे दे जिसे खाकर सो रहूं। हाय विधाता! क्या अभी मेरे दुखों का अन्त नहीं हुआ है? एक हाथ गाल पर धर कर सोच ही रही थी कि देखा कि उस दाहिने हाथ का ठोस सोने का खड़ुआ नहीं है। गले पर ध्यान गया तो गुलूबन्द भी नहीं है। विचारने लगी कि जब सारा

संसार ही त्यागने को बैठी हूं तो इनका मुझे क्या मोह ? कुछ विचार दरवाज़े की ओर गई मन में कहने लगी—हाय यहाँ तो इतनी निचाई भी नहीं है जो कूद कर प्राण दे दूँ। कटार भी नहीं जो पेट में मार लूं। विधाता ! क्या मुझसे मौत भी शत्रुता करने लगी ? हाय सारा संसार मेरा शत्रु हो गया ! यह सोच ही रही थी कि ज़ीने में किसी के ऊपर चढ़ने की आवाज़ हुई। लाड़ो खाट से उतरकर एक कोने की ओर मुंह करके नीचा घूँघुट काढ़ कर बैठ गई। इतने ही में ख़ैराती ऊपर आ धमका और कहने लगा—"भागवान् ! ये मुँह कब तक छिपाओगी ? मां बाप का ध्यान छोड़ो, अबतो तुम मेरी हो, मैं तुमसे पहले ही कह चुका कि तुमको मेरे पास कोई तकलीफ नहीं होगी। जैसा खाओगी खिलाऊंगा, जैसा पहनोगी पहनाऊंगा। वह ऐश भुगतोगी कि माँ बाप और सुसराल सबको भूल जाओगी।" लाड़ो के कलेजे में यह बातें तीर सी चुभती थीं, लज्जा के मारे कुछ नहीं बोली। ख़ैराती ने फिर कहना आरम्भ किया कि "ये ट्रंक तुम्हारे खाट के सिरहाने रक्खा है। बिस्तर बिछा हुआ है। किसी कहारी को लाता हूं, जो पानी भर देगी। कोरा घड़ा लाता हूं, पाखाना नीचे मौजूद है, साफ़ पड़ा है।" ख़ैराती कहारी की तलाश में चला, ज्योंही नीचे उतर कर आया तो क्या देखता है कि—गाड़ीवाला और भठियारा दोनों खड़े हैं।

भठियारा—सलामालेकुम्।

ख़ैराती—वालेकुम् सलाम।

भठियारा—कहो ख़ैरियत से आ गये ?

ख़ैराती—खुदा के फ़ज़ल से और आप लोगों की मेहरबानी से।

भठियारा—अजी हमारी मेहरबानी क्या, ये तो दीन का काम है; हर मुसलमान का फ़र्ज़ है कि दीन में मदद करे। अब क्या कई दफ़ा ऐसा हुआ कि हिन्दू औरतें हमारे यहां ठहरीं और हमने अपने दीनी भाइयों को उनके ले जाने में काफ़ी मदद दी। कई छोटे छोटे बच्चे भी हमने हिंदुओं के ठिकाने से लगवा दिये। खुदा जाने जब से एक मुसाफ़िर की जुबानी मैंने दिल्ली के ख्वाजा साहब का फ़रमान सुना तब से तो मैं जी जान से ऐसी बातों में कोशिश करता हूं। खुदा के फ़ज़ल से कई काम भी बने, ये नहीं जो कोशिश बेकार गई हो। अल्लाह की इनायत से सिपाही भी सराय में इस्लामी भाई ही तैनात हैं, उनसे बड़ी मदद मिलती है। (सामने देखकर) अहा! तुम्हारी बड़ी उमर है। लो तुम्हारी ही चर्चा हो रही थी। भाई साहब यह हैं वह जमादार जिनका अभी ज़िकर कर रहा था।

सिपाही—मुझे कैसे इस वक़्त याद कर लिया?

खैराती—कारेसवाब में मदद करने की वजह से।

गाड़ीवाला—हां बात तो सही है। मैं भी जानता हूं कि आप बहुत दीनदार और नेक हैं। आप की वजह से इस्लाम को बड़ी मदद मिलती है।

सिपाही—अरे भाई मदद उदद क्या, अपना फ़र्ज़ है अदा करते हैं। जनाब रसूल मक़बूल ने तो दीन के लिये न जाने कितनी मुसीबतें सहीं, हम तो एक नाचीज़ बन्दे हैं, जो होता है कर गुज़रते हैं। कहो भाई खैराती! ख़ैरियत से आ गये ना? कुछ रास्ते में शोरोग़ुल तो नहीं मचाया?

खैराती—अलहम् दुलिल्लाह। जहां आप जैसे मददगार हों वहां क्या क़िल्लत? (चुपके से) उसे रास्ते में होश ही नहीं हुआ मैं तो अन्दर ही बैठा था। जो चाहता तो⋯⋯

गाड़ीवाला—अच्छा भाई अब हमें भी चलता करो न !

ख़ैराती—हां भाई ! कहो क्या दे दूं ?

गाड़ीवाला—समय देखिये, कैसा काम करा है ? ख़ैर दीन का काम है १।।) दे दें। और से तो ३) से कम नहीं लेता।

ख़ैराती—भाई ! समझकर ले लो। ज़्यादा से ज़्यादा एक घंटा लगा होगा।

गाड़ीवाला—एक घंटा नहीं दो घंटे ज़रूर लगे होंगे। फिर काम कितना करा ? लड़की को उठाकर कोठरी के आगे चादरें घर से मंगवाकर तनवाईं क्या आपके पास रक्खी थीं ? जनाब न तनवाता तो आप उस लड़की को बेहोशी की हालत में गाड़ी पर डाल ही तो लाते ? सिर पर ट्रंक उठाकर गाड़ी पर रक्खा, बिस्तरा लादा। ये क्या मेरे करने के काम थे ? जनाब ! ख़तरे में डालकर ऐसे काम किये जाते हैं।

सिपाही—हाँ भाई काम तो बेशक अजीबा ने बहुत कुछ किया। एक तो सराय में ही गाड़ी खड़ी थी, दूसरे इस ही का काम था जो तुमको सलाह दी कि कोठरी से लेकर गाड़ी तक परदा करदो जिससे लोग यह समझ लें कि कोई ज़नानी सवारी सवार हो रही है। तुम्हारे तो हाथ पैर फूल गये थे, इस ही की हिम्मत थी जो इस होशियारी से बेहोश लड़की को कन्धे पर डालकर गाड़ी में लिटा दिया कि किसी को कोई शुभा नहीं हुआ। भाई कुछ और दे दो।

ख़ैराती—मैं तो आप सब का ही शुक्रिया अदा करता हूं। अगर कोई हिंदू सिपाही होता तो हरगिज़ कामयाबी न होती। अच्छा ले १।।) बस अब तो राज़ी है ? जमादार साहब ! भठियारे ने भी कुछ कम काम नहीं किया। मैं तो

इस ही फ़िकर में रहा कि दरवाज़ा कैसे खुले अन्दर से भी कुंडी लग रही है। इस ही को खबर थी कि कील घुमाये से भीतर से कुंडी खुल जाया करती है। जिस वक़्त अन्दर धमाका हुआ मैं तो घबड़ा गया। इत्तफ़ाक से ये नूरा (भठियारा) सामने खड़ा था इशारा करते ही यह पास चला आया और कील घुमा कर कुंडी खोल दी।

सिपाही—हां भाई जब खुदा काम बनाता है तो सारी सीध पड़ जाती है। मैंने कहारी को कैसी डांट बतलाई? अगर वह न टलती तो बड़ी मुश्किल पड़ जाती। अच्छा हुआ तुमने सराय में ठहरते ही अपने इरादे से मुझे आगाह कर दिया। अगर बनिया आ भी जाता तो भी क्या वह पुलिस के कब्ज़े से निकल थोड़े ही सकता था? खुदा की इनायत से आजकल तो सारा अमला अपना ही है। भाई! पुलिस के सैकड़ों हथकंडे हैं। अच्छा मेरे कुछ करने का और कोई काम है?

खैराती—मैं आप का निहायत मशकूर हूं, दीनदारों का काम दीनदारों से ही से चलता है। हम हिन्दुस्तान में थोड़े से ही आये थे अगर आपस में सलूक न होता तो आज सात करोड़ कैसे हो जाते। कभी कभी इस ग़रीबख़ाने को भी रौनक़ बख़्शते रहना। इस मकान वाले को तो समझा दिया है न? किसी से मुतलक जिकर न करे।

सिपाही—हरगिज़ नहीं। तुम बेफ़िकर रहो। सारा मुहल्ला अपने ही भाई बन्दों का है। किसी के कानों कान खबर नहीं होगी। अच्छा सलाम।

(१४)

कानपुर के आर्यसमाज मन्दिर में आज रविवार के साप्ता-

हिक अधिवेशन में यह विचार उपस्थित है कि—आज रात्रि के ८ बजे से अछूतों के मुहल्लों में प्रचार किया जाय। १०-१५ आर्य सज्जनों ने प्रचार-कार्य में सम्मिलित होने का विचार प्रकट किया है। अतः ठीक समय पर यह प्रचार-मण्डली अछूतों के मुहल्लों में प्रचारार्थ जा रही है। ज्योंही अछूतों के मुहल्लों में प्रवेश किया, त्योंही एक भंगन हाथ में पूरी कचौड़ी और मिठाई लिये चली आती दिखाई दी।

पं० कान्तीचरण—क्यों रन्नो! आज तो कहीं से बड़े बड़े माल लाई हो?

रन्नो भंगन—अजी राजाजी! रामजी आपको बनाये रक्खे, दाता कहीं न कहीं से देही दे है।

पं० सूर्यप्रसाद—क्या कहीं ठिकाने में कोई दावत थी?

रन्नो—नहीं महाराज! दावत आवत तो कहीं नहीं थी। जिस मुहल्ले में कमाया करूं हूं, वहां पर एक दरज़ी कल से आ गया है। वह न जाने कहां से एक हिन्दनी लड़की ले आया है। उसके ताईं ये पूरी मिठाई लावे है, वह तो खाती नहीं मुझे दे दे है। सो लिये चली आ रही हूं। राजाजी! दीदों कसम बड़ी फूट फूट कर रोये है। मुझसे तो उसके विलाप सुने नहीं जाते। सूख के कांटा सी हो गई है। मालूम तो किसी अच्छे घर की पड़े है। राम जाने कैसे आ गई? (सब एक दूसरे का मुँह ताक कर) कौन से मुहल्ले में कौन से मुहल्ले में?

रन्नो—ये है ना सड़क के परली तरफ़ क़साइयों का मुहल्ला। इसी में तो। वह तो मुहल्लों में घुसते ही ऊंचा अट्टा दिखाई दे रहा है। सामने पाखड़ का पेड़ है उल्ली तरफ़ एक मुसलमान परचूनी बैठै हैं। लो और पता बताऊं। उस अट्टे पर कबूतरों की छतरी बंध रही है। चारों तरफ़ कच्ची दीवालें हैं। समझ गये न?

मा० कालकाप्रसाद—(अँगरेज़ी में) पता ज्ञात हो गया। बस पहले इसही काम को करो।

रञ्जो भंगन की बातें सुनकर सारी प्रचार-मण्डली समाज-मन्दिर में लौट आई। इसका पता लगाने का बन्दोबस्त करने लगी। एक पुराना जासूस इसके अनुसन्धान के लिये नियत किया गया। जासूस चल दिया। सब लोग प्रतीक्षा में बैठे हैं कि देखें क्या पता लगा कर लाता है।

(१५)

रात्रि के ग्यारह बजे हैं, घोर शीत पड़ रहा है। आकाश में काली घटा छाई हुई है। कुछ कुछ बूँदें भी गिर रही हैं। घोर अन्धकार छाया हुआ है। ऐसे दुःसमय में हमारा वीर जासूस कन्धे पर तख़्ता रक्खे, बांह में रस्से का लच्छा डाले, एक हाथ में हथोड़ा और कुछ कीलें लिये हुए क़साई मुहल्ले में पैर दबाये बढ़ा चला जा रहा है। चलते चलते एक कच्ची चार-दीवारी के नीचे जा खड़ा हुआ। तख़्ता दीवार से टेक दिया, और एक चक्कर उस चारदीवारी का लगाया। चक्कर लगाते समय चारदीवारी के एक दरवाज़े से क़हक़हे की आवाज़ सुनाई दी। ध्यान से देखा तो चारदीवारी के बीच में एक कच्चा मकान बना है। चारदीवारी पर एक दरवाज़ा लग रहा है, दरवाज़े के भीतर दहलीज़ है, दहलीज़ में तेज़ किटसन लैम्प जल रहा है, तेज़ रोशनी में दहलीज़ में से ही ऊपर को अट्ट पर जाने के लिये ज़ीना चमक रहा है। इसही दलहीज़ में पांच सात यार दोस्तों के साथ ख़ैराती कपड़े सीने की पैर से चलने वाली मशीन खटाखट चला रहा है। हुक्के उड़ रहे हैं। ये सारे दृश्य देखकर हमारा जासूस लौट आया। बिजली चमकी बादल गरजा, वृद्ध जासूस ने उस कुएँ पर तख़्ता आरपार

रख दिया जो दीवार के बीच में आधा चारदीवारी के अन्दर और आधा बाहर सड़क पर को था। जासूस पेट के बल तख्ते पर से कुएँ के उस पार चारदीवारी में दाख़िल हो गया। धीरे धीरे दीवार में कीलें हथोड़े से ठोकने लगा। तीन चार कीलें गाड़ कर आहिस्ता आहिस्ता ऊपर चढ़ गया। अट्टे के दक्षिण भाग में एक थम्भ था, उसमें मज़बूती से रस्से को बांध कर नीचे लटका दिया। यज्ञोपवीत कोट से बाहर को निकाले, साफ़ा बग़ल में दाबे, चुटिया बड़ी सी लटकाये दरवाज़े में दाख़िल हुआ। लाड़ो नीचे को मुँह किये सिसक रही है और कह रही है—"हाय अम्मा! क्या तूने मुझे आज ही के दिन के लिये नौ महीने गर्भ में रक्खा था?" जिस प्रकार महारानी सीताजी को देखकर श्रीमहावीरजी को अत्यन्त करुणा आई थी। उसी प्रकार हमारे वृद्ध जासूस की आँखों में आँसू भर आये। विह्वल होकर आगे बढ़ा और लाड़ो का कन्धा पकड़ कर हिलाया। शरीर को पर पुरुष का हाथ लगते ही लाड़ो के प्राण-पखेरू उड़ने को ही थे कि मुँह उठाकर देखा तो एक वृद्ध श्वेत लम्बी दाढ़ीवाला, कोट के ऊपर जनेऊ लटकाये, लम्बी चुटिया फहराता हुआ दिखाई दिया। लाड़ो कुछ कहना ही चाहती थी कि वृद्ध ने मुख पर उँगली रख कर चुप रहने का संकेत किया। लाड़ो सहम गई। जासूस ने कान के समीप मुँह ले जाकर कहा—"बेटी! मैं ब्राह्मण हूं, आर्य समाजी हूं, ईश्वर ने तेरी दुःख भरी आवाज़ सुनी, और मुझे तेरा दुःख मेटने को भेजा। बस अधिक कहने का समय नहीं, चल मेरे साथ।" लाड़ो ने कहा—"कैसे और किधर को, द्वार पर तो वह दुष्ट......" जासूस ने कहा—"नहीं नहीं और रस्ता है, आओ।" लाड़ो डरती डरती आगे

बढ़ी। जासूस ने रस्से पर पांव जमाये, मज़बूती से दुःख से कुछ हलकी हुई लाड़ो को कन्धे पर बैठाल लिया। आहिस्ता आहिस्ता तीन चार कीलों पर पैर रखता हुआ अड्डे से नीचे उतर आया। पहिले धीरे धीरे लाड़ो को अपने हाथों से पकड़ कर तख़्ते के सहारे कुएँ पर से बाहर पहुंचाया और स्वयं भी पूर्ववत् बाहर आ गया। कीलें गड़ी छोड़ी, रस्सा बंधा छोड़ा परन्तु तख़्ता उठाकर एक ओर पटक दिया और लाड़ो को साथ लेकर पक्की सड़क पर बिजली की रोशनी में चला आया। अत्यन्त दुर्बल होने पर भी इस समय न जाने लाड़ो के पैरों में कहां का दम आ गया कि हमारे जासूस से एक कदम आगे ही बढ़ाती थी। सड़क पर पहुंचते ही सीटी बजी और सेठ दामोदरदासजी के फाटक में से मोटर घर्र घर्र करती हुई निकली और दोनों जने—जासूस और लाड़ो नौ दो ग्यारह हुए। लाड़ो मोटर में बैठे बैठे सोचती जाती थी कि—रामजी! कहीं एक विपत्ति में से निकल कर दूसरी विपत्ति में तो न पड़ जाऊं। स्वयं ही इस विचार का खण्डन करती कि—यह वृद्ध ब्राह्मण है, इसके साथ कोई भय नहीं। दूसरे कहता है कि मैं आर्य हूं। मैंने सुना है कि आर्य लोग तो बड़े दयालु और हिन्दू स्त्री की बड़ी रक्षा करने वाले होते हैं। जाने मुझे ये कहां ले जा रहे हैं। इस प्रकार का विचार लाड़ो कर ही रही थी कि बिजली की रोशनी में लाड़ो ने दरवाज़े पर पढ़ा "हिन्दू अनाथालय कानपुर" लाड़ो की जान में जान आई। मोटर थम गई और ड्राइवर ने मोटर की खिड़की खोल दी। दोनों उतरे और दरवाज़े पर वृद्ध जासूस ने आवाज़ दी—"देवीदीन! किवाड़ खोल।" किवाड़ें खुलीं और दोनों जने भीतर अनाथालय में दाखिल हुए। कई स्त्रियों ने लाड़ो का

स्वागत किया। एक वृद्धा स्त्री ने लाड़ो को छाती से लगा आँसू भर कर कहा—"भला ऐसी ऐसी मेरी जाति की बच्चियां (हृदय गद्‌गद हो गया आगे न बोल न सकी)" लाड़ो को भी वृद्धा स्त्री के शरीर के स्पर्श से ऐसा आनन्द प्रतीत हुआ मानों बिछुड़ी हुई लाड़ो साक्षात् अपनी जननी से मिल रही है। शीतल स्पर्श से कुछ विछोह की अग्नि शान्त हुई। लाड़ो ने खुली हवा में ठंडी सांस ली। गरम जल से लाड़ो को स्नान कराया गया। सुन्दर थाल में भोजन कराया गया। बिस्तर बिछाकर आराम से लिटा दिया गया। बहुत रात तक स्त्री बच्चे लाड़ो से मीठी मीठी बातें करते रहे। लाड़ो मानों अपने परिवार में मिल जुल कर आनन्द मना रही है। कई रातें लाड़ो को जागते हो गई थीं, अतः भोजन के नशे ने लाड़ो की आँखें झपका दीं। लाड़ो को सोती देख सारी स्त्रियां वहां से हट कर अपने अपने स्थान पर जाकर सो रहीं। केवल एक वृद्धा स्त्री लाड़ो के धोरे खाट बिछाकर सोती रही। लाड़ो खुर्राटे लेने लगी।

(१६)

रात के बारह बजे का टन टन गज्जर बजा। यार दोस्त विदा हुए। चौकीदार ने आवाज़ लगाई—होशियार जागते रहो। ख़ैराती ने सीना बन्द किया। कपड़ों की तै करने लगा। साथ साथ विचार करने लगा—"बड़ी ठंड पड़ रही है, मज़ेदार रात है, आज तो इस ज़िद्दन की कुछ नहीं सुनूंगा। देखूं मुझ से बचकर कैसे रहती है? बहुत खुशामद कर ली। अकेली है, क्या मजाल जो आज बचे। बस आज मैं हूं और वह है। क्या यह ठंडी रातें यहां दहलीज़ में पड़े ही पड़े गुज़रेंगी? बड़े दिनों में तो खुदा ने सुनी और इसको ऐसी नफ़रत? इस प्रकार सोचते सोचते मनसूबे

गांठते गांठते खैराती ने दहलीज़ का दरवाज़ा बन्द किया और लैंप हाथ में लिये हुये ज़ीने पर धम धम चढ़ता चला गया। अट्टे की किवाड़ें भीतर से बन्द थीं। पहले कुंडी खटखटाई, बाद को लैंप को ताक में रख कर दोनों हाथों से किवाड़ों को थपथपाया, फिर झुल्लाकर किवाड़ की चूल उतारते उतारते बोलने लगा कि आज तू है और मैं हूं। कर ले कितना परेशान करेगी। देखूंगा तेरी ज़िद। हूं, बिसमिल्ला! यह कह कर ज़ोर से किवाड़ को उठाया। किवाड़ें बिना कुलावे की थीं, गरसे एक किवाड़ चूल से अलग हो गई। हाथ डालकर कुंडी खोल ली और किवाड़ें खोलकर अन्दर दाखिल हुआ। कोठरी का दीवा तेल न रहने से बुझ चुका था। लैंप उठा उठा कर कोठरी के अन्दर चारों ओर देखने लगा। कभी कोने में देखता कभी चारपाई के नीचे। पागल की भांति बड़बड़ाने लगा। "हैं, कहां चली गई, ९ बजे तो छोड़कर गया ही हूं? किवाड़ें बन्द और गायब! किधर को गई, कैसे गई? रास्ता तो दहलीज़ में ही होकर है!! (दक्खिनी दरवाज़े में झांक कर) इधर को भी कोई ज़ीना या सीढ़ी नहीं जो उतर जाती!!! खैराती! तुम हो बड़े बदनसीब। सामने आया हुआ दस्तरख़्वान उठ गया। य़ार क्या सोच रहे थे और क्या हो गया? आह! बदक़िस्मती तो देखो कि फ़क़त एक खंडुआ और गुलूबन्द ही उतार पाया। हज़ारों का ज़ेवर था। अगर ऐसा ही समझता तो सब ही उतार लेता, और बेहोशी की हालत में ही.........। दिल में अरमान तो बाक़ी नहीं रहता। खैर, खंडुआ और गुलूबन्द उतार लिया तो यह मशीन तो आ गई।" खैराती इस प्रकार बकता झकता हुआ परेशान होकर दहलीज़ में नीचे जा सोया। अहा! उसकी हसरतों की क़बर दिखाई देने

लगी। बड़ी देर में नींद आई। लाड़ो की सूरत आँखों के सामने फिरती थी और शैतानी ख़्याल दिल में समाते थे। ऐसे ऐसे स्वप्न शैतान की गोद में पड़े हुए देखते देखते तड़के ही तड़के आँख खुल गई। हाय किस्मत! कहकर उठ बैठा। बिस्तर समेट कर अट्टे पर रखने के लिये गया। बादल दूर हो चुके थे आकाश स्वच्छ था। मगर चांदनी दिन निकलने का धोखा दे रही थी। ज्ञात होता था कि दिन चढ़ आया, परन्तु अभी सुबे के चार ही टन टन मय गज्जर के बजे थे। ज्यों ही आँखें मलता मलता अट्टे पर आया और लाड़ो के बिस्तर और ट्रंक उठाने का इरादा किया तो दोनों को नदारद पाया। खाट पर ध्यान दिया तो बिस्तर भी गायब। "या इलाही! कौन ऐसा शैतान आया कि एक दफ़ा लाड़ो को ले गया और दूसरी मर्तबा ट्रंक और बिस्तर को उड़ा ले गया? ख़ैर, अल्लाह की यही मरज़ी।"

(१७)

पण्डितजी! पण्डितजी!!

पण्डितजी—क्यों मातादीन! क्या बात है। क्या कहता है?

मातादीन—कहता क्या हूं, रात विचित्र घटना हुई। वह यह कि मैं रात दरवाज़े की कोठरी में सो रहा था कि पेशाब के लिये उठा। पेशाब फिर ही रहा था कि एक आदमी को सिर पर एक ट्रंक और बिस्तरा लाते हुए देखा। मैंने जाना कि कोई आदमी रात की गाड़ी से अनाथालय में आया है और कुली पर ट्रंक और बिस्तरा रखाये हुए है। ज्योंही मैं उठा तो वह आदमी मुझे देखकर दोनों चीज़ें ज़मीन पर डालकर भाग गया। मैं बड़ी देर तक विचार में रहा कि

इनको क्या करूं ? आदमी तो भाग गया। अन्त को मैंने कोठरी में दोनों चीज़ें डरते डरते रख लीं। रात भर जागता रहा। इरादा तो आपको उसी समय जगाने का था। परन्तु रात थोड़ी ही रह गई थी, मैंने कहा थोड़ी देर और ठहर जाऊँ। सो ये दोनों चीज़ें देख लीजिये और जैसा समझिये वैसा कीजिये।

पण्डितजी ने दोनों चीज़ें अन्दर ले जाने के लिये नन्दा कहार से कहा और सोचने लगे कि नहा धोकर इस वाकये को थाने में रिपोर्ट कर देंगे।

लाड़ो अभी खाट पर बैठी बैठी राम राम कह ही रही थी। अपना ट्रंक और विस्तर कहार के सिर पर देखकर कह उठी कि—"हैं ये ट्रंक और विस्तर यहां कैसे आ गया ? किसी ने हंसी में कह दिया कि—"जैसे तुम आ गईं।" लाड़ो मुस्कराकर रह गई। लाड़ो उठी और कुरती की जेब में से ताली निकाल कर ट्रंक को खोलने लगी। पण्डितजी दूर से देख रहे थे बोल उठे कि—बेटी ! पराया ट्रंक मत खोलो। लाड़ो ने कहा "यह तो मेरा ट्रंक और विस्तर है। पराया कैसा ? यहां कौन लाया।" इतने में पण्डितजी भी लाड़ो के समीप आ गये। और कहने लगे—"सच तुम्हारा है ? इसको तो कोई चुराकर लाया मालूम पड़ता है। रात में बाहर डाल गया था। अच्छा अभी मत खोलो। बताओ इसमें क्या क्या है ?" लाड़ो ने कहा—"बताऊं ? दो मखमली कन्नी की सफ़ेद धोती, एक बनारसी बैंजनी साड़ी कलाबत्तू के काम की, एक मखमली कुरती काले रंग की, ओढ़ने की चादर कशमीरी सफ़ेद रंग की चारों तरफ़ कलाबत्तू का काम और तुरंज पड़े हुए," (पण्डितजी बीच में बोल उठे)

"एक पल्लू या दो पल्लू की ?" लाड़ो ने कहा दुपल्लू सिरे पर मेरा नाम लिखा—'लाड़वती' पण्डितजी ने कहा "काहे से लिखा और किस भाषा में ?" लाड़ो बोली—"नागरी में और हरे रेशम से कढ़ा हुआ। और बताऊं ? मूंगे की सुमरनी दाने १८ बड़े, रेशम में पिरोई हुई, पूजा करने का आसन, गङ्गा-जली, कलई का लोटा गिलास, मथुरा की सूती डोर। ज़रा लिखते जाइये पंडितजी !

पंडितजी—नहीं सब याद है, तुम बोले जाओ।

लाड़ो—बस, बतला चुकी। हां, एक टसरी बटुवे में ७ गिन्नयां और ८७) रु० हैं, बस।

पंडितजी—अब खोलो।

ट्रंक खोला तो लाड़ो का बताया सारा सामान ज्यों का त्यों निकला। सब समझ गये कि अड्डे पर से चोर चुराकर लाये थे और मातादीन को सिपाही समझ कर डर से सड़क पर डाल भागे। सब कहने लगे लाड़ो ! प्रारब्ध की बड़ी ज़बर-दस्त हो। देखो कहां से कहां लाये और कहां पर लाकर डाला अब पुलिस में इत्तला करने की क्या ज़रूरत है ? जिसकी चीज़ थी उसको मिल गई। अब लाड़ो अति प्रसन्न है मानों अपने कुनबे में है सारी स्त्रियां आदर से बोल रही हैं लाड़ो शौचादि से निवृत्त होकर स्नान करने के उपरांत आसन बिछाकर अपनी सुमरनी से राम राम राम राम जपने लगी। भोजन तय्यार हुआ। खा पीकर सब निपट गईं, आश्रम की सारी स्त्रियां जुड़कर लाड़ो के पास जमा हो गईं। धीरे से पूछने लगीं कि बेटी तुम कौन जाति की हो ? तुम्हारा घर कहां है ? इस दुष्ट के फन्दे में कैसे आ गईं ? लाड़ो ने नीचा मुख करके सारा हाल सुनाया स्त्रियों की आँखों में सुनकर आँसू भर

आये, कुछ विधवाओं ने भी अपनी अपनी राम कहानी सुनाई। लाड़ो ने देखा कि चारों ओर से विधवा स्त्रियां स्वामी दयानन्द और आर्यसमाज को धन्यवाद दे रही हैं। अब लाड़ो ने समझा कि मैं आर्यों के हाथ से बचाई गई हूं और मैं अत्यन्त सुरक्षित हूं।

(१८)

जब से मोतीचन्द लाड़ो का भाई कलकत्ते से आया है तब से उसको खाना पीना कुछ नहीं भाता जब ही घर में घुसता है तब ही भैय्याजी भैय्याजी की आवाज़ न सुनकर उदास हो जाता है। लाड़ो की सूरत हर समय आँखों के सामने फिरती रहती है। लाड़ो का कोई कपड़ा, कोई किताब, कोई खेल खिलौना देखता है तो सीना फटने लगता है, दिल उछलने लगता है। आज कई दिन इसी भांति गुजर गये। रात को मां बेटे बहुत देर तक लाड़ो के बचपन की कथा कहानी सुनाते रहे। हाय लाड़ो जानें कहां होगी ? कैसे मुसलमान के हाथ का खाती होगी ? जानें मर तो नहीं गई होगी ? यही चर्चा करते करते रात के बारह बज गये।

अम्मा ने कहा—जा बेटा सो रह यह तो जन्म भर का रोना है। मोतीचन्द आहें भरता हुआ बिस्तर पर जा लेटा। अम्मा भी लाड़ो की सूरत को आँखों की कोठरी में बन्द करके पलकों की चिक डालकर खाट पर पड़ रही थोड़ी देर की चिन्ता के बाद नींद आ गई। अम्मा ने स्वप्न में देखा कि लाड़ो चीखती पुकारती घर में चली आ रही है। चिल्ला चिल्ला कर कहती है कि—"अम्मा अम्मा यह पापी मेरे मुँह में मास दिये दे है। मेरा सारा गहना उतार लिया धोती भी खींच कर नंगा करे देय है। भैय्याजी तुम भी नहीं बचाते ? लालाजी

पापी को देख रहे हो और कुछ नहीं कहते ? हाय मैं नंगी हुई जाऊं हूं। चिकरू दौड़ ! सितबिया बचैय । हाय मैं कहां जाऊं ? हाय मैं कहाँ जाऊँ ? कोई नहीं सुनता !! लाला अम्मा भैया सभी निरदई हो गये !!!" इस स्वप्न को देखते ही अम्मा चौंक पड़ी। देखती है कि सुनसान अँधेरा है न लाड़ो है न कोई और, बस अब क्या था ये दृश्य अम्मा की आँखों के सामने भूत बनकर नाचने लगा नींद उचट गई। आँखों से आँसुओं की धारा बहने लगी। हाय हाय करते बड़ी कठिनता से सवेरा हुआ। उठते ही अम्मा ने यह स्वप्न मोतीचन्द को रोते रोते सुनाया। मोतीचन्द सुनते ही सुनते बेहोश होने लगा। अम्मा दौड़ी दौड़ी सेठजी के पास गई और बोली "अजी ! देखो तो मोती को क्या हो गया ? हाय मेरा मोती कैसा हो गया !" सेठजी दौड़े हुए आगे और देखा कि मोती अचेत पड़ा है। मोतीचन्द की वह दशा देखकर सेठजी ने उसका सिर अपने घुटने पर रख लिया और मोती मोती कह के आवाज़ देने लगे। थोड़ी देर में मोती ने कहा—"हूँ"। सेठजी ने कहा "क्यों बेटा कैसी तबियत है ?" मोती न कुछ उत्तर न देकर धीरे से "पानी" कहा—सितबिया दौड़कर पानी ले आई। अम्मा ने कहा "ले बेटा पानी।" मोती ने आँखें मीचे ही मीचे मुँह फैला दिया। अम्मा ने चम्मच से पानी डाल धोती के छोर से मुँह पोंछ कर कहा "बेटा मोती मोती" मोती ने आँखें खोलीं और धीरे धीरे कहने लगा—"बहिन लाड़ो को दिखा दो। मेरी बहिन की न मालूम क्या दुर्दशा होती होगी ? अरे निर्दयी !" इतना कहते कहते मोती का गला भर आया। अम्मा भी रोने लगी। सेठजी के आँखों में पानी भर आया थोड़ी देर में मोतीचन्द सावधान हुआ और अपने कमरे में जाकर पांच सौ रुपये के नोट जेब में

रखकर बोला कि अब तो लाड़ो को बिना देखे नहीं लौटूंगा नहीं मिली तो मर जाऊंगा। कमरे के बाहरी किवाड़ खोल कर "नन्हे नन्हे गाड़ी जोत ले स्टेशन जाना है।" (स्वयं मन में) ट्रंक तो जैसे का तैसा कपड़ों से भरा रक्खा है, सिर्फ दाम लेना था सो ले लिया (प्रगट में) "चिकरू! बिस्तर लपेट ले।" बिस्तर का नाम सुनते ही अम्मा ने कहा "बेटा अभी ६-७ दिन बाहर रहकर आया ही है, ऐसी जल्दी फिर कहां को जाय है ?" मोतीचन्द ने गद्‌गद् स्वर से कहा—"जहां बहिन लाड़ो गई।" इतना सुनते ही अम्मा ने लालाजी को बुलाकर कहा—"अजी इसे समझाते नहीं यह तो बावला हुआ जाय है। भला लाड़ो इसे कहां मिलेगी ?" मोती ने ओवरकोट पहिनते पहिनते कहा—"जीती होगी तो मिलेगी ही, नहीं तो जहां बहिन वहीं भैया।" इन अन्तिम शब्दों ने सेठजी और सेठानी पर तीर का काम किया। आँखों के सामने अंधेरा आ गया। नन्हे कोचवान ने आवाज़ दी सरकार गाड़ी तैयार है। मोती को बाहर जाने के लिये सोलह आने तैयार देखकर सेठजी घबड़ा गये और सेठानी से बोले—"लाड़ो गई तो गई मोती भी चला।" सेठानी के दुःख का अब कोई पारावार नहीं। अन्त में यह निश्चय हुआ कि हम दोनों भी मोती के साथ चलें लड़का है न जाने क्या कर गुज़रे। नौकर चाकरों को साव-धान करके, मुनीमों को दुकान सौंपकर घर की खास खास कोठरियों को ताला लगा, चिकरू को साथ ले स्टेशन को चल दिये। तीनों ने सेकिंड क्लास के टिकट ख़रीदने का विचार किया। घर से चले तो आये अब टिकट कहां का लें? थोड़े से वाद विवाद के बाद यह ठहरा कि यहां से फ़ैज़ा-बाद होते हुए, कानपुर चलो। उड़ती उड़ती खबर सुनी थी

कि एक मुसलमान गोरखपुर के ज़िले से एक बनिये की लड़की को फ़ैज़ाबाद लाया है। तीन टिकट सेकिंडक्लास के और एक सर्वेन्ट टिकट चिकारू के लिये खरीद लिया गया। गाड़ी पैसञ्जर थी रात के ७॥ बजे मनकापुर जङ्कशन पर पहुँची। यहीं होकर फ़ैज़ाबाद जाना था। गाड़ी अब प्रातःकाल के ८ बजे लकड़मंडी जायगी इसलिये सेकिंडक्लास के वेटिंग रूम में असबाब कुलियों ने धर दिया। मँजूरी लेकर कुली रवाना हुए। चिकरू खोनचे वालों से मिठाई पूरी ले आया। खा पी कर लाड़ो की दुःख कहानी सुनते सुनाते सो रहे।

(१६)

खैराती ने जब ट्रंक और बिस्तरा गायब देखा तो घबड़ा ही नहीं गया किन्तु पागल सा बन गया दक्खिनी दरवाजे की ओर झांका तो देखा कि कीलें गड़ रही हैं और एक सन का मोटा रस्सा थम्भ से बंधा नीचे लटक रहा है। समझ गया कि रात को चोर आये और असबाब ले गये। शायद लाड़ो को उड़ा ले जाने का काम भी उन्हीं का हो? मेरी तो मशीन उशीन भी एक दिन ले जायेंगे छोड़ो यार इस घर को। ऐसा विचारते विचारते कपड़ों की गठरी नीचे जाकर बांधने लगा। मशीनें समेटने लगा। मुहल्ले के लोग ताड़ गये कि खैराती मुहल्लेवालों के कपड़े लेकर उड़ंछू होना चाहता है। बस तक़ादगीर आने शुरू हो गये। कोई कुरता कोई पैजामा और कोई कमीज मांगने लगा। खैराती ने बहुतेरा टालना चाहा परन्तु एक न चली। लोग कुछ अधसिले और कुछ कपड़ा ही उठाकर ले गये। बड़ी मुश्किल से दिन कटा शाम होते ही हंडिया चप्पन बांध और मशीन कन्धे पर रख, घर खुला छोड़ खैराती मुहल्ले से बाहर निकल पड़ा।

स्टेशन पर आ कर सोचने लगा अब कहां जावें ! आखिर यही विचारा कि फ़ैजाबाद में चचा के पास चलें वहीं काम करेंगे। टिकट लेकर फ़ैज़ाबाद आ धमका। जब चचा के घर आया तो वह तो क़त्ल के जुर्म में फंसा हुआ फ़रार है, यह खबर सुनी। अपने आप भी न धर लिये जायें इसलिये गोरखपुर का इरादा कर लिया और इक्के में बैठ कर लकड मंडी आया। वहां से गोरखपुर का टिकट कटा लिया गाड़ी रात के नौ बजे मनकापुर पहुंची। मशीन उतार कर मुसाफिर खाने में रखकर सो रहा। रात के तीन बजे थे कि सिकुड़े पड़े हुए खैराती को पैर की ठोकर मार कर किसी ने कहा कि—"कौन पड़ा है दरवाजे के सामने, खबर नहीं कि सिकन किलास का दरवाजा है, साहब लोग आते जाते हैं ? खैराती ठोकर लगते ही उठ बैठा और बोला "यार ठोकर क्यों मारते हो ? अलग हुआ जाता हूं।" यह कह कर अपनी दरी समेटने लगा। ठोकर मारने वाले ने लालटैन से उसका चेहरा देखा और बोल उठा—"अमामियां खैराती तुम कैसे ?"

खैराती—(दरी समेटते समेटते) "कौन ? जुम्मा ! यार लो हमें क्या मालूम थी कि घर का ही ठोकर मार रहा है। यार तुम श्यामपुर से कैसे और कब आये ?"

जुम्मा—"मैं तो सब बिथा सुनाऊंगा ही लेकिन तुम तो कहो लाड़ो साथ है या कहीं किसी के सुपुर्द कर आये ?"

सेठ सेठानी और मोतीचन्द सबेरे सो जाने के कारण और फिकर होने से जाग रहे थे। ज्यों ही 'लाड़ो' शब्द कान में पड़ा चौंक पड़े और तीनों व्यक्ति कान लगाकर बाहर की बातें सुनने लगे। सेठानी कुछ बोलना चाहती थी। परन्तु सेठजी ने मुँह पर खड़ी उंगली रख कर चुप रहने का संकेत किया।

खैराती—"यार सारी बातें क़िस्मत की हैं। देखो चाल चलने में तो हमने कोई कसर बाक़ी रक्खी नहीं। गोश्त खाने की झूठी तुहमत लाड़ो को लगाई क्योंकि मैं सुन चुका हूँ, सुन क्या चुका हूँ कई वाक़ये देख चुका हूँ कि जब किसी मुसलमान ने किसी हिंदू औरत मर्द या लड़के को कोई अपने हाथ की, न खाने काबिल चीज़, खाने का इलज़ाम लगा दिया, हिन्दुओं ने उसको बिरादरी से निकाल दिया, मैंने भी बड़ी चाल चली। सिवाय इसके कोई चाल ही नहीं थी कि सीधे मुनीमजी से कह दूं कि लाड़ो ने हमारे हाथ का गोश्त खा लिया है उसका नतीजा तुम ने देखा ही कि लाड़ो को मेरे सुपुर्द कर दिया।" तीनों व्यक्तियां खैराती की बातें सुन रहे थे। सुन सुन कर क्षण क्षण में चेहरों की रंगतें बदलती जाती थीं। कभी कभी एक दूसरे से कुछ इशारों में कह देते और पुनः ध्यान से सुनने लगते। उनके चेहरों पर कभी लज्जा, कभी क्रोध, कभी दया और कभी करुणा छा जाती थी।

जुम्मा—"यहाँ तक तो हमें भी पता लग गया था कि तुम को तार दे दिया गया है कि—'सराय में ठहरो पिछली गाड़ी से आते हैं।' फिर इसके बाद क्या हुआ?"

खैराती—"यार हम सराय में ठहर गये। वहीं हमको एक ख़त उसके बाप का मिला कि—'लाड़ो हमारे काम की नहीं रही, हमने तुझे ही दे दी……।"

जुम्मा—(बात काट कर) "वाह यार मानता हूं। ला तो पुलाव का हाथ! वाह रे भोंदू हिन्दुओ! अरे यारों के काम तो ऐसे ही बने हैं। हाँ, फिर—?"

खैराती—"फिर क्या? उस ख़त में यह भी लिखा था कि—'लाड़ो! तू हमारे काम की नहीं रही, हमने तुझे खैराती

को दे दिया।' वह कम्बख़्त इतना सुनते ही बेहोश हो गई। चन्द दीनदारों की मदद से मैं उसको क़साइयों के मुहल्ले में ले गया……।"

जुम्मा—(बात काट कर) "उस बेहोश को ही ले गये ?"

ख़ैराती—"तो क्या होश में होती तो चली जाती ? हरगिज़ नहीं ! ख़ैर, सराय के सिपाही ने यार बड़ी मदद की वह न होता तो न मुझे कोई किराये को मकान मिलता, न लाड़ो को सराय से निकाल सकता था। वह तो क़िस्मत से भठियारा, गाड़ीवाला और सिपाही सभी दीनदार ही निकल आये। मुहल्ले में जाते ही सिलाई भी सिपाही की बदौलत मिल गई। वरना बड़ी दिक़्क़त पड़ती तुमसे तो कुछ ले ही नहीं गया था। न कुछ खबर ही थी कि ऐसा होगा।"

जुम्मा—(मशीन पर हाथ फेर कर) "यार फिर ये मशीन बढ़िया सी कहाँ से उड़ाई ?"

ख़ैराती—यार; तुमसे तो कुछ छिपाव है नहीं। जब लाड़ो बेहोश हो गई तो मैंने मौक़ा समझ कर उसका एक हाथ का सोने का खंडुआ और गुलूबन्द निकाल लिया था। उनको १५०) में गिरवी रख कर सवासौ में मशीन खरीद ली और २५) इधर आने में और खाने पीने में उड़ गये। कमाया सो खटिया बटिया मोल लेने में लग गया। और यार कमाया भी दो एक दिन में क्या ?"

जुम्मा—"अच्छा, तो लाड़ो इस वक़्त क़साइयों के घर में है ? तोबा तोबा घर में नहीं मुहल्ले में है ?"

ख़ैराती—"नहीं यार ! आगे तो सुनो क्या गुज़रा। मैं तो नीचे दहलीज़ में था, जब कोई १२ बजे के क़रीब ऊपर गया तो देखता क्या हूं कि लाड़ो गायब ! या ख़ुदा ! कहाँ गई ?

समझ में नहीं आया कि इस वक़्त रात में कहाँ तलाश करूं। आख़िर परेशान होकर नीचे जा पड़ा। अरे मियां! सुबह को क्या देखता हूं कि उसका ट्रंक और बिस्तरा भी ग़ायब!! यार परेशान होकर मैंने तो कानपुर छोड़ दिया अब गोरखपुर खालू के पास जा रहा हूं, वहीं पर कुछ सिलसिला शुरू करूँगा। बस इतनी मुसीबतों में हमारे हाथ तो यह मशीन ही लग पाई है बाक़ी तो...... ।"

जुम्मा—"यार सच कहना, इस बीच में किसी दिन...?"

इन शब्दों को सुन कर लज्जा के मारे तीनों माता पिता और पुत्र ने गर्दनें नीची कर लीं।

ख़ैराती—"क़सम ख़ुदा की और तो क्या उसने अपनी शक्ल तो दिखाई ही नहीं। जब देखो मुँह ढके, किवाड़ बन्द किये, पीठ फेरे बैठी है। सराय में दो तीन दिन रहे, उसने हिन्दू कहारी को भठियारी के मारतफ़त बुला कर पानी भरवा लिया, खाना भी उससे ही मंगाया, कानपुर में दो रोज़ तक रोती ही रही, कुछ खाया ही नहीं। वहाँ भी मैंने मुसलमान कहारी को हिन्दू कहारी कह कर खाना मंगवाया लेकिन फिर भी कम्बख़्त कुछ न खाकर भंगन को दे दिया करती थी। क़सम ख़ुदा की बस, उसके घर से मन्दिर को आते जाते उसकी एक दो दफ़ा शक्ल देख ली होगी, बाक़ी बाहर तो धोती और चादर ही नज़र आती थी। यार ये सब बातें पढ़ी लिखी होने की वजह से थीं। वे पढ़ी तो हमने ज़रा देर में पिघल जाती देखी हैं। अच्छा यह तो बताओ तुम यहां पर कैसे लालटेन लिये फिर रहे हो? बनिये का काम क्यों छोड़ आये?"

जुम्मा—"यार छोड़ क्या आये, जब ये ख़बर लाड़ो की सुसराल में पहुँची उन्होंने उसे भ्रष्ट समझ कर गौने से इन-

कार कर दिया। इधर लाड़ो भी वहां नहीं रही। घर में बनेनी को रंज रहने लगा। मोतिया ने आकर आफ़त मचा दी। कपड़े सिले वे सिले जो कुछ थे मंगा लिये, काम कुछ रहा नहीं अल्ला अल्ला खैर सल्ला। वहां पर पड़े पड़े क्या करते यहां पर हमारे एक अज़ीज स्टेशनमास्टर हैं उनके पास आ गया हूँ। उन्होंने मेहरवानी करके यहां खानसामा बना दिया है अकेला आदमी हूं गुज़र हुई चली जायगी।

इन बातों से मोतीचन्द की बाहें फड़कती थीं। कमर में पड़ी हुई कटार पर बार बार हाथ डालता था परन्तु सेठ सेठानी इसे रोक लेते थे। सेठ सेठानी लज्जा के मारे मरे जाते थे। अपनी मूर्खता पर उनको स्वयं क्रोध आ रहा था। लाड़ो की निर्दोषता उनको और लज्जित कर रही थी। कभी मुनीमजी की हठ और कभी बाँसगाँव वालों की तोतेचश्मी याद आती थी। दिल ही दिल में लाड़ो के स्वधर्म रक्षा की प्रशंसा करते थे। निर्दोष लाड़ो के वनवास के पाप का बोझ दबाने लगा। लाड़ो को कहाँ पायें, कैसे पायें यही चिंता सवार हुई। गुण्डों के छल कपट ने उनकी आँखें खोल दीं। निर्मल महिलाओं को फँसाने का जाल उनके सामने आ गया। लाड़ो तू मुश्किल से मिलेगी? यह कह कर सेठानी लम्बे लम्बे सांस लेने लगी। गोंडे से गाड़ी आ गई। खैराती जुम्मा को सलाम करके गोरखपुर जाने के लिये गाड़ी में जा बैठा। जुम्मा पलेट में चाय के प्याले और बिसकुट लेकर प्लेटफ़ारम पर चक्कर लगाने लगा। सेठानी को कुलियों ने आवाज़ दी, उठिये! गाड़ी लाइन पर आ गई, असबाब रख दें। सेठजी ने सलाह करके यही निश्चय किया कि अब फ़ैज़ाबाद न चलकर सीधे कानपुर को चलना चाहिये। वहीं पर कुछ पता लगेगा। कान-

पुर के टिकट ले लिये और गोरखपुर से आने वाली गाड़ी में बैठकर १ बजे के क़रीब दिन में कानपुर पहुँच गये। धर्मशाला में ठहरकर नहा धोकर खा पीकर निवटे और सेठ सेठानी अपनी मूर्खता, मुनीमजी की हठ, गुण्डों की बदमाशी और लाड़ो की निर्दोषता और विपत्ति की चर्चा करके दुःखी होने लगे। सेठानी को चिकरू के साथ धर्मशाला में ही छोड़ा और सेठजी और मोतीचन्द छतुरी हाथ में ले शहर की ओर चल दिये। चलते चलते बातें करते जाते थे कि पहले मारवाड़ी अग्रवाल सभा में चलें या हिन्दू सभा में? आर्यसमाज में अब चलें या फिर। इस प्रकार विचार करते करते ट्राम आ गई और ए॰ बी॰ रोड का टिकट ले उधर ही को चल दिये। ट्राम में तरह तरह की चर्चा हो रही है। दोनों जने सुनते चले जा रहे हैं।

(२०)

आज कानपुर का बाज़ार सज रहा है। हर एक हिन्दू दूकानदार अपनी अपनी दूकान को झंडियों से सजा रहा है। बाज़ार में बहुत सी स्त्रियाँ छतों पर ठौर ठौर पर बैठी हैं। बहुत सी दूकानों पर छोटी छोटी झलोरियों में फूल रक्खे हैं। प्रत्येक हिन्दू प्रसन्न दिखाई देता है, अग्रवाल वैश्य विशेष कर सजे सजाये किसी खास तैयारी में लगे हुये हैं। हिन्दू अनाथालय का बैण्ड बाजा वरदी पहने क़वायद के साथ चौक की ओर जा रहा है, हिन्दुओं में चर्चा फैल रही है कि "भाई! बहुत अच्छा हुआ कन्या भी योग्य है और वर उससे भी अधिक योग्य है। जब तक इस प्रकार कन्याओं का उद्धार नहीं होगा, देश कभी नहीं सुधर सकता। भाई! आर्यों को सद रहमत है। अगर स्वामी दयानन्द न होते तो न जाने आज क्या से क्या हो जाता।" सेठ नानकचन्द और मोती-

चन्द इन सारी सजावटों और चर्चाओं को सुनते हुये चले जा रहे हैं। परन्तु धुन लाड़ो की तलाश की लगी हुई है।

सेठजी—"मोती! भाई अब कहां चलें, किस से पूछें? कानपुर में कभी आया नहीं किसी को जानता नहीं। न जाने अग्रवाल सभा कहां है, हिन्दू सभा का प्रधान कौन है, कुछ पता नहीं, अच्छा और ठीक ठीक पता तो आर्यसमाज में लगेगा। चलो मोती, आर्य-समाज में चलें!"

मोती—"हां आप की राय ठीक है। चलो आर्यसमाज ही में चलें।"

इतने में ट्राम थम गई और टिकट वेचने वाले ने कहा उतरो ए. वी. रोड पर उतरने वालो। सेठजी मोतीचन्द सहित उतर पड़े और अपने साथी उतरने वाले से आर्य-समाज का पता पूछने लगे। साथी ने हाथ के इशारे से वताया कि यह क्या है—जिस पर वहुत सी भंडी और वन्दन-वार लगी हैं! सेठजी ने दक्षिण की ओर मुँह किया तो समीप ही दरवाजा दिखाई दिया। दोनों व्यक्ति दरवाजे पर जा खड़े हुए। एक सज्जन से सेठजी ने पूछा कि यही आर्य-समाज है? उत्तर मिला हां यही है। सेठजी और मोतीचन्द आगे बढ़े और वड़े हाल में जा पहुँचे, हाल विजली की सैकड़ों बत्तियों से सजा हुआ है, चारों ओर वन्दखाने तनी हैं, वीसियों मन्त्रों मलमल और कपड़े पर कटे हुए टंग रहे हैं, महात्माओं के बड़े बड़े चित्र शीशों में जड़े हुये दीवारों पर लगे हैं, बीच हाल में सुन्दर वेदी बनी है, कई सज्जन उसके सजाने में लग रहे हैं। सेठ जी इस धार्मिक दृश्य को देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुये। थोड़ी देर के लिये सारी फ़िक्र दूर हो गई, एक सज्जन से

पूछने लगे कि—"आज क्या कोई उत्सव है?" सज्जन ने उत्तर दिया—"नहीं एक वैश्य कन्या का विवाह है।"

सेठजी—"बारात कहाँ से आयेगी?" उत्तर मिला कि "लाला खेमचन्द के यहाँ से, उनका लड़का अभी विलायत से वैरिस्टरी पास करके आया है।"

सेठजी ने पुनः पूछा कि—"लड़की कहाँ की है?" उत्तर मिला कि—"लड़की एक बड़े घराने की है उसका विवाह आर्य-समाज की ओर से ही होगा" सेठजी ने इतना और पूछा कि "कौन वैश्य है?" उत्तर मिला—"अग्रवाल वीसे; विवाह सायं-काल ४ बजे ठीक आरम्भ हो जायगा।"

सेठजी ने मोतीचन्द, की ओर देखकर कहा—"चलो भाई बारह बज गये, आज यहाँ पर जाति के बड़े बड़े भाई इकट्ठा होंगे। उसी समय पूछ गाछ करेंगे। इस समय तो ये सब काम में लग रहे हैं।" सेठजी बाहर आ गये और मोतीचन्द सहित तांगे पर बैठकर धर्मशाला में आ गये। सेठानीजी प्रतीक्षा कर ही रही थीं देखते ही बोलीं कि—"क्यों कुछ लाड़ो का पता चला?" सेठजी ने कहा—"अभी तो कुछ नहीं लगा। शाम को आर्यसमाज में एक शादी में बहुत से बिरादरी और गैर बिरादरी के बड़े बड़े लोग इकट्ठा होंगे उस समय पूछ गाछ करूँगा।" सेठानी ने कहा—"किसका व्याह है?" सेठजी बोले—"एक अग्रवाल की कन्या का है।" सेठानी ने कहा—"अच्छा मैं भी चलूंगी यहाँ अकेले पड़े पड़े जी नहीं लगता। अच्छा लो खाना खा लो आज बड़ी देर हो गई। जाने ये दुःख कब दूर होगा।"

(२१)

सन्ध्या के चार पाँच बजे का समय है। आर्यसमाज

मन्दिर कानपुर में हजारों आदमियों की भीड़ है। शहर के बड़े बड़े धनी, मानी, बड़े बड़े, पदाधिकारी और सेठ साहूकार विराजमान हैं। यज्ञ-मण्डप की शोभा अनुपम है। मण्डप में भव्य मूर्तियां पंडितों की विराजमान हैं। चारों ओर हर्ष का समुद्र तरङ्गित हो रहा है। स्त्री समुदाय भी पर्याप्त है। ऐसे आनन्दमय समय में बैरिस्टर तेजोनारायणलाल रेशमी अचकन पहिने सिर पर रेशमी बनारसी साफे पर हीरे जड़ी सुनहरी कलॅगी लगाये, सुन्दर रेशमी धोती पहिने संस्कार-मण्डप में पधारे। सारा हाल करतल-ध्वनि से गूँज उठा। स्वामी दयानन्द की जय, वैदिक धर्म की जय का नाद रह रह कर उठने लगा। बै० तेजोनारायणजी के पिता भ्राता आज अत्यन्त आनन्दित प्रतीत होते हैं। पंडित-मण्डली के संकेत करने पर कन्या अतीव सुन्दर जगमगाते हुये वस्त्रा भूषण पहिने रेशमी दुशाले से मुँह को ढके संस्कार-मण्डप में आकर बैरिस्टर साहब के दाहिनी ओर खड़ी हुई। कन्या के आते ही एक बार पुनः करतल और जय ध्वनि से हाल गूँज उठा। कन्या के पिता का कार्य कौन करे, यह चर्चा धीरे धीरे कुछ सज्जनों में कानों ही कानों में होने लगी। इतने में ही सेठ दामोदरजी बोल उठे कि—"मैंने अब तक कोई कन्यादान का पुण्य नहीं लिया है। परमात्मा ने आज यह सुअवसर दिया है कि मैं एक अग्रवाल कन्या को अपनी पुत्री बनाऊं, आशा है कि अधिकारीगण मेरी प्रार्थना स्वीकार करेंगे।"

बाबू ज्वालाप्रसादजी ने खड़े होकर सेठजी का परिचय जनता को इस प्रकार देना आरम्भ किया—"सज्जनो, बड़ी खुशी की बात है कि आज एक कन्या को अपनी पुत्री ऐसे सज्जन बनाने को हैं कि जो लखों रुपये के स्वामी हैं, कई

जगह आप की बड़ी बड़ी मिलें चल रही हैं। खैर आप सब तरह से सम्पन्न हैं। प्रारब्ध वश आप के कोई सन्तान नहीं है। आप आर्यसमाज के प्रत्येक कार्य में भरपूर सहायक रहते हैं। गरज यह है कि आप अत्यन्त सुधारक आर्य हैं। मैं आशा करता हूं कि अनाथालय के अधिकारीगण इनकी प्रार्थना को स्वीकार करके सेठजी की इच्छा पूरी करेंगे। (चारों ओर से ध्वनि) बहुत ठीक है बहुत उचित है। बेशक बनने योग्य हैं 'सेठ दामोदरजी संस्कार-मण्डप में आ विराजे।'

अनाथालय के प्रबन्धकर्ता श्रीदेवकीनन्दन अग्रवाल खड़े हुए और कहने लगे कि "सज्जनो! बहुत से मेरे नगरनिवासियों को और विशेष कर अग्रवाल भाइयों को यह सन्देह होगा कि यह कन्या कौन है? अतः उचित समझता हूं कि इसका पूर्ण परिचय आप को दे दूं। यह कन्या क़स्बा श्यामपुर ज़िला गोरखपुर की रहने वाली है, पिता का नाम सेठ नानकचन्द है, जाति की अग्रवाल है। बड़े ऊंचे घराने की कन्या है। कन्या का नाम भी आपको बता दूं। लाड़ो है" अभी प्रबन्धकर्ताजी अपना भाषण अच्छी तरह कर भी नहीं पाये थे कि "अरी मेरी लाड़ो! अरी मेरी प्यारी लाड़ो!! अरी मेरी बहिन लाड़ो!!! यह कहते हुए तीन व्यक्ति जनता के ऊपर गिरते पड़ते चीरते फारते लाड़ो को आन लिपटे। लाड़ो ने मुँह उघाड़ कर देखा तो एक प्यारी अम्मा है, दूसरे प्रिय पिता हैं और तीसरा भाई मोतीचन्द है। अम्मा लाड़ो को लिपट गई और बड़े करुणास्वर से मिलकर रोने लगी। बीच में अम्मा और इधर उधर दोनों ओर भाई और पिता के कन्धों पर दोनों हाथ रख कर प्रेमाश्रु बहाती हुई लाड़ो मिलकर रोने लगी। सारी जनता इस विचित्र दृश्य को

देखकर टकटकी लगाकर इस चतुर्मूर्ति को आश्चर्य से अवलोकन करने लगी। फोटो खींचने वालों ने फोटो खींचने में शीघ्रता की। थोड़े काल तक सिवाय लाड़ो और माता के मिलकर रोने और नानकचन्द और मोतीचन्द के सिसक सिसक कर आँसू बहाने के और कोई शब्द किसी का सुनाई नहीं दिया। सारी जनता करुणारस में गोते लगाने लगी। आधे घंटे तक यही अवस्था रही, वियोग का दुःख आँसुओं द्वारा बह गया। एक वृद्धा स्त्री ने आकर लाड़ो को पुकारते हुए सावधान किया। जनता इस भेद को जानने की उत्सुक थी—ये तीनों व्यक्ति कौन हैं, इनका इस कन्या से क्या विशेष सम्बन्ध है, कहाँ के हैं आदि आदि प्रश्न जनता के चित्त में उठ रहे थे। सेठ नानकचन्द ने आँसू पोंछते हुए जनता की ओर मुख करके कहा—"भाई लोगो! मैं महा अधम और पापी हूँ जो मैंने अपनी सती साध्वी कन्या को एक म्लेच्छ पापी के वृथा लांछन लगाने से त्याग दिया। (सेठानी की ओर संकेत करके) यह इसकी माता है, ये मोतीचन्द लाड़ो का बड़ा भाई है। मुझको ज्ञात नहीं था कि किस प्रकार आज कल गुंडे बदमाश.......(होठ काँपने लगे) भले घर की बहू बेटियों पर दोष लगाकर अपनी राक्षसी कामना पूरी करने का यत्न करते हैं। (लाड़ो के सिर पर हाथ रख कर) बेटी! मुझ पापी अपराधी को क्षमाकर, मैंने तेरे साथ घोर अन्याय किया है, घोर शत्रुता की है। बेटी! क्षमाकर, बेटी!! क्षमाकर। आर्यसमाजियो! आपने मेरी कन्या की रक्षा की है, धर्म बचाया है, जन्म भर आप का ऋणी रहूंगा, मेरी संतान ऋणी रहेगी एक व्यक्ति ने स्वामी दयानन्दजी महाराज के चित्र की तरफ संकेत करके कहा कि—"यह सारी कृपा

इन महर्षि की है" स्वामीजी के चित्र को देखते ही सेठ नानकचन्द हाथ जोड़े हुए स्वामीजी के खड़े हुए चित्र के चरण छूने को दौड़े। एक सज्जन ने रोक कर कहा—"सेठजी चित्र-पूजा नहीं, चरित्रों पर ध्यान देना चाहिये। सेठजी ने कहा—"भाई! सत्य है बिलकुल सत्य है" हाल में करतल-ध्वनि और जयकार की खूब गूंज हुई।

उस चित्रित जनता को सम्बोधन करते हुए श्रीदेवकीनन्दनजी ने कहा, इससे अधिक हर्ष और क्या होगा कि सौभाग्य से लाड़ो के माता पिता और भाई भी अचानक मिल गये। किस को खबर थी कि यह शुभ संयोग इस प्रकार बन जायगा। अब मैं यही उचित समझता हूँ कि देवी लाड़ो का कन्यादानादि यही माता पिता करें। चारों ओर से अवश्य अवश्य की ध्वनि उठने लगी, माता अपनी लाड़ो पुत्री का जी भर कर एक बार मुख देखना चाहती थी अतः लाड़ो का घूंघट ऊपर को उठाकर आँखों से आँखें मिलाईं, मुख चूमा सिर पर हाथ फेरा और छाती से लगा लिया। मोतीचन्द भाई ने खुशी के जोश में आकर, जनता की ओर मुख करके कहा कि—"मैं आज अपनी बिछुड़ी हुई प्यारी बहिन के पुनः मिलने पर ५००) अनाथालय को दान देता हूँ। इतना कह कर पाँच सौ रुपयों के नोट जेब से निकालकर श्रीदेवकीनन्दनजी के हाथ में दे दिये जनता में हर्ष-ध्वनि और जय जयकार हो उठा। सेठ नानकचन्द के ऊपर इस समय इन सारी घटनाओं का ऐसा प्रभाव पड़ा कि वह कन्यादान लेने के लिये स्त्री सहित तुरन्त हाथ पैर धोकर तैयार हो गये। यह भद्दा विचार जरा देर को भी चित्त में नहीं आया कि हम दुबारा कन्यादान किस प्रकार लें, यह तो सनातन-

देखकर टकटकी लगाकर इस चतुर्मूर्ति को आश्चर्य से अव-लोकन करने लगी। फोटो खींचने वालों ने फोटो खींचने में शीघ्रता की। थोड़े काल तक सिवाय लाड़ो और माता के मिल-कर रोने और नानकचन्द और मोतीचन्द के सिसक सिसक कर आँसू बहाने के और कोई शब्द किसी का सुनाई नहीं दिया। सारी जनता करुणारस में गोते लगाने लगी। आधे घंटे तक यही अवस्था रही, वियोग का दुःख आँसुओं द्वारा बह गया। एक वृद्धा स्त्री ने आकर लाड़ो को पुकारते हुए सावधान किया। जनता इस भेद को जानने की उत्सुक थी—ये तीनों व्यक्ति कौन हैं, इनका इस कन्या से क्या विशेष सम्बन्ध है, कहाँ के हैं आदि आदि प्रश्न जनता के चित्त में उठ रहे थे। सेठ नानकचन्द ने आँसू पोंछते हुए जनता की ओर मुख करके कहा—"भाई लोगो! मैं महा अधम और पापी हूँ जो मैंने अपनी सती साध्वी कन्या को एक म्लेच्छ पापी के वृथा लांच्छन लगाने से त्याग दिया। (सेठानी की ओर संकेत करके) यह इसकी माता है, ये मोतीचन्द लाड़ो का बड़ा भाई है। मुझको ज्ञात नहीं था कि किस प्रकार आज कल गुंडे बदमाश········(होठ काँपने लगे) भले घर की बहू बेटियों पर दोष लगाकर अपनी राक्षसी कामना पूरी करने का यत्न करते हैं। (लाड़ो के सिर पर हाथ रख कर) बेटी! मुझ पापी अपराधी को क्षमाकर, मैंने तेरे साथ घोर अन्याय किया है, घोर शत्रुता की है। बेटी! क्षमाकर, बेटी!! क्षमाकर। आर्यसमाजियो! आपने मेरी कन्या की रक्षा की है, धर्म बचाया है, जन्म भर आप का ऋणी रहूंगा, मेरी संतान ऋणी रहेगी एक व्यक्ति ने स्वामी दयानन्दजी महाराज के चित्र की तरफ संकेत करके कहा कि—"यह सारी कृपा

इन महर्षि की है" स्वामीजी के चित्र को देखते ही सेठ नानक-चन्द हाथ जोड़े हुए स्वामीजी के खड़े हुए चित्र के चरण छूने को दौड़े। एक सज्जन ने रोक कर कहा—"सेठजी चित्र-पूजा नहीं, चरित्रों पर ध्यान देना चाहिये। सेठजी ने कहा—"भाई! सत्य है विलकुल सत्य है" हाल में करतल-ध्वनि और जयकार की खूब गूंज हुई।

उस चित्रित जनता को सम्बोधन करते हुए श्रीदेवकी-नन्दनजी ने कहा, इससे अधिक हर्ष और क्या होगा कि सौभाग्य से लाड़ो के माता पिता और भाई भी अचानक मिल गये। किस को खबर थी कि यह शुभ संयोग इस प्रकार बन जायगा। अब मैं यही उचित समझता हूँ कि देवी लाड़ो का कन्यादानादि यही माता पिता करें। चारों ओर से अवश्य अवश्य की ध्वनि उठने लगी, माता अपनी लाड़ो पुत्री का जी भर कर एक बार मुख देखना चाहती थी अतः लाड़ो का घूंघट ऊपर को उठाकर आँखों से आँखें मिलाईं, मुख चूमा सिर पर हाथ फेरा और छाती से लगा लिया। मोतीचन्द भाई ने खुशी के जोश में आकर, जनता की ओर मुख करके कहा कि—"मैं आज अपनी बिछुड़ी हुई प्यारी बहिन के पुनः मिलने पर ५००) अनाथालय को दान देता हूँ। इतना कह कर पाँच सौ रुपयों के नोट जेब से निकालकर श्रीदेवकी-नन्दनजी के हाथ में दे दिये जनता में हर्ष-ध्वनि और जय जयकार हो उठा। सेठ नानकचन्द के ऊपर इस समय इन सारी घटनाओं का ऐसा प्रभाव पड़ा कि वह कन्यादान लेने के लिये स्त्री सहित तुरन्त हाथ पैर धोकर तैयार हो गये। यह भद्दा विचार जरा देर को भी चित्त में नहीं आया कि हम दुबारा कन्यादान किस प्रकार लें, यह तो सनातन-

धर्म के प्रतिकूल है। सेठ दामोदरजी की ओर को बड़ी श्रद्धा से सेठ नानकचन्दजी ने देखा, सेठ दामोदरजी ने भी कृतज्ञता पूर्वक सेठ नानकचन्दजी की ओर को हाथ जोड़ दिये। सेठ दामोदरजी बोले कि सेठजी! कन्यादान मैं भी लूंगा। मैं प्रतिज्ञा कर चुका और लाड़ो को अपनी धर्मपुत्री बना चुका। किसी ने हास्यरस में कहा कि अच्छा है "ला० खेमचन्दजी को दो समधी मिले दुहेरा दहेज मिलेगा। वैरिस्टर साहब की भी दो जगह दावतें होंगी। सेठ खेमचन्दजी और वैरिस्टर साहब दोनों मुस्कराने लगे, ये सारा कौतूहल लगभग २ घंटे के रहा परन्तु जनता को कुछ देरी प्रतीत नहीं हुई। विवाह कार्य आरम्भ हुआ दो सेठों और दो सेठानियों ने सौ० लाड़ो का हाथ वैरिस्टर साहब के हाथ में थमा दिया। चारों व्यक्तियों ने कन्या के चरण छुए मस्तक पर तिलक लगाया, भाई मोतीचन्द ने अपने गले का सोने का तोड़ा अपनी बहन लाड़ो के गले में पहना दिया। सेठ दामोदरजी ने अपनी हीरे की अंगूठी वैरिस्टर साहब की उंगली में पहना दी। सेठ नानकचन्द और उनकी स्त्री की ओर से दस हजार के दान का ऐलान श्रीदेवकीनन्दनजी ने किया। इस प्रकार सहर्ष विवाह की क्रिया समाप्त हुई, विवाह समाप्ति पर सेठ खेमचन्दजी ने २००००) रुपये आर्यसमाज, अनाथालय और विधवाश्रम आदि को दान करके दिये। प्रत्येक दान के उपरान्त करतल-ध्वनि होने लगी। पंडितों को यथा-शक्ति दक्षिणा देकर संतुष्ट किया। जनता ने "वर कन्या चिरंजीव रहे" की जय जय-कार ध्वनि की। चारों ओर से पुष्प-वर्षा होने लगी। सेठ सेठानी वैरिस्टर और उच्च कुलोत्पन्न वर पाकर अति प्रसन्न हुये बड़े बड़े पदाधिकारियों ने आकर सेठजी से हाथ

मिलाया, बाबू ज्वालाप्रसादजी ने सबों का नाम नामी और अधिकार बताते हुए सेठजी का परिचय कराया। जनता युगल जोड़ी की प्रशंसा करती हुई अपने अपने काम काज में लगी, दोनों व्यक्ति और सेठ सेठानी और मोतीचन्द मोटर में बैठ कर प्रथम धर्मशाला में गये चिकरू कहार अचानक लाड़ो को देखकर विस्मित और भौचक्का सा रह गया। लाड़ो ने धीरे स्वर से कहा—"चिकरू अच्छा है ?" प्रेम-वश होकर वृद्ध चिकरू ने सौ० लाड़ो को गोद में उठा लिया और उसका कन्धे से सिर लगा कर आँखों से प्रेमाश्रु टपका दिये, लाड़ो ने भी घूँघट के भीतर आँखों में भरे हुए आँसू चिकरू के कन्धे पर बहा दिये। सेठजी ने बड़े आदर से नये जामातृ को पलंग पर बैठने का संकेत किया। सेठानी अन्दर कोठरी में चली गई, दुशाले की चादर उतार कर खूंटी पर रख दी। चिकरू भी सौ० लाड़ो को लिये हुए कोठरी में गया और सौ० लाड़ो को उसकी अम्मा के समीप खड़ा कर दिया, माता अपने पूर्व व्यवहार से अत्यन्त लज्जित थी। सौ० लाड़ो माता को लज्जित समझकर धीरे और अत्यन्त मधुर शब्दों से तसल्ली देने लगी। माता बार बार लाड़ो को छाती से लगाती। मोती-चन्द झट तारघर को गया और मुनीमजी को तार दिया कि "लाड़ो मिल गई चिट्ठी आती है उससे विशेष हाल जानना।"

इतने में सेठ खेमचन्द श्रीदेवकीनन्दनजी, बा० ज्वाला-प्रसादजी और कई सज्जन पुरुष मोटर द्वारा धर्मशाला में पधारे। सेठजी ने उठकर आदर किया, बैरिस्टर साहब भी आदरार्थ खड़े हो गये। धर्मशाला के मैनेजर ने कुर्सियां बिछा दीं। सब बैठकर आमोद प्रमोद की बातें करने लगे। सेठजी ने लाड़ो का प्रसंग आद्योपांत धीरे धीरे लज्जित होते हुए

सुनाया। खैराती ने मनकापुर के स्टेशन पर जुम्मा से जो कुछ हाल लाड़ो के विषय में कहा था ज्यों का त्यों दुहरा दिया। आगन्तुक व्यक्ति दुःख और आश्चर्य से सारी बातें सुनते रहे। आगे बातचीत निम्न प्रकार होने लगीः—

सेठजी—"क्यों भाई जी! सारे मुसलमान ऐसे ही होते हैं जैसे खैराती और जुम्मा हैं?"

बाबू ज्वालाप्रसादजी—"नहीं सेठजी सब एक से नहीं होते। मेरे मुवक्किल बहुत से मुसलमान हैं! उनमें बाजे बाजे ऐसे शरीफ हैं कि हमेशा सुलह पसन्दी की बातें करते हैं। दूसरों की बहू बेटियों को बड़ी अच्छी नज़र से देखते हैं। ये तो चन्द गुंडों की बदफ़ेली है जो सब मुसलमानों को बदनाम करती है। शायद आपको मालूम होगा कि एक ख्वाजा हसन निज़ामी दिल्ली का रहने वाला मुसलमान है उसके दाइयेइस्लाम का यह कुफल है। कुछ मुसलमान यह समझने लगे हैं कि इस तरह छल कपट से ही इस्लाम को बढ़ाओ इससे सब मुसलमान दोषी नहीं ठहर सकते।"

सेठजी—"दाइयेइस्लाम कोई उसका नौकर या रिश्तेदार है या किसी किताब अथवा अखबार का नाम है।"

बाबू ज्वालाप्रसाद—"ओहो! सेठजी!! आप तो अखबारी दुनिया से बिलकुल ही अलग हैं दाइयेइस्लाम एक छोटी सी किताब है।"

सेठजी—"बाबू साहब! सच्ची बात कहने में कोई पाप नहीं। मैं तो कुछ पढ़ा लिखा नहीं। विश्वमित्र अखबार कलकत्ते से आता है सो वह भी इसलिये मंगालिया है कि खांड, गेहूँ, चांदी, सोने और लाख, कपड़े का भाव मालूम होता रहे। बाकी लाड़ो और मोतीचन्द ही पढ़ते रहते हैं। हमारे

पुराने मुनीमजी हैं सो बूढ़े ७५ वर्ष के हैं। उन्होंने स्यात् चौराचौरी का स्टेशन भी नहीं देखा होगा फिर ऐसी बातें जाने कौन? कभी कोई पढ़ा लिखा आ भी बैठा तो वही व्यापार की चर्चा। फिर भाईजी हम लोगों को कैसे पता चले? अब सिर पर पड़ी तो समझ में कुछ कुछ आया है। इस प्रकार थोड़ी देर बातचीत होती रही। सेठ खेमचन्द ने नम्रता से कहा कि मैं सेठ नानकचन्दजी से प्रार्थना करना चाहता हूँ कि वे एक दिन के लिये सौभाग्यवती लाड़ो को घर भेजने की कृपा करें। तेजोनारायण की माता और बहिनें आदि सब ही सौ० लाड़ो को देखना चाहती हैं। सेठ नानकचन्द ने इसे सहर्ष स्वीकार किया। सेठ खेमचन्दजी ने इतनी और प्रार्थना की कि यहां पर धर्मशाला में कष्ट हो रहे हैं अतः यदि चिरञ्जीव मोतीचन्द की माता भी स्थान पर चलें तो उत्तम होगा। परस्पर का सम्मेलन भी हो जायगा और यहां के ठहरने के कष्ट से भी बच जायेंगे। इस सम्मति को सबने स्वीकार किया। मोटरें तैयार थीं एक मोटर पर वर वधू लाड़ो की माता और मोतीचन्द सवार हुए। शेष अन्य मोटरों पर सवार होकर सेठ खेमचन्दजी के स्थान को रवाना हो गये। वै० तेजोनारायणजी की माता ने सौ० लाड़ो को अत्यन्त आदरपूर्वक घर में प्रवेश कराया। मंगल गाये जाने लगे समधन समधन आपस में प्रेमपूर्वक मिलीं। सौ० लाड़ो की माता ने सबका आदर भेंटादि से किया। सेठ नानकचन्दजी ने भी समयानुसार समधियों का मिलनी आदि से सत्कार किया। इस ही प्रकार कई दिन व्यतीत हो गये। एक दूसरे से अधिक नम्र अपने को सिद्ध करता था। एक दिन सेठ नानकचन्दजी ने हाथ जोड़कर सेठ खेमचन्दजी से प्रार्थना की कि

कृपया अब गृह पर जाने की आज्ञा दें और उचित समझें तो लाड़ो को ८ या १० दिन के लिये भेज दें। सेठ खेमचन्द ने सहर्ष स्वीकार किया, वै० तेजोनारायण की माता ने अपनी पुत्र-वधू लाड़ो को सहस्रों रुपये का जड़ाऊ जेवर अपने हाथ से पहिना दिया। चमकते दमकते वस्त्र ट्रंकों में भर दिये बहुत से इष्ट मित्रों के सहित सेठ खेमचन्दजी स्टेशन तक पहुंचाने आये सेकिंड क्लास का टिकट ले लिया गया। गाड़ी रवाना हुई सब ही ने हाथ जोड़कर अपने सम्बन्धियों को विदा किया। समय पर गाड़ी चौरा चौरी के स्टेशन पर पहुंची। तांगा किराये का कर सकुशल श्यामपुर पहुँच गये। सारी बस्ती सौ० लाड़ो को देखने की उत्सुक थी। सम्बन्धीजन एक एक करके आने लगे। आद्योपांत हाल सुनकर आर्यसमाज की सब ही प्रशंसा करने लगे। घर घर आर्यसमाज और ऋषि दयानन्द के गुण गाये जाने लगे। माता पिता ने सौ० लाड़ो को साक्षात् देवी स्वरूपा मानकर सदैव आदर किया। भाई मोतीचन्द बहन लाड़ो पर अत्यधिक प्रेम करते थे। पिछली कार्यवाही पर कभी कभी सब ही पश्चात्ताप कर लेते थे, सारे ही विधर्मी पृथक् कर दिये गये। सौ० लाड़ो समय समय पर कानपुर जाती और तीजों इत्यादि पर श्यामपुर आती रही। स्त्री-समाज में मुख्य भाग लेती। वृद्ध मुनीमजी नौकरी छोड़ बैठे। उनके पसन्द ये कार्यवाही बिलकुल नहीं आई। सती साध्वी के धर्म-रक्षण की बात जब उसकी पुरानी सुस-राल बाँसगाँव पहुँची तो उनको भी कुछ पछताना पड़ा। इस प्रकार इस कन्या के शुभ परिणाम की चर्चा संसार में शेष रह गई। बहुत सी नई घटनाओं से संसार ने शिक्षा ग्रहण की।

ओ३म् शान्तिः

दूसरा आँसू

पहिला दृश्य

"मैं वही बसन्ती चमारी हूँ"

कानपुर के मन्दिरों में आज कृष्णाष्टमी का दिन बड़ी धूम-धाम से मनाया जा रहा है। हरएक मन्दिर दूसरों को अपनी सजावट में मात कर रहा है। सैकड़ों नरनारी मन्दिरों की सजावट देखने जा रहे हैं। पं० रामप्रसादजी भी अपने लड़के का हाथ पकड़े घर से निकले। जहां तहां मन्दिरों की शोभा देखते दिखाते एक बड़े मन्दिर की ओर बढ़े। ज्योंही इस मन्दिर के समीप गये, देखा कि एक रंडी मन्दिर में नाच रही है। पं० रामप्रसाद इस महफ़िल को देखकर बहुत खुश हुए। लड़के से कहने लगे—"देखो बेटा कैसी अच्छी रंडी है! चलो भीतर चलें; थक गये ज़रा भीतर चलकर बैठेंगे।" पंडितजी यह कहते हुए पुत्र सहित महफ़िल में जा बैठे। पंडितजी ने देखा कि ठीक ठाकुरजी के सामने रंडी ठाकुरजी की ओर को मुँह किये नाच रही है। शहर के बड़े बड़े रईस गद्दी पर बैठे तकिया लगाये हुए रंडी से तरह तरह की चीज़ें

गाने के लिये फ़रमायश कर रहे हैं। पं० जी ने चुपके से किसी से पूछा कि—"इस रंडी का क्या नाम है?" उत्तर मिला कि—"मुन्नीजान है।" पं० जी ने थोड़ा सा आश्चर्य किया कि हिन्दू मन्दिर और मुसलमानी रंडी! परन्तु ज्योंही रंडी ने स्वर के साथ गाना आरम्भ किया कि—"कहता है खुदा दिल में न घवड़ाये मुहम्मद। वख़्शूँगा मैं उसे जिसे फ़रमाये मुहम्मद।" सारी महफ़िल के साथ पं० जी भी झूमने लगे। वाह वाह की आवाज़ें उठने लगीं। रईस लोग रेशमी रूमाल और दुशाले रंडी पर फेंकने लगे। रुपयों से सारंगी भरने लगी। मुन्नीजान हरएक इनाम पर सलाम करती जाती थी। कुछ रईसों के नौकर चुपके से पीछे से गिलास में भरकर कुछ दे देते थे। रईस लोग भी "वड़ी प्यास लगी है" कहते कहते पी जाते। रूमाल से मुँह पोंछकर डिब्बी में से पान निकाल कर खा लेते। इसी प्रकार रंग जम रहा था। सबकी निगाह रंडी के चेहरे पर थी। जिस वक़्त रंडी पान का इशारा करती, कई रईस अपनी अपनी डिब्बी खोलकर पान पेश करते। जिसका पान क़ुबूल हो जाता वह अपने को कृतकृत्य समझता। कई रईसों की वाहें, रंडी के सीने पर अतर लगाने के लिये फड़क रही थीं। रह रह कर बाहें उठती थीं, पर मौक़ा नहीं मिलता था। मन मारकर रह जाते थे।

रंग में भंग—

ऐसे मज़े के समय महफ़िल के अन्तिम कोने से एक चीख़ की आवाज़ उठी। लोग उठ उठ कर उधर को दौड़ने लगे। सारी महाफ़िल में गड़बड़ मच गई। क्या है क्या है की आवाज़ चारों ओर से आने लगी। पं० रामप्रसाद भी लड़के

का हाथ पकड़े हुए उस ही ओर को ऊपर गये। जाकर देखा कि एक नौ दस साल की हिन्दू की लड़की खून में लथपथ हुई "अरी मैया अरी मैया" कहकर बड़े करुणा और कातर स्वर से रो रही है। साथ ही एक मनुष्य लाल लाल आँखें किये कह रहा है "ले और चढ़ चबूतरे पर! अब सबक़ मिल गया; अब तो कभी नज़दीक नहीं आयेगी ?"

पं० रामप्रसादजी—"क्यों भाई इसको किसने चबूतरे पर से गिरा दिया ?"

एक मनुष्य—"हमने गिरा दियाजी! और फिर गिरायेंगे!!"

पं० रा० प्र०—"इसने क्या क़सूर किया था ?"

मनुष्य—"क़सूर पूँछते हो ? ये चमार की लड़की होकर मन्दिर के चबूतरे पर क्यों चढ़ी ? क्या इसको खबर नहीं थी कि ये ठाकुरजी का मन्दिर है ? क्या इसने इसे चौपाल समझा था ?"

पं० रा० प्र०—"भाई पुजारीजी! समझा देते। देखो कितना ऊँचा चबूतरा है, इसके ऊपर से धक्का तुमने दे दिया!! इसकी चूड़ी टूटकर इसकी कलाई में घुस गई, दो दाँत भी आगे के टूट गये, नकसीर फूट निकली!!!"

पुजारी—"हम क्या करें ? जैसा करा वैसा भरा! (लड़की की ओर देखकर) क्यों और मन्दिर को भ्रष्ट करेगी ?" अबोध और निस्सहाय बालिका इसका उस समय क्या उत्तर देती। चुप खड़ी हुई सिसक सिसक कर रो रही थी। जो कहता वह यही कहता "जा भाग यहाँ से! चमारी कहीं की!!"

पं० रा० प्र०—"आप लोगों ने यह कैसे जाना कि यह चमारी है ? कैसी सुन्दर लड़की है! पुजारीजी! धोती तो

ारी धोती से भी साफ़ है !! हाथ पांव सब ही चिट्टे हैं—
ं मैल मिट्टी का निशान नहीं। वैसेही कह दिया चमारी है ?"
पुजारी—आप इसके कौन हैं ? वाह ! क्या साफ़ धोती
र अच्छी सूरत से सुन्दरी बामनी होगई ? रोज़ तो यहाँ
ा में मां बेटी गोबर बीनने आती हैं। पं० रामप्रसाद ने
की की धोती से नाक और मुँह का खून पोंछ हाथ में
ी हुई चूड़ियों के टुकड़े एक एक करके निकाले और दो
र पैसे देकर और पुचकार कर घर को रवाना किया। पुजा-
ी बर्राते हुए मन्दिर की चौखट के भीतर आसन पर जा
। टकटकी लगाकर बैठी हुई रंडी के मुख की ओर
कने लगे। इस गड़बड़ में आधा घंटा लग गया। रईसों
बेताबी बढ़ने लगी। "हाँ बीबीजान ! शुरू होय कोई बढ़िया
ज़" की आवाज़ें गद्दी तकियों से उठने लगीं। महफ़िल
ारा गरम होने लगी।

दूसरा दृश्य

अम्मा—"क्यों बेटी क्या हुआ ? रो क्यों रही है ?"

बेटी—(सिसकते सिसकते) "पुजारी ने धक्का दे दिया,
ह में और नाक में चोट लग गई। सारी चूड़ी मौल गईं।
म्मा हाथ और मुँह में बड़ा दर्द हो रहा है।"

अम्मा—"हैं, बेटी ! तेरे तो दोनों दाँत भी टूट गये !!
कस दारीजार ने धक्का दे दिया। उसे को नापैद करदूं।"

बेटी—"अम्मा ! (हिचकी लेते हुए) मन्दिर में रंडी नाच
ही थी, मैं भी चौतरे पर जा खड़ी हुई, मोहनलाल पुजारी
देखते ही ऐसी ज़ोर से धक्का दिया कि मैं नीचे गिर पड़ी।
ाय अम्मा मुँह में बड़ा दर्द हो रहा है !!"

अम्मा—(बेटी के आँसू अपने दुपट्टे के ठोक से पोंछते हुए) "बेटी ! सबर कर उस मिटे की जान को। ले रोटी खा ले।"

बेटी—"अम्मा ! मेरे मुँह और हाथ से खून तो धो दे ! मसूढ़ों में बड़ा दर्द होय है !!" अम्मा मुँह धोती जाती थी और बर्राती जाती थी कि—"मरा आवे मुहल्ले में, देखो कैसी खबर लूँ ! मरे को पिराना के घर आते शर्म नहीं लगती !! मरा मिटा कहीं का !!! मरे की चाँद पै जूती पड़ती जायें हैं, तो भी दैयर रोज़ आन घुसै है। चँदपिटा बामन बनै है। मैंहीं रँड़िया दुखिया सताने को रह गई थी।" बड़ी देर में कन्या का दर्द कम हुआ। रोटी कठिनता से खाई गई। जैसे तैसे खाट पर पड़कर सो गई। प्रातःकाल होते ही सारे कामों से निबट साफ़ धोती पहन कर कन्या क़िताबें लेकर अछूत-कन्या-पाठशाला में पढ़ने चली गई। पंडितजी ने ज्योंही उसके आगे के दोनों दाँत टूटे देखे बोल उठे—

पं० जी—बसन्ती ! ये दाँत कैसे टूट गये ?

बसन्ती—(उदास होकर) रात मोहन पुजारी ने चौतरे पर से धक्का दे दिया। नीचे मुँह के बल गिर पड़ी।

पं० जी—"तू वहां पर क्यों गई थी ?" (एक पड़ोस की लड़की बोल उठी) "रात मन्दिर में रंडी नाच रही थी, पंडितजी बसन्ती वहां पर गई थी।"

पं० जी—क्यों बसन्ती ! नाच देखने गई थी ?

बसन्ती—(डरते डरते) हाँ गई तो थी।

पं० जी—हमने तो सब लड़कियों से मना कर दिया था कि—कभी कोई नाच, साँग (स्वांग) और रास वग़ैरह मत देखने जाया करो ?

बसन्ती डरती और लज्जित होती हुई चुप खड़ी रही।

पंडितजी ने पुनः उपदेश करना आरम्भ किया— "लड़कियो ! देखो एक वार फिर समझाये देता हूँ कि ये नाच देखने बहुत बुरे हैं। इनके देखने से बड़ा पाप होता है। बालक बिगड़ जाते हैं। मा बाप या कोई और भी कहे तो भी देखने के लिये मत जाओ। देखो पिराना की लड़की नाच देखते ही देखते कैसी ख़राब हो गई ! ख़बरदार !! जो अब आगे कोई लड़की नाच देखने गई तो बहुत पिटैगी !!! अच्छा हाथ उठाओ; कोई जायगी तो नहीं ?" सबने हाथ उठाकर न जाना स्वीकार किया।

तीसरा दृश्य

चमारों के मुहल्ले में रात को पकड़ो पकड़ो की आवाज़ आ रही है। कोई कहता है—"वह गया, वह भागा, आगे से घरना, गली के नुक्कड़ पर खड़े हो जाओ।" कोई लालटेन लिये फिर रहा है, किसी के हाथ में मिट्टी का चिराग़ है, तो कोई खाली रुई की वत्ती ही जलाये हुए हाथ में लिये खड़ा है।

थोड़ी देर वड़ा शोर रहा। अन्त को "चला गया, निकल गया, फिर साले को देखेंगे, सौ दिन चोर के एक दिन शाह का" कहते कहते सब एक पीपल के वृक्ष के नीचे इकट्ठे होकर बातें करने लगे—

एक—कई बार हाथ से निकल चुका है, साला भाग भाग जाता है !

दूसरा—मुहल्ले में चलकर ये तो देखो कि किसी का कुछ गया तो नहीं !!

तीसरा—अरे भाई ! चोर आया होता तो माल जाने की फिकर की जाती। वह तो कोई और ही है।

चौथा—कोई और कौन ? वही होगा मोहन। और कौन यहाँ आ सकता ?

पाँचवाँ—उस साले पिराना से नहीं कहा जाता; क्यों घर में घुसा लेता है ?

छठा—वह तो परसों से अकबरपुर गया है। घर पर है कहाँ ?

सातवाँ—अब नहीं है तो क्या; उस साले को क्या ख़बर नहीं कि मैं किसकी कमाई खा रहा हूँ ? साले को पंचायत से तो निकाल ही दिया है, बिरादरी में साले का हुक़ा पानी बन्द करो। मोहन ! कभी हाथ आ गये तो चचा ही बनाकर उसे भी छोड़ूँगा सारा पुजारीपना ज़रा देर में निकाल दूँगा। अब के बच गये तो क्या ? इस प्रकार अपनी अपनी कहते सुनते, बर्राते झल्लाते अपने अपने घर जा सोये। प्रातःकाल होते ही कुछ बिरादरी के लोग मोहनिया के घर पर जा खड़े हुए और कहने लगे—"ये जूतियाँ किसकी हैं, पिराना तो अकबरपुर गया है ?"

मोहनिया—मैं क्या जानूं, कौन उत्ता डाल गया है ?

एक—हाँ, तू क्या जाने ! किसी के घर फालतू पड़ी हैं जूती, जो डालता फिरेगा ? तुम्हें ख़बर नहीं ये जूती किसकी हैं ?

मोहनिया—"हाँ हमें ख़बर नहीं ! हमने किसी दैयर का ठेका लिया है ?" उन आये हुओं में से एक ने आगे बढ़कर जूतियाँ उठा लीं, और लौट पौट कर देखकर कहा कि—"ये तो मेरे ही हाथ की बनाई हुई हैं; दसहरे पर मोहन पुजारी ने १॥) में ली थीं। (दूसरे को दिखाकर) देख रे ख़मनिया ये खुरी में जोड़ तूने ही तो लगाया था। मैं तो मनेही करता

था?" (खमनिया ने देखकर कहा) "हाँ हाँ याद आ गई; चचा! ये तुम्हारी ही बनाई हुई हैं। पुजारी तो मेरे सामने ही ले गया था। बल्कि चार आने अभी दिये भी नहीं हैं।"

मोहनिया ने हाथ नचा नचा कर सबको उल्टी सीधी सुनाना शुरू करीं और बर्राती हुई दराँती लेकर खेत की ओर को चल दी। बिरादरी के लोग जूते लिये हुए चल दिये और कहते जाते थे कि "चलो इन्हें थाने में दारोगाजी को दिखा आवें।"

चौथा दृश्य

मोहनिया खेत में दराँती से पूले काट रही है। बन्दूक़ लिये एक व्यक्ति सामने खड़े हैं। मोहनिया ने उसको देखकर हाथ रोक लिया और ज़रा सी मुस्करा दी।

व्यक्ति—कहो आज क्या शिकार खाओगी? खरगोश या चिड़िया?

मोहनिया—थानेदार साहब! हमें क्यों खिलाओगे! खानेवाली मुन्नीजान कैसी हैं? परसों बहुत खिला दिया जो आज खिलाओगे?

थानेदार साहब—क़सम ख़ुदा की तुम क्या मुन्नीजान से कम हो? वल्लाह परसों तीसरे पहर को एक हिरन हाथ लगा था। जिस वक़्त घर पर आया मालूम हुआ कि सेठजी के मन्दिर में नाच है; वहाँ का बुलावा है। वहाँ पर चला गया। तुम्हारा हिस्सा अब तक रक्खा है। चलो अब दे दूँ?

मोहनिया—(अँगूठा दिखाकर) मुस्कराई, और हाथ का इशारा एक तरफ़ करके पूले काटने लगी। थानेदार साहब ने उस तरफ़ को देखा तो कुछ आदमी खेत की ओर को आते

दिखाई दिये। थानेदार साहब ने अपनी बन्दूक़ कन्धे पर से उतारकर ज़मीन पर टेक ली और टकटकी लगाकर उस जमाअत की ओर देखने लगे। कुछ सोचकर जमाअत की ओर को स्वयं बढ़े और पेड़ के नीचे खड़े हो गये। इतने में जमाअत भी समीप आ गई और सबने "हजूर सलाम" की आवाज़ लगाई।

थानेदार साहब—तुम सब लोग कहाँ जा रहे हो ? मुहल्ले में खैर तो है ?

सबलोग—हजूर के पास ही आये हैं। थाने के सिपाही ने कहा हजूर शिकार खेलने अभी गये हैं सो झपटे चले आ रहे हैं। हजूर! रात मुहल्ले में बड़ी खलबली मची। कोई आदमी घुस आया था। चारों तरफ़ से घेरा, पर निकल गया। सवेरे (जूते दिखाकर) ये जूते मोहनिया के घर में पड़े मिले।

थानेदार साहब—(जूतों की ओर देखकर) कैसे पता चले ये जूते किसके हैं ? किसी की शुभे में रपट लिखवाओ, हम मोहनिया से पूछेंगे कि कौन आया था रात। मोहनिया किस की लड़की है ?

एक व्यक्ति—सरकार ! पिराना की लड़की है; सारे मुहल्ले को गन्दा कर रक्खा है !! रात दिन यही हाय हाय रहती है। जब तक उसे हजूर सज़ा नहीं देंगे तब तक ये खराबी दूर नहीं होगी। बहू बेटियाँ हम सब रखते हैं।

दूसरा—हजूर ये जूतियाँ पहचान भी ली गई हैं।

थानेदार—कहीं जूतियों की भी पहचान होती है—एक सी हज़ारों होती हैं ?

तीसरा—मेरे हाथ की बनाई हुई हैं। मोहन पुजारी मेरे घर पर आकर डेढ़ रुपये में मोल ले गया है।

थानेदार—"अच्छा जाओ रपट लिखाओ। दोपहर बाद आना। देखा जायगा।" सब सलाम करके रवाना हुए और थानेदार साहब कन्धे पर बन्दूक़ रखकर आगे बढ़े। एकबार मोहनिया से फिर चार आँखें हुईं।

थानेदार—(चारों तरफ़ देखकर) "लो बहुत बची बची फिरती थीं। अबकी आई हो चक्कर में। अबकी अगला पिछला सब हिसाब....................।"

थानेदार साहब कुछ और आगे कहने को थे कि एक खरगोश झाड़ी में से निकलकर सामने से भागा। थानेदार साहब बन्दूक़ छतियाए हुए उसके पीछे भागे।

पाँचवाँ दृश्य

थानेदार साहब थाने के एक कमरे में आराम कुरसी पर लेटे हैं। नौकर जूतों के तसमें खोल रहा है। थानेदार साहब सोच रहे हैं कि बेकार ही आज का सारा दिन गया। कुछ भी हाथ न लगा। जंगल में फिरते फिरते थक भी गये और एक हंडिया के लायक़ भी शिकार हाथ न आया! खैर ज़रा आँखें सिंक गईं। बस यही फ़ायदा हुआ। ओफ़ चमारों में और ये खूबसूरती! (सीधे बैठकर) "मुंशीजी!" आवाज़ आई—"जी हुज़ूर!" सवाल—"सुबह के वक़्त चमार लोग कुछ रपट लिखाने आये थे?" जवाब मिला—"जी हां" सवाल हुआ—"क्या रपट लिखाई।"

मुंशीजी—(रपट सुनाना) "आजरात के वक़्त चमर टोले में कोई ग़ैर शख़्स बुरी नीयत से दाख़िल हुआ। जाग हो गई। हम मुहल्ले के रहने वालों ने हरचन्द ही कोशिश की कि उस मशकूक शख़्स को पकड़ लें, लेकिन सारी कोशिशें बेकार

हुई। हम सब लोग अपने अपने मकानों में जा सोये। सुबह को एक जोड़ी जूता सुर्ख़ नड़ी का नालदार जोकि पूरे इंसान के पैर का मालूम होता है, मुसम्मात मोहनिया दुख़्तर पिराना के घरके सहन में मुसम्मा तेजा ने इत्तिफ़ाक़ से उस तरफ़ जाते हुए देखा। देखने से मालूम हुआ कि वह जूतों का जोड़ मुसम्मा मोहन पुजारी का है। ये जूता मुसम्मा ख़्याली चमार का बनाया हुआ है और वह उसको मुसम्मा मोहन पुजारी के हाथ फ़रोख़्त किया हुआ बताता है लिहाज़ा जूता थाने में दाख़िल किया जाता है। निशानी अँगूठा······और बाक़ायदा रपट दर्ज कराई जाती है।"

थानेदार—"अच्छा बुलाओ मोहन को!"

एक सिपाही मन्दिर में गया और मोहन पुजारी को बुला लाया।

थानेदार (मोहन को देखकर) "तुम रात कहाँ पर रहे?"

मोहन—हुज़ूर घर पर।

थानेदार—मोहनिया चमारी के घर पर?

मोहन—नहीं हुजूर! अपने घर पर रहा।

थानेदार—अच्छा, खड़ाऊँ क्यों पहन रहे हो क्या तुम्हारे पास जूता नहीं है?

मोहन—"है तो हुज़ूर! जल्दी में खड़ाऊँ ही पहन कर चला आया।"

थानेदार—"हूं; जल्दी में खड़ाऊँ पहनकर चला आया!" थानेदार साहब ने एक सिपाही को बुलाकर कुछ कान में कहा। फिर ऊँची आवाज़ से कहा—"रामसिंह! जाओ इसके घर से जूता ले आओ, बड़े थाने को इसको ले जाना है।"

मोहन ने कहा—हुजूर ! मैं खुद जाकर ले आता हूँ।

थानेदार साहब ने डपट कर कहा—"नहीं, तुम बैठो, अभी जूता आता है।" रामसिंह सिपाही ने १५ मिनट के अन्दर थानेदार के सामने हाज़िर होकर मोहन का जूता उसके सामने रख दिया।

थानेदार साहब ने कहा— "ये जूता तुम्हारा ही है ?" मोहन कुछ जवाब न देकर आगे बढ़कर जूता पहनने लगा। थानेदार ने कहा—"पहले मुँह से बोलो ये जूता तुम्हारा ही है ?" मोहन ने डरते डरते कहा—"हाँ हुजूर…… ।"

थानेदार साहब ने हुक्म दिया कि ले जाओ इस बदमाश को हवालात में।

दो सिपाहियों ने मोहन के दोनों हाथ पकड़ लिये। अब तो मोहन की आँखें खुलीं और रात की सारी करतूत याद आ गई। थोड़ी दूर सिपाहियों के साथ मोहन गया और कुछ धीरे से कान में कहा। उनमें से एक सिपाही ने लौटकर कुछ थानेदार से कहा। थानेदार साहब ने कहा—"अच्छा जाओ एक सिपाही इसके साथ और घर पर जाकर इसको कोट पहना लाओ।" मोहन एक सिपाही के साथ घर पर गया, और भीतर जाकर कोट पहनकर बाहर सिपाही के साथ थानेदार साहब के पास पुनः वापिस आया। थानेदार ने कहा—"अच्छा चलो भीतर कमरे में, बयान लिखाओ।" दोनों जने भीतर गये और बहुत जल्दी सिपाहियों ने देखा कि मोहन मुस्कराता हुआ अपने घर को जा रहा है। सिपाहियों ने निगाह ही निगाहों में एक दूसरे से बातें कीं।

छठा दृश्य

थानेदार साहब थाने में बैठे सोच रहे हैं—मोहन से तो..........लेकिन मोहनिया अभी बाक़ी है। उसको भी सज़ा मिलनी चाहिये।

थानेदार साहब ने आवाज़ दी—"नन्नेखाँ!" आवाज़ आई "जी हुजूर!!" थानेदार साहब—"लाओ तो उस बदज़ात मोहनिया को लिवाकर।" सिपाही बोला—"बहुत अच्छा हुजूर।" सिपाही मार्ग में सोचता जाता था—"अच्छा है ईद भी नज़दीक आ गई है, जाने मोहन के मामले में थानेदार साहब हम सिपाहियों को क्या........।" इतना सोच ही रहा था कि मोहनिया खेत को जाती नज़र पड़ी। सिपाही झपटा और मोहनिया का हाथ पकड़कर कहा—"चल तुझे थाने में दारोग़ाजी बुलाते हैं। सुसरी बदमाशी कराती हैं आप हम लोगों को परेशान करती हैं।" मोहनिया ने कुछ जवाब न देकर सिर्फ़ एक मीठी निगाह से नन्नेखाँ की ओर देख लिया। नन्नेखाँ ने हाथ छोड़ दिया और कहने लगा—"रात के सारे वाक़ये का दारोग़ाजी को पता चल गया है!" मोहनिया ने लापरवाही से कहा—"ऐसे जाने कितने पते चलते रहते हैं!!" यह कहते कहते थाने में दारोग़ाजी के पास आन खड़ी हुई।

थानेदार—क्यों री! तू ही है मोहनिया?

मोहनिया—हाँजी मैं ही हूँ मोहनिया।

थानेदार—रात के वक़्त तुम्हारे घर में या मुहल्ले में कोई आया था?

मोहनिया—मुहल्ले में रात दिन सैकड़ों आदमी आते हैं और जाते हैं।

थानेदार—आधी रात को आते जाते हैं ?

मोहनिया—सरकार से कह दीजिये कि आधी रात के वक़्त कानपुर स्टेशन पर रेल न ठहरा करे; अगर ठहरे भी तो सारे मुसाफ़िर दारोग़ाजी के पास थाने में रात भर आराम से सोया करें। (सिपाहियों में हँसी)

थानेदार—"और मोहन पुजारी तो तुम्हारे यहाँ...... ।"

मोहनिया—(बात काटकर) नहीं जनाब ! अपने साढ़ू के घर पर।

थानेदार—(रामसिंह सिपाही की ओर देखकर) क्यों भाई ! तुम्हारी ज़ुबान में साढ़ू किसको कहते हैं ?

रामसिंह—हुज़ूर साढ़ू कहते है 'हमज़ुल्फ़' को।

'हमज़ुल्फ़' शब्द सुनते ही थानेदार साहब को कल सुबह का शिकार याद आ गया। बदन में बिजली सी दौड़ गई। और फ़रमाने लगे कि—"तू औरत है वर्ना अभी हवालात में बन्द कर देता। अच्छा जाओ हम शाम को तुम्हारे मुहल्ले में तहक़ीक़ात करने आयेंगे।" मोहनिया ने मुस्करा कर कहा—"आप क्यों तकलीफ़ करें, मैं ख़ुद आकर इज़हार दे जाऊँ ?"

थानेदार साहब ने सिपाहियों की ओर देखकर कहा—"अजब शरीर औरत है ! (मोहनिया की तरफ़ देखकर) जाओ शाम को हाज़िर रहना।" मोहनिया यह कहते हुए चल दी कि—"मैं तो अभी हाज़िर थी, और खेत पर तो हर वक़्त हाज़िर रहती हूँ।" थानेदार साहब कुछ सोच समझकर चुप हो गये, और सिपाहियों से कहने लगे कि—"कौन इन बदमाश औरतों के मामले में पड़े; इनका तो रात दिन का यही क़िस्सा है !! ओ हो याद आई ! आज शाम को तो ईद के बन्दोबस्त के लिये साहब ने सब थानेदारों को बँगले पर

बुलाया है। वहाँ पर जाना है। रामसिंह कोई चमार मिले तो कह देना कि दारोगाजी अभी तहक़ीक़ात करने नहीं आयेंगे। जब आयेंगे तो तुमको इत्तिला करदी जायगी।"

सातवाँ दृश्य

इस साल वर्षा बहुत कम हुई। चारों ओर अकाल के चिह्न दिखाई देने लगे। प्रजा में हाहाकार मचने लगा। चारों ओर भूखों के मारे भिखारी इधर उधर भिक्षा माँगते घूमने लगे। इस अकाल का चमारों पर सबसे अधिक प्रभाव पड़ा। बसन्ती का पिता पहले ही मर चुका था। इस अकाल के समय ही इस बसन्ती की माँ भी स्वर्ग सिधार गई। अब बसन्ती अनाथा हो गई। पढ़ना भी छूट गया। बिरादरी के लोग स्वयं विपत्ति में थे; इसकी क्या सुध लेते! चमार के घर उत्पन्न होकर भी बसन्ती रूप लावण्य में किसी बड़ी जाति की बालिका से कम नहीं थी। आयु केवल १० वर्ष की थी। अनाथ बालिका इधर उधर घूम फिर कर उदर पूर्ण करने लगी। उसके आगे के टूटे हुए दो दाँत सदैव मन्दिर की घटना की याद दिलाते रहते थे। एक दिन दानों की तलाश में एक मुन्नीजान रंडी के दरवाज़े पर जा खड़ी हुई। रंडी ने उसको देखकर कहा—"तू किसकी लड़की है, तेरे माँ बाप नहीं हैं?"

बसन्ती—"नहीं जी! मेरे माँ बाप सब मर गये।"

रंडी—"तुझे कोई अपने पास रखकर रोटी कपड़ा दे तो रह जायेगी?"

बसन्ती—"हाँ जी, रह जाऊँगी।"

रंडी—"अच्छा आओ भीतर। देख कैसे आराम भुगतती है!"

वसन्ती—"पहले मुझे कुछ खाने को दे दो। भूख बड़ी लगी है।"

रंडी ने बरतन में से रोटी और तरकारी दी। वसन्ती ने पेट भर कर खाया, और ओक से पानी पीकर ठंडी साँस लिया। वसन्ती अब रंडी के घर पर पलने लगी। रंडी से कोई पूछता तो कह देती कि मेरी भानजी है, पछांह से आई है।

इस प्रकार वसन्ती को रंडी के घर रहते रहते दो वर्ष व्यतीत हो गये। नित्य उस्तादजी आते और बड़े परिश्रम से सब प्रकार के गाने सिखाते। सीखते सीखते वसन्ती २ वर्ष में ही गानविद्या में निपुण हो गई। जिस समय वह गाती, नीचे बज़ार में शौक़ीनों की भीड़ लग जाती। कोई बेताब होकर ऊपर कमरे में भी दाखिल हो जाते। अच्छे खाने और पहनने ने वसन्ती को कुछ और से और ही बना दिया। रूप लावण्य में तो कुछ पहले ही कमी नहीं थी; परन्तु ऐश आराम ने उसके रूप को द्विगुण कर दिया। अब तक वसन्ती यही जानती रही कि रंडी केवल गाना ही गाती हैं, और कभी कभी बाहर बरात इत्यादि में नाच आती हैं। परन्तु जब उसने रंगीले लोगों की रंगीली बातें सुनीं और रात को घर पर प्रायः मनुष्यों को रहते देखा, तो उसको कुछ आगे का पता चलने लगा। वह सोचा करती कि—"क्या इन लोगों के अपने घर नहीं हैं जो यहां सोया करते हैं? दिन भर तो हमारे यहां नहीं रहते, परन्तु रात को आ जाते हैं!! दिन भर मुन्नीजान साथ रहती हैं, पर रात को अलग कमरे में सोती हैं!!! मेरे धोरे तो फ़क़त यह बुढ़िया नायका ही सोती है। ये लोग न जाने मेरी तरफ़ को इशारा करके क्या बातें किया करते हैं! मुन्नीजान भी सिर हिला देती हैं!!

क्या मेरे टूटे हुए आगे के दो दाँतों की हँसी तो नहीं करते हैं!!! अच्छा कल केवलराम से दोनों दाँत बनवा लूँगी, फिर तो नहीं इशारा करेंगे। यह सोचते सोचते वसन्ती सो गई। सुवह होते ही कमरे के नीचे केवलराम दाँत वनानेवाले की दूकान पर गई और दोनों दाँतों को वना देने को इच्छा प्रगट की। केवलराम ने दिन भर दोनों दाँत वनाने में परिश्रम किया और दूसरे दिन सोने की कमानी से वसन्ती के दाँत चढ़ा दिये। वसन्ती ने दूकान पर से शीशा उठा कर देखा तो दाँत बहुत सुन्दर प्रतीत हुए। दोनों दाँतों में सोने की मेखें जड़ी हुई देख कर वसन्ती को अपने रूप पर अत्यन्त गर्व होने लगा। शीशा दूकान पर रख कर पूछने लगी कि आइये ऊपर, मुन्नीजान से इनके दाम दिला दूँ।

केवलराम ने एक विशेष प्रकार की दृष्टि से वसन्ती की ओर देखते हुए कहा—"जल्दी क्या है, उनसे क्या कभी तुमसे ही वसूल कर लेंगे" वसन्ती इस भाव को कुछ नहीं समझी। जीभ को दाँतों पर फेरती हुई कमरे पर चली गई और मुन्नीजान से बोली—"देखो हमारे दाँत कैसे खूबसूरत लगे हैं?" मुन्नीजान देख कर बोली—"किसने लगाये?" वसन्ती ने कहा—"नीचे केवलराम ने।" मुन्नीजान ने पूछा—"कुछ ठहरा भी लिया है?" वसन्ती ने कहा—"ठहराया तो कुछ नहीं। मैंने उनसे कहा कि चलो ऊपर दाम दिला दूँ, उन्होंने कहा 'जल्दी क्या है कभी तुमसे ही वसूल कर लेंगे'।" मुन्नीजान ने यह सुनकर होठ बिचका दिये और वसन्ती की ओर को अँगूठा दिखाकर हिला दिया। अबोध वसन्ती इस आशय को भी कुछ न समझी और हँस दी। ज्योंही वसन्ती हँसी, दाँतों में ज़ड़ी सोने की मेखें और सोने की कमानी ने

मुन्नीजान को एक भावी आशा के तरंगित समुद्र के किनारे पर ले जाकर खड़ा कर दिया।

इतने में उस्तादजी आ गये और गाना सिखाने लगे। ज्योंही मुख खोल कर वसन्ती ने तान भरी, दोनों दाँतों को देखकर आँखें ऐसे झपक गईं जैसे बिजली के सामने आँखें झपक जाती हैं।

उस्तादजी ने दाँतों की आभा को देखकर पूछा कि ये तुम्हारे अगले दाँत कैसे टूट गये? वसन्ती ने अपनी ज़ात बताना उचित नहीं समझा और कुछ लौट फेर कर बताया कि मन्दिर के चबूतरे पर से खलते खेलते बचपन में गिर गई थी, वहां टूट गये थे।

वसन्ती के नाच और गाने की धूम सारे शहर और गिर्दनवाह में फैल गई। हर एक महफ़िल में बुलाई जाने लगी। नई नई फ़रमायशी चीज़ें गवाई जाने लगीं। जन्माष्टमी के दिन नज़दीक आने लगे। रईसों ने मन्दिर के स्वामी ला० नरोत्तमचन्द से वसन्ती के बुलाने के तक़ाज़े करने शुरू किये।

लाला नरोत्तमचन्द ने वसन्ती को नचाने का वायदा सब से कर लिया। सेठ लोग जन्माष्टमी की घड़ियां गिनने लगे। उनके भाग्य (?) से जन्माष्टमी आ गई। मुन्नीजान निमन्त्रण पाकर अपनी वसन्ती को लेकर मन्दिर में पूर्ववत् आ विराजी। समय से पूर्व ही मन्दिर के सहन में तिल धरने की जगह नहीं रही। मसनदें, गद्दियां, कुरसियां सब ही भरी नज़र आती थीं। वसन्ती ने बैठे ही बैठे उस मनहूस चबूतरे को देखा जिस पर से धक्का खाकर अगले दो दाँत तुड़ा बैठी थी। उस मोहनलाल पुजारी को भी मन्दिर की चौखट के भीतर ठाकुरजी के सामने बताशे चरणामृत और तुलसीदल लिये

बैठे देखा। पुरानी घटना याद आ गई। मनमें सोचने लगी—"मुझ में अब क्या तबदीली हो गई जो मन्दिर के चबूतरे से और बहुत आगे ठाकुरजी के समीप बैठी हूँ?" स्वयं ही उत्तर अपने मन में दे लेती कि—"जब हिन्दुनी थी, रामकृष्ण को मानती थी, रोज़ नहाती थी, गंगा यमुना को मानती थी, गौरक्षक थी और अबोध बालिका थी। अब मुसलमानी हूँ, रंडी की लड़की कहाती हूँ, सब कुछ खाती पीती हूँ, आगे न जाने कैसा जीवन बनेगा, राम और कृष्ण देवता छूट गये हैं, गंगा यमुना छूट गई हैं, प्यारा हिन्दू धर्म इस अकाल ने छुड़वा दिया है; रंडी के घर अपवित्र जीवन बिताना पड़ेगा; बस यही जब में और अब में अन्तर है।" बसन्ती इस ही प्रश्नोत्तर में मग्न थी कि उस्तादजी ने सारंगी का गज़ सारंगी पर फेरना आरम्भ किया। तबलची ने हथौड़ी से तबले को मिलाना आरम्भ किया। ज़रा देर में साज़ मिल गया। आज बसन्ती यूरोपियन पोशाक में है। ज़र्रीनगौन पहने है, सर के बाल खुले हुए पीछे कमर पर लटक रहे हैं, लैवण्डर की सुगन्ध से महफ़िल महक रही है, पैरों में ब्राउन रंग के मोज़े जाँघों तक पहन रही है, कमर में सुनहरी चमकती हुई पेटी कस रही है, यूरोपियन ढंग के घुँघरू पैर में बँधे हुए हैं, मखमली कारचोबी काम के पायताबे मोज़ों के ऊपर पहने है। इस नये फ़ैशन को देखकर महफ़िली लोगों की दशा उनके हृदय ही जानते थे। कुछ रईसों ने सलाह मशवरा करके अपने अपने नौकरों को मकान पर भेजा। जल्दी वापिस आने की ताकीद की। बसन्ती मुज़तरिब दिलों को हाथ में लिये हुए खड़ी हुई; रईसों के चेहरों पर मुस्कराहट की झलक दौड़ गई। उस्तादजी ने सारंगी में

कहरवे की तान भर ली, ठेका तदनुकूल बजने लगा। बसन्ती ने पैरों के घुँघरू हिलाये और अपने नाच से सारी महफ़िल को मोहित कर लिया। पहली कहरवे की गत के ऊपर नाच-कर बसन्ती ने रूमाल से मुँह और होठ पोंछते हुए उस्तादजी की ओर देखकर 'आगे क्या गावें' का संकेत चाहा। उस्तादजी किसी 'देश' की चीज़ के सुर सारंगी में भरना चाहते थे कि बड़े स्थूलकाय सेठ ने करकश शब्दों में कहा—"मुन्नी-जान! हमने सुना है कि बसन्तीजान 'चारबेत' बड़ा अच्छा गाती हैं; ज़रा वही सुनवाइयो" अभी सेठजी भले प्रकार अपनी फ़रमायश समाप्त भी नहीं करने पाये थे कि उस्तादजी ने 'चारबेत' के सुर सारंगी में भर लिये। बसन्ती ने सुरों को सुना और ठुमका लगाती हुई, ठाकुरजी की ओर को बढ़ती हुई इस प्रकार मधुर स्वर से चारबेत आरम्भ की—

"जब तख़्ते नबव्वत पर महबूबे ख़ुदा बैठे,
बुत अपनी ख़ुदाई से सब होके जुदा बैठे॥ १॥ जब०
आतिशकदा बुझे सब, बुत औंधे मुँह गिरे तब,
ख़िलक़त कि शफ़ाअत से भी हाथ उठा बैठे॥ २॥ जब०
जुन्नार और क़श्क़े जिस्मों से उड़े सबके,
बुतख़ाने में वहदत का सब नारा लगा बैठे॥ ३॥ जब०
काफ़िर बने मुसलमाँ पढ़कर नबी का कलमा,
दोज़ख़ से निकल घर सब जन्नत में बना बैठे॥ ४॥ जब०
वीराँ हुए बुतख़ाने, मुशरिक लगे शरमाने,
माबूदे हक़ीक़ी पर ईमान जमा बैठे॥ ५॥ जब०"

रईसों के सिर घूमने लगे। वाह वाह के नारे बुलन्द होने लगे। नौकर घरों से वापिस आये और बसन्ती पर रूमाल और दुशाले बरसने लगे। बसन्ती को मन ही मन में नई

और पुरानी ज़िन्दगी के मिलान का एक बार फिर अवसर मिला।

महफ़िल में पुजारीजी से लेकर ला० नरोत्तमदास तक कोई सोचनेवाला नहीं था कि—"ये मुसलमानी रंडी हमारा ही धन लेकर, हमसे ही परवरिश पाकर, हमारे ही मन्दिर में, हमारे ही देवताओं के सामने, हमारी ही किस प्रकार निन्दा करती हुई अपने इस्लामी मत का प्रचार कर रही है!!!"

किसी की आँखों में एक भी आँसू ऐसा न था जो हिन्दुओं की इस उल्टी मति पर बहता! हिन्दूपने का असली अर्थ यहां पर चरितार्थ हो रहा था!! श्रृङ्गार रस हिन्दूजाति को डुबाने के लिये पूर्ण स्वरूप से उमड़ रहा था!!!

रईस लोग बसन्ती को ऊपर नीचे से ताड़ रहे थे। कभी आशा और कभी निराशा के समुद्र में गोते खाते थे। इस प्रकार डूबते उछलते हुए सेठ साहूकार, रईस हुक्काम अपनी अपनी सवारियों पर सवार होकर विचार-तरंगों से थपेड़े खाते हुए अपने अपने घरों में ठिकाने से जा लगे। थोड़े से भक्त (?) शेष रह गये। साजिन्दे अपने साज समेटने और बाँधने लगे। कुछ भक्तों ने चुल्लू बना कर पुजारीजी से चरणामृत लेना आरम्भ किया। बसन्ती ने जब यह दृश्य देखा, उसके पुराने हिन्दू-संस्कार उछल आये। बिना कुछ सोचे समझे हाथ का चुल्लू बनाये चरणामृत के लिये पुजारीजी की ओर को बढ़ी चली गई। पुजारीजी की खुशी का वारापार नहीं रहा! पंचपात्र में से चरणामृत की चमची भर के बसन्ती के चुल्लू में छोड़ते हुए—"अकालमृत्युहरणम्" पढ़ना चाहते थे कि बसन्ती को एकाएक किसी कारण से कुछ हँसी सी आ गई। बसन्ती का मुँह क्या खुला मानों

पुजारीजी के लिये स्वर्गद्वार खुल गया !! हाथ रोक कर पूछने लगे—"वसन्तीजान ! क्या मुँह में अगले दाँत सोने की कमानी से जड़वाये हैं ? अभी तो बच्ची हो, नये दाँत जड़वाने की क्या ज़रूरत पड़ गई ?" वसन्ती ने कहा—"महाराज ! ये आप ही की मेहरबानी का फल है। न आप चबूतरे पर से मुझे धक्का देते और न मेरे ये अगले दो दाँत टूटते और न नये जड़वाने की ज़रूरत पड़ती।" पुजारी ने बड़े अचम्भे से कहा—"मैंने कब तुमको चबूतरे पर से धक्का दिया ?" वसन्ती ने (चुल्लू का चरणामृत पीकर) कहा—"जब चमारी थी, दो तीन साल हुए यही मुन्नीजान यहाँ पर नाच रही थीं, मैं भी कम्बख़्ती की मारी नाच देखने के लिये चबूतरे पर चढ़ गई थी।" पुजारीजी ने चरणामृत देते हुए हाथ रोक कर कुछ सोचा; पुरानी बात याद आई और उस समय की सूरत से अब की सूरत को मन ही मन मिलाने लगे। बहुत कुछ समता पाई और लज्जित होकर अपनी नीचता को समझ कर अपने को धिक्कारने लगे। मन में कहने लगे कि—"मुझे क्या ख़बर थी कि जिसको मैंने धक्का दिया था, उस ही के चरण इस मन्दिर में 'वसन्तीजान' बन कर पड़ेंगे !!" (प्रत्यक्ष में) "वसन्तीजान ! कसूर माफ़ करो, अब जो चाहो सो उस कसूर की सजा दे लो। हम तो आप के तावेदार लोग हैं" वसन्ती कुछ जवाब न देकर, पेटी के बटुए में से १) चौखट पर रख कर वसन्ती उठने लगी। पुजारीजी ने रुपया उठा लिया और यह कहते हुए उसकी पेटी में उरस दिया कि—"तुम्हारी तो ....."वसन्ती ने बात काट कर कहा—"ख़ैर मैं चमारियों के मन्दिर में आने का तरीक़ा जान गई—पहले मुसलमानी बनें और फिर रंडी बनें

तब मन्दिर में ठाकुरजी के पास तक आने की हक़दार हो सकती हैं ! लेकिन तअज्जुब तो यह है कि मोहनिया विना ......।" यह कह ही रही थी कि मुन्नीजान ने आवाज़ दी—"चल, हो चुके बस ठाकुर के दर्सन । मोहनिया का नाम सुन कर पुजारी अत्यन्त लज्जित होकर वसन्ती की पीठ को ताकता ही रह गया । बसन्ती चल दी ।

आठवाँ दृश्य

क़ानपुर के रेल बाज़ार की समाज का नगर-कीर्त्तन बड़ी धूमधाम से हो रहा है । कई भजन-मण्डालियाँ और कई उपदेशक नगर-कीर्त्तन में सम्मिलित हैं । नगर-कीर्त्तन नगर के भिन्न भिन्न बाज़ारों में से होता हुआ चौक बाज़ार में पहुँचा । नीचे लाला लोगों की दूकानें हैं और ऊपर व्यभिचारिणी रंडियों के वालेखाने हैं । जिस समय भजन-मण्डलियों ने भजन गाने आरम्भ किये बालाखानों पर की रंडियाँ अपने अपने छज्जों पर आकर भजन सुनने लगीं । ठा० कुमरपालसिंह ने इस प्रकार भजन आरम्भ किया—

"क़ौम की दुख़्तर सभी और हिन्द की ये जान हैं ।
वदसुलूकी से वनी अब नन्नी मुन्नी जान हैं ॥ १ ॥
हिन्द के मादर पिदर की गोद में खेलीं कभी ।
बेचतीं असमत खड़ी कैसी बनी नादान हैं ॥ २ ॥
छू न सकता था बदन को इनके कोई भी कभी ।
क़ीमतें इनकी रहीं बस चन्द छ्यालिस पान हैं ॥ ३ ॥
सेज थी प्यारे पती की.या धधकती आग थी ।
ऐ मेरी बहनो ! कहाँ वह वान और वह आन हैं ? ॥ ४ ॥

अर्ज़ मेरी है यही बस हो चुका सो हो चुका।
तर्क करदो वह सभी जो फ़ितनए शैतान हैं॥ ५॥
दर खुला शुद्धी का सबके वास्ते है ऐ शरर!
दावतें दीं के लिये आये, न हम मेहमान हैं॥ ६॥"

जहां और तवायफ़ों ने इस ग़ज़ल को सुना वहां बसन्ती ने भी बड़े ग़ौर से इसको सुना। बसन्ती की तबीयत इस ग़ज़ल को सुनकर डाँवाडोल हो रही थी कि एक उपदेशक ने खड़े होकर इस प्रकार उपदेश देना आरम्भ किया—"भाई साहबान्! ये जो कुछ बालेखानों पर खड़ी हुई दीख पड़ती हैं, कहीं आकाश से नहीं टपकी हैं, ज़मीन फोड़कर नहीं उपजी हैं; ये सब हमारे ही घर की बहू बेटियाँ हैं। कोई नाममात्र की विधवा होने से, कोई सास ननद जिठानी के तानों से, कोई बूढ़े के संग ब्याह देने से, कोई बच्चे के संग ब्याह देने से और कोई अकाल में मां-बाप के मर जाने से और बिरादरी वालों के परवरिश न करने से मजबूरन् वेश्या बन गई हैं। मनुष्य जब पाप में फँस जाता है तो उसको वह पाप पाप प्रतीत नहीं होता। आर्य-समाज इन बहन बेटियों से प्रार्थना करता है कि इस कुकर्म को छोड़कर अच्छी खासी गृहस्थिनी बन जायें। देखो इनमें बहुत सी अभी ऐसी हैं जिनको अभी व्यभिचार का दोष नहीं लगा है—पवित्र हैं। वे चाहें तो आर्यसमाज उनका ठीक ठीक प्रबन्ध करके किसी सज्जन हिन्दू अथवा आर्यसमाजी से विवाह कर सकता है। हमारे यहां पर शुद्धि का द्वार खुला है हम जब जन्म की मुसलमानी को शुद्ध करके विवाह लेते हैं तो उनका तो क्या कहना जो हिन्दुनी से मुसलमानी हो गई हैं। और जिनको इस पापकर्म में फँसे बहुत दिन हो गये वे भी पवित्र हो सकती हैं। आर्य-

समाज तो गंगा की धारा है । सारे ही गन्दे नाले इसमें मिल कर पवित्र गंगाजल बन जाते हैं। इसलिये क़ौम की बहन बेटियो! हमको लज्जा आती है कि जिन को हम बहन बेटियां कहें और वे व्यभिचार कराकर पाप का जीवन व्यतीत करें। क्या तुम हमको वह दिन दिखाओगी जब हम कह सकें कि हमारे देश, हमारी जाति की बहन बेटियां सीता और सावित्री के समान हैं ? आओ आर्यसमाज आपकी हर प्रकार से सहायता करने को तैयार है। शुद्ध होओ और पवित्र गृहस्थिनी बनो।"

इतने में सीटी बजी और उपदेशकजी की गाड़ी आगे को बढ़ गई। इस उपदेश को सुनते समय बसन्ती की विचित्र दशा थी—कभी लज्जा, कभी शोक, कभी आश्चर्य और कभी भय से उसके चेहरे की रंगत बदलती थी। दो वाक्यों ने उस पर विशेष प्रभाव डाला—एक तो यह कि 'अकाल में मां बाप के मर जाने और बिरादरीवालों के परवरिश न करने से' और दूसरा यह कि—'जिनको अभी व्यभिचार का दोष नहीं लगा है।' ये दोनों अवस्थायें बसन्ती पर गुज़र चुकी हैं। अकाल पड़ने से ही उसको दर दर भीख माँगनी पड़ी और विवश होकर मुन्नीजान के घर रही। और अभी तक व्यभिचार-दोष से दूषिता भी नहीं थी।

आज बसन्ती को सब से पहिले विदित हुआ कि मैं शुद्ध होकर पुनः हिन्दुनी बन सकती हूँ। अब यह बालिका—निर्दोष बालिका तरह तरह के मन में संकल्प विकल्प करने लगी। आगामी जीवन के पापमय प्रोग्राम के कुपरिणाम को सोचने लगी। परमात्मा से प्रार्थना करने लगी कि आनेवाले भयानक जीवन के पापमय कृत्य से मेरा उद्धार करो। किसी से कुछ न कहकर चुपचाप इस उपाय के सोचने में लगी कि किसी

प्रकार आर्यों से अपनी सारी व्यथा कहूँ । रंगीले छबीलों की सूरतों से घृणा उत्पन्न होने लगी । संगिनी साथिनी राक्षसी दीखने लगीं ।

सन्ध्या का समय है, शरशैय्याघाट पर कुछ आर्य-समाजी सन्ध्या कर रहे हैं । बसन्ती भी कुछ अपनी साथिनियों के संग हवाखोरी गंगा के रेते में कर रही है । एक नाव पर बैठकर आर्य-सामाजी इन बसन्ती आदि को देखकर परस्पर कहने लगे कि—"देखो ये देश और क़ौम की बच्चियां हैं; हिन्दुओं को इनकी कुछ भी फ़िकर नहीं ! यदि ये गृहस्थिनी बन जायें तो हिन्दू-जाति के माथे से बड़ा भारी कलङ्क दूर हो जाय ।"

बसन्ती समीप ही बैठी हुई गंगाजल से हाथ मुँह धो रही थी । ये शब्द उसके कानों में पड़े । एक साथिन से बोली कि "करीमन् भूख लगी है, ये रुपया लो बाहर से कुछ मीठा और नमकीन ले आओ ।" दो जनी रुपया लेकर चल दीं । एक शेष रह गई । बसन्ती ने उससे भी कहा—"अरे पानों को कहने की तो याद ही नहीं रही । जाओ बशीरन् कह दो कि इस डब्बी में पान भी भरवाती लायें ।" जब बसन्ती ने सबको अपने पास से टाल दिया, तब उन आर्यों से धीरे धीरे बहुत शीघ्रता से अपनी व्यथा और विचार सुना दिये । आर्यों ने पूछा कि—"क्या तुम हमारे साथ चलना चाहती हो ?" बसन्ती ने "हां" में उत्तर दिया । आर्यों ने हाथ का इशारा किया । बसन्ती उनके पीछे हो ली ।

नवाँ दृश्य

तेज़ लैंप की रोशनी में अपने सजे हुए कमरे में मुन्नी-जान गाल पर हाथ रक्खे हुए कुछ सोच रही है—वसन्ती नें तो कभी आजतक इतनी देर लगाई नहीं। नमाज़ से पहले ही आजाया करती थी। आज तो बहुत अँधेरा हो गया ! न जाने गंगा के किनारे पर क्या करती रही !! आज तो बशीरन् नज़ीरन् और अमीरन् भी साथ गई हैं !!! क्या कहीं तीनों ही खेल में लग गईं ! आवें आज, कैसा इनका खेल निकालती हूँ !" यह सोच ही रही थी कि उसको ज़ीने पर धम धम की आवाज़ सुनाई पड़ी। मुन्नी ने समझा कि वसन्ती अपनी साथिनियों के संग आ गई। परन्तु जब उनके साथ वसन्ती को नहीं देखा तो बोल उठी कि—"और वसन्ती कहां रही ?" सबने कहना आरम्भ किया—"उसही को ढूँढ़ते ढूँढ़ते तो इतना अँधेरा हो गया ! हम को तो उसने गंगा के किनारे से मिठाई और पान लेने भेज दिया; जब हम सब चीज़ें लेकर आईं तो उसको वहां बहुतेरा ढूँढ़ा, पर कहीं पता नहीं लगा !!"

मुन्नी—तुम सबने उसको अकेली छोड़ दिया ?

एक—हमें क्या खबर थी कि कहीं गायब हो जायगी।

दूसरी—हमारे सामने तो गंगा के किनारे पानी उछाल ही रही थी।

मुन्नी—क्या उसने तुम्हारे सामने किसी से कुछ बातें की थीं ?

तीसरी—किसी से भी नहीं। हम आपस में ही बात चीत कर रही थीं।

मुन्नी—जब तुम सब चली गई थीं तो वहां उसके नज़दीक कोई था ?

सब—पाँच छै मर्दुए गंगा के किनारे पर आँखें मीचे बैठे थे।

सब में से एक—दो तीन हिन्दू नाव पर भी तो बैठे थे जो कह रहे थे कि—"देखो कैसे किसी अच्छे घर की लड़कियाँ हैं, पर सब रंडी पेशा करेंगी।"

मुन्नी—तो क्या उन्होंने कुछ बसन्ती से बात चीत या कुछ इशारा किया था ?

सब—कुछ भी नहीं। हमतो सब खड़ी ही थीं। उनमें से दो तीन तो हमारे सामने ही 'नवस्ते नवस्ते' कहकर चले गये पाँच छै बैठे रहे।

'नवस्ते' का नाम सुनते ही मुन्नी का माथा ठनका। समझ गई कि नवस्ते वाले आर्य थे; जुरूर बसन्ती को समझा बुझाकर ले गये। खुदा ग़ारत करे इन आर्या वालों को ! यह सोच ही रही थी कि बशीरन्, नज़ीरन् और अमीरन् तो अपने अपने पड़ोस के कमरों में चली गईं और लड्डनखाँ कमरे में दाखिल हुए।

लड्डनखाँ—क्यों, आज क्या कोई गहरा........।

मुन्नी—(झुँझलाकर) वाह हमेशा मज़ाक ही मज़ाक सूझता है। यहां आप ग़म में बैठी हूँ !

लड्डनखाँ—ग़म कैसा ? ज़्यादातर शौहर के मरने का ग़म होता है सो तुम्हारे तो हज़ारों शौहर हैं; कहां तक मरेंगे। एक मरेगा चार पैदा होंगे !!

मुन्नी—(बहुत कड़ी निगाह से देखकर) अपने पाजीपने से बाज़ नहीं आयेगा ? आज कल के मिलने वालों से ग़म में

दूसरों की हँसी ही उड़ाना आती है। बेहूदे नालायक़ !! वसन्ती को मालूम होता है कि आर्या वाले उड़ाकर ले गये।

लड्डनखाँ—आर्या वाले उड़ाकर ले गये! कहां से? क्या घर पर से ही ले गये?

मुन्नी—घर पर से नहीं, अभी शाम को गंगा के किनारे से। पड़ोस की छोकरियों ने उसे अकेली छोड़ दिया, बस आर्यों के चुंगल में जा फँसी। बड़े शोरेपुश्त कहाते हो; बनियों को धमकाने के ही लिये हो? जब जानूँ किसी तरह वसन्ती को उनके पंजों से निकाल कर लाओ?

लड्डनखाँ—बीबीजान! वहां भेजकर क्या मरवाओगी? (चाँद दिखाकर) अभी तक खोपड़ी के बाल नहीं जमे हैं। अब तो वह बनिये जो आर्या बन गये हैं, पठानों की भी असल नहीं समझते। अब के देखा नहीं, मंडी में कैसे कैसे हाथ उन्होंने दिखाये!! क़सम खुदा की हमारी तो सारी हेकड़ी इनके सामने जाती रही!!!

अच्छा सलाम! आये तो नमाज़ छुड़ाने रोज़े गले पड़े!! ज़रा दिल को फ़रहत देने आये थे सो बीबीजी ने ये शगूफ़ा सुना दिया!!!

लड्डनखाँ तो बातें बनाकर चल दिये। मुन्नीजान अकेली फिर गाल पर हाथ रखकर सोचने लगी—"कल ईद है, उस्तादजी तो आज रात को आवेंगे नहीं, खालाजी बीमार पड़ी हैं, वसन्ती न जाने कहाँ होगी, आज दिन में कोई......

.... 'शायद अब...

अच्छा चलो लेटूँ।"

दसवाँ दृश्य

एक रबरटायर ताँगे में दो आर्य-समाजी और एक बसन्ती रेलबाज़ार की ओर जा रहे हैं। रेलबाज़ार थाने के दारोग़ा मन्दिर में बसन्ती का नाच देख चुके थे। आर्यों को तो क़ानून (?) निगाह में रखते ही हैं। ताड़ गये कि बसन्ती को आर्यों वाले किसी तरह बहका लाये! सोचने लगे कि—"अव्वल तो बसन्ती मुसलमान रंडी के घर रहने से मुसलमान है, दूसरे नाबालिग़ है। ये कैसे हो सकता है कि आर्य-समाजी इसको हज़म कर जायें ?"

दारोग़ाजी ने आवाज़ दी—"असग़र! असग़र!!" आवाज़ आई जी हुज़ूर!!! "ले ये कुरानशरीफ़ खूँटी पर टाँग आ और मेरे स्लीपर ले आ। बेंत भी लेते आना।" दारोग़ाजी कुछ सोचते विचारते जा ही रहे थे कि लड्डनखाँ एक मोटा डंडा हाथ में थामे हुए सामने आया और कहा—"हुज़ूर सलाम !"

दारोग़ाजी—कहो अब तो कोई सिपाही रात को नहीं दरवाज़े पर आवाज़ देता है ?

लड्डनखाँ—जब हुज़ूर की मेहरबानी है तो सारी मुश्किलें आसान हैं।

दारोग़ाजी—इस वक़्त रात के दस बजे कहाँ से आते हो ?

लड्डनखाँ—हुज़ूर से क्या छिपाना; मुन्नीजान के कमरे पर से आ रहा हूँ।

दारोग़ाजी—अभी ये हरकतें छोड़ी नहीं ?

लड्डनखाँ—जब हुज़ूर सर पर हैं तो ....।

दारोग़ाजी—(बात काटकर) मुन्नीजान को अब तो कोई तुम्हारा साथी परेशान नहीं करता है ?

लड्डनखाँ—हुज़ूर वह तो विना परेशान किये ही परेशान हो रही है।

दारोग़ाजी—क्यों कोई नई आफ़त आ गई क्या? मैंने तो अच्छी तरह से........।

लड्डनखाँ—(बीचही में) हुज़ूर उसकी भान्जी बसन्ती आज शाम से ग़ायब है। मैं तो वहीं से आ रहा हूँ; वह कहती थी गंगा के किनारे से आर्या वाले उड़ा ले गये।

दारोग़ाजी—क्या बसन्ती बच्ची है जो गोदी में भर के ले गये?

लड्डनखाँ—हुज़ूर, बच्ची तो नहीं है, है तो १३, १४ साल की; लेकिन फिर भी तो नाबालिग़ है। हुज़ूर के अहद में और यह अन्धेर!!

दारोग़ाजी—उसको रपट लिखाना चाहिये। हाकिम परगना के यहां इस्तग़ासा दायर करना चाहिये।

लड्डनखां—विना हुज़ूर की इम्दाद के एक औरत क्या कर सकती है?

दारोग़ाजी—(मुस्करा कर) तुम तो औरत नहीं हो?

लड्डनखाँ—हुज़ूर अँगरेज़ी सल्तनत ने सबको नामर्द बना दिया है। जो कर गुज़रते हैं वह भी हुज़ूर की इनायत से। हुज़ूर दीन का मामला है, इतना तो मुझे ख़्याल है।

दारोग़ाजी—(लंबी सांस लेकर) ख़ैर, देखा जायगा। जाओ घर ही सीधे जाना। कहीं कोई नया फ़ितना बरपा मत करना।

ग्यारहवाँ दृश्य

मुन्नीजान चन्द अपने मिलनेवालों के सहित मिस्टर सुभान वकील के कमरे में बैठी हैं। वकील साहब हुक़्क़ा पीते पीते हालात दरियाफ़्त कर रहे हैं। मुन्नीजान सारा हाल बयान कर रही हैं। सब हालात सुनकर वकील साहब ने कहा कि—"इस वाक़ये की रिपोर्ट थाने में कर दी गई है?" मुन्नीजान ने कहा—"हां जनाब अगले दिन सुबह ही कर दी गई।"

वकील साहब ने मुंशी रहमतअली मुहर्रिर को आवाज़ दी और कहा कि—"इनके बयान के बमूजिब अर्ज़ीदावा मुरत्तिब करो।"

थोड़ी देर में ही मुंशी रहमतअली अर्ज़ीदावा मुरत्तिब कर लाये और इस तरह वकील साहब को सुनाना शुरू किया—

"बइजलास जनाब खानबहादुर अलीमुस्तफ़ाखाँ साहब डिपटी कलैक्टर कानपुर।"

ग़रीबपरवर सलामत!

जनाबेआली गुज़ारिश यह है कि फ़िदवी ने ३ साल के क़रीब हुए एक १० साल उम्र की लड़की को, जो मेरी रिश्ते में भानजी लगती थी, अपने पास बग़रज़ परवरिश रख लिया था। मैंने उसको बतौर दुख़्तर के परवरिश करके इल्मेमूसी की तालीम दी थी। चूँकि मेरी हमशीरा कई साल हुए फ़ौत हो गई, लिहाज़ा उसकी जायज़ वारिस फ़िदवी ही थी। बतारीख़ ८ सितम्बर सन् १९२० ई० को शाम के वक़्त वह एकाएक ग़ायब हो गई। मोतबिर ज़राया से पता चला है कि इस वक़्त दुख़्तर मज़कूरा जिसका नाम बसन्ती है, आर्यों के क़ब्ज़े में है। रिपोर्ट इस वाक़ए की थाना रेलबाज़ार में

दर्ज वाक़ायदा ८ सितंबर सन् १६२० ई० को करा दी गई है। लिहाज़ा उम्मीदवार हूँ कि मेरी दुख़्तर मज़कूरा आयों से फ़िद्वी को दिला दी जाय।"

फ़िद्वी मुन्नीजान क़ौम मुसलमान पेशा तवायफ़
मुहल्ला रेलबाज़ार—कानपुर
ता० ६ सितम्बर सन् १६२० ई०

वकील साहब ने इस अर्ज़ीदावे को सुनकर कुछ तरमीम के साथ साफ़ करने का हुक्म मुहर्रिर साहब को दे दिया।

वकील साहब—(मुन्नीजान की ओर देखकर) हमारा मेहनताना ?

मुन्नीजान—डिगरी होने पर ज़रे डिगरी जनाब की खिद्मत में।

वकील साहब—(मुस्कराकर) अगर डिगरी न हुई तब ?

मुन्नीजान—मुद्दइया तो हाज़िर खिदमत रहेगी।

वकील साहब—आप जानती हैं कि वकील तो अपना मेहनताना इजलास में जाने से पेश्तर ही ले लेते हैं। डिगरी होने पर तो शुकराना लेते हैं ?

मुन्नीजान—(अपने सीने पर हाथ रखकर) जनाब यहाँ तो अर्ज़ीदावे और इजलास में जाने से पहले ही ज़रेनक़द मौजूद हूँ! (कोई बोल उठा—'दर्शनीहुंडी') वकील साहब इस मुअम्मे को समझ गये, और निगाहों में ही नज़राना वसूल कर लेने का वायदा कर लिया। बाद को शुकराने की भी उम्मीद क़वी थी।

बारहवाँ दृश्य

शनैश्चर के दिन आर्यकुमार-सभा के साप्ताहिक अधिवेशन में तीसरे पहरे को चपरासी मन्त्रीजी और प्रधानजी से तामील सम्मन के हस्ताक्षर करा रहा है। सम्मन के पढ़ने से ज्ञात हुआ कि मुद्दइया मुलम्मात मुश्तीजान हैं। मुद्दाअलेह मन्त्री और प्रधान हैं। प्रधानजी ने कहा—हम तो पेश्तर से ही जानते थे कि ये मामला बिना अदालत में जाये नहीं रहेगा, वही हुआ। ख़ैर अदालत से भी निपटेंगे मन्त्री और प्रधानजी सीधे वहाँ से उठकर बैरिष्टर आत्मारामजी के बँगले पर पहुँचे और सारा वाक़या सही सही बयान कर दिया। बैरिष्टर साहब ने कहा—"वैसे तो कुछ नहीं हो सकता लेकिन अदालत······।" बैरिष्टर साहब कुछ आगे कहना ही चाहते थे कि प्रधानजी बोल उठे कि "हाईकोर्ट तो किसी के घर का नहीं है। हमें तो इस मामले को हद तक पहुँचाना है।" बयान बहुत मुख़्तसिर तैयार किया गया है—

"चूँकि ये लड़की हिन्दू की थी और नाबालिग़ थी, इसलिये एक मुसलमान रंडी को हरगिज़ हक़ हासिल नहीं था कि वह इसको ऐसे मज़मूम पेशे के लिये तैयार करे। इसका हक़दार हर वाजिब तरीक़े से आर्यसमाज या हिन्दूसभा है। चुनांचे लड़की बसन्ती बिला किसी जब्रोतशद्दुद व लालच के हमारी आर्यसमाज में आ गई; लिहाज़ा अपनी क़ौम व मज़हब की लड़की होने की वजह से हम हर तरह से उसकी परवरिश के हक़दार हैं।"

द० प्रधान व मन्त्री ता० १२। ६। १६२० ई०

रेलबाज़ार—कानपुर

तारीख मुक़र्रेरा पर मन्त्री व प्रधानजी वसन्ती को लेकर डिपटी साहब की अदालत में हाज़िर हुए। मुद्दइया की तरफ़ से मिष्टर सुभान वकील और मुद्दाअलेहम=मुलज़िमों की तरफ़ से बैरिष्टर आत्मारामजी अदालत में खड़े हुए। मुन्नीजान भी लड्डनखाँ और चन्द मिलनेवालों के साथ हाज़िर अदालत थी। वसन्ती उस समय रेशमीन साड़ी पहने और माथे पर केसरिया चन्दन लगाये हुए थी। कुछ इब्तदाई कार्यवाही के बाद डिपटी साहब ने वसन्ती की ओर देखकर कहा—"यही वसन्ती है जिसको आर्यों ने अग़वा किया है?"

बैरिष्टर साहब ने जवाब दिया—"अग़वा किया नहीं, अभी तो सिर्फ़ अग़वा करने का दावा है। फ़ैसला तो अदालत करेगी कि अग़वा किया या नहीं!!" डिपटी साहब इस क़ानून के खिलाफ़ राय ज़ाहिर करने की वजह से कुछ शरमिन्दा से हुए और पेशकार साहब को अर्ज़ीदावा पढ़ने का हुक्म दिया। अर्ज़ीदावा सुनने के बाद मन्त्री और प्रधानजी से अपना अपना बयानहलफ़ी दाखिल करने का हुक्म दिया। बैरिष्टर साहब ने मेज़ पर बयानहलफ़ी रख दिया। और कहा कि—"वसन्ती के बयान भी इसी वक़्त ले लिये जायँ।"

डिपटी साहब किसी वजह से इस वक़्त वसन्ती का बयान लेना नहीं चाहते थे। वह हुक्म देना चाहते थे कि—"वसन्ती को फ़िलहाल किसी मुसलमान के हवाले ताफ़ैसले करदी जाय, और अगली पेशी पर बयान लिया जाय।" परन्तु बैरिष्टर साहब ने कई हाईकोर्टों की कई नज़ीरें दिखाकर अदालत को उसी वक़्त बयान लेने के लिये मज़बूर किया।

वसन्ती का बयान—

मेरा नाम मेरे मां बाप ने वसन्ती रक्खा है। कौम की हिन्दू

चमारी हूँ। मकान कानपुर में चमर टोले मुहल्ले में है। १० साल की उमर में मेरे मां बाप मर चुके थे। जब काल पड़ा तो मैं भूँखों मरने लगी। भीख माँगते माँगते मुन्नीजान के दरवाज़े पर आई। मुझे पता नहीं था कि ये मुसलमानी है और रंडी है।

इसने मुझको अपने पास रख लिया। बाद को जब खाना खा लिया तो मुझको मालूम हुआ कि ये मुसलमानी रंडी है। मेरा कोई उस वक़्त मददगार न होने की वजह से मजबूरन मैं मुन्नीजान के घर पर रही। इसने मुझको नाचना गाना सिखाया। एक दिन मैंने आर्यों की बात सुनी। उससे मुझे मालूम हुआ कि मैं फिर दुबारा हिन्दुनी बन सकती हूँ। बस मैं बिना किसी ज़बरदस्ती व लालच के आर्यों के घर जा कर बाक़ायदा शुद्ध हो गई। इस वक़्त मैं आर्या हूँ।"

द० बसन्ती देवी आर्या।

इस मुख़्तसिर और साफ़ साफ़ बयान को सुनकर डिपटी साहब होठों में कलम को दाब कर कुछ सोचने लगे। और खुद बसन्ती से कहने लगे। "तुमे इस्लाम से क्यों नफ़रत हुई? क्या इस्लाम हिन्दू मज़हब से अच्छा नहीं है?" बैरिस्टर साहब ने अँगरेज़ी में कहा—"It is irrational question; court is not to have such an authority to put such a question." इतना कह कर बैरिस्टर साहब ने एक काग़ज़ पर ये अपना एतराज़ी नोट लिखकर मेज़ पर रख दिया और कहा कि—"अदालत इसको मिसिल में शामिल कर ले।" क़ानूनन् डिपटी साहब को ये नोट मिसिल में शामिल करना पड़ा। फिर किसी ने कोई सवाल बसन्ती से नहीं किया। अगली पेशी की तारीख २० पड़ी। बसन्ती हकीम काशीनाथ राधास्वामी संप्रदाय के

मन्त्री की सुपुर्दगी में रख दी गई। अगली पेशियों पर बड़े बड़े रईस गवाही देने आये कि हमने इसका नाच मुन्नीजान के साथ मन्दिर में देखा था। उनमें रेलबाज़ार के दारोगा साहब भी थे। कल फ़ैसला सुनाया जायगा। २१ तारीख को बड़ी भीड़ कचहरी में थी। हिन्दू मुसलमान सभी इस दिलचस्प मुक़द्दमे का फ़ैसला सुनने अदालत के कमरे में मौजूद थे। वक़्त पर डिपटी साहब ने मुद्दइया और मुद्दाअलेह को बुलाया और फ़ैसले का निचोड़ सुनाया कि—"आर्य-समाज के मन्त्री और प्रधान ने एक नाबालिग़ मुसलमान लड़की का अग़वा किया है, लिहाज़ा लड़की को मुद्दइया के हवाले किया जाता है और मन्त्री व प्रधान को नौ नौ माह की सख़्त सज़ा और २००) रुपया फ़ी कस जुर्माने की सजा दी जाती है। अदम अदायगी जुर्माने पर तीन तीन माह क़ैद महज़ भुगतना होगी।" मुन्नीजान ने फ़ैसले को सुनकर "अल्हम दुलिल्लाहे" कहा और खुश होती हुई अदालत के कमरे से बाहर आई। वकील साहब भी अपनी कामयाबी पर नाज़ाँ होते हुए चन्द मुसलमानों से हाथ मिलाते हुए बाहर आये और निगाह ही निगाह में मुन्नीजान से मिहनताने की वायदे परवरी की मंजूरी ली।

मन्त्री व प्रधानजी के बैरिष्टर साहब ने उसी वक़्त ज़मानत की दरख़्वास्त दाखिल की, और एक एक हज़ार की ज़मानत पर दोनों को रिहा करा कर बाहर आये। डबल फ़ीस अदा करके फ़ौरन फ़ैसले की नक़ल ली, और मिष्टर जुलफ़िक़ारअली डिस्ट्रिक्ट जज के यहाँ अपील दायर कर दी। २५ तारीख अपील की मुक़र्रर हुई। सबको यही ख़्याल था कि अपील खारिज होगी; सो वही हुआ। मन्त्री व प्रधानजी

की दुवारा ज़मानत ली गई। वैरिष्टर साहव ने जज साहव को इस मज़मून की एक दरख़्वास्त दी कि लड़की वसन्ती ताफ़ैसला हाईकोर्ट मुन्नीजान मुदइया को न दिलाई जाय; जो मंजूर हुई और अपील का फ़ैसला लेकर वा० पन्नालाल वकील हाईकोर्ट के मारफत हाईकोर्ट में अपील वतौर निगरानी के दायर कर दी गई।

तेरहवाँ दृश्य

आज १५ नवम्वर है। जस्टिस मुकरजी के सामने हाई-कोर्ट इलाहावाद में अपील की सुनवाई हो रही है। मुदइया और मुदाअलेह मय अपने वकील के हाज़िर हैं। दर्शक भी काफ़ी तादाद में हैं। वा० पन्नालालजी ने दरख़्वास्त देकर सारी मिसिल पहले ही हाईकोर्ट में तलव करा ली थी। वा० पन्नालालजी ने सारे वाक़यात अव्वल से आख़िर तक हाई-कोर्ट के सामने रक्खे। वड़ी दिलचस्प वहस हुई। गवर्नमेंट प्रासीक्यूटर और वा० पन्नालालजी की वड़ी झड़प हुई। जस्टिस मुकरजी ने भी कहीं वहस में दख़ल दिया। दोनों ओर की क़ानूनी वहस ख़तम हुई। जस्टिस मुकरजी ने हुक्म दिया कि—"अदालत हाय मातहतों ने इस वात पर ग़ौर नहीं किया कि वसन्ती एक हिन्दू लड़की थी, और नावालिग़ थी। मुन्नीजान मुसलमानी तवायफ़ को क्या हक़ हासिल था कि वह एक नावालिग़ हिन्दू को अपने यहां पर ऐसे ख़राव पेशे के लिये रक्खे? मुदइया के वयान से भी सावित है कि लड़की का नाम वसन्ती है। लड़की वसन्ती भी वयान करती है कि मेरे मां वाप ने मेरा नाम वसन्ती रक्खा। "वसन्ती"

नाम हिन्दुओं में रक्खा जाता है न कि मुसलमानों में। कोई शहादत इस क़िस्म की मिसिल में नहीं कि लड़की को इस्लाम क़ुबूल कराया गया। अगर कोई शहादत होती भी तो भी एक नाबालिग़ हिन्दू लड़की को मुसलमान बनाना क़ानूनन् जुर्म था।

मुन्नीजान को वाजिब था कि वह उस लड़की को हिन्दूसभा या आर्यसमाज या उसकी बिरादरीवालों के सुपुर्द कर देती। इब्तदाई अदालत की यह कार्रवाई भी नाजायज़ थी कि वह बसन्ती से यह कहे कि 'हिन्दू मज़हब क्या मुसलमान मज़हब से अच्छा है ?' रेलबाज़ार कानपुर के थानेदार की गवाही भी खटकती है कि जहां पुलिस का यह फ़र्ज़ होना चाहिये कि वह हमेशा ख़्याल रक्खे कि कोई नाबालिग़ लड़की ऐसे काम के लिये बुरे इरादे से परवरिश तो नहीं की जा रही है, वहां और उल्टा मददगार बनता है। इसलिये मैं हुक्म देता हूं कि अदालत अव्वल इस मुक़दमे की दुबारा जांच करे। और मुद्दइया मुन्नीजान पर नाबालिग़ हिन्दू लड़की को एक नापाक काम के लिये परवरिश करने की पादाश में, मुद्दाअलेहुम् को मुक़दमा चलाने की इजाज़त दे।"

द० जस्टिस मुकरजी जज
हाईकोर्ट इलाहाबाद
२५। ११। २० ई०

इस हुक्म के साथ सारी मिसिल डिपटी साहब के इजलास में वापिस आ गई। मुक़दमे की कार्रवाई दुबारा शुरू हुई। सम्मन जारी हुए। मन्त्री व प्रधानजी की ज़मानतें फ़िस्ख़ हुईं। डिपटी साहब को फ़ैसला सुनाना पड़ा कि—

"चूँकि मुन्नीजान ने एक नाबालिग़ हिन्दू लड़की को मज़-

मूम पेशे के लिये अपने घर पर रक्खा, इस जुर्म में उसके ऊपर मुक़दमा चलाने की मुद्दाअलेहुम् को इजाज़त देता हूँ, और वसन्ती का इस वक़्त कोई जायज़ वारिस न होने की वजह से उसका वारिस मन्त्री और प्रधान आर्य-समाज रेलवाज़ार को ही क़रार देकर, वसन्ती को मुद्दाअलेहुम् मज़कूर के हवाले करने का हुक्म देता हूँ।"

द० हाकिम परगना
१—१२—२० ई०

मुन्नीजान परेशान हुई मय वकील साहब के अदालत के कमरे से बाहर आई। आर्य-समाजी और सनातनी-भाई, हाई-कोर्ट की प्रशंसा करते हुए वसन्ती के ताँगे पर फूल बरसाते हुए समाज-मन्दिर की ओर चल दिये। रास्ते में लड्डनखाँ ने अपने गुण्डे साथियों की मदद से कुछ शरारत करनी चाही, परन्तु पहली खोपड़ी की चोट को याद करके हिम्मत हार बैठा।

चौदहवाँ दृश्य

सुबेह का समय है। मुन्नीजान हाथ जोड़े प्रधानजी के सामने उनके कमरे में खड़ी है। "लिल्लाहे माफ़ करो, क़सूर हुआ, आप रहीम हैं, मैं आपके हर हुक्म को बजालाने को तैयार हूँ" कह रही है। नज़दीक ही एक चौकी पर ऊनी आसन पर बैठी हुई वसन्ती स्वच्छ ऊनी धोती पहने, केस-रिया चन्दन लगाये, हवनकुण्ड और घृतादि सामग्री सामने रक्खे, हवन कर रही है। सारा कमरा सुगन्ध से सुगन्धित हो रहा है। प्रधानजी ने कहा—"मुन्नी! मुझे तुम से कोई

बदला नहीं लेना है, क़ैद में नहीं डलवाना है; मेरे ऋषि दया-नन्द का कौल है कि—'मैं संसार को क़ैद से छुड़ाने आया हूँ न कि क़ैद में डालने के लिये।' इसलिये मैं कोई कार्रवाई आगे को नहीं करूँगा। लेकिन इतना ख़्याल रक्खो कि इस वक़्त तुम जवान हो, सैकड़ों ग्राहक तुम्हारे मौजूद हैं, ये जवानी बरफ़ के मानिन्द बहुत जल्दी पिघल जायगी। बुढ़ापे में पछ-ताना पड़ेगा जब कोई नाम लेनेवाला और पानी देनेवाला नहीं मिलेगा। अगर किसी एक की होकर रहोगी, सन्तान होगी वह ख़्याल तो करेगी कि ये मेरी बूढ़ी मां हैं—मेरा फ़र्ज़ है कि मैं बूढ़ी मां की परवरिश करूँ। देखो तुम्हारे पड़ोस में ही कई ऐसी तवायफ़ हैं जिनकी उमर ढल गई, अब दाने दाने को मुहताज फिरती हैं। अक्सर, अपनी छोकरियों पर उम्मीद किये बैठी रहती हैं, सो आपकी उम्मीद वह भी नहीं रही। और आपका यह पेशा तो सब मज़हबों में हराम है! शायद इस्लाम में अच्छा समझा जाता हो!!"

मुन्नी को ये बातें बहुत मीठी मालूम हुईं। कुछ कहने को ही थी कि हवन से निवृत्त होकर वसन्ती ने हाथ जोड़कर कहा—"माता जी नमस्ते!"

मुन्नीजान के ऊपर इस वाक्य का बड़ा प्रभाव पड़ा। सोचने लगी नमस्ते का क्या जवाब दूँ! इतने में प्रधानजी कह उठे कि—"बस माता कह दिया अब सच्ची माता बन के दिखा दो!!" मुन्नीजान ने कहा—"तो मुझे क्या करना होगा?" वसन्ती बोल उठी—"आओ मेरे धोरे, मैं तुमको अभी सच्ची माता बनादूँ। अब मैं भी सच्ची माता बनाना जान गई हूँ" यह कहकर वसन्ती ने मुन्नीजान की कलाई पकड़ ली। मुन्नी ने कहा—"तो क्या इतनी जल्दी·······।" वसन्ती ने बात काट

कर कहा—"फ़ौरन से पेश्तर!" प्रधानजी इस दृश्य को देख-कर खुश होते हुए मुस्करा रहे थे।

मुन्नी—(प्रधानजी की ओर देखकर) तो क्या आपके यहाँ किसी आर्य के साथ दुबारा..........................।

प्रधानजी—जनाब आज ही, देर का क्या काम।

मुन्नी—तो किन किन चीज़ों से परहेज़ करना पड़ेगा?

प्रधानजी—शराब, गोश्त, अफ़ीम वग़ैरह और लहसुन प्याज़ से।

मुन्नी—ख़ैर ये तो मैंने वैसे भी आज तक ब्राह्मणी से मुसलमानी और रंडी होने पर भी कभी इस्तेमाल नहीं किये। (वसन्ती की ओर देखकर) क्यों वसन्ती! तू भी दो तीन साल रही, तू ने ये चीज़ें मेरे घर में आते देखीं?

प्रधानजी ये सुनते ही कि—'ब्राह्मणी से मुसलमानी रंडी बनी' बड़े आश्चर्य में पड़े और पूछने लगे कि—'तुम ब्राह्मणी होकर कैसे भ्रष्ट हुईं?'

मुन्नी ने उत्तर दिया फिर तख़लिये में कभी अपनी राम-कहानी सुनाऊँगी। *

उपसंहार

मुन्नीजान मानवती बन गईं। एक युवा धर्मसेवक नामक आर्य सज्जन के साथ आपका सम्बन्ध करा दिया गया। अब आर्य-समाजों के उत्सवों पर स्त्री-समाज में बड़ी श्रद्धा से प्रचार करती हैं। कई सन्तानें हैं। सच्ची माता हैं। ऋषि दयानन्द के उपकारों को वर्णन करते हुए गद्गद हो जाती हैं।

* पाठकगण! तीसरे आँसू में इस हृदय-विदारक वृत्तान्त को आप सुनेंगे।

कर्मकाण्ड करने कराने में बड़ी श्रद्धा रखती हैं। आर्य-जगत् में सच्चरित्रा विख्यात हैं। वसन्ती देवी का विवाह १६ वर्ष की आयु में कानपुर ही में एक ज़मींदार युवा के साथ करा दिया गया। इस समय वह भी अपने पति के साथ स्वर्ग का सुख भोग रही है। किसी वस्तु की कमी नहीं है—नौकर चाकर, पशु, सवारी और ज़मींदारी सब कुछ है। गोद भी भरी है। एक दिन मानवती और बसन्ती दोनों ए० बी० रोड कानपुर के उत्सव पर परस्पर मिलीं। बसन्ती ने सच्ची माता के चरण छुए और अपने ५ वर्ष के गुरुदत्त पुत्र से कहा—"नानीजी को नमस्ते कर।" मानवती ने गुरुदत्त को गोद में उठा लिया और मुँह चूम कर एक गिन्नी हाथ में दे दी। मानवती ने कहा—"बेटी बसन्ती! तू सच्ची आर्या देवी है। तेरे ही कारण मेरा जीवन पवित्र बना है। तुझे सहस्रबार धन्य है। पहले जीवन को याद करके अब भी मेरे रोमाञ्च हो जाते हैं।" इस प्रकार दोनों जनी परस्पर एक दूसरे की सराहना करती हुई ऋषि दयानन्द और आर्य-समाज को धन्यवाद दे रही थीं कि भजन आरम्भ हुआ और सब का मन उधर खिंच गया। समाप्ति पर दोनों ने एक दूसरे को नमस्ते कहा।

तीसरा आँसू

पहिला दृश्य

"मैं वही मुन्नी जान हूँ"

मातादीन चौके में भोजन कर रहे हैं। उनकी स्त्री परोस रही है।

स्त्री—कहो गयादीन सुरजनपुर से क्या खबर लाया?

मातादीन—खबर क्या लाया, वह तो मामला ठीक नहीं बैठा!

स्त्री—क्यों! वह तो बाला के शुक्ल हैं; खराबी क्या है?

मातादीन—खराबी यह है कि—लड़के की उमर ज्यादा है।

स्त्री—उमर ज्यादा हुआ करे कुलीन तो हैं।

मातादीन—उमर कुछ थोड़ी बहुत ज्यादा होती तब तो भुगत लेता पर वह तो ५५ साल का है। पढ़ा लिखा कुछ भी नहीं, कलकत्ते में दरवानी करता है।

स्त्री—उँह; दरवानी करने से क्या कुलीनता जाती रहती है?

मातादीन—कुलीनता नहीं जाती रहती तो उमर भी तो कुलीनता से कम नहीं हो जाती?

स्त्री—तुम्हें यही कहते कई साल हो गये ! बिटिया १८ साल की हो गई !! व्याहना आज भी और कल भी। घर में तो बिठाल ही नहीं रक्खोगे !!!

मातादीन—गौरीशङ्कर अच्छा खासा लड़का है, उमर भी २२ साल की है। पढ़ा लिखा है। रोज़गार से भी लगा है। पर तुम्हारी समझ ही में नहीं आता।

स्त्री—भला आज तक तो हमने ऐसे घर की लड़की ली भी नहीं, देना तो दूर रहा; कैसे बिटिया को वहाँ ब्याह दें? कभी हमारे यहाँ की लड़की चवुआ के दीछितों तक के घर तो गई ही नहीं। उल्टी गंगा कैसे बहा दें।

मातादीन—मैं तो यही अच्छा समझता हूँ कि बूढ़ कुलीन से योग पढ़ा लिखा धाकर अच्छा। कुलीन को दहेज़ भरपूर दो, भात खाने में सैकड़ों नखरे करें। धाकरों में दहेज़ कम जाय, खुशी से खायें पियें पर तेरी समझ को मैं क्या करूँ!

स्त्री—मेरी बिटिया तो कुलीन के ही घर जायगी। अमीर का बूढ़ा ही क्या? घर में सब कुछ खाने को मौजूद है। नौकर चाकर, भइया बन्द सब भर रहे हैं। मैं तो वहीं करूँगी।

दूसरा दृश्य

मातादीन—सेठजी! व्याह में चार हज़ार रुपये से कम बिटिया के व्याह में नहीं लगेंगे। मेरा दस हज़ार का पुरवा है चाहे बैनामा लिखा लीजिये चाहे चार हज़ार में गिरौं रख लीजिये।

सेठजी—अच्छा अपना बैनामा दिखाओ। देखूँ तुमने कितने में खरीदा है?

मातादीन—हाँ, बैनामा ये मौजूद है, देख लीजिये। (बैनामा दिखाता है).

सेठजी—(बैनामा पढ़कर) अच्छा कल आठ हज़ार का बयनामा लिखा देना।

मातादीन—अब तो पहले से जायदाद की क़ीमत बढ़ गई है; आप आठ हज़ार क्यों कहते हैं? अब तो १५ हज़ार की जायदाद है। ज़रखेज़ पुरवा है।

सेठजी—नये क़ानून ने सब जायदादों की क़ीमत घटा दी ये भी बेटी का कारज है; लिये लेता हूँ, अगर तुम्हारी मरज़ी नहीं है तो और जगह दरियाफ़्त कर लो।

मातादीन—हमारे पुरखाओं से आप के ही यहाँ लेन देन चला आता है। हम आप को छोड़ कर कहाँ दूसरी जगह जायें? हमारे आप ही माई बाप हैं।

सेठजी—बस मैंने तो मुनासिब ही क़ीमत लगा दी है। जब तुम्हारे पास रुपये आ जायें तो आठ हज़ार रुपये मय सूद के दे जाना और बैनामा मंसूख करा लेना। हमारा तुम्हारा घर का सा मामला है। कल बलिया की कचहरी में चलना, लिखत पढ़त वहीं पर हो जायगी। ये अपना बैनामा भी साथ लेते आना। इस ही की नक़ल हो जायगी। उस ही वक़्त बैनामा रजिस्ट्री हो जायगा।

तीसरा दृश्य

सुरजनपुर में पं० आशाराम की बैठक में बिपतिया नाई एक हज़ार रुपये सहित फलदान लिये बैठा है। पं० आशाराम थूकने का उगालदान धोरे रक्खे खांस रहे हैं। दम

उखड़ रहा है। नाई कुछ कहना चाहता है। हाथ के इशारे से नाई को रोक कर उगालदान में थूकने का इरादा कर रहे हैं।

नाई—(कुछ ठहरकर) सरकार ! मैं पुरवे से आया हूँ, ये मातादीन के घर से फलदान लाया हूँ।

पं० आशाराम—रुपये कितने हैं ? दो हज़ार हैं ना ?

नाई—सरकार ! एक हज़ार हैं। मेरा जिजमान बहुत ग़रीब है। जाने किस तरह यह भी इकट्ठे कर पाया है।

पं० आशाराम—तुझे खबर नहीं हम कुलीन हैं ? पहली चार शादियों में हमने फलदान में दो हज़ार से कम किसी से भी नहीं लिये। (इतने में सांस उखड़ आया)

नाई—(कुछ ठहर कर) हजूर अब तो उसकी बिटिया का कारज करना ही होगा। आपको किस बात की कमी है। अच्छा है ग़रीब जिजमान का भी काम बन जाय।

पं० आशाराम—(हांपते हांपते) ब्याह कब करेंगे ?

नाई—जब सरकार की मरजी होय।

पं० आशाराम—ब्याह माघ महीने में करना होगा। तीन हज़ार का और प्रबन्ध कर लें। सारी बरात को दाल चावल देने होंगे। सौ आदमी साथ आयेंगे !!

नाई—जैसी मरजी सरकार की। मैं तो उनका और आप का दोनों का तावेदार।

चौथा दृश्य

माघ शुक्ला अष्टमी का दिन है। पं० आशाराम पालकी में बैठे पुरवे में दाखिल हो रहे हैं। बरात साथ है और बाजा बज रहा है। पुरवे की स्त्री पुरुष बच्चे बरात का तमाशा देखने आ रहे हैं।

एक स्त्री—अये, इसके पास कितना बड़ा गिलास रक्खा है ?

दूसरी—अरी मरी ! कलई का है। देख कैसा सफ़ेद है ?

तीसरी—हमने तो इतना बड़ा टेढ़ा बेढ़ा गिलास कभी देखा नहीं !

चौथी—अरी देख ! ये तो इसमें थूक रहा है !!

एक बालक—अरी हमने रंडी के नाच में एक बार ऐसा गिलास देखा था। वह भी इसके बराबर ही था।

एक मर्द—अरी बावली हुई हो ! इसे उगलदान कहें हैं।

एक स्त्री—अरे ये कैसा दूलौ है ? खांसे है और थूके है। किधर ही को देखता ही नहीं !! ये चर्चा हो ही रही थी कि पं० आशाराम के खांसते खांसते दाँतों की बत्तीसी, जो नक़ली थी, निकल पड़ी। देखने वालों ने हल्ला मचाया कि—"दाँत निकल पड़े दाँत निकल पड़े" कोई ५० बरस की उमर जाँचता था कोई कुछ कम ज़्यादा। इस तरह बरात समधी के द्वार पर पहुँची। परछन करने के लिये सास दरवाज़े पर आई।

कमर झुकाए हुए दूल्हा सास के आगे दरवाज़े पर खड़ा हुआ, ज्योंही सास ने टीका काढ़ने का इरादा किया वर को खाँसी आ गई। खाँसने के लिये मुँह नीचे को झुकाना पड़ा। टीका नाक से लेकर बालों तक मत्थे पर खिच गया। लुगाइयों में बड़ी हँसी मची। पं० आशाराम बड़े लज्जित हुए। जैसे तैसे करके विवाह की कृत्य समाप्त हुई। पं० मातादीन की स्त्री को अन्य स्त्रियों ने बड़ा लज्जित किया, परन्तु वह तो पहिले इस वर के लिये हठ कर चुकी थी; उस पर इस धिक्कारने का कोई प्रभाव न हुआ। पं० मातादीन इन आशाराम को देख देख

कर बड़े कुढ़ते थे, परन्तु तिरिया हठ के शिकार हो चुके थे। पं० आशाराम ने रुपया वसूल करने में बड़ी सख़्ती की। बार बार छोड़कर चले जाने की धमकी देते थे। नौजवान नई रोशनी के इस सम्बन्ध से अत्यन्त क्रुद्ध थे। कोई कोई तो सम्मिलित भी नहीं हुए; परन्तु, पुरनिया बिरादरी कुलीन कुलीन कहकर बड़ी प्रसन्न होती !!! सरदी अधिक पड़ने से और कुछ परदेश की ठंढी हवा और कुछ बदपरहेज़ी से पं० आशाराम को सुसराल में ही साँस का बड़ा भारी दौरा आ पड़ा। वैद्य हकीम बुलाये जाने लगे। बराती सब घबड़ा गये। पं० मातादीन की अवस्था इस समय शोचनीय हो गई। सास भी मन में कुढ़ने लगी। परन्तु स्वयं अपनी ही हठ के कारण मुख से कुछ कहती न थी। रंग में भंग सा दीखने लगा। किसी न किसी प्रकार सुरजनपुर पहुँच चलें, यही सबको फ़िक्र पड़ी। कुछ साँस अभी और शेष थे, इसलिये आशाराम के अच्छे होने की निराशा आशा में परिणत हो गई। वैद्यों के घोर प्रयत्न से इस समय आशाराम का दम ठिकाने से आ गया, और पालकी में पड़कर सुरजनपुर को बरात सहित रवाना हो गये।

पाँचवाँ दृश्य

आज पुरवे में पं० मातादीन के घर स्यापा पड़ रहा है। छोटे बड़े सब दहाड़ें मार कर रो रहे हैं। "हाय बिटिया तेरे भाग फूट गये" के साथ करुणा क्रन्दन हो रहा है। मातादीन चिट्ठी को छाती से मार मारकर रो रहे हैं। मातादीन की स्त्री बेसुध हुई पड़ी है। छोटे बड़े सब ही विविध प्रकार से

विलाप कर रहे हैं। कुछ बिरादरी के लोग बाहर बैठे हुए भांति-भांति की चर्चा कर रहे हैं—

एक—भाई वह विवाह के समय ही अत्यन्त निर्बल था, दमे का मारा था, खांसी से उसका दम उखड़ रहा था।

दूसरा—मातादीन ने अच्छा नहीं करा जो बूढ़े से व्याह कर दिया। दहेज़ भरपूर गया और फिर भी कन्या के भाग फूट ही गये!

तीसरा—उतना दोष मातादीन का नहीं जितना मनिया की माता का है। मातादीन की इच्छा तो नगले में गौरीशङ्कर आर्य से करने की थी, पर कन्या का भाग कि मनिया की मां नहीं मानी। वह संयोग बड़ा अच्छा था। २२ वर्ष की आयु थी। पढ़ा लिखा था। बारोज़गार था। देखने में भी सुडौल और सुन्दर था।

चौथा—भाई! कुलीन तो नहीं था, दूसरे आर्य-समाजी था।

पाँचवाँ—हाँ ये तो ठीक है, नभेले का शुक्ल था! उन्हें चाहिये वाला का शुक्ल!!

छठा—क्या नभेले के शुक्ल कुलीन नहीं होते?

सातवाँ—होवें, सब कुछ हैं, पर इनकी उल्टी समझ को क्या करें?

एक युवक—अजी! इन बेहूदा ऊँच नीच के विचारों ने हम ब्राह्मणों का तो सत्यानास कर डाला। न धाकरों के यहाँ गोहत्या होती है, न वाला के शुक्लों के घर अश्वमेध यज्ञ होते हैं हमने तो बड़े बड़े कुलीनों को स्टेशनों पर पानी पिलाते और धोती छाँटते देखा है। उस वक्त उनका कुलीनपना जाने कहाँ चला जाता है? इन पट्कुलों के फन्दों में फँसकर आज

लाखों जाति की कन्यायें बरबाद हो चुकी हैं और हो रही हैं। इन ब्राह्मणों को यह नहीं सूझता कि स्त्रियों को कुलीन बुड्ढा चाहिये या नौजवान तन्दुरुस्त धाकर! एक बूढ़ा कुलीन एक युवती कन्या के किस काम का? क्या एक बूढ़े कुलीन की कुलीनता युवती स्त्रियों के काम आती है? आज दुःखी होकर ये कटुशब्द कहने पड़े हैं।

एक पुरनिया—तेरी समझ के होते तो सारी कुलीनता अब तक खो बैठते। ज़रा सी अँगरेज़ी पढ़ आया लगा बातें बनाने। जिसके भाग में जैसा लिखा है वैसा भोगेगा। प्रारब्ध भी कोई चीज़ है।

युवक—आँखों देखे तो कन्याओं को कुएँ में नहीं झोंका जाता? इस कुप्रथा के कारण ही आज हमारे ही पुरवे की कितनी कन्यायें नीचों के साथ भाग गईं? दो तीन तो मेरी ही आँखों के सामने मुसलमानों के घर बैठी हैं!! आप ने तो ज़माना देखा है। आप के ही......

पुरनिया—(बात काटकर) हमने क्या उससे कह दिया था कि तू रंडी बन जा। अब से गई जग से गई। जाने कितनी एक मारती फिरती हैं। हुइ है सोई जो राम रच राखा।"

युवक—आप अपना हर्ज न समझें। परन्तु हिन्दूमात्र की इसमें कितनी हानि है?

देखिये—सुना है कि हमारे इस पुरवे में केवल एक धुना (विहना) रहता था। हमारे ब्राह्मणों ही की एक विधवा कन्या उसके घर जा बैठी। आज केवल उसके ही पेट के सात जवान जवान लड़के हैं। ५ लड़कियां हैं। मय पोती पोतों और धेवती धेवतों के पचास आदमियों का कुनबा है। मसजिद उन्होंने खड़ी कर ली। उस ही मसजिद के आगे

बाजा बजने पर पारसाल कितना फ़िसाद हुआ था। हमारे ही खेत से पैदा होकर कैसे कीकड़ के कांटे सिद्ध हो रहे हैं?

सुना है कि उसने अबकी ईद पर गौ की कुरबानी की दरख़्वास्त दी है !! उस एक के ही मारे मुहर्रमों के दिनों में बाजा और शंख नहीं बजा सकते। हर समय उसके बेटे पोते इसही फ़िक्र में लगे रहते हैं कि हम ब्राह्मणों में की कोई स्त्री बच्चा हाथ लगे तो उसको मुसलमान बना लें। आपने उसका क्या कर लिया? यदि कुछ और सुनना चाहते हो तो और आपके ही घर की बात सुनाऊं? युवक की ये बातें सुनकर सब के सिर नीचे हो गये, परन्तु बिरादरी के बन्धन से सबही लाचार थे। मातादीन भी आँसू पोंछते हुए इन बातें करने वालों में आकर बैठ गये।

मातादीन—दद्दू! मनिया बिटिया के करम फूट गये! कैसे उमर काटेगी !!

दद्दू—जैसे और लाखों काट रही हैं वैसे वह भी काटेगी। "विधिकेर लिखा को मेटनहारा?"

मातादीन—दसवाँ होने के बाद लिवा लाऊँगा, और क्या करूँगा?

दद्दू—उसके ताईं तो यहाँ भी वैसा ही और वहाँ भी वैसा ही।

युवक—सुहागन रहने पर भी उसके लिये अबके ही समान था।

मातादीन की स्त्री अपनी इस हठ के कारण अत्यंत लज्जित थी। जब कभी कोई मनिया के दुःख की बात कहती मातादीन तत्काल कह उठते कि ले और कुलीन बूढ़े को ब्याह दे?. मातादीन दुःखी चित्त होकर मनिया को बुलाने गये, परन्तु

उसके देवर रामदीन ने भेजने से इन्कार कर दिया। हार-कर लौटकर चले आये। सारा कुटुम्ब रातदिन उदास रहने लगा। पुरनिया लोग तो कुछ दुःख नहीं मानते, परन्तु कुछ पढ़े लिखे युवक मनिया के भावी जीवन को सशङ्क देखते। उसके देवर के चालचलन को सबही जानते थे। कभी कभी जी चाहता था कि मनिया के पुनर्विवाह की चर्चा छेड़ें, मातादीन की कादरता को देखकर चुप रह जाते।

छठा दृश्य

पं० आशाराम का छोटा भाई रामदीन एक वैद्यजी की बैठक में बैठा है। उदास होकर कह रहा है—

रामदीन—हमने सुना है कि वैद्यक में ऐसी भी दवायें होती हैं जो तीन चार महीने के गर्भ को गिरा देती हैं?

वैद्यजी—वैद्यक तो समुद्र है, इसमें विष और रत्न दोनों ही भरे पड़े हैं।

रामदीन—आपके यहाँ भी तो रहती होगी?

वैद्यजी—है तो नहीं पर तैयार की जा सकती है।

रामदीन—कितने दिनों में तैयार हो सकती है?

वैद्यजी—अगर किसी को अधिक आवश्यकता हो तो एक ही दिन में हो सकती है।

रामदीन—तैयार तो करिये, कोई ग्राहक भी हो ही जायगा।

वैद्यजी बड़े अनुभवी पुरुष थे। मामले को ताड़ गये। पं० आशाराम का मरना और उनकी अठारह वर्ष की नव-विवाहिता का वैधव्य और रामदीन का कुचरित्र सब उनके

सामने था। वैद्यजी ने स्पष्ट कह दिया मैं बना सकता हूँ, पर यह पाप कर्म है, इसलिये न बनाने का प्रण बहुत काल से कर लिया है।

रामदीन निराश होकर घर लौट आये। रात दिन फ़िक्र में रहने लगे। अन्त को एक दिन मनिया से कहा कि अब के सूर्यग्रहण के समय कुरुक्षेत्र का बड़ा भारी मेला होगा, वहाँ पर चलेंगे।

मनिया ने कपड़े लत्ते बाँधने आरम्भ किये। ग्रहण से चारपाँच दिन पहले रामदीन मनिया (आशाराम की विधवा) को लेकर बलिया स्टेशन पर चल दिये। बैलगाड़ी में बैठे बैठे सोचते जाते थे कि किस प्रकार इससे पिण्ड छूटे !! इतने में स्टेशन आ गया बलिया से सीधा लखनऊ को टिकट खरीद लिये। दूसरे दिन प्रातःकाल ही लखनऊ स्टेशन पर जा पहुँचे। मुसाफ़िरखाने में जाकर दोनों शौच स्नान से निवृत्त हुए। रामदीन ने कहा बाहर से कुछ सतुआ ले आऊँ; तुम यहीं पर बैठी रहो। कई घंटे हो गये, रामदीन नहीं आया ! मनिया का जी घबड़ाने लगा। "जाने कहाँ पर से सतुआ लेने गए।" सोचने लगी। उसको वहाँ कोई भी अपनी जान पहचान का मनुष्य दिखाई नहीं पड़ता था। गठरी मुठरी बग़ल में दाबकर कभी कभी घबड़ाई हुई स्टेशन से बाहर तक देख आती, परन्तु देवर को न पाकर मन मारकर लौट आती। प्रतीक्षा करते करते तीसरा पहर हो गया। कहाँ जाऊँ, किससे कहूँ, अपना कौन है ? यह विचारने लगी। हारकर गठरी मुठरी उठा और दिल को थामकर भूँखी प्यासी शहर की ओर को चल दी। न इसको किसी धर्मशाला का ज्ञान है, न सराय का, अब कहाँ जाय ? यही विचारती जाती थी।

पर पुरुष से बात चीत करते या कुछ पूछते लज्जा आती थी, एक अधेड़ स्त्री को धोती पहने आते देखकर हिन्दुनी समझ कर पूछने लगी कि—क्या कहीं रात को ठहरने को थोड़ी सी ज़गह मिल जायगी? हमारा आदमी हमसे बिछुड़ गया है। उस स्त्री ने पूछा तुम कौन लोग हो? मनिया ने उत्तर दिया—"बामनी हूँ। रात ठहरना चाहती हूँ, सवेरे ही अपने मर्द को ढूँढ़ लूंगी।" स्त्री ने कहा—"चल मैं भी बामनी हूँ, मेरे घर पर ठहर रहना, मैं राँड़िया दुखिया कहीं पड़ रही आज तेरे सहारे से घर ही रहूँगी।" स्त्री उसको गणेशगंज के बाज़ार के एक बालेखाने पर ले गई। कुछ लोगों ने आवाज़ें कसना चाहीं पर स्त्री ने हाथ के इशारे से मना कर दिया। रात को कुछ खा पीकर मनिया चिन्ता के समुद्र में पड़ी पड़ी ग़ोते खाने लगी। सारा भेद उसकी समझ में आने लगा।

सातवाँ दृश्य

सुरजनपुर में रामदीन अपनी बैठक में दहाड़ मार कर रो रहे हैं। अड़ोस पड़ोस के लोग रोने का कारण पूछ रहे हैं। रामदीन सिसकते सिसकते कह रहा है कि लखनऊ के स्टेशन पर गाड़ी लड़ गई उसमें कट गई! मैं अभागा बच गया!! हाय मेरी भौजाई!!!

ग्राम के लोग सब प्रकार से समझा रहे हैं। कोई कहता है एक प्रकार से तो बुरा ही हुआ कि अकालमृत्यु हुई, पर अच्छा हुआ कि······दूसरा बात काट कर कह रहा था कि—सुना तो हमने भी है कि परसों रेल लड़ गई, पर इस पापी की बातें ये ही जाने! अभी शाम नहीं हुई थी कि चौकीदार

आया और पूछने लगा कि तुम्हारी विधवा भौजाई कहाँ है ? रामदीन ने उदास होकर कह दिया कि रेल में कट गई। चौकीदार ने कहा—"चलो थाने में लिखवाओ।" रामदीन कुछ सोच में पड़े कि न जाने वहाँ जाकर क्या आपत्ति आवे ! चौकीदार को वहीं पर राज़ी करना चाहा, इतने ही में कहीं से थानेदार साहब आ गये।

रामदीन—हुजूर सलाम !

थानेदार—(हाथ उठाकर) कहिये—भौजाई को कहां पर छोड़ आये ?

रातदीन—सरकार ! रेल लड़ गई; उसमें कट गई।

थानेदार—अच्छा थाने में आकर बाक़ायदा रपट लिखाओ। लेकिन यह ख़याल रखना कि अख़बार में लिखा है कि—"दोनों गाड़ियाँ आहिस्ता आहिस्ता स्टेशन पर आ रही थीं। मौत कोई नहीं हुई, हलका सा धक्का दोनों गाड़ियों को लगा। सिर्फ़ अंजन ख़राब हो गये और कुछ चोट ड्राइवर और कोय़ला झोंकने वालों के लगी।"

अब तो रामदीन के होश उड़ गये। दारोग़ाजी से कहा—"ज़रा पान तो खा लीजिये।" दारोग़ाजी बैठ गये। रामदीन ने पान लगाकर दारोग़ाजी के हाथ में दिया।

दारोग़ाजी चबाना ही चाहते थे कि एकदम रुके और पान बिना चबाये ही एक तरफ़ गाल में दाब लिया, और रामदीन की ओर को देखकर मुस्कराने लगे। रामदीन समझ गया कि बस काम बन गया। दिल में कुछ तसल्ली सी हुई। दारोग़ाजी पान मुँह में दाबे हुए थाने की ओर चल दिये। थोड़ी ही देर में एक आसामी अपनी भैंस के रुपये माँगने को दारोग़ाजी के पास आया। दारोग़ाजी ने चार गिन्नियाँ उसके

हवाले कीं। आसामी ने गिन्नियाँ हाथ में लेकर कहा—"बड़ी लाल हैं?" दारोगाजी बोले "नये सिक्के की ढली हैं।"

जब मनिया के रेल में कटने के समाचार पुरवे में माता-दीन के पास पहुँचे तो मनिया की माता अत्यन्त दुःख के साथ रोने लगी। बिजली की तरह सारी बस्ती में खबर पहुँच गई।

मातादीन सोचने लगे कि हाथ से पुरवा भी गया! बिटिया की मौत के समाचार भी सुन लिये बदनामी भी सारे गिर्दन-वाह में हुई!! हाय ये सारे दुःख एक स्त्री के पीछे भुगतने पड़े!!! यदि मनिया का विवाह गौरीशङ्कर के साथ कर देता, तो न तो पुरवा बेचना पड़ता, न आगे होनेवाली सारी बातें होतीं। गौरीशङ्कर आर्यसमाजी था; दहेज़ की शर्त भी न होती। लड़का भी सब प्रकार से योग्य था। और हमारे कुटुम्ब की लड़कियाँ नभेले के शुक्लों में गईं तो किसी ने उन के माँ बाप का क्या कर लिया। सब की सब आनन्द में हैं। कान्यकुब्जसभा ने भी तो अब पास कर दिया है कि दहेज़ की ठहरौनी की कुप्रथा उड़ा दी जाय और कान्यकुब्ज मात्र में विवाह कर दिया जाय। इन पुराने लकीर के फ़क़ीरों ने अपनी भी रेड़ लगाई है और मुझे भी बरबाद कर दिया। जो कुछ चार हज़ार के लगभग रुपये बचे हैं सो घर के खर्च में उठे जा रहे हैं। मैं सब प्रकार बरबाद हुआ।

अठवाँ दृश्य

मनिया अपने देवर के मिलने से निराश हो चुकी थी। "न जाने किस संकट में प्राण पड़ेंगे। पुरवे का रास्ता भी नहीं जानती। कुछ पास पल्ले भी नहीं जो गुज़र करूँ। अगर

घर भी चली जाऊँ तो मेरी अवस्था अब दूसरी है। मां बाप और कुटुम्बियों को क्या मुँह दिखाऊँगी? मेरे तो मां बाप ही दुशमन हो गये। मुझे कुएँ में ढकेल दिया। देवर ने अपनी करतूत पर ध्यान नहीं दिया। ये तो कहती थी मैं भी बामनी हूँ। ये मट्टी की हँडिया कैसी रक्खी है? गृहस्थिनी तो घरों में रहती हैं, ये बालेखाने पर बाज़ार में क्यों रहती हैं?" इसही सोच विचार में मनिया बैठी थी कि स्त्री ने कहा—"क्यों, क्या सोचा करती है? मज़े से बैठी खा, अच्छे से अच्छा पहन; मर्दुए ऐसे ही बेवफ़ा होते हैं।"

मनिया—तुम कौन आस्पद हो?

स्त्री—नादान! खा के ज़ात पूछती है? रात खाने से पहले पूछा होता कौन आस्पद हो?

मनिया—तुमने अपने को बामनी बताया था, इससे तुम से रात मिठाई मँगा ली, अब फिर पूछती हूँ कि तुम कौन आस्पद हो?

स्त्री—अरी सिरन। आस्पद वालों ने तेरी यह गत तो करदी अब भी आस्पद पूछे जाती है!

मनिया—अच्छा तुम हो तो हिन्दुनी ही?

स्त्री—थी तो हिन्दुनी ही।

मनिया—और अब?

स्त्री—जो ख़ुदा ने बना दिया।

ख़ुदा का नाम सुनते ही मनिया का कलेजा धड़कने लगा। उसने पुरबे के धुने के बालकों को ख़ुदा ख़ुदा कहते सुना था। समझ गई ये मुसलमानी है और मैं भी इसके हाथ की मिठाई खाकर मुसलमानी हो गई! परन्तु बे वश हूँ। क्या करूँ?

मनिया—(प्रत्यक्ष में) अच्छा जो कुछ होना था सो हो

चुका। अब ये बताओ कि क्या तुम मुझे मुसलमानी बनाकर रक्खोगी ?

स्त्री—इंसान का क्या हिन्दू क्या मुसलमान ? सब खुदा के बन्दे हैं। मौज में दाल चपाती खा और चैन कर। (ज़ेवर का डिब्बा दिखाकर) देख अब तेरे सिवाय ये सारा ज़ेवर किसका है ? ये सारे सन्दूक़ कपड़ों से भरे और किसके लिये हैं ? देख मैं तेरी हालत तेरी सूरत देखकर जान गई। तेरा रिश्तेदार तुझसे अपना पल्ला पाक करने को ही आया था, सो कर लिया। अब तुझे मा बाप या सुसराल वाले कैसे रक्खेंगे ? यह समझ कर तो और भी नहीं रक्खेंगे कि तू एक मुसलमानी के घर पर रह आई है। (मनिया के सिरपर हाथ रखकर) बेफिकर रहो। कोई घबड़ाने की बात नहीं। मौज-कर। मनिया ने समझ लिया कि मेरी प्रारब्ध मुझे यहाँ ले आई। जैसे भी हो यहीं रहना पड़ेगा। स्त्री नल से पानी ले आई और मनिया ने स्नान किया और भोजन की फ़िकर करने लगी। इतने में ज़ीने में किसी के आने की आहट हुई। स्त्री दौड़ी हुई गई और कुछ कहकर लौट आई। आने वाले ने फिर बाज़ार में जाकर बालेखाने पर को आवाज़ दी कि "नज़ीरन् ! नज़ीरन् !! ज़रासी बात सुन लो !!!" मनिया समझ गई कि इस स्त्री का नाम नज़ीरन् है। मनिया भी इसको अब नज़ीरन् ही कहने लगी।

शाम का समय हुआ। अगल बगल और सामने के कमरों पर कुछ जवान औरतों को रंग बिरंगे कपड़े पहने और गले में हार डाले कुरसियों पर बैठी हुई और हुक्का पीती हुई, मनिया ने देखा। यह दृश्य देखकर मनिया ने नज़ीरन् से कहा—

मनिया—ये औरतें क्यों बैठी हैं ? इन्हें इस तरह बैठे हुए शरम नहीं आती ?

नज़ीरन्—शरम किस बात की ? सैर कर रही हैं। तू चाहे तो तूभी बैठ जा।

मनिया—कुरसी पर तो नहीं बैठूँगी, हां ज़मीन पर बैठ जाऊँगी।

नज़ीरन् ने झट एक छोटी सी निवाड़ की पलँगीरी डाल दी। मनिया उस पर बैठ गई। और बाज़ार की सैर करने लगी। ताड़ने वालों ने ताड़ा कि कोई नया परिन्द पिंजरे में आया है। अँधेरा होते ही रँगीले छबीले कमरे पर आने लगे। नादान मनिया को दूसरों के दिल की क्या ख़बर ? उसने यह दृश्य अपनी आयु में कब देखा था !

एक रँगीला—नज़ीरन् ये नया.........।

नज़ीरन्—(बात काटकर) मेरे चचा की लड़की है। कानपुर से अभी कल आई है।

रँगीला—तो क्या वहाँ पर...........।

नज़ीरन्—(अलहदा लेजाकर) अभी नई आई है। इसकी शादी करदी थी। बेवा होकर अभी आई है। शौहर का ग़म है। इसलिये इसके सामाने कोई बात न करना। रफ़्ता रफ़्ता...........।

रँगीला—अच्छा समझ गया। हाँ फिर कभी ?

नज़ीरन्—बस, इतने ही समझ लो। (आँख से जाने का इशारा करती हुई) मनिया सब के मुँह को ताकती थी और इस भेद के सुलझाने का यत्न करती थी। चलते वक़्त एक ने कहा "ज़रा इनका नाम तो बता दो।" नज़ीरन् ने कहा—"मुन्नीजान" मुन्नीजान को सुनते ही मनिया समझ गई कि मैं

अब मुन्नी बना दी गई। हलगे हलगे समझ गई कि मैं कहाँ हूँ, और किस के पल्ले पड़ी हूँ। अब मनिया इस्मबा मुसम्मा—यथानाम स्तथा गुणः बन गई। नज़ीरन् को अच्छी प्राप्ति होने लगी। समय पर मरा हुआ बच्चा हुआ और दफ़न कर दिया गया।

नवाँ दृश्य

आज मुन्नीजान के कमरे पर एक सिपाही खड़ा है और परचा दिखाकर कह रहा है कि—"चुंगी का हुक्म है कि गणेशगंज बाज़ार से सारी रंडियाँ हटा दी जायें।"

मुन्नीजान ने कहा "मैं सिर्फ़ नाचने गाने का काम करती हूँ, पेशेवर रंडी नहीं हूँ।" सिपाही ने कहा "कोई भी हो एक हफ़्ते के अन्दर बाज़ार खाली कर देना होगा।" सिपाही चला गया, दूसरे दिन ही मुन्नी को फ़िक्र पड़ी कि कमरा खाली होना चाहिये। कहीं चुंगी की हद से बाहर मकान लेना चाहिये। एक हफ़्ता गुज़र गया पर कोई मौक़े का मकान हाथ न लगा। सिपाही ने एक हफ़्ते बाद बड़ा सख़्त तक़ाज़ा किया और कहने लगा कि "अगर आज ही बालाख़ाना खाली न कर दिया तो तुम पर मुक़द्दमा चलाया जायगा।" सब के खाली करने की रिपोर्ट चुंगी में पहुँच गई, परन्तु मुन्नीजान के बालेख़ाने की यही शिकायत हुई कि वह खाली नहीं करती। बोर्ड के मेम्बर को इस बात की इत्तला दी गई। तिवारीजी और विद्यार्थीजी कमरे पर आये और बालाखाना खाली न करने का सबब मुन्नीजान से दरयाफ़्त किया—

मुन्नीजान—मुझे कोई मकान नहीं मिला है, एक हफ़्ते की और मुहलत दीजिये।

तिवारीजी—अगर एक हफ़्ते के अन्दर नहीं खाली किया तब ?

मुन्नीजान—रामजी......खुदा की क़सम ज़रूर खाली करदूँगी। अगर यहाँ पर कोई मकान न मिला तो लखनऊ छोड़कर कहीं और जगह चली जाऊँगी। रामजी का नाम सुनते ही तिवारीजी चौंके और सोचने लगे कि "पहले तो इसने रामजी कहा और फिर खुदा कहा ?" "मालूम होता है कि यह पहले की कोई हिन्दुनी है।"

तिवारीजी—तुम कहाँ की रहनेवाली हो ? तुम कब से रंडी पेशा करती हो ?

मुन्नीजान इस प्रश्न को सुनकर और लोगों को 'तिवारीजी तिवारीजी' कहते हुए सुनकर रोपड़ी। यह दृश्य देखकर सब जन अत्यन्त आश्चर्य में पड़कर मुन्नीजान की व्यवस्था सुनने के लिये उत्सुक हो उठे।

तिवारीजी—तुम रोती किस लिये हो ? रोने धोने से तुम्हारा छुटकारा नहीं हो सकता। तुम को उचित है कि तुम आज ही बाज़ार खाली कर दो।

मुन्नीजान—आज बहुत दिनों में 'तिवारी' शब्द मेरे कान में पड़ा है। हाय कभी मेरी ननसाल भी......

तिवारीजी—(बात काटकर) तो क्या तुम पहले ब्राह्मणी थीं ?

मुन्नीजान—(आँखों में आँसू भर कर) तिवारीजी ! अब तो वही हूँ जो आप देख रहे हैं।

तिवारीजी—अब तो सब देख रहे हैं कि तुम मुसलमानी तवायफ़ हो; पर इससे पहले क्या तुम कभी........

मुन्नीजान—(बीच ही में) हाँ मैं भी कभी ग्वाला की शुक्लानी कहाती थी; पर मेरी क़िस्मत ने.....रोती हुई...... हाय कहाँ ला डाला !